विषय-सूची

पृष्ठ

मानचित्रोंकी सूची

पश्चिमी यूरोप

प्रथम भाग

करेंगे कि पाँच शताब्दियोंतक ऐसे भिन्न भिन्न जातिके लोग क्योंकर एक ही राजाके आश्रयमें रह सके ? क्या कारण था कि यह साम्राज्य एकाएक अन्य उत्तरीय जातियोंके आवेगसे गिर तो पड़ा, पर तोभी बहुत दिनों तक अपने जीवनकी रक्षामें समर्थ रहा ? किस शृङ्खलासे ये अनेक देशसमूह बद्ध थे ?

सुनिये, उन कारणोंमेंसे पहला कारण यह था कि रोमका राज्य आपही बड़ा सुसज्जित था । राजा अपनी चक्षुसे प्रत्येक अंग और कार्यको देखता था । इस कारण समाजका व्यूहन पुष्ट रहता था । द्वितीय, राजा ईश्वरतुल्य समझा जाता था, और उसकी यथोचित पूजा और उपासना होती थी । तृतीय, एक ही प्रकारका कानून अर्थात् रोमका कानून सब प्रदेशोंमें प्रचलित था । चतुर्थ, बड़ी बड़ी सड़कोंके कारण एक प्रदेशसे दूसरे प्रदेशमें आना जाना बराबर लगा रहता था । और एकही प्रकारके सिक्के और नापतौल होनेके कारण वाणिज्य, व्यवसाय आदिमें बड़ी सरलता होती थी । फिर रोमके विशेष निवासीगण अन्य प्रदेशोंमें जाकर बसते थे और राजाकी ओरसे शिक्षाके प्रचारका ऐसा प्रबन्ध था कि रोमकी विशेषतायें चारों ओर फैलती थीं और रोमकी सभ्यताका आदर सब स्थानोंमें होता था ।

१. इसे और भी स्पष्ट इस तरह देखिये । पहली बात राजा और राष्ट्रकी लीजिये । राजाके वचनहीं कानून थे । जिस प्रकारका कानून वे बनाना चाहते थे वैसी ही आज्ञा देते थे और उन आज्ञाकी घोषणा चारों ओर की जाती थी । यदि नगरोंमें पंचायती संस्था होती थी तो भी राजा कर्मचारियों द्वारा सदा निरीक्षण किया करता था और केवल राज्यसम्बन्धी कार्योंकी चिन्ता ही न कर प्रजाके आमोद, प्रमोद आदिका भी प्रबन्ध किया करता था । दुष्टोंका दमन, न्यायका प्रचार, बाहरी और भीतरी शत्रुओंके आक्रमणको रोकना इत्यादि तो होताही था, पर राजा यह भी देखता था कि अन्य अधिकार देनेवाले अपना कार्य ठीक प्रकारसे करते हैं या

देना उचित नहीं है। रोमके कानूनने प्राणीमात्रको एक मानकर एक न्याय (व्यवहार-धर्म), एक राज और एक राष्ट्रके आधिपत्य-स्थापनका यथोचित यत्न किया था।

४ राजा और प्रजाके लिए अच्छी सड़कोंका तथा एक नगर और प्रान्तसे दूसरे नगर और प्रान्तमें आने जानेकी सुविधाओं का होना बड़ा आवश्यक है। इसीसे राजाको अपने राज्यके भिन्न भिन्न अंगोंका समाचार मिल सकता है। उससे कर्मचारी गण एक स्थानसे दूसरे स्थानपर आ जा सकते हैं। राजाज्ञाओंकी घोषणा शीघ्रतासे हो सकती है। फिर प्रजाको वाणिज्यादिमें आने जानेके लिए बड़ी सुविधा होती है और इस प्रकार राष्ट्रके धन, कला, कौशल, आदिकी उन्नति होती है। जैसे जैसे वार्ता (समाचार), मनुष्य और व्यावसायिक पदार्थोंके गमनागमनकी सुविधा होती जाती है, वैसेही वैसे संसारके भिन्न भिन्न देश निकटस्थ होते जाते हैं। रोमके राष्ट्रमें बड़ी बड़ी सड़कें थीं। उस समय यही बहुत था। आज जहाजोंके कारण, तार इत्यादिसे बड़े बड़े राष्ट्र संभाले जा सकते हैं। फिर रोमने एकही प्रकारका सिक्का चलाया जिससे यात्रियों, पथिकों और व्यवसायियोंको धोखा और झंझट नहीं उठाना पड़ता था। फिर रोमके प्रवासीगण दूर दूर जाकर बसते थे और रोमकी सभ्यता अपने साथ ले जाते थे। उनके बनाये हुए पुल, दुर्ग, नाट्यगृह, विलासस्थान-के खँडहर अब भी दूर दूर देशोंमें मिलते हैं जिससे सूचित होता है कि रोमका प्रभाव कितनी दूर तक फैल गया था।

प्रत्येक बड़े नगरमें राजाकी ओरसे शिक्षकगण नियुक्त होते थे जो रोमकी शिक्षा नगरवासियोंको देते थे, और इस शिक्षाकी एकताके कारण राष्ट्रभरमें एकता हो चली थी और लगातार चार शताब्दियों तक यही विश्वास था कि रोमका साम्राज्य अटल और प्रबल है, और जो इसका विरोधी है, वह संसारका विरोधी और सभ्यताका शत्रु है।

यहां यह बात कही जा सकती है कि ऐसे सुसज्जित राज्यका जड़ाके

पर हां, इससे यह न समझना चाहिये कि यूरोपने इन शताब्दियोंमें कुछ कर न दिखाया था। मान लिया कि कलाकौशल और लिखने पढ़ने आदिकी अवनति हुई परन्तु एक विशेष प्रकारकी धार्मिक जागृति हुई जिससे कि ईसामसीहका धर्म यूरोपमें फैला और उसने एक विशेष प्रकारकी सभ्यताका सम्पादन किया। रोमके पुरातन निवासी एक ईश्वरको न मानकर बहुतसे देवताओंको मानते थे। अब कुछ लोगोंका विचार यह होने लगा कि ईश्वर एकही है। सज्जनोंको बड़े बड़े नगरोंके पापोंसे घृणा भी होने लगी, और यह इच्छा होने लगी कि स्वच्छ और धार्मिक जीवन व्यतीत करना चाहिये। ऐसे समय जब एक ओरसे पुराने धर्ममें लोगोंको शंका होने लगी और प्रचलित पापोंसे लोग पराङ्मुख होने लगे उसी समय ईसामसीहके धर्मका प्रचार होने लगा। मनुष्योंके हृदयमें नयी आशाकी जागृति हुई। ईसामसीहने कहा कि पापके बन्धनसे मनुष्य मुक्त हो सकता है और मृत्युके अनन्तर सुखका भागी भी हो सकता है। जो इस धर्मकी शरण लेगा वह इहलोक और परलोक दोनोंमें सुखी रहेगा।

कुछ दार्शनिकोंका मत था कि पुरातन धर्ममें और इस धर्ममें कुछ अन्तर नहीं है। परन्तु यह मत दार्शनिकों तक ही रह गया। जनता इन दोनोंमें अन्तरही अन्तर देखती थी। सन्तपालके पत्रोंसे प्रतीत होता है कि क्रिस्तानी भक्तमंडलीमें आरम्भहीसे विचार हुआ कि एक ऐसी संस्थाकी आवश्यकता है जिससे आत्मरक्षा और धर्मका प्रचार हो। इसी कारण बिशप नामके कर्मचारीगण नियुक्त किये गये। उनसे निम्नतर कर्मचारी भी थे जो "डीकन", "सब-डीकन", "एकोलाइट", "एक्ज़ारसिस्ट" के नामसे प्रसिद्ध थे। इस प्रकार "क्लर्जी", (पुरोहितगण), और "लेटी" अर्थात् साधारण जनसमूहमें अन्तर किया गया। सं० ३६८ में प्रथमवार रोमके सम्राट् "वलेरियस" ने क्रिस्तानी धर्म और रोमके प्राचीन धर्मको बराबर स्थान दिया था। आगे चलकर रोमके प्रथम क्रिस्तान सम्राट् 'कांस्टेन्टाइन' ने क्रिस्तान धर्मका महत्त्व

करते थे। सच बात तो यह है कि मध्ययुगके अन्ततक मनुष्यों के हृदयमें यह विचार उत्पन्न न हुआ कि सभ्य संसार भरमे एक राष्ट्र छोड़, दो राष्ट्र हो सकते है।

जर्मन जातियोका आवेग इस पूर्वीय राजधानीपर बहुत हुआ, परन्तु कुस्तुन्तुनियाके सम्राट् अपना अधिकार किसी न किसी प्रकार जमाये हु‍ए रहे और जब सं० १५१० मे राष्ट्रका नाश हुआ तो कुस्तुन्तुनिया जर्मनके हाथ मे न जाकर तुर्कियोंके हाथमे गया। इस पूर्वीय राष्ट्रकी भाषा तथा सभ्यता यूनानी थी और इसपर पूर्वीय देशोका बडा प्रभाव पड़ा था। इस कारण इसमे और पश्चिम यूरोप (जिनपर लैटिन का प्रभाव था) में बड़ा अन्तर हो गया था। यह भी स्मरण रखनेकी बात है कि पूर्व मे विद्या और कलाका ह्रास इतना नहीं हुआ जितना कि पश्चिम मे। पश्चिमीय-रोम राष्ट्रके टूटनेके पश्चात् भी पूर्वीय रोमराष्ट्र सबल पुष्ट रहा। कुस्तुन्तुनियाका विशाल नगर धनिक व्यापारियोंसे भरा रहा। बड़े बडे भवन, सुन्दर बगीचे और स्वच्छ सड़कों को देखकर पश्चिमी यात्री अचम्भित होते थे। जब क्रुसेड अर्थात् क्रिस्तान धर्म और इस्लामका भयंकर युद्ध हुआ तो पश्चिमने पूर्वसे बहुत कुछ सीखा और पूर्वका प्रभाव पश्चिम के हृदयपर अटल रूपसे स्थापित हुआ।

इस पुस्तकमे पूर्वीय यूरोपका इतिहास विस्तारपूर्वक नहीं दिया जा सका। इस विषयपर यदि बन पडा तो अलग पुस्तक लिखी जायगी। यहां इस सम्बन्ध में केवल इतना ही कहना है।
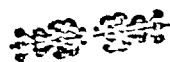
व्यूहन करनेके पहले ही आलेरिकका देहान्त हो गया। उसके मरनेके पश्चात् गॉथ जाति घूमती घूमती गाल तथा स्पेन देशोंमें गयी। इनके कुछ ही पहले वाण्डाल जाति उत्तरसे आकर राइन नदीको पारकर गाल में घुस आयी और देशको नष्टभ्रष्ट करती हुई पेरिनीज पहाड़को पार कर स्पेनमें पहुँच गयी। गाथ लोगोंने स्पेनमें पहुंच रोमसाम्राज्यसे मैत्री कर वाण्डाल लोगोंसे लड़ाई करनी आरम्भ की। लड़ाईमें इनकी ऐसी जीत हुई कि सम्राट्ने प्रसन्न होकर दक्षिण गालमें इनको बसनेकेलिए बड़ा स्थान दिया, जहांपर कि इन्होंने अपना राज्य स्थापित किया। इसके बाद वाण्डाल लोग स्पेनसे चलकर उत्तरीय अफ्रीकामें आये और वहा-पर भूमध्यसागरके किनारे किनारे इन्होंने अपना राज्य स्थापित किया। इनके चले जानेपर स्पेनमें गाथ लोगोंका राज्य फैला और यूरिक नामके राजाने अपने पराक्रमसे स्पेनपर अपना राज्य स्थापित किया। सारांश यह कि पांचवीं शताब्दीमें भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें भिन्न भिन्न प्रकारकी बाहरी जातियोंने रोमके साम्राज्यके भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें भ्रमण तथा अधिकार स्थापित करना आरम्भ किया और साम्राज्य अपनी रक्षाके लिए असमर्थ हुआ। जर्मन जातियोंका पूर्वसे पश्चिम तथा उत्तरसे दक्षिणतक अधिकार फैला। जर्मन जातियाँ तो फैल ही रही थीं, इसी बीचमें हूण जाति भी जो पहले गाथ लोगोंको निकालकर पूर्वीय यूरोपमें बसी थी, अब पश्चि-मीय यूरोपकी तरफ चली। आटिला नामी सर्दारके साथ साथ इन्होंने गाल पर धावा मारा। परन्तु सं० ५०८ में रोमन और जर्मनने मिलकर शालोन्सकी लड़ाईमें इन्हें हराया। इस हारके बाद आटिला इटलीकी तरफ चला। उस समयके पोप लिओने उसके पास दूत भेजा कि "रोमपर मत चढ़ाई करो"। इसका प्रभाव उसके ऊपर पड़ा और वह रोममें नहीं आया। सालभरके भीतर ही भीतर वह मर गया और हूण लोगोंने फिर सिर न उठाया। इस सम्बन्धमें स्मरण रखने की यह बात है कि इटलीके उत्तरपूर्वीय शहरोंने हूणोंके आक्रमणके कारण

ऐसे प्रतापी और तेजस्वी हैं कि साम्राज्यके दो विभाग करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। और आप ही एकाकी इस विशाल साम्राज्यपर अपना अधिकार रख सकते हैं। पर यदि आप चाहे तो मैं प्रतिनिधिस्वरूप होकर आपके राज्यकार्य्यको पश्चिममें देख रेख कर सकता हूं।" ऐसा ही हुआ, परन्तु ओडेसरका यह भाग्य न था कि वह इटलीकी भूमिपर जर्मनका आधिपत्य जमावे। थोड़े ही दिन पीछे पूर्वीय गाथके सर्दार थियोडेरिकने ओडेसरको जीत लिया। थियोडेरिकने दस वर्षतक कुस्तुन्तुनियामे वास किया था और इस कारण रोमसाम्राज्यके भीतरी हालसे परिचित था। जब वह अपने देशको लौटता तब वहींसे पूर्वीय साम्राज्यकी सीमापर बार बार आक्रमण करके पूर्वीय सम्राटोंको तंग किया करता था। इस कारण जब उसने पश्चिम साम्राज्यपर धावा करना प्रारंभ किया तो पूर्वीय सम्राट् बड़े प्रसन्न हुए कि एक बखेड़ा हटा। कई वर्षतक थियोडेरिक और ओडेसरमें झगड़ा होता रहा। और अन्तमें रावेना नगरमें इसने अपनी हार मानी। सं० ५५० में थियोडेरिकने अपने हाथोंसे उसकी हत्या की। थियोडेरिक भी ओडेसरके सदृश यह जानता था कि एकाएक अपने राष्ट्रको अपने ही नामसे स्थापित करना असम्भव है। इस कारण उसने सिक्कोंपर पूर्वीय सम्राटकी मूर्ति बनाई और हर प्रकारसे यत्न किया कि सम्राट् हमारे नये जर्मनराष्ट्रका समर्थन करें। यद्यपि वह सम्राट्का समर्थन चाहता था पर वह सम्राट्को किसी प्रकारसे हस्तक्षेप करने देना नहीं चाहता था। पुराने कानून और पुरानी संस्थाओंको इसने स्थायी ही रक्खा। पुराने कर्मचारीगण, पुरानी मान मर्यादा, सब वैसीही बनी रही और गाथ तथा रोमन दोनों एक ही न्यायालयमें भेजे जाने लगे। चारों ओर शान्ति फैली और विद्यावृद्धिका यत्न किया गया और सुंदर भवनोंसे उसने अपनी राजधानी रावेनाको सुशोभित किया। सं० ५८३ में इसका देहान्त हुआ। इसने राष्ट्रको सुसज्जित और सुरक्षित किया था, परन्तु उसमें एक बड़ी न्यूनता यह रह गयी थी कि गाथ जाति यद्यपि क्रिस्तान धर्मकी अनुयायी अवश्य थी

गाथ लोगोंको जीतना कठिन हुआ। पर सं० ६१० मे बेलीसेरियसने इन को भी हराया और इटलीसे निकाल दिया। इटलीके पूर्ववासीगणोंने पूर्वीय साम्राज्यके सेनाका स्वागत किया पर अपनी करनीके कारण उन्हें पीछे पश्चात्ताप करना पड़ा। गाथ राज्यका नाश हुआ। थोडे दिन पीछे जस्टिनियनकी मृत्यु हुई और लम्बार्ड जातिने साम्राज्यपर धावा किया और उत्तरीय इटलीमें आवसी। उसके वसनेका प्रदेश अवतक लम्बार्डीके नामसे प्रसिद्ध है। लम्बार्ड जाति हवशियोंकी तरह लूटती पाटती चारों ओर भ्रमण करती थी। वहाँ के निवासीगण अपना घर छोड समुद्रतटपर भागने लगे। पर वे लोग सारी इटली न जीतसके क्योंकि दक्षिणमें अभी पूर्वीय अथवा यूनान साम्राज्यका आधिपत्य वना था। आगे चलकर लम्बार्ड जातिने अपना हवशीपन छोड़ दिया और क्रस्तान धर्म स्वीकार कर प्राचीन निवासियोंकी तरह रहने लगी। २०० वर्षतक इनका राज्य रहा।

अवतक जिन जर्मन जातियोंका वर्णन किया गया है उन सवोंने किसी स्थायी रूपमें अपना राज्य नहीं स्थापित किया। एकके पीछे एक आते रहे और हारते रहे। अव फ्रांक जातिपर ध्यान देना उचित है, क्योंकि सव जातियोंसे श्रेष्ट, बुद्धिमती और वलवती जाति यही थी। प्रथम वार जव फ्रांक लोगोंका नाम सुनाई पड़ता है तो ये राइन नदीके किनारे वसे हुए पाये जाते है। इन्होंने अपने विजयके लिए एक विशेष ढंगका आविष्कार किया। इन लोगोंने अपने घरसे अपना सवन्ध तोड़कर दूर दूर धावा करना उचित नहीं समझा। इनकी इच्छा यह थी कि जहाँ वे वसे थे वहाँसे ही धीरे धीरे आगे बढे। इससे उन्हे यह लाभ हुआ कि अन्य जातियोंकी भाँति अपने घरसे दूर वसे शत्रुओंके वीचमें वे एकाएक न फसते थे और अपने घरसे संवन्ध वनाये रखनेके कारण अपनी ही जातिके और लोगोंसे वरावर सहायता पा सकते थे। पाँचवीं शताब्दीके अन्तमें इन लोगोंने आधुनिक वेल्जियमकी भूमिपर अधिकार जमाया। सं० ५४३ मे इनके राजा क्लोविस अपनी सेनाके रोमसाम्राज्यकी सीमाके

लोग बसते थे जो रोमकी सभ्यता स्वीकार किये हुए थे। पूर्वमें अस्ट्रे-सिया-जिसके प्रधान नगर मेत्स और एक्सलाशैपल थे। इस प्रान्तमें प्रायः जर्मन ही बसते थे। इन्हीं दो प्रान्तोंसे आगे चल कर फ्रान्स और जर्मन जाति उत्पन्न हुई है। इन दोनोंके बीचमें पुराना बरगण्डीका राज्य था। क्लोविसका वंश इतिहास में मेरोविंजियन वंश कहा जाता है। फ्रान्सीसी राज्यमें सर्दारों तथा जमींदारोंके बढ़ते हुए प्रभावके कारण एक भयानक संकट आखड़ा हुआ। जर्मन जातियोंके प्राचीन विवरणसे विदित होता है कि कुछ वंश ऐसे थे जिनके विशेष आदर सत्कार तथा अधिकार थे। दिग्विजयके समय गुणी सेनानायक अपनी मान-मर्यादा बढ़ा सकता था। जिन सर्दारोंपर राजा अपने अधिकारके निमित्त भरोसा करता है उनकी मनोकामना तो ऊँची होती है, फिर जो कर्म-चारी राजाके साथही रहते थे, उनकी मान-मर्यादाका तो कहना ही क्या। अस्तु, इनमेंसे जो मेजर डोमस (महल नवीस) था, वह प्रधान मन्त्री सा था। संवत् ६९५ में मेरो विंजियन वंशके राजा डेगोबर्ट-का देहान्त हुआ। तदनन्तर जो मेरो विंजियन राजागण राज्य सिंहा-सन पर बैठे, वे राज्यकार्यसे सम्बन्ध नहीं रखते थे और इस कारण इन महलनवीसोंका ही राज्य होने लगा। अस्ट्रेसिया प्रदेशका महल-नवीस पिपिन शार्लेमाइनका प्रपितामह था और इसने अपना अधिकार न्यूस्ट्रिया और बरगण्डीपर भी जमा लिया। इस प्रकार उसने अपने वंशका ऐश्वर्य खूब बढ़ाया।

संवत् ७७१ में उसकी मृत्युके उपरान्त उसके प्रसिद्ध बेटे चार्ल्स मार्टेल ("मुंगरा") पर इस विशाल राज्यको सुसज्जित करनेका भार पड़ा (शत्रुओंकी भली भाँति दुर्दशा करनेके कारण इसको मुंगराकी उपाधि मिली थी)।

इस स्थानपर आगेकी और घटनाएं न लिखकर उचित है कि दो एक प्रश्नोंको हल किया जाय। एक तो यह कि रोमन साम्राज्यमें अधिष्ट

कि वादी और प्रतिवादी मल्लयुद्ध करें। लोक-विश्वास यह था कि ईश्वर सच्चेको विजयी करेगा।

तीसरा तरीका "आडियल का" था। दोषीका हाथ जलते हुए पानीमें रक्खा जाता था और यदि तीन दिन तक उसके हाथपर कोई गर्म पानीका प्रभाव न पड़ता था तो वह निर्दोष समझा जाता था। कभी उसे गर्म गर्म लोहेपर चलनेको कहा जाता था और यदि उसके पैर पर छाले नहीं पड़ते थे तो वह निर्दोष समझा जाता था, इत्यादि। यूरोपकी सभ्यतामें इन दो जातियोंके चिन्ह वर्तमान हैं। रोम जाति और जर्मन जातिके संयोगसे आधुनिक सभ्यताकी उत्पत्ति हुई है। एक सहस्र वर्षतक दोनोंमें संघर्ष होता रहा और उसके बाद १५ वीं और १६ वीं शताब्दीकी पुनर्जागृतिके समय इन हजार वर्षोंका अनुभव होते हुए जब प्राचीन रोम और ग्रीससे भी शिक्षा ग्रहण की गयी उस समय आधुनिक यूरोपकी नींव डाली गयी।

अध्याय २

पोपका अभ्युदय।

जिस समय फ्राक जाति अपना अधिकार जमा रही थी और अपनी शक्तिको बढा रही थी, ठीक उसी समय यूरोपमें एक नया राष्ट्र स्थापित हुआ। यह राष्ट्र फ्राक राष्ट्रसे बढ़कर हुआ। यह क्रिस्तान धर्मका राष्ट्र था। ईसा मसीहके बाद दो तीन शताब्दियोंके भीतर क्रिस्तान धर्म चारो ओर फैल गया था और उसे लोग सर्वव्यापी, सर्वश्रेष्ठ मानने लगे थे। हम ऊपर कह चुके हैं कि किस प्रकारसे चर्चाने (पुरोहित समुदायने) अपना अधिकार जमाया। चर्चके अधिकारका क्या कारण था और किस भांति यह अटल बना रहा और जब कितने ही राष्ट्र उठते थे और गिरते थे, इसे समझना आवश्यक है। प्रथम तो उस समयकी जो कुछ आवश्यकताएं थीं, उनको यह पूरा करता था। उस समय क्रिस्तान धर्मके फैलनेके कारण मृत्युसे लोग बड़ा भय करते थे और आगे क्या होगा इसकी चिन्ता सदा किया करते थे। यूरोपके पुराने धर्ममें परलोकका विचार इतना नहीं था, इस कारण वे लोग इसी लोकका विचार करते थे। परन्तु क्रिस्तान धर्ममें इस मतका खंडन किया गया और इस लोकसे परलोक अधिक आवश्यक समझा गया। इस परलोकका विचार इतना फैला कि सहस्रों मनुष्य अपने कार्य व्यवहारको छोड़कर केवल परलोकके ही विचारमे तत्पर हुए। जंगलों और पहाड़ोंकी खोहोंमें एकाकी रहने लगे, अपने शरीरको हर प्रकारकी पीड़ा देने लगे व्रत, रतजगा आदि करने लगे। उनका विश्वास

था कि इस प्रकार पापके बन्धनसे मोक्ष मिलेगा और परलोकमें आनन्द भोगेंगे। इस कारण क्रिस्तानोंके आदर्श योगी संन्यासी हुए न कि संसारके लोग। निदान जितनी नयी पुरानी जातियां इस समय यूरोपमें रही हुई थी सबकी प्रवृत्ति इधर हो गयी। उस समय पुरोहित लोग यही कहते थे कि "बिना क्रिस्तान धर्मकी शरण लिये मोक्षका कोई अन्य द्वार नहीं है। जब मनुष्य इस धर्ममें प्रवेश करता है तब वह सब पापोंसे मुक्त हो जाता है और जो इस धर्ममें सम्मिलित नहीं होते, उनको मरणके उपरान्त अनन्त कालके लिए भयंकर और असह्य वेदना सहनी पड़ती है। जो बपतिस्मा ले लेते हैं वे सीधे स्वर्ग जाते हैं। उनके किये हुए सब पाप नष्ट हो जाते हैं और यदि वे आगे चलकर कुछ पाप करें तो भी पुरोहितके सामने उसे स्वीकार कर लेनेसे वे उससे भी बरी हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त पुरोहित लोग उस समय बड़ी बड़ी आश्चर्य-जनक घटनाओंको दिखलाकर लोगोंके विश्वासको दृढ़ करते थे। रोगीको नीरोग करना, दुःखीके सहायता करना, इत्यादि तो वे करते ही थे, परन्तु इससे बढ़कर लोगोंको यह भी विश्वास था कि क्रिस्तान धर्मके पुरोहितगण बड़े बड़े चमत्कार कर सकते हैं, जैसे मुर्दोंको जिला सकते हैं, अन्धेको आँख दे सकते हैं, इत्यादि। वास्तवमें ऐसा न होनेपर भी लोगोंके हृदयमें यह विश्वास था कि अमुक अमुक सन्यासी या योगी ऐसे ऐसे अद्भुत कार्य कर सकते हैं। तात्पर्य कि जैसे आजकल भारतमें बहुतेरे मनुष्य तीर्थ [illegible] अथवा पुत्र धनादिकी कामनासे बड़े विश्वासके साथ जाते हैं वैसेही उस समय यूरोपमें भी लोग जाते थे।

क्रिस्तानोंके धर्मके विषयमें [illegible] है कि धर्म और राजनीति ये उस समय सर्वथा [illegible] भी [illegible] ध्यान देना चाहिए। [illegible] और [illegible] थे। [illegible]

साम्राट्की ही बदौलत क्रिस्तान धर्म पनपा। जो कानून सम्राट् इनके लिये बनाता था उससे पुरोहितगण संतुष्ट रहते थे। पर जब साम्राज्यमें नयी जातियोंका संचार बहुत हुआ और रोमन राष्ट्र टुकड़े टुकड़े होने लगा, उस समय चर्चके अधिष्ठाताओंने विचार किया कि अब अपने-को राष्ट्रसे पृथक् करना चाहिये। चारों ओर अराजकता फैलने और चर्चके व्यूह-बद्ध होनेके कारण वे अपनेको अलग कर सके, और अलग होकर उन्होंने बहुत ऐसे शासन कार्य करना आरम्भ किया जो अशान्त और अस्थिर होनेसे राष्ट्र स्वयं नहीं कर सकता था। संवत् ५५६ (सन् ५०२) में प्रथमबार रोममें चर्चकी एक सभाने बैठकर यह निश्चय किया कि ओडेसर सम्राट्का कोई एक विशेष आदेश तिरस्कृत्य और अमान्य है, क्योंकि किसी एक साधारण मनुष्यको धार्मिक विषयों-में हस्तक्षेप करनेका अधिकार नहीं है। रोमके बिशपने (जो पीछे पोप प्रथम गलेशियसके नामसे कहलाने लगे) धर्म और राष्ट्रका परस्परका सम्बंध यों बतलाया है कि ईश्वरने संसारमें अधिकार की दो तलवारे दी हैं। एक राजाके हाथमें, दूसरी पुरोहितके हाथमे, एक धर्मको, एक राष्ट्रको, एक ब्राह्मणको, एक क्षत्रिय को। इसमें ब्राह्मणका अधिकार क्षत्रियके अधिकारसे अधिक है क्योंकि ब्राह्मण ईश्वरके सम्मुख सम्राटोंके कार्योंका भी उत्तर-दाता है। उस समय साधारण तौरपर यही विश्वास था कि परलोक सम्बधी बाते इहलोककी चर्चासे अधिक बलवती हैं, इस कारण चर्चका यह कहना कि 'पुरोहितका अधिकार श्रेष्ठ है' सर्व मान्य समझा गया। जब धर्म और राष्ट्रमें झगड़ा हो, जब ब्राह्मण क्षत्रियमें परस्पर वैमनस्य हो, तो ब्राह्मण पुरोहितकी ही बात मानी जाय, क्षत्रिय राजाकी नहीं, यह आदेश भी सबको स्वीकृत हुआ।

अब दो विचार उत्पन्न हुए—एक तो यह कि चर्च अपनी ही मान-मर्यादाके लिए अपना कार्य स्वयं करे और उसमें राष्ट्र-कर्मचारियोंको किसी प्रकार हस्तक्षेप न करने दे, दूसरा यह कि राजकार्य भी वह स्वयं करने लगे।

समय बड़ा कठिन था, चारों ओर स्थापित राष्ट्र टूट रहे थे और अशान्ति
फैल रही थी। यदि ऐसे समय चर्चने कुछ ऐसे कार्योंके करनेका भार
अपने ऊपर उठाया जो प्रायः राष्ट्रकी ओरसे होते हैं, तो यह न समझना
चाहिये कि इसने बलात् ये सब अधिकार राष्ट्रसे छीन लिये; पर स
पूछिये तो उस समय कोई राष्ट्र ही नहीं था। रोम साम्राज्यके ध्वंस हो
पर कई शताब्दियोंतक कोई चिरस्थायी राष्ट्र नहीं स्थापित हुआ जो शान्ति
रख सके, न्यायालय स्थापित करे, एवं शिक्षा इत्यादिका प्रबन्ध करे। इन
सब कार्योंको चर्चने करना आरम्भ किया। यूरोपकी सामाजिक और राज-
नैतिक दशा इस समय ऐसी थी कि केवल बाहुबलसे लोग आपसके
झगड़े तय करते थे और प्रायः लोग लड़ना भिड़ना ही अपना कर्तव्य
समझते थे। ऐसे समय यूरोपका एक मात्र आश्रय चर्च था, जिसने
धर्मके नामसे कुछ मान मर्यादा बना रखी और समाज को जीवित रखा।
लोग चर्चका सम्मान करते थे इस कारण उसने भय दिखा करके, कुछ
दण्ड देकरके, इहलोक परलोक दोनोंके नामसे, किसी किसी तरहसे
पुरोहित गण लोगोंको परस्पर लड़नेसे रोकते थे, एक दूसरेकी प्रतिज्ञा-
का पालन कराते थे. मृत व्यक्तियोंकी अन्तिम इच्छाओंका आदर
कराते थे. विवाह आदिके मामले लोगोंको नीतिबद्ध रखते थे. विधवा
और अनाथकी रक्षा करते थे, आतुर जनोंको भोजन वस्त्र देते थे, जब
सब लोग विद्याहीन हो रहे थे तो ये लोग शिक्षाका प्रचार करते थे।
ऐसी अवस्थामें क्या यह समझना कठिन है कि किस प्रकारसे चर्चने
अपने अधिकारको यूरोपमें जमाया और सर्व साधारणका हृदय हर
किया और बहुतसे ऐसे कार्योंको उठाया जो साधारणतः केवल रा
कर्मचारी ही करते हैं।

इस तरह क्रिस्तान धर्म और क्रिस्तान पुरोहितोंका अधि
फैला। अब देखना यह है कि पोपका अभ्युदय किस प्रकार हुआ
पश्चिमी चर्चका अनन्य प्रभुत्व अपने हाथमें रखकर वे

बड़े राजाओं और महाराजाओंसे अधिक प्रतापी हुए और उनने कितनी लड़ाइयां उन्होंने लड़ीं।

ईसा मसीह प्रान्तीय धर्माधिष्ठाता विशपको बना गये थे। इस वचनके अनुसार रोमके विशपका अन्य विशपोंसे अधिक मान नहीं था, पर इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि आरम्भहीसे रोमके विशपका सम्मान अधिक था और क्रिस्तान इनको सर्वश्रेष्ठ सर्वमान्य समझते थे। पश्चिमीय देशोंमें यही एक धर्मपीठ थी जो ईसा मसीहके प्रथम उपासकों द्वारा स्थापित की गयी थी।

लोगोंका यह विश्वास है कि सन्त पीटर रोमके प्रथम विशप थे किन्तु सच पूछिये तो यह निश्चय भी नहीं है कि पीटर कभी रोममें गये थे। पर लोगोंका विश्वास इस सम्बन्धमें ऐसा दृढ था कि इसका प्रभाव यूरोपके इतिहासपर बहुत पड़ा है। कारण इसका यह है कि ईसा मसीहके भक्तोंमे पीटरका स्थान श्रेष्ठ था और नयी इंजीलमें ईसा मसीहने स्वयं कहा है कि—"हे पीटर! सुनो, तुम पीटर हो, तुम वह चट्टान हो, तुम वह अचल पर्वत हो जिसपर हम अपने चर्चकी स्थापना करेंगे। नरकका भय इस चर्चको भयभीत नहीं कर सकता। मैं तुम्हें स्वर्गकी कुंजी देता हूं। तुम जिन्हें संसारमें मुक्त करोगे वे स्वर्गमें भी मुक्त रहेंगे, तुम जिन्हें इहलोकमें बन्धनमें डालोगे वे परलोकमें भी बन्दी ही रहेंगे।" जब लोगोंका ऐसा विश्वास था कि पीटरके बारेमें स्वयं ईसामसीहका यह वचन है और जब पीटर रोमका प्रथम विशप था तो रोमका विशेष आदर होना चाहिये ही। पश्चिममें जितने चर्च स्थापित हुए, सबका जनक रोमका चर्च समझा जाता था। रोमके वचन सबसे पवित्र थे, क्योंकि रोमके चर्चकी स्थापना स्वयं ईसा मसीहके उपासकोंने की है। यदि किसी बातमें मतभेद होता था तो व्यवस्थाके लिये लोग रोम जाते थे। फिर रोम नगरी भी बड़े भारी साम्राज्यकी राजधानी हो चुकी थी, इस कारण उसका विशेष गौरव था। अन्य अन्य स्थानोंके विशप विरोध करते हुए भी रोमके विशपका अधिकार मानने लगे।

प्रथम चार शताब्दियोंमें रोमके बिशपोंका कुछ ठीक हाल नहीं ज्ञात होता। उन दिनोंमें रोमके सम्राट्का कोप क्रिस्तान धर्मपर था और क्रिस्तानोंको हर प्रकारसे पीड़ा दी जाती थी। इस कारण बिशपकी कोई गिनती न थी और पीछे जो वे लोग इतना राजनीतिक अधिकार दिखलाने लगे उसका लेशमात्र भी उस समय न था। पाँचवीं और छठीं शताब्दियोंका हाल कुछ अधिक मालूम पड़ता है, क्योंकि उन्हीं दिनोंमें क्रिस्तान धर्मके धुरन्धर पण्डितोंने अपने धर्मका अर्थ बताया और लिखा। इससे अबतक ये क्रिस्तान धर्मके पिता स्वरूप माने जाते हैं। इनमें सबसे श्रेष्ठ अथानीसीयस था, इसने सच्चे चर्चका आचार विचार आदि निर्णय किया और एरियन पन्थके विरुद्ध बहुत कुछ लिखा पढ़ा। फिर बासिल नामके पण्डितने चतुर्थाश्रम अथवा यती जीवनके लिये लोगोंको उत्साहित किया। अन्य पण्डितोंके नाम अम्ब्रोस, जेरोम थे और सबसे बड़ा पण्डित आगस्टाइन (संवत् ४११—४८७ या सन् ३५४-४३०) था जिसके लेख अबतक प्रमाण माने जाते हैं। ध्यान रखना चाहिये कि इन लेखकोंने केवल क्रिस्तान धर्मकी शिक्षापर ही विचार किया, चर्चके व्यूहनसे इनका कोई सम्बन्ध न था। परन्तु शीघ्र ही चर्चने राजनीतिक रूप भी धारण किया। इसका मुख्य कारण यह था कि रोमकी गद्दीपर लियो नामक बिशप संवत् ४९७-५१८ (सन् ४४४-४६१) तक बैठे थे। इनकेही समयसे पोपके अभ्युदयका इतिहास आरम्भ होता है। इनके आदेशानुसार तृतीय वैलेन्टीनियन सम्राट्ने (संवत् ५०२, सन् ४४५ में) यह आज्ञा दी कि रोमका बिशप सर्वोपरि समझा जाय और पश्चिमीय यूरोपके जितने बिशप गण हैं सब रोमके बिशपके बनाये हुए कानूनका अनुसरण करें। यदि कोई बिशप इनकी आज्ञाका पालन न करे तो राजकर्मचारीगण बलात् उनसे पालन करावें। ६ वर्ष पीछे चाल्सिडन स्थानमें धार्मिक सभाने निश्चय किया कि कुस्तुन्तुनियाके बिशपको भी रोमके बिशपके समान अधिकार समझा जाय और

संसारके क्रिस्तान धर्मपर इन दोनों विशपोंका समान अधिकार हो, परन्तु इस बातको पश्चिमी धर्माध्यक्षोंने नहीं स्वीकार किया ।

पूर्वीय और पश्चिमीय धार्मिक विचारोंमें बड़ा अन्तर होने लगा और ग्रीक चर्चके अनुयायी पूर्वमें कुस्तुन्तुनियांके विशपको सर्वश्रेष्ठ बनाने लगे और लेटिन चर्चके अनुयायी रोम चर्चको सर्वश्रेष्ठ समझते थे । पाठकोंको स्मरण होगा कि थोड़े ही दिन पीछे ओडेसरने पश्चिमीय सम्राटोंका नाश किया । तत्पश्चात् थियोडोरिक अपने पूर्वीय गाथ लोगोंके साथ आया । तदनन्तर लम्बर्ड लोगोंका धावा हुआ । ऐसे भयंकर राष्ट्र-विप्लव-के समय रोमके विशपको जो अ [illegible] र कहलाने लगे थे, लोग अपना नायक मानते थे । सम्राट् तो बड़ी दूर कुस्तुन्तुनियामें रहते थे और उनके कर्मचारियोंने मध्य इटलीमें किसी न किसी प्रकार सम्राट्का नाममात्र जीवित रखा था । वे पोपकी सहायता करने और उनसे प्रसन्नता पूर्वक परामर्श लेने लगे । रोम नगरीमें कर्मचारियोंके निर्वाचनमें पोप प्रकट रूपसे हस्तक्षेप करते थे और निर्णय करते थे कि किस प्रकार धन व्यय किया जाय । इसके अतिरिक्त जो धार्मिक लोगोंने बड़ी बड़ी जागीरें रोमकी धर्मपीठको दी थीं उनका प्रबन्ध और रक्षा करना भी पोपहीके हाथमें था । इस कारण जर्मन जातियोंके पास दूत भेजना और उनके विरुद्ध लड़नेकी तैयारी करना आदि सब काम पोप ही करने लगे ।

संवत् ६४७ से ६६१ तक रोमकी धर्मपीठपर महान् ग्रेगरी बैठे । आप एक धनी पिताके पुत्र थे और सम्राट्ने आपको प्रीफेक्टका उच्च स्थान दिया । एकाएक आपके हृदयमें यह विचार उत्पन्न हुआ कि इतने धन तथा इतने अधिकारसे हम अभिमानी हो जायँगे । अपनी धार्मिक माताके प्रभावसे और बड़ी बड़ी धार्मिक पुस्तकोंके पढ़नेसे आपने अपना सब धन धर्मशालाओंके बनवानेमें व्यय किया । एक धर्मशाला आपहीके घरमें थी और इसमें रहकर अपने शरीरको आपने व्रतादि कष्टों द्वारा इतना शिथिल कर दिया कि आपका स्वास्थ्य सर्वदाके लिये

बिगड़ गया। योगीके जीवनके जोशमें आपकी मृत्यु अवश्य हो गयी होती यदि आपको पोपने* एक आवश्यक कार्यसे कुस्तुन्तुनिया न भेजा होता। वहांपर आपने अपनी विशाल बुद्धि और चतुरताका प्रथम बार नमूना दिखलाया।

ग्रेगरी संवत् ६४७ (सन् ५९०) मे पोप बनाया गया। प्राचीन रोमका बाह्य रूप इस समयतक बहुत कुछ बदल गया था। देवताओके मन्दिरोंके स्थानमें गिरजाघर बन गये थे। पीटर और पाल सन्तोंकी समाधियां धर्मके केन्द्र और यात्राओंके स्थान समझी जाने लगीं। चारों ओरसे लोग यहाँ यात्राके विचारसे आनेलगे। जब ग्रेगरीने अपना कार्य आरम्भ किया था उसी समय नगरीमें महामारी फैली हुई थी। उस समयके विचारके अनुसार शहरमेंसे उसने एक जुलूस निकाला क्योंकि लोगोंको विश्वास था कि इससे ईश्वर अपने कोपको हटा लेगा। लोगोका यह विश्वास था कि जिस समय शहरमें यह जुलूस निकल रहा था, उस समय ईश्वरके माइकल नामके दूत अपने खड्गको म्यानमे रखते हुए देख पड़े, जिससे यह अनुमान किया गया कि ईश्वरका कोप शांत हुआ। ग्रेगरी बड़ा प्रसिद्ध पोप हुआ। एक तो यह बड़ा भारी लेखक था, इसकी पुस्तकें इसी कारण पढ़ी और मानी जाती हैं। दूसरे यह निपुण नीतिज्ञ था। इसके जो लिखित पत्र अब भी मिलते हैं, उनसे प्रकट होता है कि यह कितना दूरदर्शी था और किस प्रकारसे यह यूरोपमें पोपहीको सर्वश्रेष्ठ राजा बनाना चाहता था। ईश्वरके दासानुदासकी उपाधि इसने प्राप्त की। पोप

---

* पोप शब्द पितासे निकला है। प्रारम्भमें यह नाम सभी पुरोहित बिशपोंका था। परन्तु छठीं शताब्दीके प्रारम्भमे रोमहीका बिशप इस नामसे पुकारा जाने लगा यद्यपि अन्य लोगोंको यह उपाधि देनेमें कुछ रोक टोक न थी। सं० ११४२ (सन् १०८५) में सप्तम ग्रेगरीने प्रथम बार यही निश्चित रूपसे आज्ञा दी कि केवल रोमहीके बिशपको यह उपाधि दी जाय।

अबभी इसी उपाधिको ग्रहण करते है । यद्यपि यह उपाधि इतनी छोटी थी तथापि इसका प्रभाव और प्रकाश बहुत बड़ा था । इस समय-से लेकर संवत् १६२७ (सन् १८७०) तक रोम नगरीका राज्य पोप ही करते थे । मध्य इटलीसे लम्बर्ड लोगोंको दूर रखनेका भार आपहीके ऊपर पड़ा । बहुतसे साधारण शासनकार्य आप करते थे । इस प्रकार परलोकहीका नहीं किन्तु इहलोकका भी प्रबंध आपके हाथमें आया । इसके अतिरिक्त इटलीकी सीमाके पार आप सदा कुस्तुन्तुनियाके सम्राट् और आस्टेसिया, न्यूस्ट्रिया, वर्गण्डी आदिके राजाओंसे सदा सम्बन्ध रखते थे । आपको इसकी सदा चिंता रहती थी कि सच्चरित्र पुरोहित ही बिशप बनाये जायें । धर्म शास्त्र आदिका निरीक्षण भी आप भली प्रकार करते थे परंतु इतिहासमें आप विशेषकर इस कारण प्रसिद्ध है कि देश देशांतरमें क्रिस्तान धर्म फैलानेके लिये उपदेशकोंको आपहीने भेजा और आधुनिक इंग्लिस्तान, जर्मनी, फ्रांस आदि देशोंको क्रिस्तान धर्ममें सम्मिलित करना और इनपर पोपका अधिकार जमाना आपहीके परिश्रम-का फल है । आप स्वयं संन्यासी थे और इसीके बलसे आपने इतनी सफलता प्राप्त की । संन्यासियोंकी संस्था किस प्रकारसे उत्पन्न हुई और उनमें क्या विशेषता थी इसकी चर्चा आगे की जायगी ।

चौथा अध्याय।

संन्यासियोंकी संस्था तथा धर्मका उपदेश

मध्य युगमें संन्यासियोंके प्रताप और प्रभावका पूरी तौरसे वर्णन करना असम्भव है। वेनेडिक्ट, फ्रान्सिस, डोमनिक आदिसे प्रचारित पंथोंके इतिहासमें कितने ही प्रतापी और बुद्धिमान अनुयायियोंका नाम मिलता है। बड़े बड़े दार्शनिक, वैज्ञानिक, इतिहास-वेत्ता, नीतिज्ञ, इनमें पाये जाते हैं। इस युगके बड़े बड़े नेता संन्यासी ही हुए हैं। वीड, वानीफेस, आवेलार्ड, टामस, ऐक्वीनास रोजर, वेकन, सावोनारोला, लूथर, एरास्मस आदि सब संन्यासी ही थे। हर प्रकार और हरवृत्तिके लोग संन्यास आश्रमकी ओर झुकते थे। ऐसे समय जब संसारमें सुख तथा शांति नहीं थी, जब चारों ओर चोरों और डाकुओं-का भय रहता था, उस समय कितने ही लोगोंने घबड़ाकर और विरक्त होकर इस आश्रमकी शरण ली। ये लोग झुंडके झुंड धर्मशालाओंमें जाकर निवास करते थे। धर्मशाला संन्यासियोंहीके लिये बनी थी। यहां केवल ऐसे ही लोग नहीं पाये जाते थे जो मोक्षमात्रकी अभिलाषासे संसारको छोड़ते थे, पर ऐसे लोग भी पाये जाते थे जो पठन-पाठनकी अभिलाषा तथा अनुरागसे यहां जाते थे। देखनेमें आया है कि प्रायः ऐसे लोग क्षत्रियवृत्ति अथवा सिपाहीका जीवन ग्रहण करना नहीं पसन्द करते और अराजकताके समय भयपूर्ण संसारमें रहना नहीं चाहते। संन्यासीका जीवन ऐसे समय भय-रहित, शांतिदायक, और पवित्र था। अशिष्ट और निर्दय सैनिक भी संन्यासीके जान माल, वस्त्र तथा भोजनादिपर आक्रमण नहीं करते थे, क्योंकि उनके मनमें भी ऐसा विचार था कि संन्यासियोंपर ईश्वरकी विशेष कृपा

रहती है। इसके अतिरिक्त ऐसे बहुतसे लोग धर्मशालाओंका आश्रय लेते थे जो किसी कारण दुःखित थे, मान-हीन हो गये थे, अथवा आलसी होनेसे अपनी जीविकाके लिये धन उपार्जन नहीं कर सकते थे और धर्मशालाओं-में भोजनादिकी लालसासे चले जाते थे। ऐसे भिन्न भिन्न विचारोंसे प्रेरित भिन्न भिन्न प्रकारके स्त्री पुरुषोंसे धर्मशालाएं भरी रहती थीं। राजा और जमीन्दार अपनी आत्माकी शांतिके लिये बड़ी बड़ी जागीरें धर्मशालाओंको प्रदान कर देते थे जहां कि संन्यासी लोग बस सकते थे। पहाड़ों और जंगलोंमें ऐसी बहुतसी गुफाएं और कुटियां थीं, जहां सन्यासी लोग इच्छानुसार एकाकी रह सकते थे प्रथम बार पांचवीं शताब्दीमें मिश्र देशमें क्रिस्तान संन्यासियोंका पंथ खोला गया। सन्त जेरोमने संन्यास आश्रमकी महिमा गायी। पश्चिम यूरोपमें अबतक इसका नाम नहीं सुना गया था। छठीं शताब्दीमें पश्चिमी यूरोपमें इतनी धर्मशालाएं बनने लगीं कि इनके लिये कुछ नियम बनाना आवश्यक हो गया। जब बहुतसे लोग संसारकी साधारण वृत्तियोंको छोड़ कर संन्यासाश्रममें ही जीवन व्यतीत करना चाहते थे तो उनके लिये कोई विशेष नियम बनाना आवश्यक था। सांसारिक व्यवहारकी दृष्टिसे अन्य पूर्वी देशोंमें संन्यासियोंके लिये जो नियमादि थे वे पश्चिम देशोंके लिये अनुकूल न थे। पश्चिमी लोगोंकी प्रकृति ही भिन्न थी। इस कारण सन्त बेनेडिक्टने संवत् ५८३ (सन् ५२६) में दक्षिण इटलीके मान्टेकैसिनो नामक धर्मशालाके लिये एक नियमावली बनायी। आप स्वयं इस धर्मशालाके अध्यक्ष थे। ये नियम संन्यासाश्रमके लिये इतने उपयुक्त थे कि प्रायः सभी मठोंने इसको ग्रहण कर लिया और पश्चिमीय संन्यासाश्रमके ये ही नियम माने जाने लगे। उनका संक्षिप्त अभिप्राय यह है—सब लोग संन्यासाश्रमके अधिकारी नहीं हैं और जो इस आश्रमको ग्रहण करना चाहते हैं उन्हें पहले कुछ दिनों तक विशेष प्रकारकी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। तत्पश्चात् उनकी दीक्षा हो सकती है और तब वे संन्यासाश्रमका संकल्प ले सकते हैं। इसके बाद प्रत्येक धर्मशालाके

सब संन्यासी मिलकर अपने अध्यक्षों (एवट) का निर्वाचन करेंगे और केवल धर्मविपरीत आज्ञाओंको छोड़ उनकी अन्य सब आज्ञाओंका सदा पालन करेंगे। योग और उपासनाके अतिरिक्त सन्यासियोंको शारीरिक श्रम, खेती आदि करना चाहिए। उनको पठन-पाठनका काम भी करना चाहिए। जो मठोंके बाहर जाकर काम करनेमें अशक्त थे उनको पुस्तकोंकी नकल आदि करनेका हलका भार दिया जाता था। संन्यासी किसी प्रकारका धन अपने नाम न ले सकता था और न रख सकता था। उसे सर्वथा भोग रहित जीवन व्यतीत करनेका प्रण करना पड़ता था। जो कुछ उसके पास था वह सब धर्मशालाका ही समझा जाता था। इसके अतिरिक्त उसे ब्रह्मचर्यका संकल्प ग्रहण करना पड़ता था और वह विवाह नहीं कर सकता था। गृहस्थाश्रमसे संन्यासश्रम केवल अधिक पुनीत ही नहीं समझा जाता था बल्कि सच बात तो यह थी कि यदि संन्यासी विवाहित होते तो इस प्रकारकी संस्थाका स्थापन ही असम्भव हो जाता। सन्यासियोंको साधारणतः मानवी जीवनका अनुसरण करना पड़ता था और असह्य शारीरिक कष्ट, व्रत आदिसे अपने शरीरको शिथिल करनेकी मनाही थी।

इन संन्यासियोंका प्रभाव इस बातसे बहुत पड़ा कि उन्होंने पुरानी लैटिन भाषाकी पुस्तकोंको जीवित रक्खा। लगभग सोलह सहस्र लेखक इस कार्यमें लगे हुए थे। इन्होंने पुस्तकें लिखकर और पुरानी पुस्तकोंकी लिपि बनाकर मृतप्राय भाषाको जीवित रक्खा। सम्भव है यदि संन्यासियोंने ऐसा कार्य न किया होता तो आज पुरानी बातोंका पता तक न लगता। हम प्रथम ही कह चुके हैं कि दासत्वकी प्रथाके कारण रोम साम्राज्यमें लोग शारीरिक श्रमको नीच समझने लगे थे। इन संन्यासियोंने स्वयं खेती बारी करके यह भलीभांति दिखलाया कि यह नीच नहीं प्रत्युत उच्च कार्य है। ऐसे समय जब पथिकोंके आश्रयके लिये आश्रमादिका कोई भी प्रबन्ध नहीं था, इन संन्यासियोंने अपनी धर्मशालाओंमें पथिकोंको ठहराकर,

उन्हें आश्रय देकर तथा भोजनादिसे उनकी सेवा कर एक बड़े अभावकी पूर्त्ति की। इन्हीं पथिकोंके आवागमनसे यूरोपके भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें सम्बन्ध बना रहा और विचारोंका संचार होता रहा।

वेनीडिक्टके इन नियमोंके अनुयायी संन्यासियोंकी पोपपर पूरी भक्ति थी और रोमके चर्चकी इन्होंने बड़ी सहायता की, जिससे इनको कितने ऐसे अधिकार मिले जो कि साधारण क्रूर्जीको नहीं दिये गये थे।

क्रिस्तान धर्मके ये दोनों विभाग (अर्थात संन्यासी और पादरी) एक दूसरेको पुष्ट करते थे। साधारण क्रूर्जी संसारमें रहकर और बहुतसे राज्यकार्य करके इहलोकमें अपने धर्मका प्रताप दिखलाते थे। संन्यासी-गण अपनी धर्मशालाओंमें रहकर परलोककी वासना चारों ओर फैलाते थे। धर्मके जितने रीतिरस्म थे इनका पालन साधारण क्रूर्जी करते थे। आत्मसमर्पण और आत्मदमनके उदाहरणरूप ये संन्यासी थे। जिस समय किसी धर्मका बाहरी आडम्बर बहुत बढ जाता है और इसी आड-म्बरको लोग धर्मका हृदय समझने लगते हैं, उस समय संन्यासी अपने आत्मत्यागसे धर्मका सत्य रूप दिखलाता है। इस प्रकारकी सेवा तो संन्या-सियोंने की ही, परन्तु क्रिस्तान धर्मके लिये इससे बढकर उन्होंने यह काम किया कि देश देशान्तरोंमें फिरकर, धर्मका उपदेश देकर, क्रिस्तान धर्मका प्रचार किया। आगे चलकर रोमके चर्चका जो कुछ महत्व बढ़ा वह इन्हीं लोगोकी बदौलत, क्योंकि इन्होंने जर्मन जातियोंको क्रिस्तान बनाया और उनसे पोपकी उपासना करायी। आजकल आंग्ल देश और आय-र्लैण्डके जो द्वीप हैं उनमें सेल्ट जातिके लोग दो हजार वर्षसे बसे थे। रोमन सेनापति जूलियस सीजरने विक्रमी संवत्के आरम्भमें इन द्वीपोंपर आक्रमण किया और दक्षिणमें अपना अधिकार जमाया। छठी शताब्दीमें जब जर्मनोंका रोमपर धावा हुआ उस समय आँग्लदेशसे रोमकी सेना वापस बुला ली गयी। इसके अनन्तर साक्सन और आंग्ल नामी जर्मनी जातियां उत्तरीय समुद्र पारकर इस देशमें आ पड़ीं। दो शताब्दियोंतक इस

देशके पूर्व निवासियोंका कोई विवरण नहीं मिलता है। अनुमान है कि कुछ तो वेल्स प्रदेशमें भाग आये क्योंकि अब भी यहां प्राचीन जातिके स्त्रीपुरुष पाये जाते हैं और बहुतेरे तो कदाचित् अपने ही स्थानपर रह गये और इन्होंने साक्सन आंग्ल सर्दारोंका अधिकार स्वीकार किया। इन सर्दारोंने छोटे छोटे राज्य स्थापित किये। जब महान् ग्रेगरी रोममें पोप हुआ उस समय इनके सात या आठ राज्य वर्तमान थे।

कहावत है कि जब ग्रेगरी संन्यासी भेषमें एक दिन भ्रमण कर रहा था तो रोमके बाजारमें आंग्ल देशके नवयुवक दासों को बिकते देख कर उसका हृदय बड़ा आकर्षित हुआ और जब उसने सुना कि ये लोग आंग्ल देशसे आये हुए हैं जहां क्रिस्तान धर्मका संचार नहीं हुआ है, तो इसने संकल्प किया कि, "यदि अवसर मिलेगा तो मैं स्वयं वहां जाकर उपदेश दूंगा।" जब यह पोप हुआ तो चालीस संन्यासियोंको इस आंग्ल देशमें उपदेश देनेके हेतु भेजा। इनका नायक आगस्टीन था, जिसको इसने इंगलिस्तानके विशपकी उपाधि पहले हीसे दे दी थी। केन्टके राजाकी भूमिपर प्रथमबार इन संन्यासियोंने डरते डरते पैर रक्खा। परन्तु राजाकी पत्नी फ्रांस देशीय थी, और क्रिस्तान होनेके कारण उन संन्यासियोंका उसने बड़ा आदर-सत्कार किया। केन्टरबरी गांवके एक पुराने गिरजाघरमें उनको स्थान मिला। यहीं उन्होंने धर्मशाला बनाई और यहीं रहकर उन लोगोंने अपना धर्म-प्रचार करना आरम्भ किया। यही केन्टरबरी आजतक प्रसिद्ध है और एक प्रकारसे अब भी आंग्ल देशकी धर्मपीठ कहा जाता है।

आगस्टीनके आनेके पहिले भी जिस समय यह रोमके राज्यका अंग था, क्रिस्तान धर्मका कुछ प्रचार इस देशमें हो गया था। उन्होंनेसे कुछ पादरी सन्तोंने पेट्रिकके साथ सं० ५१६ (४६६ सन्)में आयर्लैंड जाकर क्रिस्तान धर्मका प्रचार किया और उसे केन्द्र बनाया। जर्मन जातियां इस देशमें आयीं तो आंग्ल देशसे क्रिस्तान धर्म पुनः लुप्त होगया पर क्रिस्तान

होनेके कारण आयलैंडपर उन असभ्योंका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। इनके तथा रोम धर्मके रीति रस्ममें अब कुछ अन्तर पड़ गया था। आयलैंडके उपदेशकोंने उत्तरमें अपना कार्य जारी रखा। आगस्टीनने दक्षिणमें अपना कार्य आरम्भ किया। इन दोनों धर्म प्रचारकोंमें परस्पर वैमनस्य और झगड़ा स्वाभाविक था। यद्यपि आयलैंडके उपदेशक अपनेको पोपका ही अनुयायी मानते थे तथापि पोपसे स्थापित केन्टरबरी-के प्रधान बिशपको वे अध्यक्ष स्वीकार नहीं करते थे। पाप यह चाहते थे कि चारों ओरके तितिर बितिर क्रिस्तान हमारी अध्यक्षतामें दल-बद्ध रहे। परन्तु आयलैंडके क्रिस्तान अपने विशेष रीति-रस्मोंको छोड़ना नहीं चाहते थे। इस कारण लग भग १०० वर्षतक झगड़ा चलता रहा। रोमके पोपका प्रभाव यूरोपमें बढ़ता ही गया। इसका कारण हम ऊपर कह आये हैं। छोटे छोटे राजा पोपसे मैत्री भावसे रहना चाहते थे। इस कारण पोपहीकी धर्म-व्यवस्था चारों ओर मानी जाने लगी। कहा जाता है कि नार्दम्ब्रियाके राजाने एक सभामें कहा था कि जो लोग एक ईश्वरकी उपासना करते हैं उन्हें एक ही प्रकारका आचार-विचार रखना चाहिये। यह उचित नहीं है कि यूरोपके एक कोनेमें बसा हुआ कोई देश अन्य देशोंके आचार-विचारसे पृथक् रहे। राजाकी यह राय देखकर आय-लैंडका उपदेशक उस सभासे उठकर चला गया। उस दिनसे १७ वीं शताब्दीतक, प्राय· एक सहस्र वर्ष तक, पोपका और इंगलिस्तानके राजाका धार्मिक और राजनीतिक सम्बध घनिष्ठ बना रहा।

जब आंग्ल देशने रोमके धर्मको पूर्णतया स्वीकार कर लिया तो रोमके साहित्य, कला, कौशलादिके ज्ञानके लिए देशमें बड़ा उत्साह फैला। बड़ी बड़ी धर्मशालाएं विद्यापीठका काम करने लगीं। रोमसे कितने कारीगर समुद्र पार कर आंग्ल देशमें गये और रोमकी सी इमारतें बनाने लगे। लकड़ीकी जगह पत्थरका काम होने लगा। प्राचीन प्रसिद्ध पुस्तकें यहां लायी गयीं और उनकी नकल की गयी। कई प्रसिद्ध लेखक भी इस समय

ईंगलिस्तानमें उत्पन्न हुए। इस समय क्रिस्तान धर्मके प्रचारके लिए बड़ा उत्साह था। आयर्लैंडके धर्मोपदेशक सन्त कोलम्बनने बड़े बड़े दुर्गम स्थानोंमें जाकर धर्मका प्रचार किया और धर्मशालाएं बनायीं। मध्ययूरोपमें आपका प्रभाव बहुत पड़ा और कान्स्टेन्स झीलके पास आपकी बनायी हुई धर्मशालामें इतने शिष्य और भ्रातृगण आये कि यह बहुत दूरतक प्रसिद्ध हो गया। बड़े बड़े घोर जंगल और पहाड़ोंमें घुस घुसकर वहांके निवासियोंको क्रिस्तानधर्मका उपदेश दिया गया और इन संन्यासियोंके उत्साह और आत्मत्यागका यह फल हुआ कि क्रिस्तानधर्म बहुत शीघ्रतासे चारों ओर फैल गया।

दूसरे प्रसिद्ध संन्यासी सन्त बोनीफेस हो गये हैं। आप जर्मन जातियोंमें धर्म प्रचारार्थ भेजे गये थे। आप पोपके अनन्य भक्त थे और आपने पोपका अधिकार जमानेमें बड़ी सहायता दी थी। फ्रांक देशके महलन-वीस चार्ल्स मार्टेलकी सहायतासे आप जितने भिन्न भिन्न पंथ फैले हुए थे सबको एक करके पोपके अधिकारमें ले आये और कितने ही स्थानोंमें आपने धर्मपीठ स्थापित की। जर्मनीके चर्चको सुधारकर आप गाल देशकी ओर बढ़े। परस्पर युद्धके कारण यहांपर धर्मकी बड़ी दुर्दशा हो रही थी। बड़े यत्नसे आपने धर्मके सब अध्यक्षोंको एकत्र कर यह निश्चय कराया कि सब लोग धर्मकी सेवा भली भांति करेंगे, पोपका अधिकार स्वीकार करेंगे और एकतासे रहेंगे।

अध्याय ५

फ्रांक राज्यकी उत्पत्ति।

इस प्रकारसे पोपका राजनीतिक प्रभाव फैला, यह हम ऊपर दिखला चुके हैं। क्रिस्तान धर्मका जितना प्रचार होता गया उतना ही इनका अधिकार बढ़ता गया। जब पोपका अभ्युदय हो रहा था उसी समय फ्रांकके राष्ट्रको वहाँके कई प्रतापी राष्ट्रनिपुणोंने पुष्ट किया था। हम ऊपर कह आये हैं कि, किस प्रकार महलनवीस चार्ल्स मार्टेलने राज्यका अधिकार अपने हाथमें लिया। इसको भी उन्हीं सब कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। जनका सामना उस समय सभी राजाओंको करना पड़ता था। बड़ी आवश्यकता यह थी कि राजा अपना अधिकार छोटे बड़े सबपर जमा सके। राजाके जो बड़े बड़े धनी और उद्दण्ड कर्मचारी थे वे बड़े बड़े विशप और एब्बट थे, जो सदा राजाके कष्टोंसे और निर्बलतासे लाभ उठाया करते थे, वे सब मर्यादाबद्ध रहें। दो प्रकारके कर्मचारियोंका नाम प्रायः सुना जाता है। एक तो काउंएट और दूसरा ड्यूक। काउंसट जिलोंमें राजाका प्रतिनिधि स्वरूप रहता था। कई काउंएटोंका निरीक्षक ड्यूक होता था। यद्यपि राजाको यह अधिकार था कि जिस समय जिस कर्मचारीको चाहे वह निकाल सकता था, तथापि प्रायः ये कर्मचारीगण जीवनेपर्यन्त अपने अधिकारको बनाये रखते थे। इस प्रकार बढ़ते बढ़ते कर्मचारियोंका अधिकार अपने ही जीवन तक नहीं बल्कि वंशपरम्परागत हो गया। बादको कर्मचारी न रह कर ये लोग स्वयं पृथक् राज्याधिकारी हो गये। यही कारण था कि अपने राष्ट्रको पुष्ट करनेके लिए चार्ल्स मार्टेलको एक्वीटेन, बवेरिया, आलेमेनिया आदिके ड्यूकोंसे युद्ध करना पड़ा, क्योंकि ये चाहते थे कि जिस प्रदेशपर राजाके कर्मचारी रूप ये रक्खे

मुहम्मद साहबका धर्म बड़ा ही सरल है। न इसमें पुरोहितके लिए स्थान है और न उसमें बहुत रीति-रस्म ही है। दिनमें ५ बार मक्काकी ओर मुख करके प्रत्येक सच्चे मुसल्मानको संध्यावन्दन करना चाहिये और साल में एक मासतक रोज़ा (उपवासव्रत) रखना चाहिये। शिक्षित लोगोंको कुरान ग्रन्थ कंठस्थ करना चाहिये। मसजिदमें संध्यावंदन और कुरानका पाठ होना चाहिये। किसी प्रकारकी मूर्तिकी आराधना न करनी चाहिये।

मुहम्मदके पश्चात् मुसल्मान धर्माध्यक्षोंने खलीफाकी उपाधि धारण की। आप अरबकी सेनाओंको एकत्र कर उत्तरकी ओरके प्रदेशोंको विजय करने चले। ये देश ईरानवालोंके थे और कुछ कुस्तुन्तुनिया-के रोमन बादशाहके राज्यान्तर्गत थे। अरबोंकी बड़ी जीत हुई। थोड़े ही दिनोंमें इनका बड़ा साम्राज्य स्थापित हो गया। डेमास्कस इनकी राज-धानी बनी। अरब, ईरान, सीरिया, मिश्र, आदि देशोंपर खलीफ़ाका आधि-पत्य फैला। कुछ सालके अन्दर ही अन्दर अफ्रिकाकी उत्तरी सीमाके किनारे किनारे मुसल्मानोंका राज्य फैलता गया, और संवत् ७६१ (सन् ७०८) में ये स्पेनके मुहानेपर पहुंच गये।

इस समय स्पेनमें पश्चिमीय गाथ लोगोंका जो राष्ट्र था उसमें इतनी शक्ति न थी कि वह अरब लोगों और उत्तरीय अफ्रिकाके प्राचीन निवासियोंका सामना कर सके। कहीं कहीं शहरोंमें इनको रोकनेका यत्न किया गया। पर स्पेनमें इन्हें राज्य जमानेमें कोई कष्ट न हुआ। पहिले तो यहूदियोंने इनकी सहायता की क्योंकि क्रिस्तानोंने इनको बड़ा ही सताया था। इसके अतिरिक्त, जो किसान जमींदारोंके इलाकोंमें काम करते थे उनको इसकी परवाह भी न थी कि किस जातिका मनुष्य जमीं-दार होता था। अरब और उनके सहचर बर्बर जातिवालोंने सं० ७६८ (सन् ७११) में बड़ी भारी लड़ाई जीती और धीरे धीरे इन आगन्तुकोंने सब देशको छा लिया।

सात वर्षके अन्दर ही अन्दर पेरीनीज़ पहाड़के दक्षिणके समस्त

पश्चिमी यूरोप
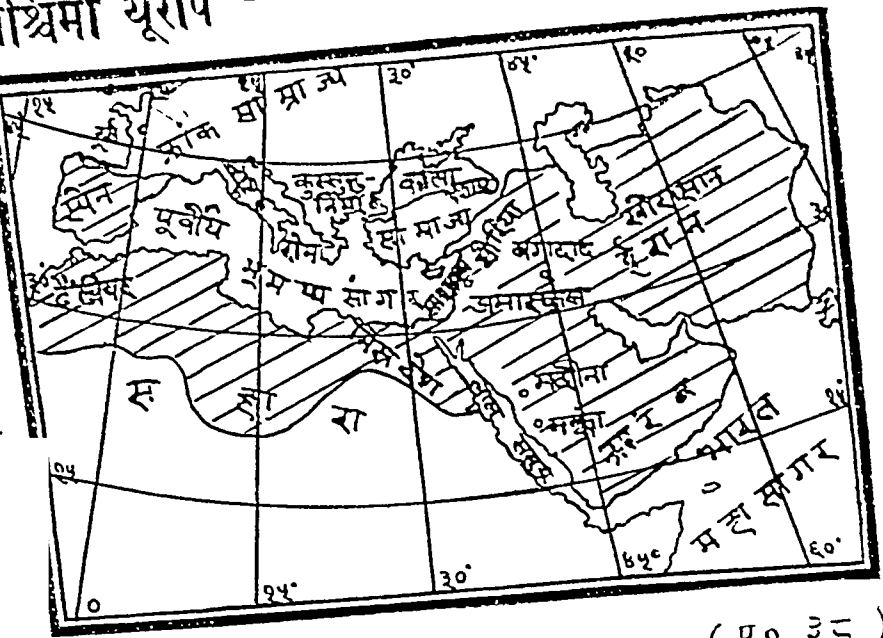
(पृ० ३८)

अरबोंकी विजय

प्रान्तोंके स्वामी मुसलमान हो गये। इसके अनन्तर वे गालकी ओर बढ़े और सीमान्तके एक दो शहर जीत लिये। एक्वीटेनके ड्यूकने इनके रोकनेका बड़ा प्रयत्न किया। किन्तु मुसलमान संवत् ७८६ (सन् ७३२) में बड़ी भारी सेना एकत्र कर बोर्डोमें ड्यूकको हरा कर प्वाटियर्स लेते हुए टूर्स शहरकी ओर बढ़े। इस विपत्तिको सन्मुख उपस्थित देखकर चार्ल्स मार्टेलने आज्ञा दी कि जितने लोग युद्ध करनेके योग्य हैं वे लोग देशकी रक्षाके लिए प्रस्तुत हो जायँ। चार्ल्स मार्टेलने स्वयं सेनापतिका पद ग्रहण किया और टूर्समें मुसलमानोंको पराजित किया। यह युद्ध बड़ा भीषण था और इसमें मुसलमानोंने इतनी गहरी हार खायी कि फिर उन्होंने इस ओरसे यूरोपपर चढ़ाई करनेका साहस न किया।

सं ७९८ (सन् ७४१) में चार्ल्सका परलोक वास हुआ और इसने महल नवीसका पद अपने पुत्र पिपिन और कार्लोमानको दिलवाया। राजा तो सिंहासनपर बैठा था पर सब अधिकार इन्हीं दोनों भाइयोंके हाथमें थे। जो ये चाहते थे कर सकते थे और राजासे भी करा सकते थे। जो कोई इनसे विरोधादि करता था उन सबको इन्होंने दबाया और राज्यके पूर्ण अधिकारी ये ही हुए। पर थोड़े ही दिनोंमे कार्लोमानने संन्यास धारण कर लिया और पिपिन ही राज्यका मालिक हुआ। पिपिनने राजाको निकाल कर स्वयं ही राजाका पद ग्रहण कर लेना चाहा। पर यह कार्य कुछ सरल न था। इस कारण उसने पोपकी सम्मति ली। पिपिनने पूछा, "क्या यह उचित है कि मेरो विन्जियन वंशका ही राजा सिंहासनपर बैठे, जब कि वास्तवमें उसे कोई अधिकार नहीं है" पोपने उत्तर दिया कि, "राष्ट्रमें जिसे अधिकार है वही राजा है और उसीको राजा कहना चाहिये और जिसको अधिकार नहीं, वह राजा नहीं हो सकता।" सारांश यह कि जब पोपने देखा कि पिपिनका विरोध कोई नहीं कर सकता और फ्रांक जातिका इसपर पूरा भरोसा है तो उसने पिपिनको ही राजपदवी लेनेका अधिकार दे दिया। पोप स्वयं लाचार था। इस प्रकारसे अपने सर्दारोंकी

सहायतासे और पोपके आशीर्वादसे सं० ८०९ (सन् ७५२) में कैरोलिंजियन वंशका पिपिन प्रथम राजा हुआ। वास्तवमें कई पीढ़ियोंसे यही वंश राज्य करता चला आया था। उसने केवल राजाकी उपाधिसे अपने नामको विभूषित नहीं किया था, अब उसने यह भी कर लिया और राजसिंहासनपर बैठनेका अधिकारी हो गया।

पिपिनके गद्दी पानेमे पोपकी सहायताके कारण राज्यारोहणकी प्रथामें नये भावका संचार हुआ। अबतक जर्मन जातियोंके राजा केवल सेनाके सर्दार ही होते थे और अपने अनुचर और सहचरकी इच्छासे राजाका पद ग्रहण करते थे। इस विषयमें धर्माध्यक्षोंकी राय नहीं ली जाती थी। केवल उसकी योग्यता, सर्वप्रियता तथा सर्वसाधारणकी सम्मति उसे उस पदपर पहुंचाती थी। परन्तु पिपिनका राज्याभिषेक पहिले सन्त बोनिफेसने किया, फिर पोपने स्वयं किया। इस कारण एक साधारण जर्मन सर्दार दैवी शक्तिसे राज्याधिकारी माना जाने लगा। पोपने घोषणा की "जो कभी भी पिपिनके वंशके विरुद्ध हाथ उठावेंगे उनपर ईश्वरका कोप होगा।" राजाकी आज्ञाका पालन करना प्रजाका धार्मिक कर्तव्य हो गया। चर्चने इन्हें पृथ्वीपर ईश्वरका प्रतिनिधिरूप माना। इसी कारण आजतक लोग यूरोपीय सम्राटों को "ईश्वरकी दयासे राज्याधिकारी" मानते हैं, और चाहे वे कितने ही दुष्ट क्यों न हों उनके विरुद्ध हाथ उठाना पाप समझा जाता है। इस समय पश्चिममें दो सबसे बड़े राज्य थे। एक तो रोमके पोपका और दूसरा फ्रांकके राजाका।

इन दोनों बलवान राष्ट्रोंमें इस समय मैत्री हो गयी थी जिसका यूरोपके इतिहासपर बड़ा प्रभाव पड़ा। क्या कारण था कि पोप लोगोंने कुस्तुन्तुनियाके रोमन सम्राटोंसे अपनी परम्परागत सन्धि तोड़कर इस नये आरोष्ट जातिके राजासे सन्धि की ? ग्रेगरीकी मृत्युके बाद लग भग १०० वर्षतक उनके पदाधिकारियोंने अपनेको कुस्तुन्तुनियाके सम्राटों की प्रजा समझा। उत्तरीय इटलीमें आये हुए लाम्बर्ड लोगोंसे बचनेके

लिए उन्होंने पूर्वीयराष्ट्र हीसे सहायता मांगी। इससे यह प्रतीत होता है कि पोपको पूर्वीय साम्राज्यसे अपने सम्बन्ध तोड़नेकी कोई इच्छा न थी। पर सं० ७८२ (सन् ७२५) में सम्राट् तृतीय लियोने यह आज्ञा दी कि सच्चे क्रिस्तान लोग ईसामसीह और अन्य साधु सन्तोंकी मूर्तियोंका पूजन न करें। इसका कारण यह था कि मुसलमानोंका धर्म चारों ओर फैल रहा था और क्रिस्तानोंको ये मूर्तिपूजक कहकर उनका उपहास करते थे। लियोके हृदय-पर इसका इतना प्रभाव पड़ा कि उसने मूर्तिपूजनके विरुद्ध व्यवस्था दी। उसने आज्ञा दी कि साम्राज्यके गिरजाघरोंमें जितनी मूर्तियां हैं सब हटा ली जायँ और दीवारोंपर बने सब चित्र मिटा दिये जायं। अब चारों ओर देशमें घोर विरोध पैदा हुआ। पश्चिमी क्रिस्तानोंने इस आज्ञाको मानना अस्वीकार किया। पोपने इसका विरोधकर कहा कि धर्मकी परम्परागत रीतियोंके परिवर्त्तनका अधिकार राजाको नहीं है। उसने सभा करके निश्चय कराया कि जो लोग मूर्तियोंका किसी रूपमें अपमान करेंगे वे सर्वधर्मच्युत समझे जांयगे। इसका परिणाम यह हुआ कि मूर्तियां अपने अपने स्थानोंसे हटायी नहीं गयी। यद्यपि लियोका इतना विरोध किया गया तथापि यह आशा बनी रही कि रोमसे लाम्बर्ड शत्रुओंको दूर करनेमें सम्राट् अवश्य सहायता देंगे। परन्तु सं० ८०८(सन् ७५१)मे आइस्टुलफ नाम-के लाम्बर्ड सर्दारने रोमपर दृष्टि उठायी। उसकी इच्छा यह थी कि सम्पूर्ण इटलीको एक राष्ट्र बनाकर रोमको अपनी राजधानी बनाऊं। पोपके लिए यह कठिन समस्या थी। यदि लाम्बर्डलोग अपना राज्य स्थापित करेंगे तो पोप ऐसे बड़े धर्म्माध्यक्षको उनके नीचे बैठना पड़ेगा। इसी कारण आजतक इटलीके सुसज्जित राष्ट्र होनेमें पोप लोगोंने बाधा डाली। जब पूर्वीय सम्राट्ने पोपकी प्रार्थना सुनी-अनसुनी कर दी तब उसने पिपिनकी शरण ली। आल्प्स पहाड़को पार करके वह फ्रांस देशमें गया। पिपिनने उसका बड़ा आदर किया और संवत् ८११ (सन् ७५४) में अपनी सेना सहित इटलीमें जा लाम्बर्ड लोगोंके धावेसे रोमकी रक्षा की।

पिपिनके वापस जानेके उपरान्त ही लाम्बर्ड राजाने फिर रोमपर धावा किया। पोप स्टीफनने पिपिनको लिखा, "यदि आप इस समय यहाँ आकर इस पुरातन और विशाल नगरीको नहीं बचाते हैं और धर्मकी रक्षा नहीं करते हैं तो आपको अनन्तकालतक नरकका कष्ट सहना पड़ेगा, और यदि आप इसकी रक्षा करेंगे तो आपके यश और पुण्यकी दिनों दिन वृद्धि होगी।" इन बातोंका पिपिनपर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। वह इटलीमें फिर आया। लाम्बर्ड लोगोंको जीत कर उसने उनका राष्ट्र अपने राष्ट्रमें मिला लिया। इटलीके जिन जिन प्रदेशोंको इसने लाम्बर्डोंसे जीता था वे पहिले पूर्वीय सम्राट्के अधीन थे। उचित तो यह होता कि वह उन्हें सम्राट्को लौटा देता। किंतु यह न करके उसने उन्हें पोपको दक्षिणा स्वरूप दिया। इससे पोपकी पुरानी सम्पत्तिमें बहुत बढ़ती हुई और मध्य इटलीके बड़े भारी प्रदेशपर इसका राज्य फैल गया। विक्रमकी २०वीं शताब्दीके आरम्भतक इटलीके नक्शेमें मध्य प्रदेश पोपकी सम्पत्ति ही के नामसे लिखा जाता था। पिपिनका शासन बड़ा प्रसिद्ध है। इसके समयमें फ्रांकका राष्ट्र सुदृढ़ हुआ और थोड़े ही दिनों पीछे पश्चिमीय यूरोपपर इसका अधिकार फैला। आधुनिक फ्रांस, जर्मनी, और आस्ट्रिया इसी राष्ट्रसे निकले हैं। इसके अतिरिक्त यह प्रथम अवसर था कि किसी बाहरी राजाने इटलीके राज्यकार्यमें हस्तक्षेप किया हो जिससे भविष्यमें कितने ही फ्रांसीसी और जर्मन राजाओंके मार्गमें संकट उपस्थित हुए। अब पोपके हाथमें एक अच्छी सम्पत्ति आ गयी और बहुत दिनोंतक इसके हाथ रही। पिपिनने और फिर इसके पुत्र शार्लमेन (महान चार्ल्स) ने पोपकी मैत्रीसे केवल भलाई ही देखी। उससे जो बुराई होनेवाली थी उसकी सूचना इनको न थी। राजा और पोपके सम्बन्धका क्या प्रभाव पड़ा यह इतिहाससे भली भाँति विदित हो जायगा।

अध्याय ६

शार्लमेन (महान् चार्ल्स)

अ वतक जितने बड़े व्यक्तियोंका विवरण लिखा गया है उनके विषय-मे इस समय तक लोगोंको बहुत कम परिचय मिला है परन्तु शार्लमेनके बारेमें विविध रूपसे बहुतसी बातें मालूम हुई हैं। उनके मन्त्रीने लिखा है कि, "शार्लमेन देखनेमें बड़ा यशस्वी प्रतीत होता था। चाहे बैठा हो या खड़ा हो, उसके शरीरसे सदा वैभव ही झलकता था। उसका शरीर बड़ा फुर्तीला था। स्थूल होने पर भी घोड़ेकी सवारी, शिकार, खेलने और पैरनेमें वह बड़ा ही चतुर था। अच्छे स्वास्थ्य और शारीरिक स्फुरताके कारण वह अपने साम्राज्य भरमे बराबर दौरा लगाता था। एक स्थानसे दूसर स्थान पर धावा करनेके लिये ऐसी शीघ्रतासे जाता था कि जिसका विचार करते समय मनुष्यकी बुद्धि चकित हो जाती है।"

चार्लस कुछ विशेष विद्वान् न था परन्तु इसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। औरोंसे पढ़वाकरके वह पुस्तकें सुनता था और बड़ा प्रसन्न होता था। लैटिन भाषा तो बोल हा सकता था परन्तु ग्रीक भी समझता था। पिछली अवस्थामें उसने लिखना सीखनेकी प्रयत्न किया था परन्तु केवल अपना नाम मात्र ही लिखना सीख सका। यद्यपि वह स्वयं लिख पढ नहीं सकता था तथापि वह अपनी सभामे बड़े बड़े द्विवानोंको निमन्त्रित करता था और उनकी विद्यासे अपने काममें सहायता लेता था। साम्राज्यमें लड़के और लड़कियोंके पढानेके लिये उसने बड़ा यत्न किया था। इसके अतिरिक्त अपने राज्यको सर्वांग सुन्दर बनानेके लिये वह बड़े बड़े विशाल भवनोंके बन-वानेमे सदा तत्पर रहता था। एक्सला शापेलके विचित्र गिरिजाघरको इसीने

बनवाया था । और कितने ही पुल, इमारतें, प्रासाद इत्यादि इसके बनवाये हुए अबतक भी मिलते हैं । इसके विलक्षण कार्योंका उस समयके नरनारियोंके चरित्र पर इतना प्रभाव पड़ा कि इसके बारेमें बड़ी बड़ी कथायें चिरकालतक चारों ओर प्रचलित रहीं । यह एक अवतारके समान माना जाने लगा, इसके साथियों, सहायकों और सिपाहियोंकी बहुत अद्भुत कहानियां प्रचलित हो गयीं । इसके सम्मानार्थ कितनी ही कवितायें लिखी गयीं । सत्यासत्य कथायें तो बहुत फैलीं परन्तु वास्तवमें भी शार्लमेनका राज्य प्रशंसाके योग्य था । इसकी गणना सबसे बड़े वीरोंमें है । यूरोपको नवीन मार्गसे ले जानेवाले मनुष्योंमेंसे यह भी एक है । प्रथम तो यह बड़ा प्रतापी विजयी राजा था जो देश देशान्तर जीतने गया । उसने राज्य शासन सम्बन्धी नयी नयी संस्थाओंका स्थापन किया । इसके अतिरिक्त उसने विद्याकला कौशलादिकी भी बहुत उन्नति की थी ।

शार्लमेनकी इच्छा थी कि जर्मन जातियोंके सभी लोग एक क्रिस्तानी साम्राज्यमें सम्मिलित हों । इस आदर्शकी पूर्तिमें उसने बड़ी सफलता पायी थी । आधुनिक जर्मनीका बहुत थोड़ा अंश पिपिनके राज्यमें सम्मिलित था । फ्रीसिया और बावेरियाके लोग क्रिस्तान हो चुके थे । उनके सर्दारगण फ्रांकके राजाको अपना सम्राट् मानने लगे थे । परन्तु इन दोनों देशोंके बीचमें साक्सन जातियां थीं, जो कि अपने पुरातनधर्म और रीतियों ही का पालन करती थी । इनके देशमें न नगर थे और न मार्ग ही थे । इसलिये इनको जीतना बहुत कठिन था । जब ये जातियां अपने शत्रुओंको जीत नहीं सकती थीं तो अपना माल असबाब लेकर जंगलोंमें भाग जाती थीं । जबतक इनका पराजय न की गयी तबतक फ्रांक्क राष्ट्रको सदा डर बना रहा, इस कारण फ्रांक्क राजाओंके लिये इन्हें जीतना आवश्यक हुआ । शार्लमेनने इस कठिन कार्यको अपने हाथमें लिया । कई वर्षोंतक वह साक्सन जातियोंके जीतनेके उद्योग में लगा रहा । इस कार्यमें राजाको चर्चकी भी बड़ी सहायता मिली

थी। सम्भव है यदि यह सहायता न मिली होती तो शार्लमेनको सफलता भी न प्राप्त होती।

चर्चका प्रभाव शार्लमेनके ऊपर कितना था और किस प्रकार धर्मके नामसे वह अपना कार्य करना चाहता था यह इतनेहीसे मालूम हो सकता है कि जब जब साक्सन जातिमें बलवा होता था तब तब वह उनकी पराजय करता था। उनसे वह चर्चका सदा आदर करने और क्रिस्तान धर्ममें सम्मिलित रहने तथा सदा राज भक्त बने रहनेका वादा कर लेता था। उसने गिरिजाघर और किला अर्थात् धर्म गृह और राष्ट्रगृह साथ ही साथ बनवाया था। वह राजविद्रोही तथा धर्म-विद्रोही दोनोंको एकही प्रकारका प्राणदण्ड देता था। धर्म विहित व्रतादिके विरुद्ध आचरण करनेवालोंको भी वह कठिन दण्ड देता था। वह अपने पुराने वृक्ष, मूर्ति, आदिके भजनमे तत्पर लोगोंको भी दण्ड देता था।

पुरोहितोंके स्थान और भोजन वस्त्रादिका भी प्रवन्ध आसपासके पड़ोसियोंको ही करना पड़ता था। इन सब बातोंसे यूरोपके मध्य युगकी प्रधान विशेषता भली भांति देखी जाती है। युगका आदर्श यही था कि संसारके प्राणियोंके आचार-विचार, शासन-पद्धति आदिमें राष्ट्र और पारलौकिक धर्मकी समता है। इन दोनोंको साथही साथ चलना चाहिये। यदि कोई धर्म मार्गसे च्युत होता था तो उसका अपराध राज-द्रोहके बराबर समझा जाता था। यद्यपि राष्ट्र और चर्चमें बहुत विरोध हुआ करता था तथापि उस समयके लोगोंके हृदयमें यह विचार कदापि न आया कि इन दोनो संस्थाओंके साथ साथ चले विना भी मनुष्यका कार्य्य चल सकता है। राज-कर्मचारी और धर्म-कर्मचारी भी मानते थे कि हम एक दूसरेके विना कुछ नहीं कर सकते।

फ्राङ्कलोगोंके आक्रमणके पहिले साक्सन लोगोंके देशमें कोई नगर नहीं थे। परन्तु अब विशप की गद्दी और धर्म शालाके कारण बहुतसे

की ध्वनि होने लगी। उस समय शार्लमेनने यह कहा कि 'मैं इस बातसे बड़ा चकित हूं, मुझको इसका लेशमात्र भी ध्यान न था कि पोप ऐसा अन्याय करेंगे ।''

एक पुरातन इतिहास वेत्ताने लिखा है कि इस समय सम्राट्का नाम पूर्वके ग्रीक साम्राज्यसे भी उठ गया था क्योंकि वहाँ एक आयरीनी नामकी भयंकर स्त्री राज्य करती थी। इसलिए पोप लियोको और अन्य धर्म धुरन्धरोंको यह उचित मालूम हुआ कि चार्ल्सको साम्राट्की पदवी दी जाय। इसके हाथमें इटली, गाल जर्मनी इत्यादिके अतिरिक्त रोम भी था, जहाँ पूर्व कालमें बड़े बड़े रोम सम्राटोंने राज्य किया था। इससे यही स्पष्ट होता है कि जिस ईश्वरने इन बड़े बड़े प्रदेशोंको यहाँतक कि रोमको भी, इनके अधीन किया उसीने सम्राट्की पदवी और क्रिस्तान धर्म तथा उनके अनुयायियोंकी रक्षाका भार भी इन्हींको दिया।

सन्त पीटरके गिरजा घरमें हुई इस घटना का बड़ा प्रभाव यूरोपके इतिहासपर पड़ा। पोपके इस कार्यसे चार्ल्स (शार्ल) जो पहिले केवल फ्रांक और लाम्बर्ड जातियोंका राजा मात्र था अब रोमका सम्राट् हुआ। पूर्वीय साम्राज्य और पोपसे झगड़ा चला ही आता था, क्योंकि मूर्ति पूजनके विरुद्ध पूर्वीय सम्राटोंने आदेश दिया। पश्चिममें मूर्ति पूजनका नियम था इसके अतिरिक्त जिस समयकी यह घटना है उस समय पूर्वी राज्य सिंहासनपर एक दुष्ट दुराचारिणी और कठोर हृदया स्त्री राज्य कर रही थी। इसने अपने ही पुत्रके नेत्रोंको निकलवाकर उसे राज्यसे च्युत कर दिया था। प्रथम तो स्त्रियोंको राजा माननेका नियम ही न था, दूसरे, जो स्त्री राज्य कर रही थी, आदर योग्य न थी, तीसरे, मूर्ति पूजनके विषयमें पश्चिम और पूर्वमें बड़ा मतभेद था और चौथे, किसी प्रकारकी सहायता न तो रोम साम्राज्यसे और न अन्यत्र कहींसे मिलनेकी आशा ही थी। इन सब कारणोंसे पोपके लिए हर प्रकारसे यह अवसर था कि परम प्रभावशाली तेजस्वी, बलवान, चार्ल्स हीको राजा बनावें।

इस प्रकार और सन्त पीटरके प्राचीन गिरजेमें ईसामसीहकी जयन्तीके दिन क्रिस्तान धर्मके नामपर धर्मके अनुयायियोंकी ओरसे राज्याभिषेक करनेमें जो कुछ विरोध हो सकता था वह सब रुक गया।

अब जो साम्राज्य स्थापित हुआ वह यद्यपि नवीन था तथापि आगस्टस हीके बनाये हुए रोमन साम्राज्यको परम्परागत साम्राज्य समझा जाने लगा। पूर्वीय साम्राज्यके जिस छठे कांस्टन्टाइनको आयरीनी नामी एक स्त्रीने राज्यच्युत किया था उसीका पदाधिकारी शार्लमेन समझा जाने लगा। परन्तु यह साम्राज्य कितना ही क्यों न पुराने रोमसे सम्बद्ध किया जाय यह तो मानना ही होगा कि यह साम्राज्य पूर्ण रूपसे अनोखा था। प्रथम तो पूर्वीय साम्राज्य जैसाका तैसा ही बना रहा। कितनी ही शताब्दियोंतक वहाँके सम्राट् अलग ही राज्य करते रहे, इसके अतिरिक्त शार्लमेनके पश्चात् जो सम्राट् हुए वह प्रायः इतने कमजोर थे कि जर्मनी, उत्तरीय इटली आदिपर अपना राज्य नहीं जमा सकते थे। अन्य देश तो दूर रहे। तथापि जो यह साम्राज्य पश्चिमीय साम्राज्यके नामसे स्थापित हुआ था, जिसका नाम १३ वीं शताब्दीमें 'पवित्र रोमन राष्ट्र' (होली रोमन एम्पायर) हुआ, एक सहस्र वर्षतक स्थायी रहा। संवत् १८६३ (सन् १८०६) में जब नेपोलियनका प्रभाव चतुर्दिक्में फैल रहा था, उस समय अन्तिम सम्राट्ने इस पदवीका परित्याग कर दिया। यह केवल पदवी ही मात्र थी। न इस सम्बन्धमें कोई कर्त्तव्य थे और न अधिकार। यह साम्राज्य धर्मके नामसे स्थापित हुआ था इसी कारण इसका नाम पवित्र पड़ा, और पुराने रोमन राष्ट्रसे इसका परम्परागत सम्बन्ध समझे जानेके कारण ही इसे रोमन राष्ट्रकी उपाधि मिली। १६ वीं शताब्दीमें प्रसिद्ध फ्रान्सीसी लेखक वाल्टेयरने इसका परिहास करते हुए कहा है कि इसका नाम "पवित्र रोमन राष्ट्र" इस कारण पड़ा कि न तो यह पवित्र था, न रोमन था और न राष्ट्र ही था।

इस प्रकारसे सम्राट्की पदवी प्राप्त करनेसे जर्मनीके भावी राजाओंको

बड़ी दुर्दशा हुई। इन्हें कितनी ही बार इटलीपर अपना आधिपत्य जमानेके लिए निष्फल यत्न करना पड़ा। फिर जिस विशेष अवस्थामें शार्लमेनका राज्याभिषेक हुआ उससे भावी पोपाको यह कहनेका अवसर प्राप्त हुआ कि, "हमहीने तो राजाको सिंहासनपर बैठाया है, और जब हम चाहें उनको राज्यच्युत कर सकते हैं।" इन सब वादविवादोंके कारण इनमें परस्पर युद्ध होता रहा और वैमनस्य बना रहा।

इतने बड़े साम्राज्यका शासन करना चार्ल्स ऐसे विचित्र और विचक्षण बुद्धिवाले राजाके लिए भी कठिन था, उसके उत्तराधिकारी तो इसको सम्भाल ही नहीं सकते थे। वही कठिनाइयां फिर फिर आती थीं, एक तो राजनिधि (कोश) बहुत थोड़ी थी दूसरे कर्मचारियोंके ऊपर पूरा दबाव न हो सकनेके कारण वे स्वतन्त्र होने लगते थे। जिस जिस प्रकारसे शार्लमेनने अपने बृहत् साम्राज्यके कोने कोनेतक अपने प्रभावको पहुँचाया था उसीसे वह नीतिशास्त्र निपुण कहा जाता था। इस समय राजाकी आय अपनी ही विशेष सम्पत्तिसे होती थी। कर लगानेका साधारण नियम न था, इस कारण जितने इसके इलाके थे उनका प्रबंध वह भली भाँति करता था। वह इस बातका विचार रखता था कि जितना जमीन्दाराना हक हो सो उसे मिले।

फ्रांक राजा काउण्ट नामके कर्मचारियोंपर ही प्रायः राज्य कार्यके लिए भरोसा रखते थे, राज्यमें शान्ति रखना, न्यायका प्रचार करना, और आवश्यकता पड़नेपर राजाके लिए सेना तैयार करना उन्हीं काउण्टोंका काम था। सीमापर सीमाके मार्च काउण्ट (मारग्रेव) कहे जाते थे। काउण्ट मारग्रेव अथवा मारक्विस ड्यूक आदि उपाधियां अब भी यूरोपके सरदारोंमें हैं, यद्यपि उपाधिके कारण उनके सपुर्द कोई राज-कार्य नहीं है। तथापि कहीं कहीं उनको धर्म परिषदोंके श्रेष्ठ विभागमें बैठनेका अधिकार मिलता है।

इन काउन्टोंपर निरीक्षण करनेके लिये शार्लमेनने मिसी डोमिनिसी नामके कर्मचारी नियुक्त किये थे, जो भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें समय समयपर

भेजे जाते थे। ये सब कार्योंका निरीक्षण करके अपने विवरणको राजाके पास भेजते थे। ये कर्मचारी साथ भेजे जाते थे, एक बिशप (धर्माध्यक्ष) और साधारण पुरुष, जिससे कि ये दोनों एक दूसरेको रोक सकें। प्रति वर्ष इनके निरीक्षणका स्थान बदल दिया जाता था और इनसे यह सम्भावना न थी कि ये स्वयं किसी स्थानके काउण्टसे मिल जायंगे।

पश्चिमीय रोमन साम्राज्यकी स्थापनासे शार्लमेनकी शासन पद्धतिमें कोई परिवर्तन न हुआ, केवल उसने इतना और किया कि जितनी उसकी प्रजा १२ वर्षसे अधिक वय की थी उसने उनसे राजभक्त होनेकी शपथ करायी। प्रतिवर्ष वसन्त अथवा ग्रीष्ममें वह अपने सरदारों और पुरोहितोंकी सभाएं करता था जहाँ साम्राज्यकी उन्नति और अन्य विषयोंपर विचार होता था। उसने अपने सलाहकारोंकी रायसे "कापी तुलरी" नामके कई नये कानून भी बनाये थे। धर्म्म सम्बन्धी आवश्यकताओंपर बिशप और एबटसे सदा राय लिया करता था, और विशेषकर वह इस चिन्तामें रहता था कि प्रत्येक श्रेणीकी शिक्षाके लिए समुचित प्रबन्ध किया जाय। शार्लमेनके इन सुधारोंसे ही उस समयके यूरोपकी दशा भली भाँति प्रतीत होती है और यह भी ज्ञान होता है कि ४०० वर्षकी हलचलके पश्चात् शार्लमेनने किस प्रकारसे राष्ट्रको फिरसे सुसज्जित किया। ऊपर कहा जा चुका है कि थियोडोरिकके बाद विद्याकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। शार्लमेन इस समयका प्रथम राजा था जिसने फिरसे विद्याके प्रचारका यत्न किया। पहिले मिश्रदेशसे यूरोपमें ताड़ पत्र आया करता था जिनपर ग्रंथ लिखे जाते थे। सातवीं शताब्दीमें मिश्रमें अरबनिवासियोंका राज्य हो जानेके कारण ताड़ पत्रका आना बन्द हो गया और अब केवल पतले चमड़ेकी पटियाही (पार्चमेण्ट) लिखनेके लिए रह गयीं। इसका मूल्य बहुत था। वह यद्यपि ताड़ पत्रसे अधिक स्थायी थीं तथापि अधिक मूल्यवान् होनेके कारण पुस्तकोंकी नकलें कम हो गयीं। शार्लमेनके राज्याभिषेकके पश्चात्के लेखक लिखते हैं कि, "उसके पहिलेके १०० वर्ष घोर अन्धकारमय थे। लिखना

पढ़ना सब लोग भूल गये थे और चारों ओर अविद्या छायी हुई थी' पर आगे चलकर बड़ी उन्नतिकी आशा होने लगी । धर्म सम्बन्धी सब क और धर्माध्यक्षोंके आपसके पत्र व्यवहार सब लातीनी भाषामें होते थे, इस लातीनी भाषाके लोप हो जानेका भय न था । अंजीलमें लि धर्म्म सम्बन्धी उपदेश और कर्मकाण्ड भी लातीनी भाषामें होने कारण उस भाषाका ज्ञान योंही प्रचलित हो गया था । चर्चके लि आवश्यक था कि पुरोहितोंको कुछ न कुछ अवश्य ही शिक्षा दी जाय जिससे कि वे अपने कर्त्तव्योंका पालन भली भांति कर सकें । इस कार सभी यूरोपीय देशोंके सब उच्च पदाधिकारी लातीन पढ सकते थे । इस अतिरिक्त रोम राष्ट्रका महत्व और उसके साहित्यकी परम्परागत चर्चा ब ही थी । जिसका कुछ न कुछ ज्ञान चारों ओर फैला हुआ था । औ कुछ नहीं, तो शास्त्रोंके नाम तो ये लोग जानते ही थे । गणित त ज्योतिष आदिका जानना त्यौहारोंका दिन निकालनेके लिए आवश्य था । शार्लमेनने देखा कि टूटी फूटी शिक्षा ठीक नहीं है । जिस सम कुछ धर्मशालाओंके अध्यक्षोंने इनकी वृद्धि और यशका अभिनन्दनप अशुद्ध भाषामें लिखा उसने तो उत्तरमें धन्यवाद प्रकट करते हु लिखवाया था "कि यद्यपि आपकी मनोकामना और शुभचिन्तनोंसे मैं ब सन्तुष्ट हूं तथापि यह कहना बड़ा आवश्यक है कि आपकी भाषा कर्ण-क और अशुद्ध है । इस कारण आप सब लोगोंको उचित है कि विद्यो उपार्जनमें विशेष ध्यान दें, जिससे केवल आपके भाव ही शुद्ध न हों किन्तु भावोंको प्रकट करनेवाली भाषा भी शुद्ध हो । दूसरे पत्रमें आप लिखे है कि मैंने यथा शक्ति यत्न किया कि विद्याका पुन: प्रचार हो, क्योंकि हम लोगोंके पूर्वजोंने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था । इसी कारण विद्याकी हीन दशा हो गयी है, अब मेरा सब लोगोंसे प्रार्थना है कि विद्याक ह्रास न होने पावे । इस विचारसे जिन धर्म पुस्तकोंको कातिबों लेखकोंने भ्रष्ट कर रक्खा था उन्हें मैंने शुद्ध कराया है ।"

शार्लमेनका विश्वास था कि अपने ही कर्मचारियोंके लिए नहीं किन्तु सर्व साधारणके लिए कमसे कम प्रारम्भिक शिक्षाका प्रबन्ध करना उनका कर्तव्य है इस कारण उन्होंने कलर्जी पुरोहितोंको संवत् ८४६ (सन् ७८६) में आज्ञा दी कि अपने पड़ोसके सब जातियोंके लड़कोंको एकत्र करके उन्हें पढ़ना लिखना सिखलाओ। यह तो कहना बड़ा कठिन है कि कितने धर्माध्यक्षोंने इस आदेशका पालन किया था परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि कई स्थानोंमें विद्यापीठ स्थापित हुए थे। शार्लमेनने "प्रासाद पाठशाला" भी स्थापित की थी, जिसमें अपने और सर्दारोंके लड़कोंके लिए शिक्षाका प्रबन्ध किया था। इस पाठशालामे उसने दूर दूर देशोंसे शिक्षा देनेके लिए प्रसिद्ध विद्वानोंको बुलाया था।

शार्लमेनका इस बातपर विशेष ध्यान रहता था कि जिन पुस्तकों-की नकल की जाय वे शुद्ध हों। इस कारण उसने अपने शिक्षा सम्बन्धी आज्ञा पत्रमें कहा है कि, धर्म-सम्बन्धी जितने शब्द, चिन्ह और पुस्तकें हैं सब शुद्ध रीतिसे लिखीं जायँ। यदि ईश्वरकी उपासनाकी जाय तो शुद्ध शब्दोंमें की जाय। बालकोंको कुशिक्षा देना बड़ा ही अनुचित है। सुशिक्षित लोगोंहीसे पुस्तकोंकी नकल करानी चाहिये यह सब बहुत ही छोटी बात विदित होती है। प्रायः इसे लोग अनावश्यक भी समझें, परन्तु बहुत दिनोंतक विद्याके लोप होनेके पश्चात् उसके उद्धार करनेके समय यह आवश्यक है कि वे वर्तमान पुस्तकोंको भली भाँति शुद्ध करके नवीन विद्याका प्रचार करें।" प्राचीन यूनान और रोमके शास्त्रोंके उद्धारका यत्न तो इसने नहीं किया परन्तु लातीनी भाषाकी शिक्षाके प्रचारमें वह अवश्य सफल मनोरथ हुआ।

इतिहासके पढ़ने वाले प्रायः यह कहेंगे कि शार्लमेनने जो इतना यत्न किया सब व्यर्थ था क्योंकि इनके बाद कई सौ वर्षोंतक कोई बड़ धुरन्धर विद्वान या पण्डित नहीं हुए। एक पक्षमें यह ठीक कहा जा सकता है। क्योंकि शार्लमेनके साम्राज्यका थोड़े ही दिन पीछे नाश

हुआ। छोटे छोटे नेता बहुतसे निकले जिन्होंने पृथक् पृथक् अपना राज्य स्थापित किया और जो किसी सम्राटका अधिकार नहीं मानते थे। ऐसी उथल पुथलके समय जहाँ चतुर्दिश मार काट हो रही है, विद्याका प्रचार होना बड़ा कठिन है। यद्यपि उस समय विद्वानोंके लिए शान्ति पूर्वक सरस्वती की उपासना करना असम्भव था तथापि शार्लमेनने जो कुछ किया उसकी प्रशंसा इस बातसे कम नहीं हो सकती कि आगे चलकर कुछ दिनों तक उसका फल नहीं दीख पड़ा। प्रत्युत शार्लमेनका महत्व उसकी राज्य निपुणता और कला कौशलप्रियतादि गुण यूरोपके बड़े बड़े सम्राटोंमे भी उसे उच्च पद दिलवाते हैं। यदि उसके कार्यके चलानेके लिए योग्य कर्मचारी और पदाधिकारी न मिले तो दोष इन पदाधिकारियोंकाही है, शार्लमेनका नहीं। अराजकताके समय इसने सुसज्जित राष्ट्र तैयार किया था। बाहरी शत्रुओंसे बचानेके लिए इसने बड़ा प्रबन्ध किया और सबसे बढ़कर घोर अन्धकारमय यूरोपमें विद्याका उद्दीपन किया था।

अध्याय ७

शार्लमेनके साम्राज्यका बटवारा ।

शार्लमेनके मरणोपरान्त यूरोपके सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि अब उसका बड़ा साम्राज्य संयुक्त रहेगा या विभक्त । स्वयं शार्लमेनको यह आशा न थी कि साम्राज्य अविभक्त रह जायगा क्योंकि संवत् ८६३ में उसने अपने तीनों लड़कोंमें अपना साम्राज्य बांट दिया था। इसपर आश्चर्य होता है क्योंकि शार्लमेनका एक मात्र यह उद्देश्य था कि अपने जीवनमें साम्राज्य विभक्त होकर एक ही मे रहे परन्तु सम्भव है कि फ्राक जातिमें परम्परागत यह नियम था कि धन सब पुत्रोंको बराबर मिले। सम्भव है कि शार्लमेनने इस नियमके विरुद्ध जाना अनुचित समझा हो। इस कारण केवल एक ही पुत्रको सारा राज्य उसने न दिया। अथवा उसने विचार किया हो कि इतना बड़ा राष्ट्र वास्तवमें एक ही राजाके हाथमें नहीं रह सकता। जो कुछ हो। उसके तीनों लड़कोंमेंसे प्रथम दोका शीघ्र ही देहान्त हो-गया और सबसे छोटा लुई सर्व राष्ट्राधिकारी हुआ। फ्राङ्क राष्ट्र और रोमन राष्ट्र दोनोंका स्वामी लुई हुआ। इतिहासने लुईको "पुण्यात्मा" की उपाधि प्रदानकी है। लुईने थोड़े ही दिन राज किया था कि उसका यह विचार हुआ कि राज्यका बटवारा अपने लड़कोंमें किस प्रकार करूं कि आपसका झगड़ा मिट जाय। लड़के उसके बड़े उत्पाती थे, राज विद्रो-हका झंडा बार बार उठाया करते थे। तब राजाने घबड़ाकर राज्यका बटवारा कर दिया। पर इससे कुछ भी शान्ति न हुई।

संवत् ८९७ (सन् ८४०) मे लुईके मरनेके पश्चात् उसके द्वितीय पुत्र जर्मन

लुईने बावेरिया प्रदेशको अपने हाथमें कर लिया और समय समयपर जितने प्रदेश जर्मनीमें सम्मिलित थे सब उसे अपना राजा जानने लगे। कनिष्ठ पुत्र गञ्जा चार्ल्स पश्चिमी फ्राक देशीय अंशका राजा था। ज्येष्ठ पुत्र लोथेयरको इटलीका राज्य और इन दोनों भाइयोंके बीचके प्रदेशोंका राज्य तथा सम्राट्की उपाधि मिली थी। इन लोगोंकी आपसमें जो वर्डुनकी सन्धि हुई थी वह यूरोपीय इतिहासमें बड़े महत्वकी घटना है। सुलह होनेके पहिले जो आपसमें सलाह मशोवरे हुए थे उससे यह भली भांति प्रतीत होता है कि तीनों भाइयोंने आपसमें निश्चय कर लिया था कि इटली लोथेयरको, आर्कीटेन चार्ल्सको, और बावेरिया लुईको मिले इसमें कोई झगड़ा न था। साम्राज्यके बाकी प्रदेशोंके बारमें विपरीत मत था। यह तो उचित ही था कि ज्येष्ठ भ्राताको सम्राट्की उपाधिके साथ ही साथ इटली, मध्यवर्ती फ्राकीय प्रदेश, और एक्स-ला-शपेलकी राजधानी मिले। इससे रोमसे लेकर उत्तरीय हालैंडतक एक ऐसा बलिष्ठ राज्य बनाया गया था कि जिसमें भाषा अथवा आचारकी समता न थी। जर्मन लुईको बावेरियाके अतिरिक्त लाम्बर्डीके उत्तरका तथा राइनके पश्चिमका प्रदेश भी मिला था। चार्ल्सको आधुनिक फ्राक तक प्राय: पूरा अंश मिला था। साथ ही साथ उत्तरमें फ्लान्डर्स और दक्षिणमें स्पेनका उत्तरीय सीमान्त प्रदेश भी मिला था।

संवत् ९०० (सन् ८४३) की वर्डुनकी सन्धिकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसी समयसे पश्चिमी और पूर्वी फ्राक राष्ट्रका भेद भली भांति दिखायी पड़ने लगा। यही पश्चिमी प्रदेश आगे चलकर फ्राक, और पूर्वीय देश जर्मन होने वाले थे। गञ्जे चार्ल्सके राज्यमें जो भाषायें साधारण रीतिसे बोली जाती थीं वह सब लातीनसे निकली थीं, और आगे चलकर प्रौढ़ फ्रान्सीसी भाषा होने वाली थी। जर्मन लुईके राज्यमें भाषा और प्रजा जर्मन थी। इन दोनों राज्योंका मध्यवर्ती प्रदेश जो लोथेयरके हाथमें आया था वह लोथेयरके राज्यके ही नामसे प्रसिद्ध

हुआ। इसीसे लोथरिंगिया और फिर लोरेन नाम निकला है। यह स्मरणीय बात है कि इसी मध्य प्रदेशके लिए कितनी ही बार फ्रांस और जर्मनीमें युद्ध हुआ, और वह युद्ध आजतक नहीं मिटा॥

एक बात और स्मरण रखने योग्य है कि फ्रांस और जर्मन भाषामें जो भेद आरम्भ हो चुका था उसका एक उदाहरण निम्न लिखित घटनाओंसे मिलता है। संवत् ८९९ (सन् ८४२) में जब वर्डूनकी सन्धि होने ही वाली थी उसीके पहिले दोनों छोटे भाइयोंने सर्व साधारणके सामने एक विशेष रूपसे यह प्रतिज्ञा की कि हम दोनों एक दूसरेको ज्येष्ठ भ्राता लोथेयरके आक्रमणसे बचावेंगे। पहिले दोनों भाइयोंने अपने अपने सिपाहियोंको पृथक् पृथक् कर उन्हींकी भाषामें व्याख्यान दिये जिसमें कहा कि, "यदि मैं अपने भाईको त्याग दूं तो तुम लोग हमें भी त्याग देना" इसके उपरान्त लूईने उस समयकी फ्रान्सीसी भाषामें तथा चार्लसने उस समयकी जर्मन भाषामें शपथ खायी, जिससे कि एक दूसरेके सिपाही इन्हें समझ सकें। इस शपथकी भाषा परीक्षाके योग्य है, अबतक फ्रान्सीसी या जर्मन भाषा लिखी नहीं जाती थी। क्योंकि वे स्वयं नितान्त बाल्यावस्थामें थीं, जितने लोग लिखनेकी शक्ति रखते थे, वे अपनी मातृ भाषामें न लिखकर लातिन हीं में लिखा करते थे। इन्हीं तुच्छ प्राकृत भाषाओंसे आज विशाल सर्वसम्मानित फ्रान्सीसी और जर्मन भाषाएं निकली हैं॥

संवत् ६१२ (सन् ८५५) में जब लोथेयरका देहान्त हुआ तो वह अपने राष्ट्र अर्थात् इटली तथा मध्य प्रदेशको अपने तीनों लड़कोंके लिए छोड़ गया। पर संवत् ६२७ (सन् ८७०) तक इनमेंसे दोनों भाइयोंका देहान्त हो गया, उनके दोनों चाचा गञ्ज चार्लस और लूईने चुपचाप मध्य प्रदेशको अपने हाथमें ले लिया। और उसका बंटवारा आपसमें मर्सैनकी सन्धिके अनुसार कर लिया। लोथेयरके अवशिष्ट पुत्रको तो उन्होंने इटलीका राज्य तथा साम्राट्की पदवी दी। वस्तुतः एक सौ वर्ष तक

सम्राट्की पदवी केवल नाम मात्र की थी। उसका अधिकार कुछ न था। इस सन्धिका फल यह हुआ कि पश्चिमी यूरोप तीन बड़े खंडोंमें विभाजित हो गया। वे इस समयमें फ्रांस जर्मनी, इटलीके बड़े राष्ट्रोंका रूप धारण किये हुए हैं।

जर्मन लूईका उत्तराधिकारी उसका बेटा मोटा चार्ल्स था। संवत् ९४१ (सन् ८८४) में गञ्जे चार्ल्सके सब पुत्र पौत्रोंकी मृत्यु हो जानेसे उनके वंशका प्रतिनिधि केवल एक पांच वर्षका लड़का रह गया था। पश्चिमी फ्रांकीय राष्ट्रके महाजनोंने मिलकर मोटे चार्ल्सको राजा बनानेके लिए निमन्त्रित किया। इस प्रकारसे शार्लमेनका पूरा राज्य फिर थोड़े दिनोंके लिए एक ही राजाके अधीन हुआ।

मोटा चार्ल्स अपनी स्थूलताके कारण सदा बीमार रहता था, अपने बड़े और विस्तृत साम्राज्यके शासन और रक्षामें सर्वथा असमर्थ था। उत्तरीय खंड निवासी नार्मन लोग जब साम्राज्यपर आक्रमण करने लगे तो इसने अपनी बड़ी कायरता प्रकट की। जिस समय पारिसका काउण्ट ओडो इसके विरुद्ध अपने नगरकी रक्षा करनेके लिए बड़ी वीरतासे यत्न कर रहा था उस समय राजाने उसकी सहायताके लिए अपनी सेनाको न भेज कर शत्रुओंको बहुत सा धन दे उनसे हट जानेकी प्रार्थना की। इसके उपरान्त बरगंडीमें वास करनेके लिए उन्हें इजाजत दी गयी। जहाँ उन्होंने मन माना लूट मार मचाना आरम्भ किया। इस प्रकार घृणित और लज्जास्पद कार्य करनेसे पश्चिमके फ्रांकीय महाजनगण बहुत कुपित हुए और उसके भतीजे वीर आर्नुल्फ़के साथ उन सबोंने मोटे चार्ल्सको राज्यसे च्युत करनेका षड्यन्त्र रचा। संवत् ९४४ (सन् ८८७) में वह राज्यसे हटा दिया गया। आर्नुल्फ़ राज-सिंहासनपर बैठा और उसने सम्राट्की उपाधि धारण की। परन्तु वह अपना अधिकार [illegible] राज्यपर न जमा सका इसलिए साम्राज्यमें नाममात्रकी भी एकता न रही। बहुतसे छोटे छोटे राज्य स्थापित हो गये। जैसे मनुष्य

के हृदयकी दुर्वलताके साथ ही साथ सब अंग शिथिल होने लगते हैं उसी प्रकार जब राष्ट्रका हृदयस्वरूप राजा ही बल हीन होने लगता है तब राष्ट्रके सब अंगोंका शिथिल हो जाना साधारण था, जहां जो बलवान होता है वह स्वतन्त्र राजा बन बैठता है। इसी प्रकार मोटे चार्ल्सके ही समयसे साम्राज्यके भिन्न २ प्रदेशोंमें छोटे छोटे राज्य उत्पन्न होने लगे। इनमेंसे कुछ तो सीधे राजाकी पदवी लेने लगे और अन्य लोग केवल अधिकार हीसे सन्तुष्ट रहे।

जिन जर्मन जातियोंको शार्लमेनने बड़े यत्नसे अपने राज्यमें सम्मिलित किया था, वे सबके सब स्वतन्त्र होने लगे। इस प्रकारके राष्ट्र-विप्लवका सबसे अधिक बुरा प्रभाव इटलीपर पड़ा।

शार्लमेनके साम्राज्यपर जो आपत्ति आयी उसके कई कारण थे। सबसे पहला कारण तो यह था कि उसके उत्तराधिकारी इतने योग्य न थे कि वे उसके राष्ट्रकी रक्षा कर सकें। ऐसे समयमें जब आधुनिक रूपसे राष्ट्रको सुसज्जित करनेकी सामग्री न थी उस समय राजाके बल, पराक्रम इत्यादिकी आज कलसे अधिक आवश्यकता पड़ती थी। इन विचारोंसे यही स्थिर होता है कि इस साम्राज्यका अधःपतन विशेषकर इस कारण हुआ कि योग्य राजा राज्य न थे। तृतीय कारण यह था कि साम्राज्यके एक प्रदेशसे दूसरे प्रदेशमें आने जानेके लिए उचित सामग्री न थी। रोमन साम्राज्यके समयकी सब बड़ी सड़कें अब नष्ट प्राय हो गयी थीं। राजाकी ओरसे उनकी मरम्मतका प्रबन्ध न था। इसके अतिरिक्त प्रभातक सिक्का बहुत नहीं चला था। चान्दी सोनेका पूर्ण अभाव था। इस कारण कर्मचारियोंको वेतनमें सिक्का नहीं दिया जा सकता था। बड़ी सेना भी नहीं रक्खी जा सकती थी। जिससे कि बाहरके आक्रमणों और भीतरके उपद्रवोंसे राष्ट्रकी रक्षा की जा सके। फ्रांकीय साम्राज्यका नाश बाहरी आक्रमणके कारण जल्द-ही जाय इस कारण चतुर्दिकसे शत्रुओंने आक्रमण कर दिया। उत्तरसे

डनमार्क, नार्वे, स्वीडनसे नार्मन (उत्तरीय) नामकी लुटेरी जातियां टूट पड़ीं। वे समुद्रसे नावों द्वारा आती थी, बड़ी वहादुरीसे समुद्रमें चलती थीं, नदियोंके मुहानेमें घुस कर नदीके किनारोंपर बसे हुए नगरोंको लूटती थीं और पारिस नगरी तकमें पहुंचने लगीं। यह तो पश्चिमकी कथा हुई। अब पूर्वमें स्लाव जातियोंसे जर्मनोंको लगातार युद्ध करना पड़ा। इसके अतिरिक्त हंगेरियन नामकी भयंकर जाति मध्य जर्मनी और उत्तरीय इटलीपर धावा करने लगी। दक्षिणसे मुसलमानोंने आक्रमण किया। सं० ८८४ (सन् ८२७) में इन्होंने सिसली प्रदेश जीत लिया। ये दक्षिण इटली और दक्षिण फ्रांसको सदा भयभीत रखते थे। रोमनगरीको भी इन्होंने नहीं छोड़ा था।

वलवान राजा और उसके साथ वलवती सेनाके न होनेके कारण सम्राज्यके प्रत्येक ज़िला और प्रान्तको अपनी ही रक्षाके लिए पृथक् पृथक् प्रवन्ध करना पड़ता था। बहुतसे प्रदेशोंके काउंट, मारग्रेव विशप और अन्य जमींदार लोग अपने असामी, प्रजा आदिके रक्षणार्थ उचित प्रवन्ध करते थे और शत्रुओंके आक्रमणोंसे उन्हें बचाते थे। वे दुर्ग भी बनवाते थे। जिसमें आवश्यकता पड़नेपर आस पासके लोग शरण ले सकें। इस प्रकारसे बहुत काउंट स्वतन्त्र राजा बन बैठे। यही कारण था कि जो कुछ राज्य प्रवन्ध था वह राजा या राज-कर्मचारियोंके द्वारा नहीं होता था, किन्तु बड़े बड़े जमींदार और बलवान ठाकुरोंके द्वारा होता था। यदि उस समय वहां कोई प्रतापी बलवान राजा होता तो इन ठाकुरोंको बड़े बड़े दुर्ग कदापि न बनवाने देता। परन्तु समयके फेरसे चारों ओर दुर्ग बन गये और इन स्वार्थी ठाकुरोंने अपनेको राजासे स्वतन्त्र करके मध्य युगके दुर्ग तैयार किये जो अबतक विद्यमान हैं। यूरोपके पथिक वर्ग इन्हें देख कर अब भी चकित होते हैं। ये दुर्ग केवल शान्त रूपसे वास करने ही के लिए नहीं बने थे, किन्तु इनके स्वामी अपने योद्धा अनुचरोंके साथ रहते थे। यदि किसी पड़ोसके ठाकुरपर

धावा करना होता था तो इन्हीं लोगोंको अपने साथ ले जाते थे। उन-पर जो कोई धावा करता था तो वे ही लोग उनकी रक्षा करते थे। इन्हीं दुर्गोंमें सुरंगे होती थीं। इनमें जिन लोगोंसे स्वामी अप्रसन्न होता था वे वन्द किये जाते थे। इन सब बातोंसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये ठाकुर लोग उस समय हर प्रकारसे स्वतन्त्र रहे। मार काट, लड़ना, भिड़ना आदि सब बातोंमें वे केवल अपने बाहुबलके पराक्रमपर भरोसा करते थे। किसी अन्यका प्रभुत्व नहीं मानते थे। इसी प्रकार ठकुरैती अथवा क्षत्रिय राजतन्त्रका (फ़्युडेलिज्म) प्रादुर्भाव हुआ। बड़े बड़े जमींदार ठाकुर लोग किस प्रकार उत्पन्न हुए यह बात जानने योग्य है।

शार्लमेनके समय पश्चिमी यूरोप बड़े बड़े इलाकोंमें विभक्त था। इन सब इलाकोंपर जोतने बोनेका काम असामी लोग किया करते थे। ये असामी लोग कभी भूमिको नहीं छोड़ते थे। सदा जमींदार के अधीन रहा करते थे। अपने स्वामीके सीर (वह भूमि जो स्वामी अपने प्रयोजनके लिए रखता था) का भी सब काम ये ही लोग करते थे। जितनी आवश्यकतायें जमींदारकी होती थीं, उन्हें भी ये ही पैदा करते थे। बाहरसे किसी वस्तुके मंगानेकी आवश्यकता नहीं पड़ती थी। इन इलाकोंका मालिक अपना समय ठाकुरोंसे युद्ध करनेमें ही व्यतीत करता था।

शार्लमेनके समयसे यह साधारण नियम चला आता था कि धर्मशालाओं, गिरजों तथा कभी कभी विशेष व्यक्तियोंको जो सम्पत्ति दी गयी थी वह राज कर्मचारियोंके निरीक्षणसे बरी रहे। राज कर्मचारी गण जिन्हें मुकद्दमोंके तय करनेका भार, जुर्माना करने अथवा रातको किसी मकानमें निवास करनेका अधिकार दिया गया था, वे भी बरी की हुई भूमिपर नहीं जा सकते थे। बरी होनेका अधिकार लोग इसी कारण चाहते थे कि राज कर्मचारी प्रतिनिधि आकर तंग न किया करें।

आरम्भमें राजासे विरोध करनेकी उनकी कोई इच्छा न थी। परन्तु उसका फल यह अवश्य हुआ कि अपनी अपनी भूमिपर वे स्वय राजकार्य करने लगे। पहिले तो राजाके प्रतिनिधि रूपमें करते थे, पश्चात स्वतन्त्र होकर करने लगे।

जब सम्राज्यका हृदय शिथिल होने लगा, सम्राट् स्वयं वल हीन हु उस समय केवल वरी किये हुए व्यक्ति ही नहीं किन्तु बहुतसे काउंट, मारग्रेव आदि भी स्वतन्त्र बन बैठे। काउंट लोगोंको विशेष [illegible] विशेष लाभ हुआ। शार्लमेनने इन्हे प्रायः बड़े बड़े घरोंसे चुना था। परन्तु उसके पास काफी सिक्का न होनेके कारण धनसे वेतन न देकर [illegible] प्रबन्ध किया था कि उन्हे इलाके प्रदान किये जायं। इलाके पाकर उनकी उच्छृंखलता बढ़ती ही गयी। यही तक नहीं, वे अपने पद और इलाकोंको अपनी पैतृक सम्पत्ति समझने लगे। यहा तक कि उनके वंशज उनके बाद उसे ग्रहण करने लगे। इन्हीं सब व्यतिक्रमोंके रोकनेके लिए शार्लमेन निरीक्षक भेजा करता था। परन्तु उसके मर-नेके पश्चात् यह नियम टूट गया और काउंट गण अपने अपने प्रदेशोंमें नितान्त स्वतन्त्र हो गये। परन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि राष्ट्र पूर्णतया नष्ट भ्रष्ट हो गया। शार्लमेनके मरणोपरान्त उसके साम्राज्यकी दुर्दशा अवश्य हुई। परन्तु राष्ट्रके रूपका लोप नहीं हुआ। [illegible] अपने प्राचीन गौरवके साथ ही बना रहा। वह बलहीन अवश्य [illegible] और अपने अधिकारोंको स्थापित करनेकी शक्ति भी उसमें न थी। [illegible] कोई पराक्रमी प्रजा उसके विरुद्ध उठ खड़ी होती तो उसे दबाने [illegible] सामर्थ्य राजामें न थी। या तो वह राजा और इस पृथिवीपर ईश्वर प्रतिनिधिके रूपमें उसका राज्याभिषेक धर्माध्यक्षोंने यथाविधि किया था, तथापि उसका साधारण ठाकुर जमींदारोंसे अधिक मान था। जहां राजा [illegible] दीन हीन दशामें पड़े थे, आगे चल कर इंगलिस्तान, फ्रांस, [illegible] [illegible] और जर्मनीमें भी सचेतन होने वाले थे, जिन्होंने ठाकुरोंको [illegible]

गिरवा कर अपना पूर्व अधिकार इनपर फिरसे जमाया। इसके अतिरिक्त ये असंख्य स्वतन्त्र जमींदारो और ठाकुरोंके विशेष नियमोंसे बद्ध थे। स्वामी और सेवक—लैण्डलार्ड और वासलके आपसके नियमित सम्बन्धसे क्षत्रिय राजतन्त्र अर्थात् फ्युडेलिज़्मकी संस्था निकाली गयी। जिसके पास जमीन रहती थी वह जमीन असामीको देते समय उससे यह शर्त करा लेता था कि "मै सदा आपका विश्वासपात्र बना रहूंगा, समय पड़नेपर आपके लिए युद्ध करूँगा, बराबर अच्छी सलाह दूँगा, और हर प्रकारकी सेवा सहायता करता रहूँगा"।

स्वामी भी प्रतिज्ञा करता था कि, "मै बराबर तुम्हारी रक्षा करूंगा।"

जितने जमींदार थे, वे सब राजाके अथवा अन्य जमींदारोंके असामी होते थे। इस कारण कठिन प्रतिज्ञाओंसे वे सब एक दूसरेकी रक्षा तथा सहायता करनेके लिए बाध्य थे। कई शताब्दियोंतक यूरोपमे राष्ट्रके स्थानपर इसी ठकुरैतीके ही कारण राज्यकार्य्य किसी प्रकारसे चलता गया। राजा और प्रजाका परस्पर सम्बन्ध शिथिल होनेके कारण जमींदार जमींदारके परस्पर सम्बन्धने स्थायी रूप धारण किया। इस क्षत्रिय राजतन्त्रको समझना बड़ा आवश्यक है, क्योंकि इसके समझे बिना कई शताब्दियों तकका यूरोपका इतिहास समझना असम्भव है।

अध्याय ८

क्षत्रिय राजतन्त्र (फ्यूडेलिज्म)

इस समयकी अवस्था देखकर यह प्रतीत होता है कि क्षत्रिय राजतन्त्रकी विशेष संस्थाका उत्पन्न होना एक प्रकारसे स्वाभाविक ही था। यह कोई नयी रीति न थी। पर पुरानी कई रीतियोंने मानों मिल कर समयके अनुसार यह रूप धारण किया था। प्रथम तो पहिलेसे ही यह नियम चला आता था कि जमींदार असामीको इस प्रकारसे जमीन प्रदान करता था कि नामका स्वामी तो वह स्वयं रहता था, परन्तु वास्तवमें सब स्वत्व असामीको मिल जाता था। दूसरे, जमींदार और असामीके परस्पर सम्बन्धका विचार बड़ा पुराना था। रोम साम्राज्यके टूटनेके समय जब बहुत सी बाहरी जातियाँ साम्राज्यके प्रदेशोंपर दखल करने लगीं, उस समय छोटे छोटे जमींदार अपने रक्षणार्थ अपनी भूमि अपनेसे अधिक बलवान जमींदारोंको सुपुर्द करने लगे। समयके अस्त व्यस्त रहनेके कारण काम करनेके लिए मज़दूर बहुत कम मिलते थे, इस कारण जिन लोगोंके पास जमीन सौंपी गयी थी वे पुराने स्वामीको ही जमीनके जोतने बोनेका अधिकार दे देते थे। जैसे जैसे उत्पात बढ़ता गया वैसे वैसे छोटे जमींदार गण अपनी अपनी रक्षा करनेमें नितान्त असमर्थ हुए। उन लोगोंने मिलकर एक नयी रीति निकाली। उन लोगोंने अपनी जमीन धर्म वा धर्मशालाओंके सुपुर्द कर दी। धर्मशालाके महन्तोंने प्रसन्नता पूर्वक उन्हें दान स्वीकार कर लिया। आपसका समझौता यह था कि जोतने बोनेवाले नामको पुरानेही स्वामी रहेंगे परन्तु धर्माचार्योंके निरीक्षणमें [illegible] जायदादकी [illegible] उनकी रक्षा होगी। इसने [illegible] कुछ [illegible]

अधिकारीको मिलता था। केवल कुछ लगान धर्मशालाको दे देना पड़ता था। इस प्रकारसे बहुत सी भूमि चर्चके हाथमें आगयी। आगे चलकर जब विशेष कारणोंसे चर्च पूर्णतया इन भूमि प्रदेशोंका अधिकारी बन गया तो ऐसी शर्तोपर स्वयं वह जमीन अन्य लोगोंको प्रदान करने लगा। लगानकी रीतिको उस समयकी भाषामें "बेनीफीशियस" कहते हैं।

बेनीफीज़ियमके साथही साथ एक दूसरी रीति और निकाली गयी। रोम-साम्राज्यके पिछले दिनों यह नियम था कि जिस मनुष्यके पास भूमि नहीं रहती थी वह किसी धनी शक्तिशाली महाजनका अनुचर हो जाया करता था। इस प्रकार उसे भोजन और वस्त्रादि मिलते थे। इसी प्रकारसे उसकी रक्षा होती थी। बन्धन केवल इतना ही होता था कि स्वामी जिससे प्रेम करता था उसे भी उससे स्नेह निवाहना पड़ता था, तथा जिससे शत्रुता करता था उससे उसे भी शत्रुता रखनी पड़ती थी। आगन्तुक जर्मन जातियोंमे ऐसी ही एक रस्म थी। इससे यह कहना कठिन होगया है कि पीछेसे जो जमीन्दारीके नियम प्रचलित पाये जाते है उनपर रोमन रीतियोंका अधिक प्रभाव है या जर्मन लोगोंका। जर्मन लोगोंमे यह नियम था कि बहुतसे योद्धा किसी एक सर्दारके आज्ञाकारी होनेकी प्रतिज्ञा करते थे। उसके बदलेमे सर्दार वचन देता था कि वह अपने आज्ञाकारी विश्वासपात्र अनुचरोंकी रक्षा सदा करता रहेगा। इस समझौतेका नाम 'कामिटेटस' था। स्वामी और सेवक दोनों इस सम्बन्धको बहुमान्य कीर्तिवर्द्धक समझते थे। धार्मिक संस्कारोंके साथ ही यह सम्बन्ध स्थापित होता था। मध्ययुगमे स्वामी सेवक अर्थात् ज़मींदार असामीका जो परस्परका सम्बन्ध पाया जाता है, उसमे बेनीफ़िज़्रियम और कामिटेटस दोनों रीतियां मिली जुली थीं। शार्लमेनके मरणोपरान्त जबसे यह नयी रीति निकली कि लोग अपनी ज़मीन औरोंको इस समझौतेपर दें कि असामी सदा स्वामि-भक्त बना रहेगा, तबसे फ्युडल रीति जारी हो गयी। यह विचार करना भूल है कि किसी राजाने अपनी राजाज्ञासे फ्युडेलिज़्मकी रीति स्थापित की अथवा ज़मींदार लोगोंने मिल

दी। जबतक कि असामी अपने स्वामीका विश्वासपात्र समझा जाता था और नियमित रूपसे उसका कार्य किया करता था तबतक न उसे और न उसके वंशजको उस ज़मीनसे निकाल सकते थे। राजा और जमींदार इस बातको समझते थे कि सदाके लिए अपनी भूमिको असामियोंके हाथ देनेसे हमारा बड़ा नुकसान है परन्तु साथही साथ लोग यह भी मानते थे कि पिताका हक पुत्रको अवश्य मिलना चाहिये। इसका परिणाम यह हुआ कि वास्तवमें स्वामीके हाथ भूमि तो कुछ न रह गयी, केवल अपने असामियोंसे सेवा करा लेनेका अधिकार ही रह गया। सम्पूर्ण भूमि असामियोंकी ही हो गयी।

राजाके बड़े बड़े असामी स्वयं राजा बन बैठे। राजधानीमें बैठे हुए सम्राट्‌की उन्हें कुछ परवाह न थी। उनके असामियोंका सम्राट्‌से कोई पारस्परिक सम्बन्ध न रहनेके कारण सम्राट्‌का दबाव उनपर कुछ न था। इसी कारण फ्रांस और जर्मनीके राजा नाम मात्रके थे। परन्तु उनकी प्रजा उन्हें कर कुछ भी नहीं देती थी और न उनका आधिपत्य ही मानती थी। इन सम्राटोंका अधिकार केवल इतना ही था कि वे अपने विशेष असामियोंसे लगान ले सकते थे और उनसे सेवा करा सकते थे। परन्तु साधारण जनतापर उनका अधिकार बहुत ही कम था। वे असामी अपने ही अपने जमींदारको स्वामी मानते थे।

फ्यूडेलिज़्म सम्बन्धी रीतियां सब जगह एक ही प्रकार की न थीं। भिन्न २ स्थानोंमें भेद था परन्तु कुछ साधारण विषय इसके नीचे लिखे जाते हैं। इस सम्बन्धमें मुख्य बात फ़ीफ थी। इसी शब्दसे फ्यूडल-फ़्यूडेलिज़्म आदि शब्द निकले हैं। फ़ीफ उस भूमिका नाम था जो स्वामी दूसरेको कुछ शर्तोंपर देता था। जो भूमिको लेता था उसे आवश्यक होता था कि स्वामीके सामने घुटनेके बल बैठ कर स्वामीके हाथमें अपना हाथ रखकर प्रतिज्ञा करे कि, "अमुक फीफके लिए मैं आपका असामी होता हूं। सदा सच्चे भावसे मैं आपकी सेवा करता रहूंगा।" इसके

उपरान्त स्वामी उसकी रक्षा करनेकी प्रतिज्ञा करता हुआ उसका चुम्बन करता था और ज़मीनपरसे उठा कर उसे खड़ा करता था ।

अंजील अथवा अन्य धार्मिक चिन्ह हाथमें लेकर असामी अपने कर्त्तव्योंको यथार्थ पालन करनेकी प्रतिज्ञा करता था । हाथसे हाथ रखनेका नियम बहुत ही आवश्यक समझा जाता था । जो असामी इसको नहीं करता था वह स्वामिद्रोही समझा जाता था । असामियोंके निम्न लिखित कर्तव्य थे ।

(१) किसी प्रकार किसी समय स्वामीका विरोध न करना ।

(२) उनको हानि न पहुंचाना ।

(३) रणमें सदा स्वामीका साथ देते रहना ।

(४) चालीस दिन तक रणकी सेवा अपने ही कामसे करना ।

जब यह देखा गया कि केवल थोड़े ही दिनकी सेवा लेनेमें बड़ी असुविधा है तो आगे चलकर कुछ ही लोगोंको फीफ दी जानेका नियम हो गया। उसको आयका प्रबन्ध रखनेके लिए आज्ञा दी गयी। उनका कर्तव्य यह रक्खा गया कि स्वामीको जभी आवश्यकता पड़े तभी उनके साथ रणमें चलनेके लिए सदा प्रस्तुत रहें। रण सेवाके अतिरिक्त या जब स्वामीकी आज्ञा हो तभी उसके दर्बारमें असामीको तुरन्त उपस्थित होना आवश्यक था, और उनका कर्त्तव्य था कि दर्बारमें वे अन्य असामियोंके अभियोगोंको सुनकर अपनी राय दें, उससे जभी उससे सम्मति मांगी जाय तो वह स्वामीको यथार्थ सम्मति दे और सब उत्सवोंपर वह अपने स्वामीके साथ उपस्थित रहे । कुछ अवसरोंपर उसे अपने धनसे भी स्वामीकी सहायता करनी पड़ती थी, जैसे कि कन्याके विवाहमें, वा लड़केको नाइट (धार्मिक संस्कार सहित योद्धा) बनानेमें, अथवा जब स्वामी कैद हो जाय, उसके छुड़ानेके लिए भिन्न भिन्न प्रकारकी फ़ीफ़ोंके भिन्न भिन्न नियम थे । काउंट या ड्यूककी फ़ीफ़ोंमें तो असामी स्वतन्त्र राजा होता था । परन्तु कुछ साधारण कृषकोंकी फीफ़के अन्य ही नियम थे ।

उस समयके सर्दारों अथवा महाजनोंके जमींदार आसामियोंसे केवल ऐसे कार्य कराते थे जो उनके योग्य होते थे। परन्तु साधारण कृषकोंके कर्तव्य पृथक् ही होते थे। सर्दार या महाजनके लिए यह आवश्यक था कि विना अपने हाथोंसे परिश्रम किये कृषकोंके पास इतनी आय हो कि वे अपने और अपने घोड़ेको सर्वदा सुसज्जित रख सकें। महाजन और कृषकमें उच्च नीच जातिका अन्तर जाना जाता था। उच्च जातिवालोंके अधिकार विशेष थे। वे अपने हाथसे कृषि आदिका कार्य नहीं करते थे। महाजन भी कई श्रेणीके हुआ करते थे। परन्तु उनका अन्तर वतलाना वड़ा ही कठिन है। यह भी कह देना पर्याप्त नहीं है कि किसी एक श्रेणीवालेके पास अधिक और दूसरेके पास कम धन होता था। साधारण रीतिसे यह विचार करना चाहिये कि ड्यूक, काउंट विषप और एवट ये सव ऐसे महाजन थे जो स्वयं सम्राट्से फीफ पाये हुए थे और उच्च श्रेणीके महाजन समझे जाते थे। इनके पश्चात् दूसरी श्रेणीके महाजन होते थे। फिर साधारण नाइटगण होते थे।

भूमिके प्रभुत्वके नियम इतने जटिल थे और समाजका जीवन इसपर निर्भर होनेके कारण यह आवश्यक था कि हर एक जमींदार अपनी भूमिका चिह्न रक्खे। अव ऐसे चिह्न वहुत कम मिलते हैं। पर इस समय एक आध चिह्न हाथ लगे हैं। उनसे विदित होता है कि उस समय यूरोपको भिन्न भिन्न राष्ट्रोंमें विभक्त करना नितान्त असम्भव था क्योंकि एक ज़मींदारसे दूसरे जमींदार और एक राजासे दूसरे राजाकी भूमि ऐसी सम्बद्ध तथा सम्मिलित होगयी थी कि हर एक देशको विभक्त करना वड़ा ही असम्भव था। किस प्रकारसे अपनी जमीन्दारियों-को वढ़ा वढ़ाकर कुछ लोगोंने राज्य स्थापित किया था। उसका एक उदा-हरण लीजिये। ग्यारहवीं शताब्दीमें ट्रायका काउंट रावर्ट फ्रांसके राजाके विरुद्ध युद्ध करनेके कारण मारा गया। इसकी रियासत इसके जामाताके हाथ लगी जिसके पास पहिलेसे शातोथियरी और मोकी रियासतें थीं।

इसका बेटा इन तीनों रियासतोंका मालिक हुआ। इसने आसपासकी अन्य रियासतोंको जबर्दस्ती अपने हाथमें कर लिया। इसके वंशज बराबर अपनी उन्नति करते गये। दो सौ वर्षके भीतर इन लोगोंने जमीनका एक बहुत बड़ा चक अपने हाथ कर लिया। यहां तक कि शाम्पाइन भूप्रदेशके कांउट हो गये। इसी प्रकारसे अन्य रियासतेंभी उत्पन्न हुई। कुछ सौभाग्यस, कुछ बलात्कारसे और कुछ पराक्रमसे कितने ही जमीन्दार बहुत सी रियासतों· को मिलाकर प्रतापी राजा होगये। वास्तवमें फ्रांसका सम्पूर्ण राष्ट्र ही इस प्रकारस आविर्भूत हुआ है।

शाम्पाइनके काउंटका उदाहरण इस प्रकार है। उसकी रियासत २६ जिलोंमें विभक्त थी। प्रत्येक जिलेका केन्द्र-स्थान कोई एक दृढ दुर्ग था ये सब जिले दूसरे दूसरे जमीन्दारों फीफ थां। कई फीफोंके लिये तो य काउट फ्रासके सम्राट्का असामी था। परन्तु साथ ही औरभी ६ जमीन्दार का असामी था। औ र कुछ ज़मीनके लिये बरगण्डीके ड्यूककी सेवा करनी पडती थी,तथा कुछके लिए रीन्सके आर्चबिशपकी ओर इसी प्रकार अन्य अन्य जमीन्दारोंकी भी सेवा करनी पड़ती थी। नियमानुसार इसने सबसे प्रति कर रक्खी थी कि हम आप सब लोगोंकी सदा सत्यता पूर्वक सेवा क रेंहेग। परन्तु यह बात जरा सोचने विचारनेकी है कि यदि इन भिन्न भि जमींदारोके परस्पर युद्ध छिड़ते तो यह काउट किस किसकी सेवा कर स था। इसी प्रकारका अस्तव्यस्त कारखाना चारों ओर प्रचलित होरहा जमींदार लोग जो अपना चिट्ठा बनाते थे उसका अभिप्राय यह विदित है कि दूसरोंके प्रति उन लोगोंका क्या कर्तव्य है। जमींदारोंके बीच सदा आपसमें गडबड़ मची रहती थी। प्रायः ऐसा होता था कि जमींदार और असामी दोनों किसी अन्य जमींदारके असामी हों। अथवा दो जमींदार भिन्न भिन्न भूमिके टुकड़ोंके लिए एक दूसरेके असामी हों। यह निश्चय कर लेना भूल है कि समाजका काम उस समय शान्ति पूर्वक चला जाता थ क्योंकि ऐसे अनिश्चित समाजकी जैसा कि फ्यूटलतन्त्रसे प्रतीत होता

स्थिति केवल बाहुबलपर निर्भर थी। जबतक कि जमींदारोंमें यह शक्ति थी के अपना काम यह असामियोंसे करालें तबतक ठीक था। जहां जमीन्दारों-की शक्ति शिथिल हुई वहां उनके अधिकार अन्य लोग छीनना आरम्भ कर देते थे। इस कारण उस समय आपसका युद्ध एक साधारण बात था। सब महाजन जमींदार जिनके पास भूमिका प्रभाव था और जिनके हाथमें राज्यकार्यका अधिकार था, सदा लड़ने भिड़नेको उद्यत रहा करते थे। प्रकृति, स्वार्थ अथवा परस्पर अधिकारोंका विभाग न होनेके कारण उस समयके महाजन जमींदार सदा युद्धके लिए तत्पर रहा करते थे। यह तो बहुत साधारण बात थी कि युद्धोत्साही असामी अपने सब स्वामियोंसे एक बार लड़ आवे। फिर आस पासके बिशप और एवटसे लड़ने जाय और अन्तमें अपने ही असामीसे जाकर लड़े। एक दूसरेकी न्यूनतासे लाभ उठानेके लिए सब लोग सदा तत्पर रहा करते थे। इसका पूरा प्रभाव गृहस्थ परिवार पर ही पड़ता था। यहाँतक कि पिता पुत्र, भाई भाई और चचा भतीजा, एक दूसरेसे युद्ध किया करते थे।

यों तो नियमानुसार प्रत्येक जमींदारका अधिकार था कि अपने असा-मियोंको यह आज्ञा दे कि लोग प्राय अपने झगड़े बिना रक्तपातके, शान्ति पूर्वक तय करलें, परन्तु यह केवल नियम मात्र ही था। जब लोग तलवार-हीसे अपना झगड़ा तय करना चाहते थे तो जमींदार क्या कर सकता था। इस कारण लोगोंकी विशेष वृत्ति यही रहा करती थी कि एक दूसरेका सिर काटते रहे। यहाँ तक कि उस समयके जर्मनी और फ्रांसकी न्याय पुस्तकों-में पड़ोसियोंका झगड़ा उचित और स्वाभाविक माना गया था और केवल इतना आदेश था कि लोग आपसमें भलमनसाहतसे लड़ा करें।

उस समय रण तथा रक्तपातकी प्रियता इस दर्जे तक बढ़ी चढ़ी थी कि जब कोई अन्य युद्ध नहीं रहता था तो आपसमें मल्लयुद्ध किया करते थे। इन मल्लयुद्धोंमें भिन्न भिन्न जमींदारोंके अनुचरवर्ग एक दूसरेसे अखाड़ोंमें बराबर युद्ध किया करते थे।

ऐसी अवस्थामें जब किसीके प्राण और सम्पत्ति सुरक्षित नहीं समझ जाती थी उस समय कितने ही लोगोंके मनमें यह विचार उत्पन्न होता था इस समय शान्ति और सुनियमकी बड़ी ही आवश्यकता है। पुराने पुरा शहरोंमें वाणिज्य व्यवसाय तथा सभ्यता आदिकी उन्नति हो रही इसलिए यह आवश्यक था कि पारस्परिक युद्ध बंद हो और राष्ट्रमें शान्ति हो।

धर्माध्यक्षोंकी ओरसे यह सदा यत्न किया जाता था कि रणकी प्र एकबारगी समाप्त हो। सब लोग सुख और शान्तिमें रहे। इस कारण चर्चकी ओरसे यह नियम बनाया गया था कि वृहस्पतिवारसे लेकर सोमवार तक किसी प्रकारका युद्ध न हो। जो होता हो वह भी इन दिनोंके लिए बन्द कर दिया जाय। उन लोगोंने यह भी नियम बनाया कि जितने व्रतके दिन हैं उन दिनोंमें भी युद्ध न हुआ करे। यह इस प्रकारसे किया गया कि बारहों मास लड़ाई न होकर कुछ दिन तो शान्तिके मिलें। चर्चने सब जमींदारोंको शपथ दिलाकर बाध्य किया कि नियमित दिनों तक तुम लोग किसी प्रकारके रणमें भाग न लो। यदि कोई नियमके विरुद्ध आचरण करता था वह जातिसे बाहर कर दिया जाता था। जातिच्युत होनेसे उस समयके बडेसे बड़े लोग इतना भयभीत होते थे कि चर्चकी आज्ञाका पालन बड़ी सावधानीसे करते थे। १२वीं शताब्दीमें जब "क्रूसेड" अर्थात् मुसलमानों और इसाइयोंके झगड़े आरम्भ हुए उस समय पोपगण इसी रणप्रियताकी बदोलत असंख्य लोगोंको तुर्कोंके विरुद्ध रणमें लड़नेको भेज सके थे।

इसीके साथ साथ फ्रांस और आंग्ल देशोंमें राजाका अधिकार विशेष बढ़नेके कारण ये सब देश सुदृढ़ राष्ट्र बनने लगे। सम्राट् यह यत्न करने लगा कि आपसके झगड़े रक्तपातसे स्वयं न तय करके राजकीय न्यायालयोंमें आकर शान्ति पूर्वक तय किया करें। कई शताब्दियोंकी परम्परागत रणप्रियताको एकाएक दूर कर देना सरल न था। यदि आगे

चल कर रक्तपात कम हुआ और सभ्यता फैली तो उसका विशेष कारण यह था कि वाणिज्य और व्यवसायकी उन्नति बराबर होती गयी और साधारण लोग लड़ाकू जमींदार और महाजनोंका तिरस्कार करने लगे। उनको असभ्य और अशिष्ट मानने लगे और उनकी रणप्रियता हर प्रकार-से रोकने लगे।

अध्याय ६

फ्रान्स देशका उत्कर्ष।

अ व जागीरदारी (फ्यूडल) के राज्यक्रमसे निकलकर आधुनिक रीतिके राष्ट्रका स्थापन बड़े महत्वकी बात है। इस कारण इतिहासवेत्ताको आवश्यक है कि वे फ्यूडल, अराजकता और अस्तव्यस्त समाज-व्यूहनसे निकलकर आजकलके फ्रांस, जर्मनी, इंगलिस्तान, इटली आदि राष्ट्रोंका उत्कर्ष समझें और जानें कि किस प्रकारके परिवर्तन होनेसे इन लोगोंका उत्कर्ष हुआ। यह बात कह देना बहुत ही उचित है कि दो वा तीन शताब्दियों तक यूरोपका इतिहास असंख्य जमींदारोंका इतिहास है यद्यपि सम्राट् अपने अनेक प्रतापी असामियोंसे कम पराक्रमी था, तथापि इस समयका इतिहास जानना परम आवश्यक है, क्योंकि इन सम्राटोंके ही कारण आगे चलकर सुसज्जित राष्ट्र स्थापनके रूपमें राष्ट्रीयताका विचार लोगोंके हृदयपटलपर पड़ा। फ्रांस, इंगलिस्तान आदि देशोंमें राजा के ही प्रयत्नसे राष्ट्रीयता स्थापित हुई है। हम ऊपर कह आये हैं कि संवत् ९४५ में मोटे चार्लसको राजच्युत करके पश्चिमी फ्राङ्क महाजनोंने पेरिसके कांउट ओडोको राज गद्दीपर बैठाया था। यह बड़ा पराक्रमी जमींदार था। इसके पास बहुत बड़ा स्टेट था परन्तु सब कुछ सामग्री होते हुए भी दक्षिणमें कोई उसका आधिपत्य नहीं मानता था, उत्तरमें भी उसे बहुतसी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता था क्योंकि जिन सर्दारोंने उसे राजगद्दी दी वे ही अपनी स्वतन्त्रतामें उसे हस्तक्षेप करने नहीं देते थे। इस कारण गंजे चार्लसके पौत्र सरल चार्लसको ओडोके शत्रुओंने राजगद्दीपर बैठाया। लगभग सौ वर्ष तक कभी चार्लस कभी ओडोके वंशज राज-सिंहासनके अधिकारी होते थे। पेरिसके काउंट गण तो धनी और बलवान होते गये परन्तु चार्लसके

वंशज दरिद्र और भाग्यहीन होते गये और कुछ समयके पश्चात् अपने विरोधियोंके सम्मुख न खड़े हो सके। संवत् १०४४। (सन् ९८७) में ह्यूकायेओडोका वंशज गाल, ब्रिटेन, नार्मन, ऐकोटेनियन, गाथ, स्रहानी, गास्कन जातियोंका सम्राट् निर्वाचित हुआ। सारांश यह था कि जितनी जातियाँ मिलकर आगे फ्रांस राष्ट्रका निर्वाचन करनेवाली थीं वे सब ह्यूकायेके अधीन इस समय हुई थीं। यह बात जानने योग्य है कि दो सौ वर्षके लगातार परिश्रमके पश्चात् ह्यूकायेके वंशजोंने अपना आधिपत्य स्थापित किया और इन दो सौ वर्षोंके भीतर इनका अधिकार बहुत कम फैला था, वास्तवमें उनका अधिकार कुछ ढीला पड़गया था। चारोंओर स्वतन्त्र रजवाड़े खड़े होने लगे थे, दृढ दुर्ग बना बनाकर बलवान स्वामी राजाको तङ्ग किया करते थे। एक नगरसे दूसरे नगरके वाणिज्यको तथा ग्रामवासियोंको असह्य कष्ट पहुचता था। सम्राट्को भी जिनके सामने बड़े पराक्रमी जमींदार लोग और महाजन गण सिर नवाते थे पैरिस नगरीके वाहर निकलना कठिन हो जाता था क्योंकि चारों ओर दुर्ग थे और दुर्गका स्वामी न राजा, न पुरोहित, न व्यवसायी और न श्रमजीवी, किसीकी भी परवाह नहीं करता था। विना धन और सैन्यके राज-गौरव केवल मौरूसी जायदादपर निर्भर हो रहा था। दूर दूरके देशोंमे तो उसकी जमीदारीके कारण उसका आदर सत्कार भी था परन्तु अपने देशमें उसे कोई नहीं मानता था। राजधानीसे निकलते ही राजाको अपने शत्रुओंका सामना करना पड़ता था।

दशवीं शताब्दीमें नार्मंडी, ब्रिटनी, फ्लंडर, वर्गंडी आदिकी बड़ी बड़ी फीफोंने स्वतन्त्र रियासतोंका रूप धारण कर लिया। आगे चलकर ये फीफ छोटे राष्ट्र तुल्य हो गयीं और प्रत्येकके योग्य शासकभी उत्पन्न हुए। हर एकके रहन, सहन, आचार, विचार भिन्न थे। इसी भिन्नताका लेश मात्र अब भी दिखायी पड़ता है। इन सब उपराष्ट्रोंमें सबसे बड़ा नार्मण्डी था। नार्मन लोग अर्थात् उत्तर देशवासी उत्तरीय सागर

(नार्थ सी) के तटके निवासियोंको बहुत दिनोंसे सता रहे थे। अन्तः संवत् ६६८ (सन् ६११) में सरल चार्ल्सने इनके सर्दार रोलेको फ्रांसका पूर्वउत्तरीय प्रदेश प्रदान किया, जिसमें कि ये लोग आकर बसे थे। यही प्रदेश आगे चलकर नार्मण्डीके नामसे प्रसिद्ध हुआ। रोलेने नार्मण्डीके ड्यूककी उपाधि धारण की। उसने अपनी सब प्रजाको क्रिस्तान धर्मावलम्बी बनाया। बहुत दिनोंतक इन आगन्तुकोंने अपने ही देशकी रीति और भाषा कायम रक्खी, परन्तु धीरे धीरे इन लोगोंने अपने पड़ोसियोंकी रीति, रस्म स्वीकार कर ली। बारहवीं शताब्दी तक उनकी राजधानी "रुआं" बहुत ही सुन्दर सुसज्जित नगरी हो गयी। संवत् ११२३ (सन् १०६६) में जब नार्मण्डीके ड्यूक विलियमने अपना आधिपत्य इंग्लिस्तान-पर जमाया उस समयसे फ्रान्सीसी राजाओंके अधिकारमें बड़ी भारी गड़बड़ मची, क्योंकि नार्मण्डीके ड्यूक अब इतने पराक्रमी हो गये थे कि फ्रान्सीसी राजा उनको अपने अनुकूल नहीं रख सकते थे।

ब्रिटनी प्रदेशपर भी इन उत्तरीय व्यवसायियोंने कई बार धावा किया। किसी समय यह भी विचार हुआ था कि नार्मण्डीके राज्यमें यह भी सम्मिलित हो जायगा, परन्तु संवत् ६६५ (सन् ६३८) में अलैन नामके वीर पुरुषने इनलोगोंको अपने देशसे निकाल बाहर किया। थोड़े दिन पीछे ब्रिटनी भी एक ड्यूक-शासित प्रदेश हो गया। सोलहवीं शताब्दीके प्रारम्भमें यह फ्रान्सीसी राष्ट्रमें सम्मिलित हुआ। उत्तरवासियोंके आक्रमणने एक प्रकारसे बड़ा लाभ पहुँचाया। फ्रांसके उत्तरोत्तर समुद्र-तट वासियोंने दुखी होकर स्वरक्षणार्थ प्राचीन रोमसाम्राज्यके बचे हुए दुर्गोंकी शरण ली। इस प्रकार सब लोगोंको साथ रहनेका अभ्यास पड़ गया पश्चात् घेण्ट, ब्रूज आदि नगरोंकी उत्पत्ति हुई और आगे चलकर ये नगर वाणिज्य व्यवसाय आदिमें बड़े ही प्रसिद्ध हुए।

नगरसे बाहरी आक्रमण अधिक सरलतासे रोका जा सकता है। जिन लोगोंने उत्तर वासियोंको रोकनेमें यत्न किया था उनके वंशज नगरोंमें

प्रसिद्ध हुए । इस प्रदेशका नाम फ्लान्डर्स था । यहां भी काउंट तथा अन्य निम्न श्रेणियोंके महाजन जमींदार थे जिनका आपसमें सदा युद्ध हुआ करता था । दूसरा प्रसिद्ध प्रदेश वर्गण्डी था जो भविष्यमें फ्रांस राष्ट्रका प्रधान अंश हुआ । वर्गंडीके ड्यूक आरम्भमें प्रतापी तो थे पर स्वतन्त्र न बन सके । इस कारण फ्रान्सीसी राजाओंका अधिकार स्वीकार करना पड़ा । दूसरा प्रदेश आक्वीटेन था । इसके अतिरिक्त टलूसका एक प्रदेश था जहां कि कथकों और भाटोंके कारण साहित्य जीवित था । इन सब प्रदेशोंका राजा ह्यूकापेक था ।

कापेक वंशके राजाओंका राज्याधिकार कई रूपोंका था और कई प्रकारसे उन्हें मिला भी था । प्रथम तो वे पैरिसके काउंट थे । इस प्रकारसे उनको साधारण जमींदाराना अधिकार प्राप्त था । फिर वे फ्रांसके भी ड्यूक थे जिससे कि उनके कुछ विशेष अधिकार भी थे । इसके अतिरिक्त नार्मण्डी, फ्लान्डर्स आदिके पराक्रमी ड्यूक तथा काउंट इनके असामी थे । राजा होनेके कारण उनके विशेष अधिकार थे । एक तो चर्च, दूसरे धर्माध्यक्षकी ओरसे इनका राज्याभिषेक होता था इस कारण वे ईश्वरनियुक्त धर्मके रक्षक, दीनके हितकारी, न्यायके प्रवर्तक भी समझे जाते थे । सब लोग इनका पद बड़े बड़े ड्यूक और कांउटोंसे ऊंचा समझते थे । पराक्रमी ड्यूक और कांउट तो इनको केवल अपना जमींदार ही समझते थे, राजा जमींदारकी हैसियतसे और अपने राजाकी हैसियतसे भी यथाशक्ति यत्न करता था कि हमारा अधिकार अधिकाधिक फैलता ही जाय । तीन सौ वर्षतक विना भंग हुए कापेक वंशके राजा ही राज सिंहासनपर बैठाये गये । ऐसा बहुत कम हुआ कि राजसिंहासनपर कोई बलहीन बालक बैठाया गया हो । १५ वीं शताब्दी के आरम्भ तक तो राजा तथा जमींदारकी लड़ाईमें सर्वदा राजा हीकी जीत होती रही ।

फ्रांसके राजा मोटे लूईने प्रथम वार यह यत्न किया कि अपने राजपर

हम अपना प्रभुत्व वास्तवमें जमावें। इन्होंने संवत् ११६५ (सन् ११०८)
से संवत् ११६४ (सन् ११३७) तक राज्य किया। यह बड़े पराक्रमी थे
और अपनी जमींदारीके भिन्न २ भागोंसे आवागमनके जो मार्ग थे उनको
सुरक्षित रखते थे। बीच बीचमें जो सर्दारोंने किले बनवाकर उत्पा
मचा रक्खा था उनका दमन करते रहते थे। इस प्रकारसे फ्रांस
राजाका अनन्याधिकार स्थापित करनेका कार्य इन्होंने आरंभ कर दि
और इनके वंशज इस कार्यकी उन्नति करते रहे। विशेष कर इनके पौ
फिलिप आगस्टसने इस कार्यको बहुत ही बढ़ाया।

फिलिपको बड़े बखेड़ोंका सामना करना पड़ा। अब तक यूरोपमें
सर्दारों और राजाओंके विवाहका बड़ा राजनीतिक प्रभाव पड़ा करता
था इस कारण मध्य, पश्चिम, और दक्षिण फ्रांसकी बहुत बड़ी बड़ी
जमींदारियाँ इंग्लिस्तानके राजा द्वितीय हेनरीके हाथमें आगयी थीं।
अतः पश्चिमीय यूरोपमें इनका बड़ा भारी साम्राज्य स्थापित हो गया था।
विजयी विलियमकी पौत्री मेटिलडाका पुत्र द्वितीय हेनरी था। मेटिलडा
विवाह बड़े भारी फ्रांसके जमींदार आंजू और मेनके काउंटसे हुआ था।
अतः हेनरीने अपनी माताके द्वारा आंग्ल देशके नार्मन राजाओंका राज
राज्य पाया अर्थात् इंग्लिस्तान, नार्मंडी और ब्रिटेनी, और अपने पिताके
द्वारा मेन और आंजू। इसके अतिरिक्त उसका विवाह इलीनरसे हुआ
जो ग्वेन अर्थात् आक्विटेनके ड्यूकोंकी उत्तराधिकारिणी थी। अतः पइट
और गासकनीके साथ साथ उसे करीब करीब पूरा दक्षिण फ्रांस मिल
गया। द्वितीय हेनरीका नाम आंग्ल देशके इतिहासमें बहुत बड़ा है। परन्तु
सच पूछिये तो वह आधा अंग्रेज और आधा फ्रान्सीसी था, उसने
बहुतसा अपना समय फ्रांसमें ही बिताया। इस प्रकारसे फ्रांसके
राजाने देखा कि एक यशस्वी राजाके अधीन एक विरोधी राष्ट्र हमारे
बगलमें स्थापित हो गया है। इस राज्यके अन्तर्गत फ्रांसकी आधी जमीन
ऐसी थी कि जिससे नाममात्र वह फ्रांसका राजा समझा जाता था।

प्लान्टाजेनेट घरानेपर लगातार आक्रमण करना ही फिलिपका जीवन कर्तव्य था। उसके शत्रुओंके बीच बहुतसे झगड़ोंके कारण उसे उनपर आक्रमण करनेमें बड़ी मदद मिलती थी। द्वितीय हेनरीने फ्रांसमेंकी अपनी सब जायदादोंको अपने तीन लड़कों जेओफ्रे, रिचर्ड और जानमें विभक्त कर दिया और वहाँकी राज्यप्रणाली जैसी थी वैसी ही रहने दी। इन तीनों भाइयों तथा उनके पिताके परस्पर कलहसे फिलिपने लाभ उठाया। उसने प्रथम तो उसके पिताके प्रतिकूल वीर रिचर्डका पक्ष, फिर रिचर्डके प्रतिकूल उसके छोटे भाई लैकलैण्डका पक्ष ग्रहण किया। इसी प्रकार वह एक छोड़ दूसरेका साथ कर लेता था। यदि घरहीमें इस प्रकारका विरोध न हुआ होता तो प्लान्टेजेनेटके शक्तिशाली राज्यने फ्रांसके राजवंशको मटियामेट कर दिया होता क्योंकि उसके छोटे राज्यको वह चारों ओरसे घेरे था और सर्वदा भयावह था।

जबतक द्वितीय हेनरी जीवित था तब तक प्लान्टाजेनेट घरानेको नष्ट करने अथवा उनके प्रभावको कम करनेका कोई रास्ता नहीं था। परन्तु जब कुविचारी पहिले रिचर्ड (हेनरीका पुत्र) के अधीन राज्यसूत्र हो गये तब फ्रान्सीसी राजाके भावी विचारोंका कुछ और ही रूप हो गया। रिचर्ड राज्य छोड़कर धर्म सम्बन्धी युद्धमें शामिल हो जेरुसलम चला गया। लड़ाईमें शरीक होनेके लिए उसने फिलिपको बहुत समझाया परन्तु वह गर्वी और अहंकारी होनेके कारण उसके उच्च ध्येयोंका अनुगामी न हुआ। दोनोंमें ऐसी एक वाक्यता न हुई कि वह कुछ देरतक बनी रहे। फ्रासका राजा सुदृढ़ न होनेके कारण बीमार हो गया। उसने घर वापस जानेके लिए और अपने बलवान् जमींदारको गढ़ेमें झोंकनेके लिए अपनी बीमारीको एक अच्छा बहाना समझा। जब कई वर्ष तक घूमने फिरनेके पश्चात् रिचर्ड घर वापस आया तब फिलिपसे और उससे युद्ध आरंभ हुआ युद्धके समाप्त होनेके पहिले ही उसका देहान्त हो गया।

रिचर्डके छोटे भाई जानका अंग्रेज राजवंशमें बड़ा तिरस्कार

हुआ था उस समय एक वहाना पाकर फ़िलिपने उसकी बहुतसी जागीरें छीन लीं। जानपर यह दोषारोपण किया गया कि उसने अपने भतीजे आर्थरको मारडाला क्योंकि मेन आन्जू और टूरेनके जागीरदारोंने उसको अपना जमींदार मान रक्खा था। साथ ही उसने यह भी एक अत्याचार किया कि जिस स्त्रीकी सगाई उसके एक जागीरदारसे हो चुकी थी उसको वह उठा ले गया, और उससे अपना विवाह कर लिया। फिलिप जो जानका जमींदार था उसने जानको अपने दर्बारमें तलब किया कि तुम इस अत्याचारका कारण वतलाओ। जव जानेने दर्वारमें आना ना मंजूर किया तव फिलिपने हुक्म निकलवाया कि जितनी प्लान्टेज़ेनेट वंशकी जागीरें फ्रासमें हों वे सव छीन ली जावें केवल दक्षिण पश्चिमका एक कोना अंग्रेज राजोके हाथमें रहा।

नार्मण्डी लोअर आदिपर फिलिपका राज्य अनायास ही होगया क्योंकि वहाँके लोग अंग्रेज राजाओंसे विशेष खुश न थे। रिचर्डकी मृत्युके ६ वर्ष वाद अंग्रेज राजाओंका प्रभुत्व फ्राससे प्राय: उठ गया। केवल अक्विटेन अथवा ग्वेनकी जागीर उनके पास रह गयी अतः कापे वंशके हाथमें प्रथम वार फ्रांसका अधिकांश भूप्रदेश और धन आगया। अव फिलिप इन नयी जागीरोंका केवल दूरवर्त्ती ज़मींदार (सूज़ेरेन) ही न रह गया परन्तु वास्तवमें वहाँका अधिकारी हुआ। प्रत्यक्षमें उसका समुद्रकी सीमा तक अधिकार हो गया था।

अपने राज्यको विस्तृत करनेके साथ ही साथ उसने अपना अधिकार अपनी प्रजापर भी वढ़ा लिया। इस समय स्थान स्थानपर नगरोंकी स्थापना हो रही थी इनकी आवश्यकता भी उसने पहिचानी। उसने देखा कि आगे चलकर क्या क्या हो सकता है। अतः जिन नयी जागीरोंमें उसने नगरोंको पाया उनका विशेष ख़्याल किया। उनकी रक्षा कर अपना अधिकार वढ़ाया इस प्रकारसे उसने ज़मींदारों और जागीरदारोंका प्रभाव अधिकारादि कम कर दिया।

फ़िलिपके बेटे आठवें लूईने एक नये प्रकारकी जागीर निकाली जिसका नाम उसने एपेनेज रक्खा। अपने छोटे लड़कोंको उसने इन एपेनेजका अधिकारी बनाया। एकको उसने आरटायका कांउट, दूसरेको आन्जू और मेनका काउंट और तीसरेको ऑवर्नेका कांउट बनाया। यह इसकी बड़ी भूल थी जिन प्रदेशोंको उसके पिताने इतना यत्न करके एकत्र किया था उन सबको उसने फिर अलग अलग कर दिया, अतः राज्यका संगठन कठिन हो गया तथा राजवंशमें आपसका झगड़ा उठ खड़ा हुआ।

फिलिपके एक पौत्रका नाम नवॉ लूई था, कोई उसको सन्त लूई भी कहते हैं। इसने संवत् १२८३ से १३२७ (सन् १२२६-१२७०) तक राज्य किया। यह एक अद्भुत व्यक्ति था फ्रासके राजवंशमें वह सबसे अधिक प्रसिद्ध राजा हुआ। इसके पराक्रम और औदार्य्यकी बहुतसी कथाएं प्रचलित हैं। उसने फ्रासके राष्ट्रको पुनः संगठित करनेमें बड़े प्रयत्न किये जिनका साराश यहा लिखा जाता है। मध्य फ्रासके कुछ लोगोंने आंग्ल देशके राजासे मिलकर बलवा कर दिया था, परन्तु लूईने उसको दबा दिया। आंग्ल देशके राजासे यह समझौता किया गया कि "ग्वेन गासकनी और पॉयटू प्रदेशोंके लिए आप हमको अपना स्वामी मानें। और प्लान्टेजेनेट वंशके पुराने सब प्रदेशोंपर आपका जो कुछ अधिकार है उस सबको आप त्याग दें।"

इसके अतिरिक्त लूईने राजाका अधिकार बढ़ानेके विचारसे एक अच्छा प्रबन्ध किया फिलिपने एक नये प्रकारके कार्याधिकारियोंको स्थापित किया था जिनका नाम बेली था। उसे बँधी तनखाह दी जाती थी जिनके स्थान निरन्तर बदले जाते थे ता कि किसी एक स्थानपर बहुत दिन तक वे जमने न पावें और आगे चलकर राजाके प्रतिद्वन्द्वी न हो जावें। पूर्व कालमें कांउट लोग जो राजाके कर्मचारी ही होते थे बहुत दिनों तक एक ही स्थानमें रहनेके कारण पृथक् राजा हो बैठते थे।

लूईने वेली स्थापित करनेका तरीका और विस्तृत किया । इस प्र
उसने अपने राज्यको अपने ही अधीन रखा और यह यत्न किया
प्रजाके साथ न्याय हो और मालगुजारी ठीक समयपर इकट्ठी हुआ करे
चौदहवीं शताब्दीमें फ्रांसका शासन प्रवन्ध बहुत विस्तृत न
राजा अपने कर्तव्योंके पालनार्थ बड़े बड़े जागीरदारों और धर्माधिका
आदिसे परामर्श और सहायता लेता था । इन लोगोंकी एक परिषद्
जिसका कोई नियमित रूप नहीं था, जो हर प्रकारका सरकारी
करता था । लूईके शासनकालमें इस संस्थाके नियमित रूपसे
विभाग किये गये एकसे राजा साधारण शासन प्रवन्धमें परामर्श
था, दूसरेके द्वारा अपने राज्यके हिसाब किताबका प्रवन्ध करता
और तीसरा विभाग न्यायालयके रूपमें स्थापित हुआ जो आगे चल
बड़ा जटिल होता गया । यह विभाग सदा राजाके साथ न घूम
पैरिस नगरमें सेन नदीके किनारे स्थायी रूपसे स्थापित हुआ । अब
„यह" पालाय दो जुस्टिस अर्थात् "न्याय प्रसाद" मौजूद है । जागीरदा
न्यायालयोंसे राष्ट्रीय न्यायालयमें पुनर्विचारके लिए अपीलें आने
इससे राजाका अधिकार अपने राज्यके दूर दूर प्रदेशोंमें फैलने लगा
यह भी हुक्म हुआ कि राजाके प्रत्यक्ष अधीन प्रदेशोंमें राजा ही
सिक्का चलेगा । जिन जमींदारोंको सिक्का बनानेका अधिकार था उनके
प्रदेशोंमें राजाका सिक्का उन्हींके सिक्कोंके समान चलेगा ।

लूईका पौत्र सुन्दर फिलिप था उसके पास एकतंत्र राजा हो
पूरी सामग्री थी । उसके हाथमें सुदृढ़ राज्य प्रवन्ध आया । उ
ऐसे न्यायाधिकारियोंकी सहायता रही जिन्होंने रोमके कानूनोंसे
हृदय भर रक्खा था । जो इस कारण राजाके अनन्याधिकारमें कुछ
फरक नहीं होने देना चाहते थे वे राजाको सदा उत्साहित किया करते
कि जमींदारों और पुरोहितोंके अधिकारपर विना विचार किये
अपना सर्व श्रेष्ठ अधिकार रखिये ।

जब फिलिपने यह यत्न किया कि पुरोहित लोग भी अपने धनमें से कुछ अंश राजाको दिया करें तो पोप से बड़ा झगड़ा उठ खड़ा हुआ। इस विचार से कि इस झगड़ेमे सारा देश हमारी सहायता करे राजाने संवत् १३५६ (सन् १३०२) में इक बड़ी सभा एकत्र की। बड़े बड़े सर्दार और धर्माधिकारियोंके साथ उसने प्रथमवार नगरोंके प्रतिनिधियोंको भी एकत्र किया। इस प्रकार फ्रांस देशकी राष्ट्रीय सभा अर्थात् 'स्टेट जनरल' स्थापित हुई। ध्यान रखनेकी यह बात है कि इसी समय आंग्ल देशमें भी पार्लमेन्ट अर्थात् लोक प्रतिनिधि-सभा स्थापित हो रही थी।

इन बुद्धिमत्ताके तरीकोंसे फ्रान्सीसी राजाओंने पश्चिमी यूरोपके सबसे अधिक शक्ति शाली राजवंशकी स्थापना की। परन्तु आंग्ल देश और फ्रांसका झगड़ा अभी नहीं मिटा, वह बना ही रहा। दोनोंकी सीमाएं भी निश्चित नहीं हुई इसके कारण आगे चलकर बड़े बड़े भीषण युद्ध हुए जिनका वर्णन आगे किया जायगा।

रनेके सौ वर्ष पीछे तक डेन लोगोंका आक्रमण बना रहा इसका प्रधान ारण यह था कि इस बीच डेनमार्क, स्वीडन और नार्वेमें पृथक् पृथक् ाष्ट्र स्थापित हुए, जिन सर्दारोंकी भूमि छीनी गयी थी वे अन्य देशोंमें लूट ार करनेके लिए चले। आंग्ल देशमें जब इन लोगोंका आक्रमण ोता था तो डेनगेल्ड नामका एक विशेष कर लगाया जाता था, जिसको ान करके डेन लोगोंके आक्रमणसे देश बचाया जाता था. परन्तु इससे न लोगोंका लालच बढ़ता ही जाता था और वे फिर फिर आते थे। संवत् ०७४ (सन् १०१७) में कन्यूट नामका डेन राजा इंग्लिस्तानका भी ाजा बन गया। डेन वंश बहुत थोड़े दिन तक चला और अंग्रेज राजा एडवर्ड (कनफेसर) सारे मुल्कका राजा हुआ। उसके मरणोपरान्त ार्मण्डीके ड्यूक विलियमने आंग्लदेशके राज्यके उत्तराधिकारी होनेका दावा किया और संवत् ११२३ (सन् १०६६) हेरल्डको हराकर वह राजा हो गया। इस घटनाके बाद आँग्ल देशके इतिहासका एक युग विशेष समाप्त होता है। आँग्लदेशका सहसा घनिष्ठ सम्बन्ध यूरोपके अन्य देशों-से हो जाता है।

आँग्लदेश अर्थात् इंग्लिस्तानका इस समय तक वही रूप हो गया था जो अब भी है। छोटे छोटे राष्ट्र सब गायब हो गये थे। उत्तरमें आज ही की तरह स्काटलैण्डका प्रदेश था और पश्चिममें वेल्स का। वेल्स-में अब भी वे खास ब्रिटन जातिके लोग हैं, जो उत्तरीय लोगोंके धावा करनेके पहले आँग्ल देशमें रहते थे। डेन लोग आकर आँग्ल देशकी जातियों-से हिल मिल गये और सब एक ही राजाका अधिकार मानने लगे। समय पाकर राजाका अधिकार बढ़ता गया, परन्तु उसके लिए यह आव-श्यक समझा जाता था कि हर जरूरी कामके लिए विटेनेजीमॉट (विद्वानोंकी समिति) नामक परिषद्से वह सलाह लेवे। इस परिषद्में उच्च राजकर्मचारी धर्माध्यक्ष, और सर्दारगण रहते थे। राज्यके कई विभाग थे और प्रत्येक विभाग अर्थात् शायरमें एक स्थानिक

सभा रहती थी जो स्थानिक मामलोंके लिए प्रतिनिधियोंकी सभाका काम करती थी ।

रोमके धर्मका प्रभाव बढ़नेके कारण ऑग्ल देशके पुरोहितोंके द्वारा यूरोपके अन्य प्रदेशोंसे ऑग्ल देशका सम्बन्ध बना रहा अतः ऑग्ल देशने अपनी विशेषता बिना खोये ही अन्य देशोंकी सभ्यतासे अपना सम्पर्क सदा बनाये रखा । आगे चलकर व्यवसायकी उन्नति उपनिवेशोंकी स्थापना और शासन पद्धतिकी विचित्रतामें सर्वमान्य हुआ । अन्य देशोंकी तरह यहां भी फ्यूडल शासनका जोर रहा । कितने ही स्थानिक सर्दार राजा के प्रतिवादी हो जाते थे । इसके अतिरिक्त बड़े बड़े धर्माध्यक्षोंको भी शासनका अधिकार स्थान स्थानपर था, अतः इनसे और राज-कर्मचारियोंमें झगड़ा होनेकी सदा सम्भावना बनी रहती थी । अंग्रेज जमींदार भी प्रायः अपने असामियोंपर उतना ही अधिकार रखते थे जितना कि फ्रांस देशके ।

विजयी विलियमने आनेके पहले यह कहा था कि ऑग्ल देशकी गद्दीका उत्तराधिकारी एडवर्डके पश्चात् मैं ही हूं इस बातपर बिना कुछ ध्यान दिये हेरल्ड एडवर्डकी मृत्युके पश्चात् स्वयं गद्दीपर बैठ गया । यह वेसेक्स प्रदेशका अर्ल था और राज्यका बहुत सा अधिकार पहलेसे ही अपने हाथमें कर चुका था । ऐसी अवस्थामें विलियमने पोपसे प्रार्थना की कि मेरा हक् मुझे मिलना चाहिये । साथ ही वादा किया कि यदि मैं राजा हो जाऊंगा तो ऑग्ल देशके धर्माध्यक्षोंको आपके अधीन कर दूंगा । पोपने सहर्ष विलियमको आशीर्वाद देकर यह कहा कि आप अवश्य ऑग्ल देश जांय आपको ईश्वर सहायता देगा । विलियम धर्मयुद्ध चढ़ाने ऑग्ल देशमें पहुँचा । संवत् ११२३ सन् (१०६६) में सेनलकके प्रसिद्ध युद्धमें हेरल्ड मारा गया और उसकी सेना पराजित हुई । थोड़े ही दिन पीछे कितने ही बड़े बड़े सर्दार तथा धर्माध्यक्ष विलियमको राजा मानने लगे । लण्डनमें पहुँच कर विलियमने अपना राज्य स्थापित किया ।

स्टमिनूस्टरके गिरजेमें उसका राज्याभिषेक हुआ। विलियमको फ्रास और आँग्लदेश दोनोमें बहुतसी कठिनाइयोका सामना करना पड़ा। आँग्ल देशके कितने ही सर्दारोको अपने वंशमें करना पड़ा फ्रासके राजासे भी उसका सामना हुआ। परंतु उसने सब शत्रुओको पराजित किया। आँग्ल देशका राष्ट्र व्यूहन उसने बड़ी बुद्धिमत्ताके साथ किया। फ्रासमें प्रचलित फ्यूडल प्रबन्ध वह इस देशमें भी लाया था परन्तु उसने यह यत्न किया कि इस प्रबन्धसे मेरा अधिकार कम न हो जाय। जो आँग्ल देशीय उसके विरुद्ध लड़े थे उनको उसने राजद्रोही ठहराया। उनकी सब ज़मीनें छीन ली। ऐसी जमीनें उसने अपने अनुयायियोंको दे दी। जिन अंग्रेजोंने इसका साथ दिया था उनको भी पुरस्कार और ज़मीनें मिली थी।

विलियमने यह घोषणा कर दी कि मैं आंग्ल देशके आचार विचारोंको परिवर्त्तित नहीं करना चाहता हूं. अत. मैं सैक्सन राजाओंकी ही तरह राज्य कार्य चलाऊँगा। विटेनेजी मॉट नामकी संस्थाको उसने कायम रक्खा तथा जितने वहाँ अंग्रेजी रीति रस्म थे उन सबको भी कायम रक्खा। यह इतना प्रभावशाली था कि किसीके मातहत नहीं रहना चाहता था। सब प्रदेशोंके अर्ल और काउंटोंको अपने पदाधिकारी शेरिफोंके द्वारा अपने हाथमें रखता था। किसी ज़मींदारको वह एक ही चक में इतनी ज़मीन नहीं देता था कि वह बहुत शक्तिशाली हो जाय। उसने यह भी यत्न किया कि छोटे बड़े जितने ज़मींदार हों सब प्रत्यक्ष रूपसे उसे अपना मालिक मानें। लिखा हुआ है कि सं० ११२३ (सन् १०६६) की पहली अगस्तको विलियम साल्सबरी पहुचा, वहाँ उसके सब मन्त्रिगण भी उपस्थित हुए। वहाँ पर सारे आंग्ल देशके जमींदार आये। उसके सामने सिर झुकाकर सबने वादा किया कि हम सब लोग आपको अपना स्वामी मानते हैं और सब लोगोंके विरुद्ध हमलोग आपका साथ देंगे।

इस घटनाका महत्व यह है कि फ्यूडलप्रकारके राष्ट्रमें राजा प्रत्यक्ष

हुआ । वास्तवमे आंग्ल देशका एक नयी जातिसे सम्पर्क हुआ जिसका प्रभाव देशके आचार विचारपर वहुत अधिक पड़ा । नार्मन लोग वरावर समुद्रपार करके आते रहे । वे धीरे धीरे देशमे वसने लगे । यहाँ तक कि कर्मचारी गण, महाजन लोग, सव धर्माध्यक्षो सहित नार्मन जातिके ही लोग हो गये । इस समय जो वड़ी वड़ी इमारते गिरजाघर, धर्मशाला आदि वने वे सव नार्मन जातिके लोगोंकी कारीगरी थे । इसके अतिरिक्त कितने ही सौदागर, जुलाहे, आदि आकर आंग्ल देशमें वसने लगे और इनका प्रभाव क्रमशः केवल नगरोंमे ही नही परन्तु गावोंमें भी पड़ने लगा । कुछ दिनोंतक तो इन आगन्तुकोंकी जाति अलग रही परन्तु सौ वर्षके भीतर ही भीतर ये लोग आंग्लदेशवासियोके साथ हिल मिल गये । देशी परदेशीका अन्तर मिट गया, दोनो जातियोंके संघर्षण-से यह अनुमान होता है कि अव जो नयी जाति निर्मित हुई उसमे वल-वुद्धि और उत्साह अधिक वढ़ गया ।

विलियमके पश्चात् उसके दो लड़के विलियम रूफस अर्थात् लाल और प्रथम हेनरी राजगद्दीपर वैठे । प्रथम हेनरीके देहान्तके वाद वड़ा झगड़ा पैदा हुआ । कुछ लोग यह चाहते थे कि विलियमके नाती स्टीफ़न को ही राज्य मिले और कुछ चाहते थे कि विलियमकी पोती मेटिल्डाको राज्य मिले । सं० १२११ (सन् ११५४) मे जव स्टीफन मर गया तव मेटिल्डाके पुत्र तृतीय हेनरीको राज्य सिंहासनपर वैठाया गया । स्टीफनके उन्नीस वर्षके राज्यकालमे जव चारों ओर परस्परका युद्ध छिड़ा हुआ था तव कितने ही सर्दारोंने अलग अलग अपना स्वतन्त्र राज्य जमाया । प्रतिद्वन्दियोंने अपने अपने पक्षको पुष्ट करनेके लिए कितने ही सैनिकोको रुपयेका लालच देकर अन्य देशोंसे वुलाया था । ये लोग भी आफत मचाये हुए थे, साराश यह कि जव द्वितीय हेनरी राज्यगद्दीपर वैठा तव चारो ओर देशमे आफत मची हुई थी ।

हेनरी वड़ा प्रतापी था उसने फौरन वड़े साहससे काम करना आरम्भ

किया । जिन जिन सर्दारोंने दुर्ग वना वना कर अपने स्वतन्त्रताकी रक्षाकी चेष्टा की थी, उनको उसने अपने वशमें किया । और इनके दुर्गोंको नाश कर दिया । हेनरीको आँग्ल देशमें शान्तिकी स्थापना करनी थी और फ्रांसके एक विस्तृत अंशपर भी राज्य जमाये रखना था । फ्रांसमें जो प्रदेश उसे मिले थे उनके कुछ अंश इसकी पैतृक सम्पत्ति थी और कुछ इसने विवाहके कारण दहेजमें पाया था । फ्रांसके प्रदेशोंके शासनके अर्थ इसका प्राय. वहीं रहना पड़ता था तिसपर भी आंग्ल देशका इसने बड़ा सुप्रवन्ध किया, जिस कारण इस देशके ओजस्वी राजाओंमें वह आजतक गिना जाता है।

इसका बड़ा प्रशंसनीय कार्य यह हुआ कि इसने न्यायालयोंका पूरा सुधार किया । प्रजा आपसमें सर्वदा लड़ा करती थी । इसके वन्द करनेके लिए न्यायालयोंका संस्कार वड़ा आवश्यक था । इसने यह प्रवन्ध किया कि सरकारी न्यायाधीश देश भरमें भ्रमण करें, ताकि प्रत्येक स्थानमें प्रतिवर्ष एक वार वहांके सब मामले तय हो सकें । इसने 'किंग्ज वेंच' नामकी अदालत स्थापित की । यहांपर उन सब मामलोंका फैसला होता था जिनपर राजाका अधिकार था । इस अदालतके न्यायाधीश परिषद्‌के पाँच सभासद होते थे, जिसमें दो धर्माध्यक्ष और तीन साधारण पुरुष होते थे । हेनरीकी ही स्थापित की हुई संस्था 'ग्रान्ड जूरी' है, जिससे कि सब स्थानोंपर समयानुसार कुछ सज्जन नियुक्त किये जाते थे जो दोषियोंपर अभियोग चला कर उनको दंड दिलाते थे । ग्रान्डजूरीके अतिरिक्त एक छोटी जूरी और होती थी जो दोषीका मुकदमा सुनती थी तथा सजा देती थी । यह व्यवस्था पहिलेसे चली आयी थी, परन्तु इस प्रकारसे वहुत कम लोगोंका मुकदमा चलाया जाता था और अव हेनरीने इसको नियमित कर सर्वसाधारणके लिए यह प्रकार खोल दिया । इसमें वारह सज्जन नियुक्त किये जाते थे । ये सब मुकदमा सुन पक्षपात हीन होकर अपनी राय देते थे । यह प्रथा कितनी अच्छी थी और इसमें कितनी सफलता प्राप्त हुई वह इतने ही से मालूम हो सकता है कि आजतक "कामन लॉ" के नामसे इसके किये हुए निर्णयोंका आदर होता है ।

पश्चिमी यूरोप
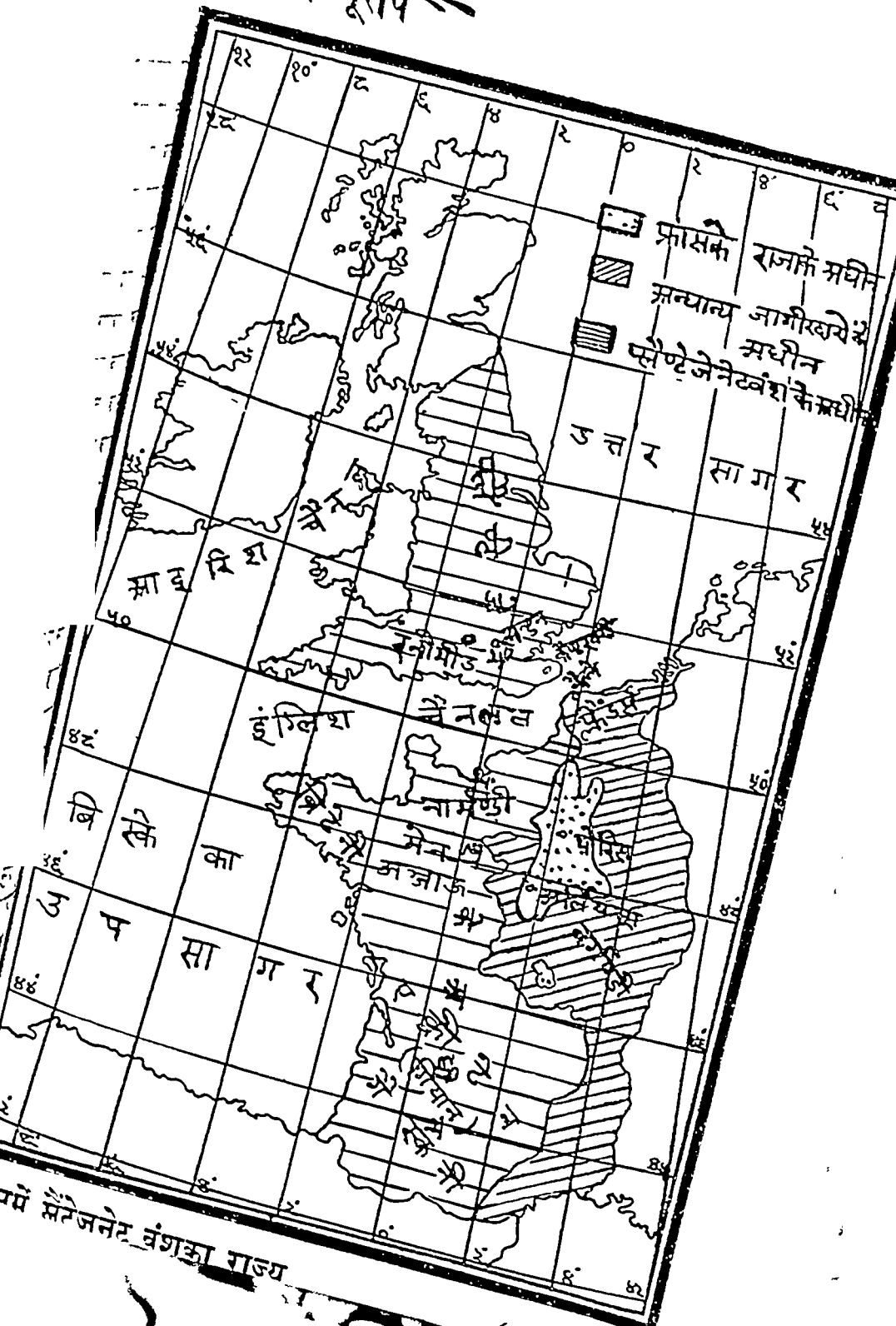
फ्रांसके राजाके अधीन

अन्यान्य जागीरदारोंके अधीन

प्लैण्टेजेनेट वंशके अधीन

उत्तर सागर

आयरिश

इंग्लिश

बिस्के का उपसागर

...में प्लैंटेजनेट वंशका राज्य

धार्मिक मामलोंमें भी हेनरीने सुधारका यत्न किया था धर्माध्यक्षोंका उस समय बड़ा जोर था। राष्ट्र तथा चर्चका सदा झगड़ा चलता था युरोपियनोंकी यही इच्छा रहती थी कि राष्ट्रको अपने हाथमें रक्खें। हेनरीका एक बड़ा पुराना मित्र "टामस ऑ बैकेट" था ? आरम्भमें इसने हेनरीकी बड़ी सहायता की थी। इसको हेनरीने अपना चासलर बनाया था। मंत्रीकी हैसियतसे उसने पुरोहितोंको राजाके अधीन रखनेका यत्न किया। राजाने विचार किया कि यदि हम इसे मुख्य धर्माधिष्ठाता अर्थात् "केन्टरबरीका आर्च बिशप" बना दें तो हमारे हाथमें देशभरकी धर्म संस्थाएं आजावेंगी। उस समय ऐसे श्रेष्ठ धर्माध्यक्षोंके चुननेका अधिकार राजाको ही हुआ करता था। अतः उसने बैकेटको आर्च बिशप बनाया। अब उसने यह विचार किया कि इस आर्च बिशपकी सहायतासे यह प्रबन्ध हो जाय कि पुरोहित लोग भी यदि कोई दोष करें तो साधारण दोषियोंकी भाँति वे भी राष्ट्रकी अदालतोंमें दंड पावें और अपनी विशेष अदालतोंमें न जायं, क्योंकि वहां प्रायः उन्हें कुछ दंड ही नहीं मिलता था उसकी यह भी इच्छा थी कि बिशपलोग अपनी जमींदारियोंके लिए साधारण जमींदारोंकी तरह मालगुजारी राजाको दिया करें, किसी संशयके समय पोपके यहां अंग्रेजी पुरोहित न जाया करें। परन्तु बैकेटके जीवनमें आर्च बिशप होते ही एक अद्भुत परिवर्त्तन हो गया। बैकेटने अपनी ऐश आरामकी जिन्दगी छोड़कर पूर्णरूपसे धर्माध्यक्षका रूप धारण किया। उसने यह भी कहना आरम्भ किया कि राजाको पारलौकिक धर्मसम्बन्धी किसी धनपर कोई अधिकार नहीं है। आर्चका एकाएक ऐसा परिवर्त्तन देखकर राजा बड़ा दुःखी और क्रुद्ध हुआ। परन्तु बैकेट अटल बना रहा और पोपसे उसने प्रार्थना की कि आप मेरी रक्षा करें, बैकेटने राजाकी इच्छाके विरुद्ध कितनों हीको धर्मच्युत कर दिया और कितने ही राजभक्त धर्माध्यक्षोंको अपने पदसे निकाल दिया। एक समय क्रोधमें आकर हेनरीने कहा क्या कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इस दुःखको दूर कर सके ?

उसके कुछ अनुयायियोंने यह समझकर कि राजा चाहता है कि वैकेटका नाश हो, जाकर वैकटको कंटरवरीके गिरजेमें मार डाला। किन्तु वास्तवमें राजा उसका खून नहीं किया चाहता था। जब उसने यह सुन तब उसे बड़ा ही दु:ख हुआ और उसको यह भी भय हुआ कि इसक परिणाम बहुत बुरा होगा। पोपने यह आज्ञा दी कि हेनरी धर्मच्युत समझा जाय और जो लोग पोपकी तरफसे आंग्ल देशमें आवें उनको समझा बुझाकर उसने यह कहलाया कि टामसकी मृत्युकी इच्छा हम नहीं करते थे। उसने यह वादा किया कि कैंटरवरीका जो धन हमने लिया है हम सब वापस कर देंगे और जो धर्मयुद्ध अर्थात् क्रुसेड इस समय हो रहा है उसमें आर्थिक और शारीरिक दोनों प्रकारकी सहायता करेंगे। हेनरीका अन्तकाल दुःखमय ही था। एक तो फ्रासका राजा महाप्रतापी फिलिप (आगस्टस) इस फिक्रमें लगा हुआ था कि हेनरीके अधीन फ्रांसका सब प्रदेश हमारे हाथ आजावे दूसरे, उसके सब पुत्र आपसमें झगड़ रहे थे। उसके मरणोपरान्त उसका पुत्र रिचर्ड जो बड़ा प्रतापी था राजगद्दीपर बैठा। यद्यपि यह दस वर्ष तक राजा रहा तथापि कुछ ही मासतक यह आंग्लदेशमें रहा, बाकी सब समय इसने बाहर पर्यटन करनेमें व्यतीत किया। पश्चात् इसका भाई जान राज्यपर बैठा। यद्यपि यह बड़ा अधम पुरुष था तथापि इसका राज्यकाल स्मरणीय है। एक तो फ्रांसके जो बहुतसे प्रदेश द्वितीय हेनरीके समयसे आंग्ल राजाओंके अधीन थे वे सब छिन गये और फ्रास राष्ट्रमें सम्मिलित हो गये, दूसरे आंग्ल देशीय एकतन्त्र शासन प्रणालीसे असन्तुष्ट होकर राजासे मेग्नाकार्टा नामका प्रसिद्ध राजपत्र लेकर उन्होंने प्रजातन्त्र-राष्ट्र-शासनप्रणालीकी नींव डाली।

इस घटनाका विशेष कारण यह था कि संवत् १२७० (सन् १२१३) में जानने यह चाहा कि समुद्र पारकर उन प्रदेशोंको फिर पा ले जो हमारे हाथसे निकल गये हैं। अतएव उसने अंग्रेज सर्दारोंको आज्ञा दी कि

तुम सब हमारे साथ चलो। जानसे वे लोग एक तो असन्तुष्ट ही थे उन सब लोगोंने कहा कि आपके साथ देशके बाहर जानेको हमलोग बाध्य नहीं हैं। कुछ दिन पीछे कई सर्दारोंने मिलकर यह शपथकी कि हम लोग राजाको विवश करके और यदि आवश्यकता होगी तो उससे लड़कर ऐसा राजपत्र लेंगे जिसमें उन सब बातोंकी स्पष्ट सूचना रहेगी जिनको करनेका राजाको अधिकार नहीं है। संवत् १२७२ (सन् १२१५की १५ वीं जून) १ मिथुनको इन सरदारोंने राजपत्र लिखकर राजाके सम्मुख उपस्थित किया और रनीमीडपर विवश होकर जानने यह प्रतिज्ञा की कि हम आप लोगोंके अधिकारोंको सदा सुरक्षित रक्खेंगे। सारांश यह कि इस राजपत्रमें राजाने यह वादा किया कि हम नियमित करसे अधिक न लेंगे और प्रजासे किसी प्रकारकी जबरदस्ती न करेंगे। यदि विशेष करकी आवश्यकता पड़ेगी तो हम अपनी राजपरिषद्से पूछकर करेंगे, विना न्यायालयमें उचित प्रकारसे मुकदमा चलाये किसीको दण्ड न देंगे, न किसीका धन छीनेंगे। इसके पहले राजाको अधिकार था कि वह जिसको जब चाहे पकड़कर दंड दे देता था।

अब यह अधिकार राजासे ले लिया गया। इन सब बातोंपर विचार करके यह कहना पड़ता है कि इस चार्टरको पानेकी घटना आंग्ल देशके इतिहासमें युगान्तर करनेवाली थी इसमें अंग्रेज और नार्मनका कोई भेद नहीं हैं। ऐसे बड़े बड़े सिद्धान्तोंका निर्देश किया गया है कि जिसे कितने ही दिनोंसे कितने ही विद्वान खोज रहे थे। यह न समझना चाहिये कि चार्टरको पाते ही सब संकट दूर हो गये, क्यों कि जानने स्वयं और उसके पश्चात् कितने ही राजाओंने इस चार्टरकी धाराओंके विरुद्ध आचरण किया और यह यत्न किया कि इसकी धाराएं प्रमाणित न समझी जाय। परन्तु अंग्रेज जाति इसपर सदा अटल बनी रही और इसीका प्रमाण देते हुए एकतन्त्री राजाओंको अपने वशमें करती रही।

जानका पुत्र तृतीय हेनरी संवत् १२७३ से १३२६ (सन् १२१६ से १२७२) के बीचके समयमे पार्लमेंट नामी संस्थाका विकाश होने लगा आंग्लदेशके इतिहासमें पार्लमेंटका स्थान बड़ा ऊंचा है। वहुतसे अन्य देशोंने भी अपने राष्ट्रके निर्माणमें आंग्लदेशीय पार्लमेंटका अनुकरण किया है। तृतीय हेनरी विदेशियोंका बड़ा पक्षपाती था उच्च उच्च पदोंपर उसने विदेशियोंको नियुक्त किया। पोपको अंग्रेजी गिरजोंमें वहुत कुछ हस्तक्षेप करने दिया, अतएव अंग्रेज सरदार जो राजाका अधिकार कम करना चाहते थे उठ खड़े हुए और साइमन डी मॉट कोर्टके नेतृत्वमें उन्हों-ने युद्ध ठाना। इतिहासमें ये युद्ध सरदारोंके युद्धोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। उनसे प्रजाके अधिकारोंकी रक्षा सफलता पूर्वक की गयी और पार्लमेंट संस्थाकी उन्नति होने लगी।

यह स्मरण रखना चाहिए कि पूर्वकालमें अर्थात् सैक्सन राजा-ओंके समयमें जो "विटेनेजी मॉट" नामकी संस्था थी उसमें केवल वड़े वड़े सरदार और धर्माध्यक्ष सम्मिलित होते थे। जव राजा सम्मति लेना चाहता था तो उन लोगोंको निमन्त्रित करके उनसे सम्मति लेता था। तृतीय हेनरीके समयमें इस संस्थाकी वैठकें वहुत होने लगीं, और इसमें वहस भी अधिक होती थीं इसी समयसे इसको सब लोग पार्लमेन्ट कहने लगे।

संवत् १३२२ (सन् १२६५) में पार्लमेन्टकी एक वैठक हुई। साइ-मनके यत्नसे इसमे वहुत साधारण लोग भी आये थे। अर्थात् केवल सरदार और धर्माध्यक्ष ही नहीं, मामूली लोग भी उपस्थित थे। स्थान स्थानके शेरिफोंको यह आज्ञा हुई कि सरदार और धर्माध्यक्ष ही नहीं किन्तु प्रत्येक कांउटीसे दो साधारण सैनिक (नाइट), और वड़े वड़े नगरोंसे दो नागरिकोंको भी लिया जाय जो पार्लमेन्टमें वैठकर वहसमें भाग ले सकें। यह एक वड़ी घटना हुई। प्रथम एडवर्ड हेनरीके पश्चात्, राज सिंहासनपर वैठे। उन्होंने इस सुधारको स्वीकार कर लिया। इसमें एड-

वर्डकी एक मसहलत भी थी वह चाहता था कि धनिक नागरिकोंको इसी बहाने बुलाकर उनपर दबाव डालकर उनसे राजकार्यके लिए अधिक धन वसूल करे। इसके अतिरिक्त एडवर्ड कुछ ऐसे कार्य करना चाहता था, जिनके लिए उसको देशके सब लोगोंकी अनुमति लेनेकी इच्छा थी। संवत् १३५२ (सन् १२९५) मे इसने अपने प्रसिद्ध आदर्शको पार्लमेंटमें निमन्त्रित किया। तबसे बराबर पार्लमेन्टकी बैठकोंमें सरदारों और धर्माध्यक्षोंके साथ साथ साधारण प्रतिनिधि भी आने लगे। पार्लमेण्टके लार्ड सभा और कामनसभा, ये अभीतक दो विभाग भी नहीं हुए थे, वे इसके बाद होंगे। इतिहास वेत्ता ग्रीनने कहा है कि प्रथम एडवर्डके समयसे हम लोगोंको आधुनिक आंग्लदेशका रूप देख पड़ने लगा है। राजा, लार्ड, कामन, न्यायालय, राष्ट्र और पारलौकिक धर्मका पारस्परिक सम्बन्ध, सारांशमें समाजका संगठन ही इस समयसे ऐसा हुआ जो अब तक मौजूद है। अंग्रेजी भाषाने भी आजकासा रूप धारण करना प्रारम्भ किया।

अध्याय ११

इटली और जर्मनीकी दशा ।

पर कहा जा चुका है कि किस प्रकारसे शार्लमेनका राष्ट्र पूर्वीय अर्थात् जर्मनी और पाश्चात्य अर्थात् फ्रांसके राज्योंमें विभक्त हो गया। फ्रांसका इतिहास हम संक्षेपमें कह आये हैं। जर्मनीका इतिहास कुछ दूसरा ही है। शार्लमेनके पौत्र जर्मन लूईको जर्मनीका प्रथम राजा समझना चाहिये। चार सौ वर्ष तक इसके वंशज अपना अनन्याधिकार जमानेका यत्न करते ही रहे, पर कृतकार्य न हुए। वास्तवमें तो बीसवीं शताब्दीके प्रारम्भ तक जर्मनी कोई विशेष राष्ट्र नहीं हुआ, परन्तु अनेक छोटे और बड़े स्वतन्त्र राज्योंमें विभक्त रहा।

शार्लमेनका साम्राज्य उसके मरणोपरान्त पूर्वमें बहुतसे राज्योंमें विभक्त हो गया जिसके ऊपर ड्यूक राज करते थे। इन लोगोंकी उत्पत्तिका अनुमान इस प्रकारसे किया जा सकता है। जर्मन लूईके बाद बहुत कमजोर राजा राज्यपर बैठा था। बहुत सी स्वतन्त्रताप्रिय जर्मन जातियां फिर उठीं और राजाको कमजोर पाकर वे अपने सरदारोंके नेतृत्वमें स्वतन्त्र होने लगीं। इसके अतिरिक्त बाहरसे बहुतसी जातियां इन लोगोंपर धावा करती थीं। चूंकि कोई राजा इन लोगोंके आक्रमणसे अपनी प्रजाको नहीं बचा सकता था, अतः इन लोगोंको अपनी आत्म रक्षाके निमित्त यह जरूरी था कि अपने ही सरदारोंकी अधीनतामें संगठित होकर लड़ें। उपराष्ट्रोंको जर्मन लोग स्टेम डची अर्थात् मूल डची कहते थे। इन्हीं लोगोंके कारण जर्मन राजा अपने सारे राज्यपर खूब मजबूतीसे नहीं बैठ सकते थे। वे किसी न किसी प्रकारसे सब राष्ट्रों

एकत्र रखते थे संवत् ९७६ (सन् ९१९) में जर्मन सरदारोंने प्रथम हेनरी-को अपना राजा चुना। इसने ड्यूकोंका अधिकार कम करनेका यत्न नहीं किया। चारों ओरसे शत्रु घेरे आते थे। उसे इन सबकी सहायताकी आवश्यकता थी। इसीके कार्यका फल आगे चलकर यह हुआ कि हंगेरियन लोग हराये गये और स्लव जाति पराजित की गयी।

संवत् ९९३ (सन् ९३६) मे प्रथम ओटो राज्यपर बैठा। यह बड़ा ही प्रतापशाली राजा था। यद्यपि इसने भिन्न भिन्न डचियोंका नाश नहीं किया, तथापि उन सबको अपने ही पुत्रों और निकट सम्बन्धियोंके अधीन कर दिया। उसका भाई हेनरी बवेरियाका ड्यूक हुआ। दूसरा भाई कोलोनका ड्यूक हुआ। ऐसा प्रबन्ध करनेका उपाय यह था कि यदि बिना पुत्रके कोई ड्यूक मर जाता था तो उस ड्यूकके उत्तराधिकारी नियुक्त करनेका अधिकार राजाको होता था। यदि कोई ड्यूक राजाके विरुद्ध हाथ उठाता था तो उसे हटाकर उसका सब अधिकार राजा छीन लेता था। फिर जिसको चाहता था वह राजा बना देता था। इन सब बड़ी बड़ी डचियोंको अपने सम्बन्धियोके हाथमे रखनेका उसका उद्देश्य यह था कि उसीके अधीन- सब रहे और उसीके मनका सब कार्य करें।

जर्मनीके उत्तर और पूर्व सीमाओंका निश्चय न होनेके कारण स्लाव जातिया बराबर सेक्सनीपर आक्रमण करती रहीं। ये जातियां अभी क्रिस्तान धर्ममें सम्मिलित नही हुई थीं। अतः ओटोने इनसे युद्ध तो किया ही, पर साथ ही साथ कई धर्म केन्द्र भी स्थापित किये जिनके द्वारा एल्ब और ओडर नदीके बीचके रहनेवालोंको क्रिस्तान धर्मके अनुयायी बनानेका यत्न किया गया। हंगेरियनोंको इसने एक बड़े भारी युद्धमें आग्जबर्गके निकट संवत् १०१२ (सन् ९५५) में हराया और जर्मनी-की सीमाके बाहर भगाया। ये लोग जो अब मगयारके नामसे प्रसिद्ध है अपने प्रदेशमे जमकर अपनी राष्ट्रीय उन्नतिका विचार करने लगे और

आगे चलकर इनकी बड़ी उन्नति हुई । इसी समय बवेरिया नामक डचीका एक अंश अलग बसाया गया । इससे आस्ट्रियाके साम्राज्यकी उत्पत्ति हुई ।

ओटोका सबसे बड़ा कार्य यह था कि उसने इटलीके मामलोंमें हस्तक्षेप किया । उस समय इटली और पोपकी दशा शोचनीय थी । उत्तरके सैनिक सरदारगण आ आकर समय समयपर इटलीके राजा बन बैठते थे । इसके अतिरिक्त मुसलमानोंने भी आक्रमण करना आरम्भ किया, जिससे यह गड़बड़ बढ़ती ही गयी । पाठकोंको स्मरण होगा कि पोपने शार्लमेनको साम्राज्यका पद प्रदान किया था, उसके पश्चात् उसके उत्तराधिकारियोंको साम्राज्यका पद बराबर मिलता गया । फिर कई इटलीके राजाओंको पोपने यही पद दिया और उसके बाद कुछ दिनों तक इस उपाधिका लोप हो गया । अब ओटोने इस उपाधिको पाया । कारण यह था कि इटलीको अस्त व्यस्त देखकर ओटोने उसके प्रबन्धमें हस्तक्षेप करनेका विचार किया । संवत् ११०८ (सन् ९५१) में वह इटलीमें गया । वहांके किसी राजाकी विधवासे उसने अपना विवाह कर लिया । यद्यपि राज्याभिषेक इसका नहीं हुआ था तथापि वहांका राजा माना जाने लगा । दस वर्षके पश्चात् पोपने इसे निमन्त्रण दिया कि तुम आकर हमारे शत्रुओंसे हमें बचाओ । इसने ऐसा ही किया और सं० १०१९ सन् (९६२) में इसका राज्याभिषेक हुआ ।

यह भी एक बड़ी भारी घटना हुई शार्लमेनके राज्याभिषेकसे इसकी तुलना करनी चाहिये, ओटो स्वयं इतना प्रतापी और बलवान् था कि इस नयी जिम्मेदारीको भार सह सकता था । परन्तु आगे चलकर इसके वंशज इस भारको नहीं सह सके और इसी कारण उनका नाश भी हो गया । लगातार तीन शताब्दियों तक वह लोग यत्न करते रहे कि जर्मनीको सम्बद्ध रक्खें, इटली और पोपपर अपना अधिकार जमावें । किन्तु बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़कर तथा बहुत बड़ा दुःख सह कर इन्हें

सब कुछ खो दिया। इटली अलग रहे और पोप अलग स्वतन्त्र हो गये। जर्मनी सम्बद्ध राष्ट्र न रहकर बहुतसे छोटे छोटे राष्ट्रोंमें विभक्त हो गया।

राजा और पोपके सम्बन्धसे क्या क्या होनेवाला था उसका नमूना ओटो हीके समय मिल गया। ओटोके इटलीसे वापस लौटते ही पोप अपनी शर्तोंके विरुद्ध कार्य्य करने लगा। ओटोने लौटकर पोपको उसके स्थानसे च्युतकर दिया और दूसरा पोप नियुक्त करवाया। जब लोगोंने इसके बनाये हुए पोपका अधिकार नहीं मानना चाहा तो उसको शस्त्र भी उठाना पड़ा। इसी प्रकार इसको और इसके बादके राजाओंको कितने ही बार रोम जाना पड़ा है। एकबार तो ये राज्याभिषकके लिए जाते थे और फिर पोपपर अपने अधिकार सुरक्षित रखनेके लिये युद्ध सामग्री के साथ जाते थे। इस प्रकार बारम्बार जानेसे बड़ी भारी हानि यह होती थी कि जर्मनीके राजद्रोही सरदार राजाको देशसे बाहर गया जानकर अपना मतलब साधने लग जाते थे।

ओटोके उत्तराधिकारियोंने "पूर्वीय फ्राक जातिके राज्य" की उपाधि छोड़कर रोमके राजाकी उपाधि ग्रहण की। इनके राष्ट्रका नाम पवित्र रोमन राष्ट्र हो गया। यदि वास्तवमें नहीं तो कमसे कम इसका नाम तो बीसवीं शताब्दीके आरम्भ तक गया। राजा और सम्राट् इन उपाधियोंमें अन्तर केवल इतना ही था कि राजाकी हैसियतसे जर्मनी और इटलीका राज्याधिकार इनके हाथमें था ही, पर सम्राट्की हैसियतसे उनका यह अधिकार और भी था कि पोपकी नियुक्तिमें वे हस्तक्षेप भी कर सकते थे। इससे उनपर आपत्ति ही आयी कुछ सुख नहीं मिला। क्योंकि वे लोग अपने ही देशमें चुपचाप न रहकर अपने ही राष्ट्रको सुसज्जित न कर सके और लगातार पोपोंसे लड़ाईकर इन्होंने अपनी शक्ति कम कर ली। इसका फल यह हुआ कि पोप अधिक बलवान हो निकले और साम्राज्य केवल नामका रह गया।

ओटोके उत्तराधिकारियोंको भी बाहरी जातियोंके आक्रमणका विरोध करना पड़ा। इस साम्राज्यका सबसे बड़ा वैभव काल द्वितीय कानराड सं० १०८१ से १०९६ (सन् १०२४ से १०३९) और द्वितीय हेनरी सं० १०९६ से१११३ सन् (१०३९ से १०५६) के शासन कालमें हुआ सं० १०८९ (सन् १०३२) वर्गण्डीका राज्य कानराडके हाथमें आया।

यह प्रदेश बहुत दिनोंतक साम्राज्यका अंश बना रहा और इस कारण जर्मनी और इटलीका परस्परका आवागमन भी बहुत सरल हो गया। यह जर्मनी और फ्रांसके बीचमें एक रुकावटसी हो गयी। पूर्वमें पोलैंडका भी राज्य ग्यारहवीं शताब्दीमें स्लाव जातिने जमाया। यद्यपि सम्राट्का इनसे बराबर युद्ध हुआ करता था तथापि ये उसका आधिपत्य मानते थे। कानराडने भी बड़े यत्नसे बहुतसी स्टेम डचिनों अपने पुत्र तृतीय हेनरीके हाथमें करदीं और जब यह राज्यपर बैठा तो फ्रान्कोनिया स्वाबिया और बवेरियाका भी ड्यूक हुआ। इससे राज्यकी नीवकी बड़ी पुष्टि हुई। कानराड और हेनरीके समयमें साम्राज्यके बलका विशेष कारण यह था कि कोई प्रतिद्वन्दी ड्यूक विशेष बली न थे। वे दोनों सम्राट् बड़े प्रतापी थे। फ्रान्सके राजा अपने ही झगड़ोंमें ऐसे लगे थे कि वे जर्मनीके ऊपर धावा नहीं कर सकते थे। इटली भी एकमत होकर इनका विरोध नहीं कर सकता था अतः इन लोगोंकी बड़ी उन्नति हुई।

इस समयसे क्रिस्तान धर्मके वाह्य रूपके सुधारका यत्न हो रहा था। पोपकी तरफसे यह यत्न हो रहा था कि राजाका अधिकार विशप आदि परसे उठ जाय। वे धार्मिक मामलोंमें अपना कुछ अधिकार न रक्खें। यदि इसमें सफलता होती तो राष्ट्रकी बहुत ही आर्थिक हानि होती, क्योंकि बड़े बड़े जमींदार बिशप थे जो राजाको कुछ करने न देते थे। आरम्भमें जब राजाओंने विशप और एबट लोगोंको भूमि दी तो उसका विशेष अर्थ यही था कि वे राजाओंके सहायक बने रहें। अब जो सुधारके लिए बात चलायी

गयी तो उसका अभिप्राय यह नहीं था कि राजद्रोह खड़ा किया जाय, परन्तु इसका प्रभाव राजाके अधिकारके विरुद्ध अवश्य ही पड़ने लगा। अब जो झगड़ा पोप और सम्राटमें प्रारम्भ हुआ उसको समझनेके लिए यह जानना आवश्यक है कि उस समय चर्चकी क्या दशा थी। धर्माध्यक्षोंके अधिकारमें बड़े बड़े भूमिके टुकड़े थे। राजा और जमींदार भी बीच बीचसे विशप और धर्मसंस्थाओं अर्थात् मोनेस्टरियोंको बड़े बड़े भूमिके टुकड़े प्रदान कर देते थे। क्योंकि उससे उनका यह ख्याल था कि परलोकमें बड़ा लाभ होगा। इस प्रकारसे धर्माध्यक्षोंके हाथमें पश्चिमीय यूरोपकी बहुतसी जमीन आगयी थी।

जब जमींदार गण इस प्रकारसे भूमि धर्माध्यक्षोंके हाथमें परमार्थके निमित्त दान करने लगे, उस समय साधारण फ्यूडल प्रकारसे इनके जमीनकी भी गणना होने लगी। राजा या अन्य जमींदार साधारण लोगोंकी तरह पुरोहितोंको भी जमीन देता था। जब विशपको जमीन मिलती थी तब और लोगोंकी तरह वह भी प्रतिज्ञा करता था कि हम सदा आपके विश्वास पात्र बने रहेंगे। इस सम्बन्धमें उनकी धर्माध्यक्षताके कारण कोई विशेषता न थी। एबटगण भी अपने मठोंको अर्थात् निवासालयोंको पड़ोसके किसी जमींदारके अर्पण कर देते थे ताकि वह उनकी रक्षा करे और मठकी जमीनें इस रक्षाकी आशासे वे जमींदारोंको प्रदान कर देते थे और फिर साधारण असामियोंकी तरह वापस कर लेते थे। यहां यह एक भेद न भूलना चाहिये वह यह है कि विशप और एबटगण उस समयके धर्मानुसार विवाह नहीं कर सकते थे, अत. साधारण असामियोंकी भांति वे अपनी जमीन अपनी सन्ततिके हाथमें नहीं छोड़ सकते थे। अत जब कोई धर्माध्यक्ष एबट मर जाता था तब उसके स्थान पर किसी दूसरेको नियत करना पड़ता था जो उसके कर्तव्योंका पालन कर सके और उसके धनका भी भोग करे। चर्चका यह बड़ा पुराना नियम था कि प्रत्येक धर्म केन्द्र (डायोसीस) के पुरोहित विशपको नियत किया करें और उनकी

नियुक्तिका अनुमोदन सर्व साधारणसे हुआ करे । चर्च सम्बन्धी कानूनमें कहा है कि जब पुरोहितगणकी रायसे सर्व साधारणका अनुमोदन प्राप्त कर कोई बिशप नियुक्त हो, तब वह वास्तवमें ईश्वरके मंदिरमे स्थान पावेगा ।

ऐसे नियमोंके होते हुए भी विशप और एबटगण ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी तक वास्तवमें राजा अथवा जमींदार ही से नियुक्त किये जाते थे । यद्यपि ऊपरी तौरसे साधारण निर्वाचनका रूप रक्खा जाता था तथापि जमींदार स्पष्ट रूपसे कह देता था कि हम किसकी नियुक्ति चाहते हैं और यदि उसकी नियुक्ति नहीं होती थी तो उसे वह जमीन ही नहीं देता था । इस प्रकारसे वह अपना पूरा अधिकार उनके निर्वाचनपर रखता था । अधिकार रखनेका एक कारण यह भी था कि बिशपको विधिपूर्वक अपना अधिकार जमींदारोंसे लेना पड़ता था । इस प्रकारसे यदि जमींदार किसी निर्वाचित विषयको पसन्द नहीं करता था तो वह न उसे भूमि देता था और न विधि पूर्वक स्थानापन्न ही बनाता था । विचारकी एक बात और है कि जो पुरुष बिशप बननेकी अभिलाषा रखता था उसे केवल धर्माध्यक्षता ही की इच्छा न थी पर वह उसके साथ लौकिक सुखोंकी भी इच्छा रखता था ।

विधि पूर्वक स्थानापन्न बनानेका प्रकार यह था कि पहले बिशप या एबट जमींदारका असामी बनता था और वह उसके लिए उचित प्रतिज्ञा करता था । इसके पश्चात् जमींदार उसके पद सम्बन्धी अधिकार और भूमि प्रदान कर देता था । सम्पत्ति और धार्मिक कर्त्तव्योंमें कोई अन्तर नहीं किया जाता था । इसलिए यह दोनों भी जमींदार ही प्रदान करा देता था । एक अंगूठी और एक दंड उसे चिन्ह रूपमें दिया जाता था जिससे उसके धार्मिक अधिकारोंका बोध होता था । उस समयके जमींदार लोग असभ्य सैनिक मात्र थे अत. बहुतसे लोग उसे बड़ा अनुचित समझते थे कि पारलौकिक धर्मके मामलोंमें ऐसे लोगोंका कुछ अधिकार

रहे और जब कभी कभी ऐसा होता था कि जमींदार स्वयं विशप बन बैठता था तब तो बड़ा अन्धेर प्रतीत होता था।

चर्च समझता था कि सम्पत्ति तो बहुत अविचारणीय बात है, प्रधान बात तो हमारे धार्मिक अधिकार ही हैं। इन धार्मिक संस्कारोंको केवल पुरोहितगण ही करा सकते थे, अत उन्हींको यह भी अधिकार होना चाहिये। बड़े बड़ धार्मिक ओहदोंपर भी वे ही अधिकारियोंको स्वतन्त्रता पूर्वक नियुक्त करे इसमें किसी अन्य पुरुषको हस्तक्षेप करनेका अधिकार न रहे। अतः चर्च सम्बन्धी जितनी सम्पत्ति थी उसपर भी नियुक्तिका अधिकार पुरोहितको होना चाहिये। इसपर राजाका यह कहना था कि केवल मामूली पुरोहितगण बड़े बड़े इलाकोंका प्रबन्ध नहीं कर सकते और इस समय विशप और एबट लोगोंको अपने धार्मिक कर्तव्योंके साथ राज्य प्रबन्ध करनेका भी काम उठाना पड़ता है। इस कारण उचित पुरुषोंकी नियुक्ति होनी चाहिये।

साराश यह कि विशप लोगोंके कर्तव्य बड़े ही जटिल थे। एक तो धर्माध्यक्ष होनेके कारण उसको सब धार्मिक विधियोंकी देख भाल करनी पड़ती थी, साथ ही यह भी फिक्र करनी पड़ती थी कि उचित उचित स्थानोंपर योग्य पुरुष चुने जायं जो अपना काम ठीक प्रकार-से करते रहें। साथ ही पुरोहितोंके मामलोंके लिए उनको न्यायाधीशका भी काम करना पड़ता था। दूसरे, चर्च सम्बन्धी जितनी भूमि होती थी उसका प्रबन्ध भी करना पड़ता था, तीसरे, साधारण असामियोंकी तरह उन जमींदारोंकी भी सेवा करनी पड़ती थी जिनसे उसने जमीन पायी हो। लड़ाईके समय स्वामीको सिपाही भी देने पड़ते थे। फिर जर्मनीमें तो इन्हीं धर्माध्यक्षोंको राजा काउंट भी बना देता था। इस कारण उसे कर बटोरने, सिक्का बनाने, और अन्यान्य राष्ट्र प्रबन्ध सम्बन्धी कार्योंका अधिकार भी मिल जाता था।

ऐसी अवस्थामें यदि तत्काल सुधारके विचारसे राजासे यह अधिकार

ले लिया जाता कि वह विशपके ऊपर चर्चकी जमीन न दे सके, तो इसका नतीजा यह होता कि वह कितने अफसरोंके ऊपर कुछ अधिकार न रख सकता। क्योंकि कितने स्थानोंपर विशप और एबट राष्ट्र प्रबन्धके के लिए उसके अधीन काउटके रूपमें थे। अत. जब यह विचार होने लगा तब राजाको यह चिन्ता हुई कि कहीं हमारे हाथसे यह अधिकार निकल न जाय और कहीं ऐसे लोग धर्माध्यक्ष न बन जायं जो हमारा कहना न मानें।

एक और आफ़त आ रही थी। यह एक पुराना नियम था कि पुरोहितोंका विवाह न होना चाहिये। उसका विचार कम होने लगा। इटली, जर्मनी, फ्रांस और इंग्लिस्तान आदि देशोंमें कितने ही पुरोहित विवाह करने लगे। इससे बहुतसे धार्मिक लोगोंको यह भय हुआ कि अब ईश्वरकी उपासना ठीक प्रकारसे नहीं हो सकती। क्योंकि पुरोहितों को चाहिये कि वे गृहस्थ बन्धनोंसे मुक्त रहें, ताकि एकाग्र चित्तसे धर्मका उपदेश दे सकें, और ईश्वरकी सेवा किया करें। यह तो एक बात हुई और दूसरी यह, कि यदि पुरोहितगण विवाह करने लगे तो उनकी सम्पत्ति-में सब चर्चकी सम्पत्ति बट जायगी, क्योंकि पिता अवश्य ही चाहेगा कि पुत्रोंका कुछ प्रबन्ध हो जाय। यदि ऐसा हुआ तो जैसे साधारण जमीं-दार परम्परा बद्ध हो रहे हैं वैसे ही पुरोहित भी हो जायंगे। अत. पुरो-हितोंका अविवाहित ही रहना ठीक है।

एक और गड़बड़ जो इस समय मच रही थी यह थी कि कितने ही लोग पदोंको खरीदते और बेंचते थे। यदि धर्माध्यक्ष अच्छी नियतसे काम करें तब तो उसके लिए पूरी मेहनत थी और उस पदको ग्रहण करनेके लिए कोई भी बड़ा उत्सुक न होता, परन्तु बहुतेरे लोग अपने कर्तव्योंका विचार न करके केवल उसके लाभका ही विचार करते थे, अत. घूस दे देकर स्थानको प्राप्त करनेका यत्न करते थे। एक तो विस्तृत भूमि, दूसरे बड़े सम्मानका पद, तीसरे राष्ट्रकार्यका अधिकार इन तीनोंके लिए बड़े

बड़े लोग भी यह आकांक्षा रखते थे कि हमको विशपकी पदवी मिले। जिस राजा या जमींदारके हाथमें नियुक्तिका अधिकार होता था, उसे बड़े बड़े लोग घूस देकर उस पदके प्राप्त करनेकी कोशिश करते थे। साधारणतः यह समझा जाता था कि चर्चके पदोंका खरीदना और बेचना महा पाप है। इसको साइमनी' नामका पाप कहा करते थे। यह शब्द साइमन नामके जादूगरसे निकला है। कहावत यह है कि महात्मा पीटरको इसेन इस अधिकारके लिए धन देना चाहा था, कि वह जिसको चाहे केवल स्पर्श करनेसे ही पवित्रात्मा बना देवे। महात्मा पीटरने पहले से ही साइमनको घृणाकी दृष्टसे देखा, इससे सब उपासकगण जो इस पवित्र पदके खरीदनेकी अभिलाषा करते थे घृणा करने लगे। "तेरा धन तेरे साथ नाश हो जाय, क्योंकि तू धनके बलसे ईश्वरको खरीदना चाहता था'-(संस्करण ८ सू० २०)

जिन्होंने धर्मके पदको खरीदा था उनमें बहुत कम ऐसे थे जिनकी आकांक्षा परमेश्वरकी कृपासे धार्मिक पद पानेकी थी। उनकी केवल अभिलाषा, प्रतिष्ठा और आमदनी पानेकी थी। इसके अतिरिक्त जब कभी कोई राजा या सरदार कुछ पुरस्कार उन लोगोंसे पाता जिनके लिए उसने कोई पद दिला दिया था उसको वह बिक्रीका न समझता था केवल अपनेको इस लाभमें हिस्सेदार समझता थे। मध्य युगमें कोई भी यह निर्वाचन विना पुरस्कार या अनेक प्रकारके शुल्कके नहीं होता था। गिरजोंकी जमीनोंकी हालत निहायत अच्छी थी और उनसे आमदनी भी खूब थी। जो कोई पादरी किसी विशप (गिरजेका अध्यक्ष) या एबटके पदपर नियुक्त किया जाता था उसे उसकी आवश्यकतासे कहीं अधिक आमदनी थी। इससे यह आशा की जाती थी कि वह राज्य कोशको भी पूरा करेगा जो कि प्रायः खाली ही रहता था।

साइमनीका पाप बहुत प्रचलित हो गया और उस अवस्थामें उसे दूर करना भी असम्भव जान पड़ने लगा। पर वह अत्यन्त दुश्चरित्र था

क्योंकि उसकी खराब हवा उलटी बहने लगी । और तमाम पादरी वर्गको उसकी छूत लग गयी क्योंकि जब कोई पादरी अपना पद प्राप्त करनेमें अधिक धन व्यय करता था तो उसे यह उन पुरोहितोंसे जिन्हें कि वह स्वयं नियुक्त करता था कुछ न कुछ अवश्य लेनेकी आशा रखता था। और वह पुरोहित फिर अपने हल्केदारोंसे बपतिस्मा देने, विवाह कराने और दफन करानेके कार्योंमें हदसे ज्यादा रकम वसूल करता था ।

बारहवीं शताब्दीके आरम्भमे यह मालूम पड़ने लगा कि अपनी मिलकीयतके कारण अब गिरजोंमें भी अराजकता फैल जायगी जैसा कि पिछले अध्यायमें कहा है । बहुत बातोंसे तो यह स्पष्ट था कि अब गिरजोंके भी बड़े बड़े पदाधिकारी राजाओं तथा उमराओंके मातहत हो जायंगे, और अब वे पोपकी मातहतीकी सर्व-जातीय-संस्थाके प्रतिनिधि न रहेंगे । ग्यारहवीं शताब्दीमें रोमके विशपका कुल अधिकार आल्प्सके उत्तरमें नष्ट हो गया था, और वह स्वयं भी इटलीके अशान्त उमराओंकी मातहतीमें था । समयके फेरमें वह रांस या मायान्सके श्रेष्ठ धर्माध्यक्षों (आर्क विशप) से भी तुच्छ समझा जाता था । इतिहासमें इससे बढ़कर आश्चर्य दायक परिवर्तन कोई भी नहीं है जिसने ग्यारहवीं शताब्दीके दीन और क्षीण पोपको यूरोपीय मामलोंमें सबसे ऊंचे पदपर पहुंचा दिया।

पोपका नियुक्त करना रोमके एक उमरावके हाथमें था और वह उस पदके अधिकारसे नगरमें अपना अधिकार जमाता था । (संवत् १०८१ सन् १०२४) में जब द्वितीय कानराड बादशाह हुआ तो एक लंगड़ा आदमी पोप बनाया गया और इसके बाद नवा बेनडिक एक दस या ग्यारह वर्षका बच्चा उसी पदपर नियुक्त किया गया जो बालक होनेपर भी बहुत दुष्ट था । उसके खानदान वाले शक्तिशाली थे और उन्हीं लोगोंने उसे उस पदपर दश वर्ष तक संभाला । इसके बाद उसने शादी करनेकी इच्छा प्रगट की । इस सूचनासे रोमकी जनता बिगड़ गयी और उसे शहरसे निकाल दिया । इसके बाद एक अभीर विशपने अपनेको नियुक्त कराया ।

बाद ही एक तीसरा धार्मिक तथा पंडित पुरुष खड़ा हुआ जिसने नवें वेनडिकके हकको वहुतसा रुपया देकर खरीद लिया और अपना नाम छठां ग्रेगरी रक्खा ।

ऐसी अवस्थामें बादशाह तृतीय हेनरीने अपना हस्तक्षेप आवश्यक समझा अतः वह इटलीमें गया और संवत् ११०३ (सन् १०४६) में इटलीके उत्तर सुत्री नगरमें एक सभाकर दोनो स्वत्वाधिकारियोंको उतार दिया। छठे ग्रेगरीने जो अपने प्रतिवादियोंसे कहीं अधिक समझदार था, केवल अपने पदसे इस्तीफा ही न दिया बल्कि अपने पदकी पोशाकको भी टुकड़े टुकड़े कर डाला। यद्यपि उसने उस पदको पाक नियतसे लिया था तथापि उसने खरीदनेका पाप स्वीकार किया। बादशाहने उस पदपर एक सुयोग्य जर्मनीका पोप नियुक्त किया। जिसका पहला काम हेनरी और उसकी पत्नी अग्नेसको गद्दीपर बैठाना था ।

ऐसे अवसरपर तृतीय हेनरीका इटलीमें आना और तीनों प्रतिवादी पोपोंके मसलेको तय करना मध्य युगके इतिहासकी खास घटनाओंमें है। इटलीकी हीन राजनीतिक अवस्थाके ऊपर जो उच्च स्थान तृतीय हेनरीने पोप पद्धतिको दिया उससे उसने अपने राज्याधिकारके सामने एक प्रतिवादी खड़ाकर दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि दो सौ वर्षके भीतर ही उसने राज्याधिकारको दवा दिया और पश्चिमीय यूरोपमें सबसे अधिक शक्तिशाली हो गया।

करीव दो सौ वर्षतक पोपने यूरोपके सुधारमें वहुत कम भाग लिया था। गिरजेको एक ऐसा सांसारिक राज्य-संघ जिसकी राजधानी भूमध्य रोम हो, वनाना वडा भारी काम था। रास्तेमें जो कुछ कठिनाइयां थीं उन्हें दूर करना भी सहज नहीं जान पड़ता था। उन आर्कबिशपोंको जो कि पोपकी शक्तिसे उतना ही जलते थे जितना कि एक नायव राजाकी शक्तिसे जलता है, दवाना आवश्यक था, लोगोंके विचारोंको जो कि गिरजोंके मिलानेके विरुद्ध थे, दूर करना आवश्यक था। इसके सिवाय गिरजोंके पदपर अधिकारी वर्ग

चुननेका अधिकार राजाओं, अमीरों, और अन्य लोगोंके हाथसे छीनना, साइमनी और उसके नाशकारी प्रभावको मिटाना, गिरजेकी सम्पत्तिको नाश होनेसे बचानेके लिए पादरियोंके विवाहोंको रोकना, और गिरजेके पुरोहितोंसे लेकर आर्कविशप तक तमाम अधिकारीवर्गको लोगोंकी आंखोंसे गिरानेवाले इस दुष्कर्म तथा सासारिक विषयोंसे दूर रखना भी आवश्यक था।

अपने जीवन भर तृतीय हेनरीने पोपके चुनावका काम अपने हाथ मे रक्खा और वह हमेशा गिरजोंकी उन्नतिके प्रयत्नमें लगा रहा और जर्मनीके अच्छेसे अच्छे प्रेलेटको उस पदपर नियुक्त करता रहा। इसमें सबसे अच्छा नवां लियो संवत् ११०६—१११ (सन् १०४६–५४) में हुआ। यह उन लोगोंमें पहला था जिन्होंने यह दिखलाया कि पोप न केवल पादरी और गिरजोंका ही मालिक बन सकता है बल्कि राजाओं और बादशाहोंके ऊपर भी शासन कर सकता है। लियोकी नियुक्ति बादशाहसे होनेके कारण उसने पोप होना स्वीकार नहीं किया। उसका कहना था कि बादशाह पोपको सहायता दे, उसकी रक्षा करे न कि उसकी नियुक्ति करे। इसलिए वह रोममें यात्रियोंकी तरह नंगे पैर गया और वहांवालोंने गिरजेके कानूनके अनुसार उसे नियुक्त किया।

साइमनी और पादरियोंके विवाह रोकनेका मनसासे सभा करानेके लिए लियो स्वयं फ्रास, जर्मनी और हंगरीमें गया। लेकिन कुछ दिनों बाद यह आत्मशक्ति पोपोंमें न रही। इसका मुख्य कारण यह था कि उनमें अधिकारी वृद्ध होते थे, और यात्रा करना उनके लिए दुरा-दायी और कभी कभी भयावह भी था। लियोके उत्तराधिकारी दूतोंपर अधिक भरोसा रखते थे जिनको उन्होंने बहुत अधिकार दे रक्खा था और उन्हींको उन लोगोंने यूरोपके समस्त देशोंमें भेजा। यह काम उसी तरहका था जैसा शार्लमेनका मिसीको नियुक्त करना। कहा जाता है कि लियोको अपने शक्तिशाली कार्यमें हिल्डब्रैण्ड नामी किसी मनुष्यसे बहुत बड़ी भारी आयोजना मिली थी। हिल्डब्रैण्ड ग्रेगरी सप्तमके नामसे एक बड़ा भा

पोप होने वाला था, जिसने कि मिडिवल चर्चके बनानेमें बड़ा काम किया था। जिस कारणसे हम लोग उसे सीजर, शार्लमेन, रिचलू, बिस्मार्क ऐसे नीतिज्ञोंमें स्थान देते हैं।

साधारणजनके अधिकारसे गिरजोंके उद्धार करनेके कार्यका प्रारम्भ पहले पहल द्वितीय निकोलसने किया था। संवत् १११६ (सन् १०५६) में इसने एक घोषणा निकाली, जिसके द्वारा पोपका अधिकार बादशाह तथा रोमकी प्रजा दोनोंके हाथसे छीन लिया गया और सदैवके लिए कार्डिनलोंके हाथमें दे दिया गया, वे रोमन पादरीके प्रतिनिधि थे, इस घोषणाका मतलब केवल हस्तक्षेप रोकना था, चाहे वह बादशाह या अमीर उमरा किसीका हो। रोमन प्रजामें कार्डिनलोंकी संस्था अब तक वर्तमान है, जो पोपका चुनाव करती है।

सुधारक दल पोपके कार्यका संचालक था। उसने पोपकी नियुक्तिका कार्य पादरियोंके हाथमें देकर गिरजोंके मुख्य पदको सांसारिक मनुष्योंके दबावसे पृथक् कर दिया। अब उन लोगोंने दुनियावी लगावसे गिरजेको ही सुधारना चाहा। उन लोगोंने विवाहित पादरियोंको धार्मिक अनुष्ठान संपादन करने और उनके हलकेके लोगोंको ऐसे पादरियोंकी धार्मिक शिक्षा सुननेसे रोका। दूसरे, उन लोगोंने राजाओं तथा उमराओंको पादरियोंके चुनावके अधिकारसे वंचित किया, क्योंकि यही पादरियोंके दुनियावी लगावका मुख्य कारण समझा जाता था। स्वभावतः नये तरीकेसे पोपके चुनावसे भी कहीं अधिक इसके विरोधी पैदा हुए। मिलनमें एक निर्वाचित पादरीको निकालनेके प्रयत्नमें बलवा हो गया। पोपके दूतकी जान जोखिममें थी। जिन चालानोंमें पादरियोंको गिरजेकी ज़मीन और पद अन्य लोगोंसे लेने का निषेध था, उनपर न तो पादरियोंने ही और न उमराओंने ही ध्यान दिया। जो काम पोपोंने अपने हाथमें लिया था उसकी पूरी व्यवस्था संवत् ११३० (सन् १०७३) में हिल्डब्रैण्डके सप्तम ग्रेगरी नामसे पोप बनजानेपर मालूम हुई।

अध्याय १२

सप्तम ग्रेगरी और चतुर्थ हेनरीका झगड़ा

सप्तम ग्रेगरीने अपने संक्षिप्त लेखमें दिखलाया है कि पोपके क्या अधिकार है? इनका नाम उसने 'डिक्टेटस' रक्खा है। उसके मुख्य अधिकारमें कहा गया है कि "पोपके पदकी समता नहीं है, वह संसार भरमें एक ही विशप है और जिस विशपको चाहे निकाल दे, फिर दूसरेको नियुक्त कर दे, एक स्थानसे दूसरे स्थानपर भेज दे। उसकी आज्ञाके विना गिरजेकी कोई भी जनता इसाई धर्मके बारेमें कुछ नहीं कर सकती। रोमन चर्चने न तो कभी भूल की है और न कभी कर सकती है। जो मनुष्य रोमन चर्चसे सहमत नहीं है, वह कैथोलिक नहीं समझा जा सकता और कोई भी किताब जबतक वह पोपकी स्वीकृति न पाले प्रमाण नहीं माना जा सकती।

ग्रेगरी चर्चोंपर पोपके अखंड अधिकारपर ही जोर देकर न रह गया, बल्कि वह आगे बढ़ा और जहां जहां धर्मके लिए आवश्यक समझा, राज्याधिकारके रोकनेका हक पोपका दिखलाया। उसका कहना है कि केवल पोप ही है जिसके पैर तमाम राजे महराजे छूते हैं। वह बादशाहको गद्दीपरसे उतार सकता है, और प्रजाको बेइन्साफ राजाका सहगामी होनेसे रोक सकता है। जो कोई पोपके पास प्रार्थना भेजे उसे कोई दुर्वाद नहीं कह सकता। पोपकी बातको कोई काट नहीं सकता। पोप चाहे जिसकी बातको काट सकता है और पोपके कामपर कोई अपनी राय जाहिर नहीं कर सकता।

ये सब केवल एक क्रूर उपद्रवीके स्थिर अविचार न थे परन्तु राज्यपद्धतिके विचार थे। जिसके समर्थक आगामी समयके कितने ही

विद्वान् मनुष्य हुए हैं। ग्रेगरीके विचारोंकी आलोचना करनेके पहले हमें दो बातोंपर ध्यान देना आवश्यक है। पहले यह जान लेना चाहिए कि उस समय आज कलकी तरह राज्योंमें शान्ति न थी। उसके सरदार विग्रही राजे थे जिनको अराजकता अत्यन्त प्रिय थी। किसी समय ग्रेगरी-ने कहा था कि राज्याधिकारको किसी बुरे मनुष्यने शैतानकी आयोजनासे बनाया है, उसका उस समय विचार तत्कालीन राजाओंके आचरणका सच्चा चित्र था। दूसरे, यह समझ लेना आवश्यक है कि ग्रेगरी कभी नहीं चाहता था कि राज्याधिकार चर्चके हाथमें जाय, बल्कि उसका यह कहना था कि चर्च उन पापात्मा राजाओंके बुरे कार्यको रोके और असंगत नियमोंका प्रचार न होने दे, क्योंकि इसीपर ईसाई धर्मके अनन्त सुखका भार है। इन सबोंमे सफलता न होनेपर उसने अपने अधिकारोंमें यह भी कहा था कि उस जातिका बचाना हमारा धर्म है जो एक दुष्टात्मा राजाकेसंसर्गसे अपने लोक तथा परलोक दोनोंका सत्यानाश कर रही है।

पोपके पदपर आते ही ग्रेगरीने उन विचारोंका अनुसरण करना आरंभ किया जो रोलके मुताबिक किसी धार्मिक संस्थाके महन्तको करना चाहिए। उसने सारे यूरोपमे दूत भेजे और इसी समयसे ये दूत राज्यमें एक प्रबल शक्ति हो गये। उसने फ्रांस, इंग्लिस्तान तथा जर्मनीके राजा चतुर्थ हेनरीको कहला भेजा कि 'बुरे रास्तेको छोड़ दीजिये, न्याय प्रिय बनिये और मेरे अनुशासनको मानिये।' जयशील राजा विलियमसे उसने बड़े नम्रभावसे कहा कि "जैसे नक्षत्र मण्डलमें सूर्य और चन्द्रमा सबसे बड़े समझे जाते हैं वैसे ही संसारकी शक्तियोमें ईश्वरने पोप तथा राजाके अधिकारको सबसे बड़ा बनाया है। परन्तु पोपका अधिकार राजाके अधिकारसे भी श्रेष्ठ है, क्योंकि राजाके कार्योंका उत्तरदायी पोप है। अन्त समयमें ग्रेगरी राजाके कार्योंका उत्तरदायी होगा क्योंकि वह भी एक मामूली जीवकी तरह उसके हाथ सपुर्द किया गया है।" उसने फ्रांसके राजाको कहला भेजा कि "साइमनीका कार्य छोड़ दो, नहीं तो तुम राज

काजसे अलग कर दिये जाओगे और तुमसे तुम्हारी प्रजाका सम्बन्ध तोड़ दिया जायगा।" ग्रेगरीने वह तमाम कार्य किसी संसारिक सुखकी अभिलाषा से नहीं किया था, परन्तु उसका सत्यधर्मपर पूरा विश्वास था और ऐसा करना वह अपना धर्म समझता था।

ग्रेगरीके सुधारकी व्यवस्था समस्त यूरोपके लिए थी परन्तु विशेष दशाके कारण उसे जर्मनके बादशाहसे ही विरोध करना पड़ा। समरका आरम्भ यों है। तृतीय हेनरी संवत् १११३ (सन् १०५६) में मरा। उस समय उसकी पत्नी अनिस और उसका एक छः वर्षका लड़का उत्तराधिकारी था. और इन्हींपर जर्मनीके बादशाहकी सत्ताका भार था जिसका उपार्जन उसने बड़ी कठिनाईसे किया था, जिसपर बड़े बड़े उमराव लोग दांत गड़ाये बैठे थे। यहां तक कि यशस्वी ओटो भी उनको न दबा सका।

संवत् ११२२ (सन् १०६५) में पन्द्रह वर्षका वह बालक बालिग बना दिया गया और यहांसे उसकी कठिनाइयोंका आरम्भ हुआ। क्योंकि उसके पदपर आते ही सेक्सन लोगोंने बलवा करना आरम्भ कर दिया। उन लोगोंने यह दोषारोपण किया कि राजाने हम लोगोंकी जमीनमें जबरदस्ती किला बनाकर उसमें नये नये सिपाही रख छोड़े हैं जो मनुष्योंका शिकार करते हैं। इस विषयमें हस्तक्षेप करना ग्रेगरीने अपना धर्म समझा। ग्रेगरीको यह मालूम हुआ कि वह विचारहीन बालक बुरी संगतिमें पड़कर सेक्सन लोगोंपर अत्याचार करता है।

हेनरीकी कठिनाइयां तथा आपत्तियोंको पढ़कर आश्चर्य होता है कि वह कैसे बादशाह बना रह गया। बिना किसी विश्वासपात्रके, पीड़ित हृदय होकर, अपनी प्रजासे भागकर, पश्चात्तापके साथ उसने पोपको लिखा कि "मैंने ईश्वर और आप दोनोंके सामने पाप किया है और अब मैं आपका पुत्र कहाने लायक नहीं हूं।" परन्तु सेक्सनोंके ऊपर विजय पानेकी प्रसन्नतामें वह पोपके अधिकार माननेका वचन बिलकुल भूल गया और पुन उन्हीं लोगोंकी राय लेने लगा जिनको पोपने निकाल दिया था।

वह पोपका ख्याल न करके जर्मनी और इटलीके मुख्य मुख्य गिरजोंमें स्वयं बिशप नियुक्त करने लगा।

ग्रेगरीके पहले जो पोप हुए थे उन्होंने गिरजे वालोंको मना किया था कि वे लोग साधारण जनोंसे अधिकारका पद न प्राप्त करें। जिस समय हेनरीसे विरोध पैदा हुआ था, ठीक उसी समय ग्रेगरीने संवत् ११३२ (सन् १०७५) मे इस प्रतिरोधकी पुन घोषणा करा दी जैसा कि हम पहले कह आये हैं कि राजा लोग गिरजेके नये अधिकारियोंको उसके संसर्गकी तमाम जमीनका अधिकार देते थे। सामान्य जनोंसे अधिकार पदको लेनेसे रोकनेमे ग्रेगरीने एक बड़ा भारी टंटा खड़ा कर दिया। बिशप और एबट लोग सरकारी आदमी होते थे जो जर्मनी और इटलीमें काउंट लोगोंके अधिकारका भोग करते थे। राजा लोग केवल उनकी राय तथा राज्य कार्यमे सहायता ही नहीं चाहते थे, किन्तु जब कभी उनको अपने अमीर उमरावोंसे लड़ना पड़ता था तो ये बिशप लोग इन राजाओं-के मुख्य सहायक होते थे।

ग्रेगरीने सं० ११३२ (सन् १०७५) में हेनरीके पास तीन दूत पत्र देकर भेजे थे। पत्र ऐसे लिखा था जैसे पिताने मानों पुत्रको लिखा हो। उसमें उसने राजाको उसकी सब बुरी काररवाइयोंके लिए फटकारा था, लेकिन उसे पूरी आशा थी कि केवल इन प्रत्यादेशोंका हेनरीपर बहुत थोड़ा प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि उसने अपने दूतोंको पहलेसे सूचित कर दिया था कि यदि आवश्यकता पड़े तो धमकीसे भी काम लेना। जिसका परिणाम यह होगा कि या तो वह दब जायगा या खुल्लम खुल्ला बलवा कर देगा। दूत लोग राजासे यह कहने गये थे कि "आपके अपराध ऐसे कठोर, दारुण तथा बद हो गये हैं कि आपको सदाके लिए राज्यसे निकाल देना चाहिए।"

दूतोंके उग्र वचनसे केवल राजाकी ही कोपाग्नि नहीं भभकी, किन्तु उसके बिशपोंको भी यह असह्य प्रतीत हुआ। हेनरीने सं० ११३३ (सन् १०७६) में वर्म स्थानमें एक सभा की। इसमें जर्मनीके करीब करीब सब बिशप

उपस्थित थे, वहांपर यह कह कर कि ग्रेगरीका चुनाव नियमसे नहीं हुआ है इससे उसे पदसे च्युत कर दिया और उसपर दुश्चरित्रता और तृष्णाके दोष भी लगाये गये। विशपोंने साफ कह दिया कि हम लोग उसकी आज्ञा पालन न करेंगे और अब वह हम लोगोंका पोप न रहा। यों तो देखनेसे आश्चर्यसा जान पड़ता है कि हेनरीको गिरजोंके मुखियाके प्रतिकूल गिरजे वालोंकी सहायता कैसे मिली। किन्तु विशेष बात यह थी कि विशपोंको प राजा हीसे मिलता था, न कि पोपसे।

हेनरीने ग्रेगरीको एक लम्बा चौड़ा पत्र लिखा कि "आज तक मैं उत्सुक ताके साथ कष्ट उठाकर पोपकी प्रतिष्ठाकी रक्षाका प्रयत्न करता आया हूं, परन्तु पोपने हमारी इस नम्रताको भयका कारण मान लिया है।" पत्रके अन्तमें उसने ये वाक्य लिखे हैं कि "ईश्वरसे प्राप्त इस राज्याधिकारके प्रतिकूल आंख उठाते हुएं तुझे कुछ भी आशंका न हुई, तिसपर तू हम लोगोंसे य अधिकार छीन लेनेकी धमकी देता है, मानो, यह राज्य तूने ही हमको दिया है। यह राज्य या साम्राज्य ईश्वरके हाथमें न हो कर तेरे ही हाथमें है। मैं हेनरी राजा होकर अपने तमाम बिशपोंके साथ अब तुझे यह आज्ञा देता हूं कि तू अपने पदसे उतर जा और समग्र जातिसे घृणित और गर्हणीय हो।

ग्रेगरीने हेनरी और उन बिशपोंको, जो उसे पदच्युत करना चाहते थे, बड़ी दृढ़ताके साथ शीघ्र ही यह जवाब दिया कि "माननीय महात्मा पीटर, मेरी बात सुनिये, आपकी कृपासे आपका ही प्रतिनिधि बनाकर स्वर्ग तथा मृत्युलोकमें बन्धन वा मुक्तिका अधिकार ईश्वरने मुझे दिया है। इसके सहारेसे आपके गिरजोंके यश तथा प्रतिष्ठाके लिए ईश्वरके नामपर आपकी शक्तिके द्वारा बादशाह हेनरीके पुत्र राजा हेनरीसे मैं जर्मनी और इटलीके समस्त राज्यका अधिकार छीन लेता हूं, क्योंकि वह आपके गिरजेके प्रतिकूल प्रबल उद्दण्डतासे खड़ा हुआ है। मैं तमाम इसाइयोंको जो इसके संसर्ग में हैं वा आवें, इससे अलग करता हूं तथा आज्ञा देता

कि इसको कोई भी राजा न मानें चूंकि इसने अधिकतर निकाले हुए लोगोंके साथ सम्बन्ध रक्खा है और बहुत अन्याय भी किया है इस-लिए वह घृणाके साथ निकाला जाता है।

पोप द्वारा राजगद्दीसे उतारेजानेके कुछ समयके उपरान्त तक सब बातें हेनरीके प्रतिकूल होती रहीं, यहां तक कि सब गिरजेवाले भी उससे अलग हो गये। सेक्सन वालोंने भी यह समय उपयोगी समझा। वे लोग पहलेसे असंतुष्ट तो थे ही, पोपके हस्तक्षेपपर अप्रसन्नता न प्रकट कर वे लोग हेनरीको पदच्युत कर एक अच्छे शासकको राजगद्दीपर बैठानेका प्रयत्न करने लगे। उन सब लोगोंने मिल कर एक बड़ी भारी सभा की और उसमें उसे एक मौका और देनेका निश्चय किया। लेकिन जब तक वह पोपसे सुलह न करले राजकार्योंमें हाथ नहीं लगा सकता था। यदि वह एक वर्षके भीतर ही भीतर पोपसे सुलह न करलेगा तो उसे राज्यसे हाथ धोना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त यह निर्णय करनेके लिए कि हेनरीको ही पुनः अधिकारपदपर बैठाया जाय या दूसरा कोई राजा चुना जाय पोपको आसबर्ग बुलाया गया। देखनेसे यह जान पड़ता था कि अब राज्यकार्य भी पोपके हाथमें रहेगा।

हेनरीने पोपके वापस आने तक चुप चाप बैठे रहना निश्चय किया था। पोप महोदय आसबर्ग आये और कानोसाके प्रासादमें उतरे। उनका आगमन सुन हेनरी घोर जाड़ेमें आल्प्स पर्वतको पार कर वहांपर पहुंचा और प्रासादके सामने विनीत भावसे हाथ जोड़ खड़ा हुआ। वह नंगे पैर मोटे कपड़े पहिन तपस्वीके वेषमें यात्रियोंकी तरह तीन दिन तक बराबर प्रासादके बन्द फाटक तक जाता रहा, परन्तु इतनेपर भी ग्रेगरीने उस विनीत राजाको अपने पास न फटकने दिया। जब उसके घनिष्ठ साथियोंने उसे बहुत समझाया, तो उसने हेनरीको आनेकी आज्ञा दी। जिस समय वह प्रभावशाली राजा उस मनुष्यके सामने, जो अपनेको ईश्वरके दासोंका दास कहता था, उपस्थित हुआ है, उस समयका दृश्य गिरजेके

अधिकारकी शान्तिका और उनकी प्रबल बुराइयोंका आदर्श भूत है। भूमण्डल भरमें सिवा मौनके इनकी रक्षाका और कोई दूसरा उपाय नहीं मालूम होता।

कनोसामें हेनरीके सब अपराध क्षमा किये गये। इससे जर्मनीके राजालोग प्रसन्न एवं सन्तुष्ट न थे। क्योंकि पोपसे सुलह करनेके लिए कहनेमें उनकी भीतरी इच्छा उसे और दुःख देनेकी थी। इसलिए वे लोग अब दूसरा राजा बनानपर उतारू हुए। उसके पश्चात् तीन या चार वर्षका समय केवल भिन्न भिन्न राजाओंके साथियोंके कलहमें व्यतीत हुआ। ग्रेगरी सं० ११३७ (सन् १०८०) तक चुपचाप रहा। उसके बाद पुनः उसने राजा हेनरी और उसके अनुयायियोंको शापकी बेडीमें बान्धा। उसने पुनः घोषणा करा दी कि उसके सब अधिकार छीन लिये गये, और सब इसाइयोंको उसकी आज्ञा पालन करनेको मना कर दिया।

इस दूसरी वारके हटाये जानेका प्रभाव बिलकुल उलटा ही हुआ। हेनरीके मित्रोंका दल घटनेके बदले बढ़ता ही गया। जर्मनीके पादरी पुनः उत्तेजित किये गये, और उन्होंने पुन. इस हिल्डब्रैंटको पदच्युत किया। हनरीके सब शत्रुवर्ग लडाईमें मारे गये और हेनरी पोपके एक शत्रुके साथ इटली गया। वहा जानेके दो तात्पर्य थे, एक तो अपने पोपको पदपर बैठाना, और दूसरे, सम्राट् पदको जीतना। ग्रेगरी दो वर्ष तक संभालता रहा पर अन्तको रोम हेनरीके हाथ चला गया तब ग्रेगरीने मुंह मोड़ लिया, तत्पश्चात् वह थोड़े ही दिनोंमें मर गया। उसने मरते समय ये शब्द कहे थे—"मैं न्यायका प्रेमी और अन्यायका विरोधी था और यही कारण है कि मैं विदेशमें प्राणत्याग कर रहा हूं। पाठक गण इसमें किंचित् मात्र भी सन्देह न करेंगे।"

ग्रेगरीकी मृत्यु होसे हेनरीकी कठिनाइयोंका अन्त न हुआ। आल्प्स पर्वतके दोनों तरफकी प्रजा बलवाई थी जिसमें बीस वर्षका समय केवल जर्मनी और इटलीके राज्यपर अधिकारस्थापन करनेमें ही बीत गया।

जर्मनीमें उसके मुख्य शत्रु सैक्सन वाले और असन्तुष्ट उमराव लोग थे। इटलीमें स्वयं पोप महाराज ही अपनी राज्यस्थिति करनेके प्रयत्नमें लगे थे और वे सदैव लम्बार्ड शहरके रहनेवालोंको बादशाहका प्रतिरोध करनेके लिए उभाड़ते रहे, क्योंकि लम्बार्डवाले स्वयं शक्तिमान होते जाते थे और राज्याधिकार नहीं मानना चाहते थे।

सं० ११४७ (सन् १०९०) में इटली वालोंने फिर उनके प्रतिकूल दल बान्धा। इस समय वह जर्मनवर्गियोंका दमन कर रहा था। उसको विवश हो वहांका काम अधूरा छोड़ इटली जाना पड़ा। वहां उसकी गहरी हार हुई, यह अवसर लम्बार्डवालोंके हाथ आया। उन लोगोंने अपने विदेशीय राजाके प्रतिकूल संघ बना लिया। सं० ११५० (सन् १०९३) में मिलन, क्रिमना, लोडी और पियासेंजा वालोंने आत्मरक्षार्थ आपसमें संधि कर ली। सात वर्ष तक इटलीमें रहकर अन्तमें उस देशको शत्रुओंके हाथमें छोड़ निराश हो दुःखित हृदय हेनरी आल्प्स पर्वत पार कर लौट आया, पर उसे घरपर भी शान्ति न मिली। उसके असन्तुष्ट उमरावोंने उसके प्रतिकूल उसके लड़केको उभाड़ा जिसे वह स्वयं अपना उत्तराधिकारी बना देता। इससे और भी अशान्ति फैली। आपसमें अनेक लड़ाइयां होती रहीं। सं० ११६३ (सन् ११०६) मे उसकी मृत्यु हुई, इसके साथ ही साथ इतिहासके सबसे दुःखमय शासनकालका अन्त हुआ।

चतुर्थ हेनरीका पुत्र राज्याधिकारी हुआ और उसने अपना नाम पञ्चम हेनरी रक्खा। उसके राज्यकालमें अधिकारपद दानकी समस्या पूरी हुई उस समय पास्कल द्वितीय पोप था। उसने कहा कि आजतक जितने विशप राजासे नियुक्त हैं, यदि वे योग्य पुरुष हैं, तो स्वीकार किये जा सकते हैं। पर भविष्यमें ग्रेगरीके घोषणानुसार कार्य किया जायगा। आजसे पादरीलोग राजाओंकी उपासना न करें, और उनसे संसर्ग न रक्खें, क्योंकि इनका काम धर्मका है और उनका खूनखराबीका है। पंचम हेन-

रीने यह घोषणा करा दी कि जबतक पादरी लोग प्रभुमें भक्ति करनेकी शपथ न लेंगे तबतक बिशपोंको गिरजेसे सम्बन्ध रखनेवाली मिलकीयत नहीं मिलेगी।

कुछ कठिनाइयोंके बाद सं० ११७६ (सन् ११२२) में वर्मके कान्कोर्डटमें सुलहनामा हुआ जिससे कि जर्मनीमें अधिकार पदके दानका झगड़ा मिटा। राजाने वचन दिया कि अबसे बिशप और एबटकी नियुक्तिका काम चर्चको दिया जाता है और मैंने इससे अपना सम्बन्ध हटा लिया, परन्तु चुनाव राजाके समक्ष हुआ करेगा। उसे यह भी अधिकार मिला कि वह स्वयं नये नियुक्त किये हुए बिशपों और एबटोंको अपने राज दंडसे स्पर्श करके गिरजेका अधिकार दे। इस प्रकार गिरजेका धार्मिक अधिकार बिशपोंको गिरजेवालोंसे मिलता था। वे उन्हे चुनते थे और इस समय राजा यदि चाहे तो अपने राज दंडसे छूनेसे इन्कार कर किसी भी बिशपका चुनाव रद्द कर सक्ता था, परन्तु बिशपकी नियुक्तिका कार्य उसके हाथमें न रहा, पोपके चुनावमें तो इस स्वीकृतिकी कोई आवश्यकता ही न रही, क्योंकि हेनरी चतुर्थके आगमन कालसे कई एक पोप बादशाहकी स्वीकृतिके बिना ही चुने गये थे और उनका चुनाव ठीक भी माना गया था।

अध्याय १३

होहेन्स्टाफेन बादशाह और पोप लोग।

प्रथम फ्रेडरिक सं० १२०६ (सन् ११५२) में जर्मनीका बादशाह हुआ। इसका शासनकाल जर्मनीके सब राजाओंसे मनोरंजक है और इसके शासनकालके लेख प्रमाणसे हमें तेरहवीं शताब्दीके मध्य कालिक यूरोपकी स्थितिका पूरा पता चलता है। इसके अधिकार पदपर आनेके साथ ही साथ हमलोग उस अंधकारमय समयसे अलग होते हैं। सातवीं शताब्दीसे लेकर तेरहवीं शताब्दी तकका यूरोपीय इतिहास हमें पादरियो हीसे मिलता है। वे अधिकाश अनाभिज्ञ और लापरवाह थे। वे जिन बातोंका उल्लेख करते थे उनसे बहुत दूरपर रहते थे। इससे वे वृत्तान्त सब अपूर्ण तथा अविश्वसनीय हैं। तेरहवीं शताब्दीके अगले भागोंमें भिन्न भिन्न विषयोंपर अधिकाधिक विज्ञापन मिलने लगे, हमको अब शहरकी हालतोंका पता मिलने लगा है, जिससे हमलोग कवल पादरियोंके उल्लखोंके भरोसे नहीं रह सकते हैं। पहला इतिहास वेत्ता फ्रीसीग निवासी ओटो था जो कुछ फिलासोफी भी जानता था, उसने फ्रेडरिकका जीवनचरित्र लिखा है, जिसमें संसार भरका इतिहास भी उल्लिखित है, इससे उस समयकी दशाका अमूल्य वृत्तान्त पता लगता है।

फ्रेडरिककी बड़ी अभिलाषा थी कि वह रोमको अपनी असली हालतपर पहुंचा दे। वह अपनेको सीजर, जस्टीनियन, शार्लमेन और ओटोकी समतापर मानता था। उसे इसका भी ज्ञान था कि हमारा अधिकार पोपके अधिकारकी भांति ईश्वरसे स्थापित है। राजगद्दीपर बैठनेके समय उसने पोपसे कहा था कि यह राज्य मुझको परमेश्वरने स्वयं दिया है

और उसने अपने पुरखोंकी तरह पोपकी स्वीकृति नहीं चाही, परन्तु सम्राट्के अधिकारोंकी रक्षा करनेमें यावज्जीवन उसे उन्हीं प्राचीन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा था। साथ ही उसे अपने बागी उमरावोंका सामना भी करना पड़ा और पोपके प्रतिरोधकोंका वार सहना पड़ा जो कि पोपके अधिकारकी रक्षा करनेके लिए सन्नद्ध थे। इसके अतिरिक्त लम्बार्डमें उसे बहुत अजेय शत्रु मिले जिनसे उसे गहरी हार भी खानी पड़ी।

फ्रेडरिकके पहले तथा पीछेके समयमें बड़ा अन्तर था अर्थात् उसके पश्चात्का समय सम्पूर्ण शहरोंकी उन्नति एवं उनकी वृद्धिसे परिपूर्ण है। इस समयतक हम लोग केवल सम्राट् पोप बिशप, तथा प्रतिवादी राजाओंका ही नाम सुनते थे। अबसे हमको शहरका भी ध्यान करना पड़ेगा। फ्रेडरिकको यह नयी उन्नति देख कर एक प्रकारका शोक हो गया था।

शार्लमेनके शासनके पश्चात् लम्बार्डीके शहरोंका शासन वहांके बिशपोंके हाथमें आया जो कि काउंटोंके अधिकारका उपभोग करते आते थे। बिशपोंके हाथसे शहरोंकी विशेष उन्नति हुई। वे अपने पड़ोसके शहरोंपर भी अपना अधिकार जमाये हुए थे। धीरे धीरे कारीगरी तथा व्यवसायकी भी उन्नति होने लगी थी, अब वहांकी समृद्ध प्रजा तथा दीन लोग भी शासनमें कुछ न कुछ भाग लेनेकी अभिलाषा प्रगट करने लगे। प्रारम्भमें ही क्रिमनाके बिशप निकाल दिये गये। उनका प्रासाद जला दिया गया और उनकी सम्पूर्ण वृत्ति बन्द कर दी गयी। तत्पश्चात् चतुर्थ हेनरीने ल्यूका निवासियोंको वहांके बिशपके प्रतिकूल उभाड़ा और उन लोगोंको वचन दिया कि आजसे उनकी स्वतन्त्रतापर बिशप ड्यूक या काउंट कोई भी हस्तक्षेप न करेगा। इसी प्रकार प्रायः और नगरवालोंने भी धर्माध्यक्षोंकी शासन-शृंखलाको तोड़ दिया। अन्ततो गत्वा नगरका सम्पूर्ण शासन म्युनिसिपल सदस्योंके हस्तगत हुआ। ये सदस्य प्रजाके उन लोगोंमेंसे थे जिनको शासनमें कुछ अधिकार था।

सामान्य शिल्पकारोंको नगरके प्रबन्धमें कोई भी अधिकार नहीं मिलता था। कभी कभी वे लोग राजद्रोह कर बैठते थे। कभी कभी वे सामन्त लोग ही जो अपना अपना राज छोड़ कर नगरोंमें आ बसे थे, लड़ जाते थे। जिसके कारण एक प्रकारका विप्लव हो जाता था। यदि वह आजकलके शान्त नगरोंमें होता तो असह्य हो जाता। इसका परिणाम यह होता था कि आस पासके नगरोंसे भी लड़ाई छिड़ जाती थी। तब यह उपद्रव बहुत ही भयानक हो जाता था। चारों ओर इतनी अशान्ति होनेपर भी इटली नगर शिल्पविद्या और कलाकौशलका केन्द्र बनगया। 'यूनानके नगरोंको छोड़ इसकी बराबरी करने वाला इतिहासमें कोई दूसरा नगर ही नहीं था। इसके अतिरिक्त वे लोग अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा भी कई शताब्दी तक करते रहे 'इधर फ्रेडरिक इटलीका सम्राट् बनना चाहता था, परन्तु इसकी कठिनाइयां कुछ कारणोंसे विशेष बढ़ गयी थी। लम्बार्ड नगर वालोंने प्रबल प्रतिरोध कर रखा था और वे सर्वदा पोपके सहगामी होते थे। दोनोंकी मानसिक इच्छा यही थी कि सम्राट्का अधिकार आल्प्स पर्वतके इस ओर केवल नाम मात्रको रहे।

लम्बार्डक नगरोंमें मिलन सबसे शक्तिशाली था उसके आस पास वाले नगरके लोग भी उससे घृणा करते थे क्योंकि वह उनपर अपन अधिकार जमानेका अनेक बार प्रयत्न कर चुका था। कुछ मनुष्य लोडीसे भागकर आये और उन्होंने नये सम्राट्को मिलनकी क्रूरता तथा अत्याचारका समाचार दिया। फ्रेडरिकने यह सुनकर अपने कुछ भृत्य वहां भेजे। मिलनवालोंने उनका बड़ा तिरस्कार किया और राजकार्य मुद्राको अपने पैरोंतले कुचल डाला, दूसरे नगरोंकी भांति मिलन भी सम्राट्के आधिपत्यको तभीतक स्वीकार करना चाहता था जबतक सम्राट् किसी प्रकारका विरोध न खड़ा करे। फ्रेडरिकको इटलीके सम्राट बननेकी इच्छा तो पहिले ही से थी अब वह मिलनवालोंके इस असह्य व्यवहारसे बिगड़कर सं० १२११ (सन् ११५४ ई०) में मिलनपर विजय प्राप्त करनेकी इच्छासे चढ़ा, वह

मिलन नगरपर बराबर छः चढ़ाइयां करता रहा और उसके शासनकाल-का बहुतसा समय इस कार्यमें नष्ट हुआ ।

फ्रेडरिकने अपना डेरा रोन्कालियाके मैदानमें खड़ा किया । उसके पास लम्बार्ड नगरके बहुतसे प्रतिनिधि आये और उन लोगोंने सम्राट्से अपने पड़ोसियों और विशेषतः मिलनवालोंकी धृष्टता और अत्याचारकी बड़ी शिकायत की । उस समयका इतिहास पढ़नेसे हमें यह भी मालूम होता है कि उस समय सामुद्रिक व्यवसाय भी दूर दूरके नगरोंसे होता था क्योंकि जेनोवाने शुतुर्मुग सिंह और सुग्गोंका पुरस्कार सम्राट्के पास भेजा था । पेवियासे टार्टोना नगरकी निन्दा सुन फ्रेडरिकने उसपर घेरा डालकर उसका नाश कर दिया । इसके पश्चात् वह रोमको लौट गया, उसके लौटते ही मिलनवालोंने पुनः साहस कर अपने दो तीन पड़ोसियोंको अधिक दण्ड दिया, क्योंकि उन लोगोंने बड़ी वीरताके साथ सम्राट्को सहायता दी थी । उन लोगोने टार्टोनाकी असहाय प्रजाको अपने नगरकी अवस्था सुधारनेमे बड़ी सहायता दी थी ।

जब सम्राट् और पोप चतुर्थ हेड्रियनका प्रथम संयोग हुआ तो दोनोंमें बड़ा मतभेद हो गया क्योंकि पहले सम्राट् पोपके घोड़ेकी रकाब थामनेमें आगा पीछा करने लगा, परंतु जब उसने देखा कि यह प्रथा प्रचलित है तब उसे कुछ भी बाधा न रह गयी । उस समय रोम एक भीषण बलवेकी दशामें था, अत. हेड्रियनको आशा थी कि सम्राट् उसकी सहायता अवश्य करेगा । उस समयके अनुसार जब कि रोमन लोगोंका सभ्य संसारपर आधिपत्य था, अब भी रोमवाले उसी प्रकारका अधिपत्य जमाना चाहते थे और इस कार्य्यका प्रयत्न ब्रेसियाके आर्नल्डकी अध्य-क्षतामें हो रहा था । यद्यपि फ्रेडरिक बलवाई आर्नल्ड और रोमवालोंके प्रतिकूल पोपको विशेष सहायता न दे सका, तथापि रोमवाले सफल न हो सके । सम्राट् पद पाकर वह जर्मनी लौट गया और हेड्रियनको असन्तुष्ट छोड़ दिया कि वह जैसा चाहे वैसा वर्त्ताव अपनी दुःशील प्रजाके साथ

करे । इस परित्याग और पश्चात्के मतभेदके कारण पोप और फ्रेडरिक-में बड़ा वैमनस्य पैदा हो गया ।

संवत् १२१५ (सन् ११५८ ई०) में फ्रेडरिक पुनः इटली गया और रोन्कालियामें पुनः एक महती सभा की । यह निर्द्धारित करनेके लिए कि सम्राट्के क्या क्या अधिकार हैं उसने बोलोनासे कुछ रोमन न्याय वेत्ताओंको और नगरोंके प्रतिनिधियोंको एकत्र किया । इसमें किञ्चित् मात्र भी संभावना न थी कि वे लोग उस सम्राट्के पूर्ण अधिकार दे देंगे, क्योंकि व लोग जिस न्यायको जानते थे उसके अनुसार राजाका वचन ही न्याय था । उन लोगोंने उसके निम्नलिखित अधिकार निर्धारित किये:—

भिन्न भिन्न डचीज और कौन्टीजपर आधिपत्य तथा न्यायाधीश नियुक्त करना कर एकत्र करना, युद्धके समय विशेष कर लगाना, मुद्रा निर्माण करना, नमक और चांदीकी खानोंसे जो कर संग्रह हो उसका उपभोग करना ।

परन्तु जो मनुष्य या नगर यह पूर्ण रूपसे प्रामाणित कर देगा कि ये अधिकार उसे दे दिये गये हैं, वह भी इनका उपभोग कर सकेगा, नहीं तो ये सब अधिकार राजाके हस्तगत हो जायंगे । कुछ नगरोंको बिशपके अधिकार मिल गये थे, पर वे यह प्रमाणित नहीं कर सकते थे कि ये अधिकार इनको सम्राट्ने दिये हैं। अब इस निर्द्धारणसे उनकी स्वतंत्रताके छीने जानेका भय था । कुछ समय पर्यन्त तो सम्राट्ने अपनी आमदनी खूब ही बढ़ायी, परन्तु इसका अन्तिम परिणाम राजद्रोह था। इसका कारण यह था कि ये प्रतिक्रियायें अत्यन्त पराकाष्ठापर थीं और जिन शासकोंको वह अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजता था उनसे लोग घृणा करते थे । नगर निवासियोंने यह स्थिर कर लिया कि या तो प्राण ही जायंगे या सम्राट्के शासक तथा कर एकत्र करने वालोंसे मुक्ति ही होगी ।

सम्राट्ने क्रेमाके लोगोंके पास यह आज्ञापत्र भेजा कि तुम लोग नगर रक्षक दीवार ढहा दो । उन लोगोंने यह आज्ञा न मानी । इस पर

सम्राट्ने उसपर घेरा डाल दिया और अन्तमें उसको मटिया मेट कर छोड़ा वहांकी प्रजाको आज्ञा मिली थी कि तुम लोग केवल अपने अपने प्राण लेकर नगरसे निकल जाओ। इसके बाद नगरमें लूट मार आरंभ करा दी। तब मिलनवालोंने सम्राट्के प्रतिनिधियोंको अपने यहांसे भगा दिया। इसपर सं० १२१६ (सन् ११६२ ई०) में इस नगरपर फिर घेरा डाला गया और यह भी अधिकारमें कर लिया गया। यद्यपि यह नगर राजनीति तथा व्यवसायमें बहुत चढ़ा बढ़ा था, तथापि इसके नाश करनेकी आज्ञा देनेमें सम्राट् किंचित्मात्र भी न हिचका। उस समय एक नगरका उसके पड़ोसी नगरसे जैसा सम्बन्ध था उसका वृत्तान्त पढ़कर शोक और क्षोभ होता है। क्योंकि मिलनके स्वयं पड़ोसियोंने उसको नाश करनेके लिये सम्राट्से आज्ञा मांगी थी। वहांकी प्रजाको उसी नष्ट नगरके पास रहनेको स्थान मिला। वे लोग वहां बसे और अपने नगरके पुनरुत्थानमें लगे जितनी शीघ्रताके साथ उन्होंने उनकी दशा सुधारी, उससे स्पष्ट प्रगट होता है कि इस नगरका नाश इतना अधिक नहीं किया गया था जितना कि इतिहासमें लिखा गया है।

अब लम्बार्डवालोंकी सम्पूर्ण आशा केवल एकतामें रह गयी, लेकिन सम्राट्ने उसे स्पष्टतया रोक दिया था। मिलनके नाशके पश्चात् लम्बार्ड संघ बनानेका प्रयत्न गुप्त रूपसे होने लगा। क्रिमोना, ब्रेसिया, मान्टुआ और बर्गामो सम्राट्के प्रतिकूल संगठित हुए। कुछ पोपके उत्तेजित करनेसे और कुछ संघकी सहायतासे मिलन नगर अति शीघ्र खड़ा हो गया। अबतक फ्रेडारिक रोमको विजय करनेमें लगा था क्योंकि उसकी आन्तरिक अभिलाषा महात्मा पीटरके पदपर एक प्रतिवादी पोपके बैठानेकी थी। अन्त वह प्रसन्नचित्त संवत् १२२४ (सन् ११६७ ई०) मे जर्मनी लौट गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि रोम अनेक बीमारियों तथा नगरवालोंके कोपाग्नि. दोनोंसे बच गया। इसके अनन्तर बेरोना, पियासेन्जा और पार्मा भी संघमें सम्मिलित हुए। अब यह निश्चय हुआ कि एक नया नगर

बनाया जाय जिसमें सम्राट्का प्रतिरोध करनेके लिए सेना इकट्ठी की जाय। इसी कारण संघने अलक्जेन्ड्रियाका नगर बनाया जो अबतक वर्तमान है। इसका नाम पोपतृतीय अलक्जेन्डरके नामपर है। वह संघवालोंका परम मित्र और जर्मनीके सम्राटोंका विकट शत्रु था।

कई वर्ष जर्मनीमें रहकर राज्यकार्यका सर्व विधान कर फ्रेडरिक पुन लम्बार्डी आया। यद्यपि इसके पक्षपाती इस नये नगरमें बहुत थोड़े थे, तथापि सम्राट्ने इनको जीतना अपनी शक्तिके बाहर समझा। संघने अपना सब सैन्य एकत्र किया और संवत् १२३३ (सन् ११७६ ई०) में लेनानोमें बड़ा घमासान युद्ध हुआ ऐसी लड़ाई मध्ययुगमें बहुत कम देखनेमें आयी। फ्रेडरिककी कुछ सेना आल्प्स पर्वतके दूसरी तरफ थी और वह उनकी सहायता भी लेना चाहता था परन्तु अभाग्य वश उसे सहायता न मिल सकी। जिसका परिणाम यह हुआ कि मिलनके नेतृत्वमें संघने सम्राट्को समान रूपसे पराजित किया। और लम्बार्डका आधिपत्य कुछ समयके लिए स्थिर हो गया।

तत्पश्चात् वेनिसमें एक महती सभा हुई। उस सभामें पोप तृतीय अलकजेन्डर भी उपस्थित था। वहापर सुलह हुई जो संवत् १२४० (सन् ११८३ ई०) में स्थायी रूपसे कर दी गयी। नगरवालोंको करीब करीब अपने सब अधिकार मिल गये। सम्राट्का आधिपत्य नाम मात्रका मान लेनेपर सब स्वतन्त्र कर दिये गये। फ्रेडरिकको विवश होकर उस पोपको अंगीकार करना पड़ा जिसकी आज्ञा न माननेकी उसने शपथ उठायी थी। नगर निवासियोंने और पोपने एक ही मन्तव्यसे पैर बढ़ाया था, इससे वे समान विजयके भागी हुए।

इस समयसे सम्राट्के विरोधी दलने अपना नाम "गल्फ" रक्खा। यह केवल उन वेल्फ वंश वालोंका ही दूसरा नाम है, जिन्होंने जर्मनीमें 'होहेंन्स्टा फेन" को बहुत दु ख दिया था। सं० ११२७ (सन् १०७०)में चतुर्थ हेनरीने किसी वेल्फको बावेरियाका ड्यूक बना दिया था। उसके

लड़केने एक उत्तर जर्मनीके किसी धनीकी लड़कीसे विवाह करके अपनी सम्पत्तिको खूब बढ़ाया। उसका पौत्र हेनरी जिसे अभिमानी हेनरी कहत उच्च होनेका अभिलाषी था और वह सेक्सनीके ड्यूककी लड़कीसे श कर उसके डचीका उत्तराधिकारी बन बैठा। इससे उसका अधिक बहुत बढ़ गया। वह होहेन्स्टाफेनके सामन्तोंमें सबसे बड़ा शक्तिशा और भयावह हुआ।

लम्बार्ड नगरकी दारुण युद्ध भूमिसे लौटनेपर फ्रेडरिकको बारबरोस अभिमानी हेनरीके पुत्र सिंह हेनरीके साथ जो गेल्फ लोगोंका नेता प्रसिद्ध थ युद्धमें प्रवृत्त होना पड़ा. क्योंकि उसने लिनानोंके युद्धमें सम्राट्की सहाय के लिए आनेसे इन्कार किया था। हेनरी निर्वासित कर दिया गया सेक्सनीकी डची विभाजित कर दी गयी। प्राचीन डचीको विभाजि करनेमें उसकी एक युक्ति थी क्योंकि उसने भली भांति देख लिया था। प्रजाके अधिकारमें भी सम्राट्के बराबर राज्य छोड़ देनेसे क्या परिणा होता है।

उसके क्रुसेडकी यात्रापर जानेके पहले जिसमें कि वह मारा गया उसका लड़का छठां हेनरी इटलीका राजा बनाया गया। इटलीके दक्षिणी नगरोंपर होहेन्स्टाफेनकी शक्ति फैलानेकी इच्छासे उसने हेनरीकी शादी कान्स्टेन्ससे कर दी वह नेपल्स और सिसलीके राज्योंकी मालकिन थी और इस प्रकार इटली और जर्मनीके राज्योंके एक ही आधिपत्यमें रखनेका असम्भावित प्रयत्न पूरा हुआ, परंतु इसका परिणाम यह हुआ कि पोपसे पुनः विद्वेष हुआ। क्योंकि वे लोग सिसलीके राज्योंके अधिपति थे। यहींपर होहेन्स्टाफेनका वंश मटियामेट हुआ।

छठें हेनरीका शासनकाल भी कठिनाइयोंसे भरा पड़ा है, लेकिन वह उन्हें प्रबलतासे दबाता है। गेल्फके नेता सिंह हेनरीने फ्रेडरिकके समक्ष शपथ उठायी थी कि अब वह जर्मनीमें कभी न आवेगा, पर वह शपथ तोड़ कर पुनः जर्मनीमें आया और आते ही विप्लव खड़ा कर दिया। हेनरीने

गेल्फवलोंका पुन: दमन किया और शान्ति स्थापन की, परन्तु इसकी समाप्ति करते ही उसे सिसलीमें जाना पड़ा, क्योंकि वह राज्य भी उस समय संकटमें पड़ा था। वहांपर टाङ्केड् नामका कोई नार्मन काउंट जर्मनी-के हकदारोंके प्रतिकूल राष्ट्रीय विद्रोह चला रहा था, पोपने सिसलीको अपनी स्वकीय भूमि मान लिया था। अत: उसने समस्त जर्मन प्रजाको सम्राट्के प्रभुत्वसे स्वतन्त्र कर दिया। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्डका वीर रिचर्ड "होलीलैन्ड" की यात्रा करता हुआ वहां उतर पड़ा था और वहां उसने ही टाङ्केडसे मित्रता कर ली थी।

छठे हेनरीकी इटली यात्रा सर्वथा निष्फल हुई टाङ्केड वालोंने उसकी साम्राज्ञीको बन्दी कर लिया, उसकी समग्र सेना बीमारीके कारण मर गयी और सिंह हेनरीका पुत्र जिसको उसने बन्दी किया था, भाग गया। अब उसकी कठिनाइयोंका पारावार न रहा, क्योंकि ज्यों ही वह जर्मनीमें पहुँचा त्यों ही संवत् १२४६ (सन् ११६२ ई०) में पुनः एक बड़ा भारी राजद्रोह खड़ा हो गया। उसके भाग्यमें जब रिचर्ड अपनी क्रुसेडकी यात्रासे लौट जर्मनीसे होकर अपने देशमें आ रहा था, इसके हाथ बन्दी हो गया। उसने गेल्फके मित्र अंग्रेज सम्राट्को तब तक बन्दी रक्खा जब तक उसे जर्मनी तथा इटली दोनों स्थानोंके शत्रुओंके साथ लड़नेके लिए प्रचुर धन नहीं मिल गया। टाङ्केडकी मृत्युसे उसे अपनी दक्षिण इटलीकी राजधानी हस्तगत करनेका अवसर मिला। उसने बहुत प्रयत्न किया कि जर्मनी-के राजा लोग इटली और जर्मनीके राज्योंका संघ स्थायी रूपसे मानलें या सम्राट् पदको उसके वंशमें स्थायी कर दें; पर वह अपने प्रयत्नोंमें विफल मनोरथ रहा।

बत्तीस वर्षकी अवस्थामें जब वह संसार भरमें एक साम्राज्य स्थापन करनेका उपाय सोच रहा था, हेनरी इटालियन-ज्वरसे मर गया। उसने होहेन्स्टाफ़न वंशके भाग्यका निर्णय अपने छोटे बच्चेके हाथमें छोड़ दिया जो द्वितीय फ्रेडरिकके नामसे प्रसिद्ध हुआ। छठे हेनरीके मरते

ही पीटरके पदपर सबसे बड़ा पोप आया जो प्रायः बीस वर्ष तक पश्चिमीय यूरोपकी राजनैतिक अवस्थाका अधिपति रहा कुछ समयके लिए पोपका राजनैतिक अधिकार शार्लमेन तथा नेपोलियनके अधिकारसे भी बढ़ जाता है। आगेके किसी अध्यायमें एक धर्म संस्थाका वर्णन किया जायगा, जिससे मालूम होगा कि तृतीय इन्नोसेण्ट किस प्रकार उस पदपर बैठ कर राजाकी भांति शासन करता था। इसके प्रथम यह अच्छा होगा कि द्वितीय फ्रेडरिकके राजत्वकालमें जो झगड़ा पोप और होहेन्स्टाफेनके वंशसे खड़ा हुआ, उसीका कुछ वृत्तान्त जानलें।

छठे हेनरीके मरते ही जर्मनीकी अवस्था पुनः चञ्चल हो गयी। उसमें अराजकताका इतना प्रवल वेग था कि उसकी अवस्था स्थिर न थी। कोई भी दूरदर्शी मनुष्य यह नहीं कह सकता था कि इसमें कभी शान्ति होगी। प्रथम तो फ़िलिप ही की इच्छा अपने भतीजेका पालक बन कर रहने की थी। लेकिन ऐसा होनेके पहिले ही वह रोमका सम्राट् चुना गया और उसने सब अधिकार अपने हाथमें ले लिया, पर कोलोनके आर्क विशपने एक सभा की, उसमें सिंह हेनरीके लड़के ओटो ब्रन्जविकको सम्राट् बनाया।

इसका परिणाम यह हुआ कि गेल्फ और होहेन्स्टाफ़ेनका पुराना युद्ध पुन. प्रारम्भ हुआ। दोनों सम्राटोंने पोप तृतीय इन्नोसेण्टकी सहायता मांगी। उसने प्रकटरूपसे कह दिया कि इसका निर्णय करना हमारे हाथ है। इधर ओटो पोपके लिये सर्वस्व त्याग करनको सन्नद्ध था, उधर पोपको भी भय था कि यदि फिलिपको सम्राट् पदपर नियुक्त कर दिया जायगा तो होहेन्स्टाफ़ेनके वंशका पुनः उत्थान हो जायगा। अतः उसने गेल्फ-वंशियोंको संवत् १२२८ (सन् १२०१ ई०) में सम्राज्य पद दे दिया। कृतकार्य ओटोने उसके पास यों लिख भेजा, "मेरा राज पद धूलमें मिल गया होता, यदि आपने स्वयं हमें नियुक्त न किया होता।" अन्य अवसरोंकी तरह यहां भी इन्नोसेन्ट पञ्चकी तरह प्रगट होता है।

इसीके पश्चात् जर्मनीमें आपसमें लड़ाई छिड़ गयी, जो बहुत दिन तक चलती रही। इसका परिणाम यह हुआ कि ओटोके सब मित्र उससे अलग हो गये। इसके प्रतिवादीका भविष्य अत्यन्त आशाप्रद था, परन्तु वह संवत् १२६५ (सन् १२०८) में किसी शत्रुसे मारा गया। उसके पश्चात् पोपने समस्त विशपों तथा राजाओंको धमकी दी कि, यदि वे ओटोके अधिकारका समर्थन न करेंगे तो निकाल दिये जायंगे। दूसरे वर्ष ओटो सम्राट्पदपर आरूढ़ होनेके लिए रोम गया, लेकिन उसी समय उसकी पोपसे शत्रुता होगयी, क्योंकि वह अपनेको इटलीका भी सम्राट् कहने लगा। पोपसे रक्षित छठे हेनरीके पुत्र फ्रेडरिकके प्रान्त सिसलीकी राजधानीपर आक्रमण कर दिया।

अब इन्नोसेन्टने ओटोका परित्याग कर दिया, परित्याग करते समय कहा कि 'जैसे खुदाने "साल" के बारेमें धोखा खाया था, उसी प्रकार ओटोके बारेमें मैंने भी धोखा खाया।, अब उसने स्थिर किया कि फ्रेडरिक सम्राट् बनाया जाय, पर उसने इस बातका ध्यान रक्खा कि कहीं वह भी अपने पिता और पितामहकी भांति पोपका शत्रु न हो जाय। संवत् १२६६ (सन् १२१२ ई०) में जब फ्रेडरिक राजा बनाया गया तो उसने इन्नोसेन्टके प्रति की हुई सब प्रतिज्ञाओंका यथावत् पालन किया।

राज्यप्रबन्धमें लगे रहनेपर भी पोप अपने दूसरे कार्य, विशेषतः इंगलैंडको, किसी प्रकार भूल नहीं गया था। संवत् १२६२ (सन् १२१५ ई०) में केन्टरबरीके महन्तोंने विना राजाकी अनुमति लिए अपने एबटको अपना आर्कबिशप बना लिया। उनका नियोक्ता रोममें पोपके पास अपनी नियुक्ति दृढ़ करानेको आया, उधर जानने जलभुनकर महन्तोंका दूसरा चुनाव करने और अपने कोषाध्यक्षको आर्कबिशप बनानेके लिए कहा। इन्नोसेन्टने इन दोनोंको निकाल दिया और केन्टरबरीके नये महन्तोंका एक नया नियोजन बुलवाकर उनके 'स्टीफ

लैंगटनको आर्कविशप बनाओ, क्योंकि वह बहुत पण्डित और विचक्षण
है । इसपर क्रुद्ध होकर जानने केन्टरबरीके समस्त महन्तोंको राज्यसे निर्वासित
कर दिया । इन्नोसेन्टने इसका प्रत्युत्तर 'निषेध-आज्ञा' (इन्टर्डिक्ट) से
दिया अर्थात् उसने समस्त पादरियोंको आज्ञा दी कि गिरजे बन्द कर
दो और प्रार्थना मत करो । उस समय इससे बड़ी कठिनाई पड़ने लगी ।
जान निकाल दिया गया और पोपने उसे यह धमकी दी कि यदि तुम
हमारी इच्छाके अनुसार काम न करोगे तो हम तुम्हें राजगद्दीसे उतार
कर फ्रांसके राजा फ़िलिप आगस्टसको राजगद्दी देदेंगे । इधर जानने
देखा कि इंगलैण्ड जीतनेके हेतु फ़िलिप सैन्य एकत्र कर रहा है तो उसने
संवत् १२७० (सन् १२१३ ई०) में पोपका आधिपत्य मान लिया ।
उसने यहां तक किया कि इंगलैण्डका राज्य तृतीय इन्नोसेन्टको सौंप दिया,
पुनः उसने उस राज्यको उसका सामन्त बन कर ग्रहण किया उसने
रोमसे सालाना कर भेजनेकी भी प्रतिज्ञा की ।

आपत्तियोंके होते हुए भी अन्तका इन्नोसेन्टके सम्पूर्ण अभीष्ट सिद्ध हुए ।
सम्राट द्वितीय फ्रेडरिक उसकी रक्षामें था और सिसिलीका राजा होनेसे
इंगलैण्डके राजाके समान उसका सामन्त भी था । यूरोपीय राज्यके
शासन प्रबन्धमें हस्तक्षेप करनेके अधिकारको केवल उसने उद्घोषित ही
नहीं किया, परन्तु उसका प्रयोग भी किया । संवत् १२७२ (सन् १२१५
ई०) में एक राष्ट्रीय सभा उसके प्रासादमें हुई जो चतुर्थ लेटरनकी
सभा कहाती है । इस सभामें सहस्रों विशप, एबट, राजाओं, सामन्तों
और नगरोंके प्रतिनिधि उपस्थित थे । सभामें चर्चकी बुराइयों और न
स्तिकताकी वृद्धिपर सर्वोप्रकार परामर्श किया गया । क्योंकि ये दो
वातें पादरियोंके अधिकारपर आघात करनेवाली थीं, यहां भी द्वि
फ्रेडरिककी नियुक्ति और ओटोके निकालनेकी पुष्टि की गयी ।

दूसरे ही वर्ष इन्नोसेन्टकी मृत्यु हुई । उसके उत्तराधिकारियोंको वि
कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा । क्योंकि द्वितीय फ्रेडरिक जो प्रय

से पोपके आधिपत्यको नहीं मानना चाहता था अब उनको दुःख देने लगा। फ्रेडरिक सिसिलीका पालित पोषित था, इससे उसका संस्कार अरबवालोंके सदृश था, क्योंकि उस समय सिसिलीमें अरबकी प्रथा प्रचलित थी। उसने उस समयकी अधिकतर प्रचलित प्रथाओंका त्याग किया। उसके शत्रुओंका कथन है कि वह इसाई भी नहीं था। क्योंकि उसके मतानुसार इशू, मूसा और मुहम्मद सभी कपटी थे। उसका डीलडौल छोटा था, शिर गंजा था और देखनेमें अधिक शक्तिशाली नहीं मालूम पड़ता था, परन्तु अपने सिसिलीके राजसंघटनमें उसने बहुत उत्साह दिखलाया था। क्योंकि वह राज्य उसको जर्मनीसे उसे कहीं अधिक प्रिय था। उसने अपने दक्षिणी राज्योंके लिए एक उदार नीतियोंका संग्रह किया था। यह पहली बार है कि इतिहासमें ऐसा सुरक्षित राज्य देखनेमें आता है जिसका अधिपति राजा हो।

अब यहींसे पोप और राजाके कलहका पुनः आरम्भ होता है। उन लोगोंने देखा कि फ्रेडरिकका प्रयत्न दक्षिणमें एक प्रभावशाली राज्य स्थापित करनेका है और वह अपना अधिकार लम्बार्ड नगरपर भी जमाना चाहता है, जिसका परिणाम यह होगा कि पोपका अधिकार पराधीन हो जायगा। ये लोग ऐसा कभी नहीं होने देना चाहते थे। अब फ्रेडरिकके प्रत्येक उपचार उनको खटकने लगे, इससे वे लोग उसका विरोध करने लगे। उनका प्रयत्न उसके वंशका नाश करना था।

तृतीय इन्नोसेन्टकी मृत्युके पहले उसने क्रूसेडकी यात्राकी प्रतिज्ञा की थी। इसके और पोपके कलहमें इस प्रतिज्ञाका बड़ा असर पड़ा।

फ्रेडरिक अपने व्यवसायोंमें इतना व्यस्त था कि वह पोपके लगातार अनुशासनपर भी यात्राका समय बराबर टालता रहा। यहांतक कि पोपने उसे घबड़ाकर निकाल दिया। अन्तको बहिष्कृत होकर उसने पूर्वकी यात्रा की। इस यात्रामें उसे विजय लाभ हुआ और होली सिटी जेरूसलमको पुनः ईसाइयोंके अधीन किया और स्वयं उसका राजा बना।

इतना होनेपर भी पोप लोग फ्रेडरिकसे बराबर अपमानित होते ही
रहे. तब पोप लोगोंने एक सभा संगठितकर उसने सम्राटकी निन्दा की।
अब उन लोगोंने जर्मनीमें फ्रेडरिकके प्रतिकूल एक दूसरा राजा नियुक्त
किया और फ्रेडरिकको राजगद्दीसे उतार दिया। संवत् १३०७ (सन्
१२५० ई०) में फ्रेडरिककी मृत्यु हुई। उसके पुत्रोंने कुछ काल तक सिसली
को राज्य अपने अधीन रक्खा। परन्तु अन्तमें उन्हें राज्य छोड़ना पड़ा।
कारण यह था कि पोपने होहेन्स्टाफ़ेनक दक्षिणी राज्यको अन्जाऊके
सेन्ट लूई चालसको दे दिया। ये लोग उसकी प्रबल सैन्यका सामना नहीं
कर सके।

फ्रेडरिककी मृत्युके साथ ही साथ मध्य राज्यका भी अन्त हो गया।
कुछ समयके पश्चात् कहते हैं कि संवत् १३३० (सन् १२७३ ई०) में जर्मनीने
हैप्सबर्गका रोडल्फ जिसको जर्मनोंके लोग "फिस्ट-ला" कहते थे, राजा बनाये
गया। जर्मनीके राजा लोग तबतक अपनेको सम्राटपदसे भूषित करते
रहे. परन्तु उनमेंसे किसी विरलने ही रोममें जाकर अपनी नियुक्ति पोप
करायी होगा। इटलीके जिस राज्यका जीतनेके लिए ओटो फ्रेडरिक
बारबरोसा. उसके पुत्र और पौत्रोंने इतनी अधिक क्षति उठायी थी, उसके
पुनः जीतनेका कोई भी प्रबन्ध नहीं किया गया। जर्मनीमें भयानक
विच्छेद था और वहांके राजा केवल नाम मात्र राजा थे। न तो उनकी कोई
राजधानी थी और न कोई शासनप्रणाली ही थी।

तेरहवीं शताब्दीके मध्यमें यह स्पष्ट रूपसे ज्ञात होने लगा कि जर्मनी
और इटलीके राज्योंको इंगलैंड और फ्रांसके राज्योंके समान पुष्ट और
शक्तिशाली बनाना सहसा असम्भव है। जर्मनीका चित्र देखनेसे स्पष्ट होता
है कि उसका राज्य छोटे छोटे डचियों. काउन्टियों. बिशपरियों, आर्कबिशप
रियों और एबटियोंमें विभक्त है। सम्राट् तथा राजाको दुर्बल पाकर प्रत्ये
अपनेको स्वतन्त्र समझ रहा है।

यही दशा इटलीमें भी वर्तमान थी। उसके उत्तरीय कुछ प्रान्त अ

आसपासके कुछ नगरोंको अपनेमें मिलाकर स्वतन्त्र हो गये थे और अपने पड़ोसके प्रान्तोंसे बराबर स्वतन्त्रताका व्यवहार करते थे। परन्तु हमारे आधुनिक संस्कारका जन्मदाता १४ वीं तथा १५ वीं शताब्दीका इटली ही था। यद्यपि वेनिस और फ्लोरेन्स नगर बहुत छोटे थे, तथापि उस समय वे यूरोपमें सबसे प्रतिष्ठित समझे जाते थे। द्वीप कल्पके मध्य देशमें पोपने अपना अधिकार स्थिर कर रक्खा था परन्तु कभी कभी वह अपने आधिपत्यके नगरोंको वश करनेमें फलीभूत नहीं होता था। दक्षिणमें नेपल्स कुछ समयतक फ्रांसके अधीन रहा, जिसको स्वयं पोपने निमन्त्रित किया था। परन्तु सिसलीका द्वीप स्पेनवालोंके अधिकारमें हो गया।
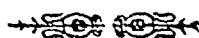
अध्याय १४

क्रूसेडकी यात्रा ।

मध्ययुगकी घटनाओंमें सबसे अद्भुत और मनोहर क्रूसेडकी यात्रा है। सीरियाकी यह अद्भुत यात्रा राजा और वीर भटोंने ही की थी। इस यात्राका अभिप्राय "पवित्र भूमि" को नास्तिक तुर्कोंके हाथसे सदाके लिए स्वतन्त्र करना था। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दीमें प्रायः सभी सन्ततियोंने कमसे कम एक बार क्रूसेडकी सेनाको पश्चिममें एकत्र होकर पूरब जाते देखा होगा। प्रायः सभी वर्ष यात्रियोंके छोटे २ दल या धर्मयुद्धके कामके अकेले दुकेले सिपाही यात्राको रवाना होते थे। दो सौ वर्ष तक प्रायः सभी प्रकारके यूरोपीय निवासी पश्चिमीय एशियाकी यात्रा करते रहे। जो यात्राकी अनेक आपत्तियोंसे बचकर वहां तक पहुंच जाते थे या वहीं बसकर युद्ध या व्यवसायमें लग जाते थे, या नये नये मनुष्योंका कुछ अनुभव प्राप्त कर अपने देशमें लौट आते थे, लौटते समय वे वहांकी कलाकौशल और विलासिताका भी कुछ अनुभवकर जाते थे जो यूरोपमें अप्राप्य था।

क्रूसेडकी यात्राका वृतान्त हम लोगोंको बहुतायतसे मिलता है। यह वृत्तान्त इतना रोचक है कि लेखकोंने इन यात्राओंका विवरण बहुत विस्तार पूर्वक दिया है। वास्तवमें ये कार्य अत्यन्त आश्चर्यजनक थे जिनको यूरोपियन यात्री समय समयपर करते थे। इनका प्रभाव पश्चिमी यूरोपपर अधिक पड़ा, जैसे अंग्रेजोंकी भारत विजय और अमेरिकाका अन्वेषण. परन्तु इनका पश्चिमीय यूरोपके इतिहाससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

मुहम्मदकी मृत्युके थोड़े ही दिनोंके पश्चात् अरबोंने सीरियापर आक्रमण किया और जेरूसलमका पवित्र तीर्थ ले लिया। इतना होनेपर भी अरब वालोंने ईसाईयोंकी भक्तिकी, जो इशू मसीहकी जन्मभूमिके प्रति थी, प्रतिष्ठा की और ईसाई जो वहा तक पहुंच जाते थे, उन्हें बेखटके पूजा करनेका आज्ञा दे देते थे। ग्यारहवीं शताब्दीमें सेलजुकके तुर्कोंकी उत्पत्ति हुई। ये लोग बड़े ही असभ्य थे। अब यात्रियोंके सताये जानेका भी सवाद मिलने लगा। इसके अतिरिक्त पूर्वीय सम्राटको तुर्कोंने संवत् ११२८ (सन् १०७१) मे हराया और एशियामाइनर छीन लिया। कुस्तुन्तुनियाके ठीक सामने नसियाका दुर्ग था, वह तुर्कोंके हाथमें था। यह पूर्वीय साम्राज्यके लिए घातक था। "संवत् ११३८—११७५" (सन् १०२१—१११८ ई०) मे सम्राट अलेक्सियस गद्दीपर बैठा। उसने नास्तिकोंके निकालनेका प्रयत्न किया। उसने अपनेको असमर्थ समझ चर्चके अधिपति द्वितीय अर्बनसे सहायता मांगी। अर्बनने संवत् ११५२ (सन् १०६५ ई०) मे फ्रासके क्लेर्मन्ट स्थानपर एक सभा की और सब लोगोंसे सन्नद्ध होनेकी प्रार्थना की जिससे क्रूसेडमें विशेष शक्ति आ गयी।

पोपने एक उत्तम आमन्त्रण पत्रमे, जिसका परिणाम इतिहासमें सबसे अच्छा हुआ, वीर भटो और पैदल सिपाहियोंको आपसके निजी-कलहसे अपने ईसाई भाइयोका नाश करनेके कारण निर्भत्सना दी और पूरबमें अपने पीड़ित भाइयोंकी रक्षाके लिए आयोजना की। उसने कहा कि "यदि ऐसा न किया जायगा तो गर्वित तुर्क अपना अधिकार बढ़ाते ही जायंगे। और ईश्वरके सच्चे सेवकोंको अधिक दुःख देंगे। मैं हृदयसे प्रार्थना करता हूं कि हमारे भगवान्का वह पवित्र समाधिस्थान जो कि अपवित्र नास्तिकोंके हाथ पड़ गया है, जिसकी वे लोग अवज्ञा करके अपवित्र कर रहे हैं, तुम लोगोंको शक्ति दे। इसके अतिरिक्त फ्रास अत्यन्त निर्द्धन हो रहा है। यहातक कि वह वहाके निवासियोंका पालन भी भली भांति नहीं कर सकता। पवित्र

भूमि दूध और शहदसे भरी पड़ी है । पवित्र मंदिरकी यात्राका मार्ग पकड़ो । दुष्टोंके हाथसे उसे छुड़ाकर अपने अधीन कर लो ।" जब पोपने अपनी वक्तृता बन्द की तब वहांके सम्पूर्ण उपस्थित जन एक वाक्यसे चिल्ला उठे कि परमेश्वरकी यही अभिलाषा है । इसपर पोपने कहा कि जो लोग क्रूसेडकी यात्रा करना चाहते हैं उन्हें जाते समय एक 'क्रास' छातीपर बाधना पड़ेगा । यह दिखलानेके लिए कि अपना पवित्रकार्य समाप्त करके आ रहे हैं, उसी क्रासको लौटते समय पीठ-पर बाधना होगा । ऐसे लोगोंके एकत्र होनेके लिए यही शब्द पर्याप्त होंगे कि "परमेश्वरकी यही अभिलाषा है ।"

साधारणतः मध्ययुगमें क्रूसेड दीन तथा धार्मिक उत्साहका उत्कट बोधक था । इसने भिन्न भिन्न अवस्थाके लोगोंपर अपना प्रभाव डाला । इसका प्रभाव केवल भक्त, आश्चर्यान्वेषी तथा साहसी जनोंहीपर नहीं पड़ा किन्तु सीरियामे असन्तुष्ट सामन्तोंको, जिन्हें पूर्वमें स्वतन्त्र राज्यस्थापनकी आशा थी, व्यवसायियोंको, जो नये नये उद्यम करना चाहते थे, उन उद्विग्न जनोंको जो घरके भारसे जी छुड़ाना चाहते थे और उन अपराधियोंको भी, जिन्हें यह आशा थी कि कदाचित् अपने पूर्व कुकर्मोंके दण्डसे बच जायं, नये प्रलोभन मिले । यह ध्यान देनेकी बात है कि अर्बनने केवल उन्हीं लोगोंको उत्तेजित किया था जो लोग अपने स्वजातीय भाई बन्धुओंसे लड़ रहे थे और जो डाकू पेशा थे । इन लोगोंने पोपकी बातपर विशेष ध्यान दिया और बहुतसे क्रूसेडर (धर्मयोद्धा) हो गये । परन्तु साहस-प्रियता और जय की आशाके अतिरिक्त और भी कारण उपस्थित हुए जिसके कारण लोग जेरूसलमको गये । बहुतसे लोग सत्कारकी और लाभकी आशासे नहीं गये थे, वे केवल भक्तिके कारण पवित्र मंदिरको नास्तिकोंके हाथसे छुड़ाने ही की नियतसे गये थे ।

इन लोगोंके लिए पोपने कहा था कि 'केवल यात्रा ही पापोंका प्रायश्चित्त है' जैसा कि मुसलमानोंको आशा दिलायी गयी थी उसी प्रकार इन्हें

भी आशा दिलायी गयी थी, यदि वे इस शुभ कार्यमें पश्चात्तापसे मर जायंगे तो उन्हें स्वर्ग मिलेगा । इसके पश्चात् चर्चने व्यवसायमें हस्तक्षेप करके अपनी अनन्त शक्तिका परिचय दिया । जो लोग शुद्ध हृदयसे इस धर्म युद्ध-यात्रामें सम्मिलित हुए, उन्हें अपने महाजनोंके प्रति ऋणका सूद देनेसे बरी कर दिया । और उन्हें अपने स्वामीकी आज्ञाके विरुद्ध क्षेत्रोंको रेहन रखनेकी आज्ञा दी । इन धर्मयुद्धयात्रियोंकी सम्पत्ति, स्त्री, बाल बच्चे, सब चर्चकी रक्षामें ले लिये गये । जो कोई उन्हें पीड़ा देता था, वह बहिष्कृत किया जाता था । इन सब बातोंसे जाना जाता है कि इतना कष्टमय और सन्तोषजनक होनेपर भी यह कार्य इतना प्रसिद्ध और विख्यात क्यों कर हुआ ।

क्लेर्मान्टकी बैठक कार्तिक (नवम्बर) मासमें हुई थी । संवत ११५३ (सन् १०९६ ई०) की वसन्त ऋतुके पूर्व ही जो लोग क्रूसेडपर व्याख्यान देनेको रवाना हुए थे उन्होंने फ्रांस और राइनमें साधारण लोगों-की एक बड़ी भारी सेना एकत्र की । इन लोगोंमें सबसे अधिक काम यति पीटरने किया था जो क्रूसेडका मुख्य सञ्चालक था । किसान, कारीगर, बहुत (बदचलन) स्त्रियां, तथा बालक भी दो सहस्त्र मील जाकर "पवित्र मंदिर" की रक्षा करनेके लिए तत्पर और सन्नद्ध होगये । उन लोगोंको पूर्ण विश्वास था कि इस यात्राके दुःखसे ईश्वर हम लोगोंकी रक्षा अवश्य करेगा और नास्तिकोंपर हमलोगोंको विजयी करेगा । यह सेना कई भागोंमें विभाजित होकर यति पीटर, वाल्टर, और अनेक विनीत भटोंके नेतृत्वमें चली । बहुतसे धर्मयुद्ध यात्री हंगेरीवालोंसे इन समूहोंके नानाप्रकारके उपद्रवोंसे अपनी रक्षा करनेके लिए उठे, और मारे गये । कुछ नीसिया तक पहुंचे और तुर्कोंसे मारे गये । पहिली आपत्तिके बाद जो कुछ एक शताब्दी पर्यन्त हुआ उसका यह वृत्तान्त केवल उदाहरण मात्र है । कभी कभी एकाकी यात्री और कभी कभी सहस्त्रों क्रूसेडर "पवित्र भूमि" तक पहुंचनेके उद्योगमें अनेक प्रकारकी आपत्तियोंके कवल होजाते थे ।

क्रूसेडके सम्पूर्ण समयकी उत्कृष्ट मूर्त्तियां यात्रियोंमें ही नहीं थी, किन्तु कवच धारण किये हुये वीर भट भी थे। घोषणाके एक वर्ष पश्चात् पश्चिममें माननीय नेताओंके नेतृत्वमें प्रायः ३० लाख सैन्य एकत्र हो गयी थी। उन लोगोंमें जो कुस्तुन्तुनियांमें जुटने वाले थे ये ही विशेष योग्य थे। (१) जर्मनीके प्रान्तोंके, विशेषतः लोरेनके स्वेच्छा-सेवक जो पोप और टोलोसके कांउट रेमन्डके अधीन थे, (२) जो कि बोलोनके गाडफ्रे और उसके भ्राता बाल्डविनके जो भविष्यमें जेरूसलमके राजा हुए, अधीन थे, और (३) दक्षिण इटली, फ्रांस और नार्मनूसकी सेना जो बोहेमान्ड और टान्क्रेडके अधीन थी।

जिन वीरोंका वर्णन ऊपर किया गया है वे लोग यथार्थमें नेतृ-पदपर नियुक्त नहीं किये गये थे। हर एक धर्मयोद्धा स्वयं यात्रापर रवाना हुआ था और अपने इच्छानुसार वह किसी वीरका आधिपत्य न मान सकता था। ये वीर और सैनिक लोग स्वभावतः किसी विख्यात नेताके नेतृत्वमें हो जाते थे। परन्तु अपने इच्छानुसार नेता बदलनेमें स्वतन्त्र थे। नेताओंको भी यह अधिकार था कि वे अपने लाभपर ध्यान दें, न कि यात्राकी भलाईके लिए अपने लाभका ध्यान छोड़ दें।

जब ये लोग कुस्तुन्तुनियांमें पहुंचे तो यह प्रगट हो गया कि तुर्कों की तरह ग्रीसवालोंको इनसे सहानुभूति नहीं है। 'गाडफ्रेकी सेना राजधानीके निकट ठहरी थी। वहांके सम्राट् अलेक्सियसने अपनी सेनाको उनपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी, क्योंकि उसने उनका आधिपत्य स्वीकार नहीं किया। सम्राट्की पुत्रीने अपने उस समयके इतिहासमें धर्मयोद्धाओंके उग्र व्यवहारका दारुण चित्र खींचा है। इधर धर्मयोद्धाओंके पक्षवाले ग्रीस वालोंको धोखेबाज़ डरपोक और झूठा कहकर धिक्कारते हैं।

उधर पूर्वीय सम्राट्ने सोचा था कि हम अपने पश्चिमीय मित्रोंकी सहायतासे एशियामाइनरको जीतकर तुर्कोंको निकाल देंगे। इधर मुख्य वीरोंने यह सोचा था कि सम्राट्के पूर्व राज्यको जीत कर छोटे छोटे

स्वतन्त्र राज्य बनावेंगे और विजयके नियमोंसे उनपर अपना अधिकार जमावेंगे। अब क्या देखते हैं कि ग्रीस और पश्चमीय ईसाई दोनों निर्लज्जताके साथ एक दूसरेपर विजय पानेके लिए मुसलमानोंसे मिल जाते हैं। धर्मयोद्धा नीसिया नगरका प्रथमवार अवरोधन करते हैं तो मुसलमानोंके पश्चिमीय एवं पूर्वीय शत्रुके सम्बन्धका पूरा पता चलता है। जिस समय यह आशा की जाती थी कि अब यह नगर हाथमें आ जायगा ठीक उसी समय ग्रीसवालोंने शत्रुओंसे यह समझौता किया कि प्रथम उनकी सेना प्रवेश करे। प्रविष्ट होते ही उन लोगोंने नगरका द्वार बन्दकर दिया और अपने पश्चिमीय सहकारियोंसे आगे बढ़नेके लिए कहा।

यदि कोई सच्चा मित्र क्रूसेडर्सको पहले पहल मिला तो वे अर्मेनियाके ईसाई थे जिन्होंने उनको एशियामाइनरकी भयानक यात्राके पश्चात् सहायता पहुंचायी थी। उन्हींकी सहायतासे बाल्डविन ने एडेसापर अधिकार किया और उसका राजा बन बैठा, उनके नायकोंने क्रूसेडर्सका जरूसलमकी यात्रा रोक दी और एक वर्ष अन्टियोकके प्रधान नगर जीतनेमें लगा। इस जयलाभके पश्चात् जर्मन बोहेमन्ड और टोलोसके काउंटके बीच इस बातका झगड़ा चला कि इन जीते हुए नगरोंका अधिपति कौन होगा। अन्तको बोहेमन्डकी विजय हुई। रेमन्ड अपने लिए ट्रिपोलीके किनारेपर एक स्वतन्त्र राज्य स्थापन करनेका यत्न करने लगा।

सवत् ११५६ (सन् १०९९ ई०) की वसन्त ऋतुमें प्राय. बीस सहस्र योद्धाओंने जेरुसलमको प्रस्थान किया। उन लोगोंने देखा कि नगर विधिवत् सुरक्षित है और वहां की उजाड़ मरुभूमिमें न तो उन्हें अन्न पानी और न किसी प्रकारका सामान ही मिल सकता था जिससे वे उस नगरके जीतने और घेरनेका उपाय कर सकते। ठीक उसी समय जिनोआ नगरसे जाफामें पहुंच गये। वहांसे अवरोधकोंको बड़ी सहायता मिली और सब कठिनाइयोंके होते हुए भी दो महीनेमें वह नगर जीत लिया

गया । क्रूसेडर्सने अपनी स्वाभाविक निष्ठुरताके कारण वहाके निवासियोंको मारडाला । ब्रुइनलका गाडफ्रे जेरुसलमका शासक नियुक्त किया गया और उसने अपना नाम "पवित्र मंदिरका रक्षक' रक्खा। उसकी मृत्यु शीघ्र ही हुई और उसका भाई बाल्डविन उसका उत्तराधिकारी हुआ । उसने जेरुसलमका राज्य बढानेके लिए संवत् ११५७ (सन् ११०० ई०) में एडसा छोड़ दिया ।

मुसल्मानोंने समस्त पश्चिमीय लोगोंको 'फ्रैंक" के नामसे प्रसिद्ध किया था । इन फ्रैंकोने चार राष्ट्रोंकी नींव डाली । व क्रमसे १म, एडेसा, २य, अन्टियोक, ३य, रेमाण्डके जीते हुए ट्रिपलीके पासके प्रदेश और ४र्थ, जेरुसलम नगर हैं । बाल्डविनन जेरूसलम नगरको बड़ी शीघ्रतासे बढाया था। जिनोआ और वेनिस नगरको सामुद्रिक शक्तियोंका सहायतासे उसने अके, सीडान और किनारेके अनेक नगरोंपर अपना अधिकार कर लिया ।

ईसाइयोंकी यह विजयवार्ता पश्चिममे शीघ्रतासे पहुची और पूर्वके लिए संवत् ११५८ (सन् ११०१) मे प्रायः दस सहस्र नये क्रूसेडर्सने प्रस्थान किया । इनमेंसे अधिकांश तो एशियामाइनर पार करनेपर नष्ट हो गये या भगा दिये गये । उनमेसे बहुत कम अपने निर्दिष्ट स्थान तक पहुचे । इसका परिणाम यह हुआ कि सारसेनसे जीते हुए उन नगरोंकी रक्षा तथा उनकी समृद्धिका भार उनके प्रथम जीतनेवालों हीपर निर्भर रहा ।

फ्रैंक लोगोंके हस्तगत भूमध्यसमुद्रके किनारेके नगरोंकी स्थितिका भार उन प्रदेशोंकी शक्तिपर निर्भर था जिनको उनके सामन्तोंन बचाया था । यह निश्चय रूपसे निर्धारित नहीं किया जा सकता कि कितनें यात्री पश्चिमसे आये और कितनोने लैटिनके प्रदेशमें अपना स्थिर गृह बनाया। इतना निश्चय है कि जेरुसलममे आय हुओमेंसे अधिकतर पवित्र मंदिर के दर्शन करनेके सङ्कल्पको पूरा कर अपने देशको लौट गये । इतने पर भी राजा लोग उन सिपाहियोंपर जो यहा रहकर मुसल्मानोंसे युद्ध करनेको सन्नद्ध थे पूर्ण भरोसा रखते थे । इसके अतिरिक्त उस समय

अरबवाले आपसके युद्धमें इस प्रकार तत्पर थे कि उन्हें अवकाश ही नहीं मिलता था कि वे इन थोड़ेसे फ्रेंकोंको उन नगरोंसे मार भगावें।

इस क्रुसेडके आन्दोलनका परिणाम यह हुआ कि कितनी ही विचित्र विचित्र संस्थाएं स्थापित हुई जिनके नाम इस प्रकार हैं। (रोगीसेवक) हास्पिटलर्स टेम्पलर्स. (मन्दिरवासी) ट्यूटानिक नाइट्स (वीरयोद्धा), इन संस्थाओंमें सिपाही और महन्त दोनों हीके हितोंका सम्मेलन था। एक ही मनुष्य एक साथ ही दोनों हो सकता था। वह सिपाही भी हो सकता था और अपने कवचके ऊपर महन्तीका चोगा भी धारण कर सकता था। हास्पिटलरों (रोगिसेवक) की उत्पत्ति वैखानसोंके संघसे हुई जिनकी स्थापना प्रथम क्रूसेडके पहले ही निर्धन और बीमार यात्रियोंकी रक्षाके लिए हुई थी तत्पश्चात् इस सभाके सभासद सज्जन नाइट (वीरयोद्धा) भी होने लगे और साथ ही साथ यह संघ सिपाहियोंका भी काम करने लगा। इस धर्म संघने प्राचीन मठोंके समान पश्चिमीय यूरोपमें बहुतसी जागीरें पुरस्कारमें पायीं और स्वयं इसने पवित्र भूमिमें अनेक पक्के मठ बनवाये और उनका देखभाल भी अपने हाथोंमें लिया। तेरहवीं शताब्दीमें सीरियाके परित्यागके पश्चात् हास्पिटलर लोग अपने केन्द्र स्थानको रोड द्वीपमें ले गये और पश्चात् वहांसे माल्टा द्वीपमें ले गये। यहसंघ अब तक वर्त्तमान है और अब तक भी माल्टाका क्रास धारण करना एक प्रकारकी विशेषताका द्योतक समझा जाता है।

हास्पिटलरों (रोगिसेवकों) को सिपाहियाना अधिकार लेनेके पूर्व ही संवत ११११ में फ्रान्सके कुछ नाइटोंने जेरुसलमके यात्रियोंको नास्तिकोंके अवरोधमें रक्षा करनेके निमित्त एक संघ बनाया। उन्हें ज़ेरुसलममें सुलेमानके प्रथम मंदिरके स्थानपर राजाके मंदिरमें निवासस्थान मिला था, यही कारण था कि वे टेम्पलर (मन्दिरवासी)के नामसे प्रसिद्ध हुए। मंदिरके दरिद्र सिपाहियोंकी चर्चसे बड़ी प्रतिष्ठा होती थी। वे लोग लाल क्राससे सुसज्जित एक लम्बा चोगा धारण करते थे। और उन्हें मठोंके कठिन नियमोंका पालन करना

पड़ता था जिनके अनुसार उन्हें आज्ञाकारिता, दरिद्रता और अविवाहित रहनेकी शपथ भी लेनी पड़ती थी। इस संस्थाकी प्रशंसा सारे यूरोप भरमें फैल गयी और बड़े बड़े प्रतिष्ठित ड्यूक तथा राजा भी संसारको त्यागकर इसा मसीहके श्वेत और काली पताकाके नीचे रहकर उसकी सेवा करना चाहते थे।

यह संस्था प्रारम्भ होसे उच्च कुलीन घरानेकी थी अब यह अपरिमित धनी और स्वतन्त्र होगयी। इनके सग्राहक यूरोपके सब नगरोंमें थे। और "कर या भिक्षा" एकत्र करके जेरूसलम भेजा करते थे। अनेक लोगोंने इस सस्थाको नगर चर्च तथा रियासतें भी प्रदान की थीं। इसके अतिरिक्त इसे अनेक लोगोंने प्रचुर द्रव्य भी प्रदान किया था। अरागनके राजाकी इच्छा अपने राज्यका तृतीयांश इन संस्थावालोंको दे देनेकी थी, पोपने टेम्पलर्स (मन्दिर वासियों) को बहुतसे अधिकार दिये ये लोग कर देनेसे बरी कर दिये गये थे। पोपने इन लोगोंको अपने अधिकारमें ले लिया था। ये लोग विपत्तियोंके भारसे निर्मुक्त कर दिये गये थे और इन्हें बहिष्कृत करनेका अधिकार बिशपको भी नहीं दिया गया था।

इन सब बातोंका परिणाम यह हुआ कि ये लोग उद्दण्ड होगये। और राजा तथा दूत दोनोंकी स्पर्धाके पात्र होगये। यहा तक कि इन्नोसेन्ट भी इन लोगोंको इस बातपर निर्भत्सना किया करता था कि इन लोगोंने अपनी संस्थामें दुष्टोंको भी स्थान दे रक्खा है और ये दुष्ट लोग भी चर्चके संपूर्ण अधिकारका उपभोग करते हैं। १४ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें पोप और फ्रांसके फिलिपके प्रयत्नसे यह संस्था उठा दी गयी। इनके सभासदोंपर निन्दनीय अभियोग लगाया गया कि ये लोग नास्तिक, मूर्त्तिपूजक हैं और ये इसामसीह और उनके चर्चकी अवहेलना करते हैं। बहुतसे प्रतिष्ठित टेम्पलर्स नास्तिकताके अपराधमें जीते जी जला दिये गये और बहुतसे कठोर दुःख सहकर वन्दीगृहोंमें मरे। अन्तमें यह संस्था उठा दी गयी। इसकी सम्पूर्ण सम्पत्ति अपहृत करली गयी।

तृतीय संस्थाका नाम ट्यूटनिक नाइट था। इसका महत्व क्रूसेडके समाप्त होनेपर मूर्त्तिपूजक प्रथावालोंपर विजयलाभका था। इन लोगोंके प्रयत्नसे वाल्टिकके किनारेपर एक खृष्टीय राज्य स्थापित किया गया जिसमें कानिग्सवर्ग और डैन्टाजिग प्रधान नगर थे।

प्रथम क्रूसेडके ५० वर्ष पश्चात् संवत् १२०१ (सन् ११४४ ई०) में ईसाइयोंके प्रसिद्ध पूर्वीय राज्य एडेसाका पतन हुआ। इससे इन लोगोंका द्वितीय आक्रमण प्रारम्भ हुआ। इसके संचालक महात्मा वर्नर्ड थे। ये सर्वत्र भ्रमण कर अपने वाणीवलसे लोगोंको क्रास लेनेके लिए उत्तेजित करते थे। उनने टेम्पलर्स नाइटके समक्ष एक रोमांचकारी युद्ध-गीत गाया था जिसका अभिप्राय यह था कि "जो ईसाई नास्तिकोंको धर्मयुद्ध- में मारता है उसे स्वर्ग अवश्य मिलता है और यदि वह स्वयं मारा जाय तो क्या पूछना है। मूर्त्तिपूजकोंकी मृत्युसे ईसूमसीह प्रसन्न होते हैं और यह ईसाई धर्मकी भी प्रसन्नताका कारण है" जब महात्मा वर्नर्डने अन्त दिवसका भय दिखलाकर उपदेश दिया था तब फ्रांसके राजा तीसरे कान- राडने तुरन्त ही क्रास लेना भी स्वीकार कर लिया था।

सामान्य सैनिकोंके वारेमें फ्रीसिंगका ओटो यों लिखता है "इस संस्थामें चोर और डाकू इतने सम्मिलित हुए कि उनके उत्साहको देख कर सर्वसाधारणको भी उनमें ईश्वरीय शक्तिका अनुभव होता था।" इस यात्राके प्रधान नेता महात्मा वर्नर्डने "धर्म सेना"का यथार्थ वर्णन यों किया है-"उस अनन्त समूहमें दुष्टों और घोर पापात्माओंके अतिरिक्त इतर अच्छे जन वहुत ही कम हैं और इन पापी पुरुषोंके निकल जानेसे द्विगुण लाभ था, क्योंकि इनके निकल जानेसे जितना यूरोपको लाभ हुआ उतना ही इनकी प्राप्तिसे पेलेस्टाइनको भी लाभ हुआ। धर्मयात्रियोंके कार्योंका वर्णन करना सर्वथा निष्प्रयोजन है। केवल इतना ही कहना उचित है कि संग्रामके अभिप्रायसे यह द्वितीय क्रूसेड सर्वथा निष्फल रहा।

इसके ४० वर्ष पश्चात् सलादीनने संवत् १२५४ (सन् ११८७ ई०)

में जेरूसलमपर अधिकार कर लिया। यह सारसेनके राजाओंमें सबसे प्रसिद्ध योधा था। धर्म-भूमिके हाथसे निकल जानेसे लोगोंने बड़े समारोहके साथ-युद्ध यात्रा की थी। इस यात्रामें फ्रेडरिक, बारबरोसा, वीरहृदय रिचर्ड और उसके प्रतिवादी फ्रांसके फिलिपने भी साथ दिया था। इस यात्राके वर्णनसे यह प्रकट होता है कि इसके पहले कितने ही ईसाई नेता आपसमें घृणा करते थे, पर अब ईसाई लोग और सारसेन लोग एक दूसरेकी प्रतिष्ठा करने लगे। इस वर्णनमें ऐसे ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें इन भिन्न भिन्न मतावलम्बियोंका आपसमें प्रेम और परस्पर सम्बन्धकी घनिष्ठता दिखलायी देती है। संवत् १२४६ (सन् ११६२ ई०) में रिचर्डने सलादीनसे सन्धि कर ली, जिसका परिणाम यह हुआ कि खृष्टीय यात्रा धर्म-भूमिके दर्शनको आराम और सुखसे जाने लगे।

तेरहवीं शताब्दीमें क्रूसेडर लोगोंने ईजिप्टको प्रस्थान किया जो सारसेन राज्यकी मध्यभूमि थी। इनमेंसे प्रथमप्रस्थान वेनिस वालोंने विचित्र प्रकारसे किया था। अपने लाभके लिए इन लोगोंने धर्मयात्रियोंको कुस्तुन्तुनियां जीतनेके लिए उत्तेजित किया। द्वितीय फ्रेडरिक और महात्मा लूईके आगकी यात्राओंके वर्णनसे यहां कुछ भी प्रयोजन नहीं है। जेरुसलमका निश्चित रूपसे पतन संवत् १३०१ (सन् १२४४ ई०) में हुआ और यद्यपि उसके पुनः उद्धारका साधन बहुत पहिले ही सोच लिया गया था, तथापि क्रूसेडका अन्त तेरहवीं शताब्दीके प्रथम ही हो गया था।

इटलीके और विशेषतः जिनाआ, वेनिस और पिसाके व्यवसायियोंके लिए धर्मभूमिमें विशेष आकर्षण था। केवल इनके अनुराग और नाविकसामर्थ्यके कारण धर्मभूमिके जीतनेका कार्य सुगम हुआ। ये लोग सर्वदा इस बातका ध्यान रखते थे कि इनको अपने प्रयत्नोंके लिए एक अच्छा वेतन मिलता है। जब कभी वे किसी नगरके अवरोधमें सहायता देते थे तो उनको इस बातका अवश्य ध्यान रहता था कि जीतनेपर इस नगरमें उन्हें एक विशेष स्थान मिलेगा, जहां वे लोग अपने व्यवसायके लिए

न्दरगाह तथा संस्था स्थापित करेंगे । यह देश उसी नगरका हो जाता था वहां जिसके व्यवसाय होनेवाले थे । वेनिस वालोंने तो जेरुसलमके राज्यमे अपने निवासियोंके लिए निर्धारित स्थानोंके निमित्त अपने यहांसे शासक-गण भी भेजे थे । मर्सलीज़ वालोंके लिए जेरुसलममें स्वतन्त्र स्थान था और जिनोआने अपना भाग ट्रिपोलीमें ले लिया था ।

इस व्यवसायका यह परिणाम हुआ कि पूर्व और पश्चिममें बहुत घनिष्ठ संबन्ध पैदा हो गया । भारत ऐसे देशोंमें उत्पन्न किये हुए रेशम, मसाले, कपूर, कस्तूरी मोती, हाथीके दांत ऐसी ऐसी वस्तुओंको मुसलमान लोग पूरवसे पेलस्टाइन और सीरिया सदृश व्यवसायियोंके स्थानोंमे ले जाते थे । इटलीके व्यवसायी वहां उन पदार्थोंको फ्रास और जर्मनी तक पहुंचाते थे इन सब पदार्थोंसे ये लोग ऐसी विलासिताका परिचय देते थे जिसका फ्रंक लोगोंने कभी स्वप्नमें भी अनुभव नहीं किया होगा ।

क्रूसेडकी यात्राका पश्चिमीय यूरोपमें जो प्रभाव पड़ा है उसका कुछ थोड़ा परिचय इस वृत्तान्तसे मिलता है । सहस्रों फ्रान्सीसी, जर्मन तथा अंग्रेजोंने स्थल तथा जलसे पूर्वकी ओर यात्रा की । उनमेंसे कुछ तो गावों-के और कुछ प्रासादोंके रहनेवाले थे । इससे वे अपने गांव या नगर-के वृत्तान्तके सिवा और कुछ नहीं जानते थे। अब उन्हें एकाएक बड़े बड़े नगरोंमें उन लोगोंके साथ रहना पड़ा जिनसे और जिनकी प्रथासे वे लोग सर्वथा अनभिज्ञ थे । इनके संसर्गसे उन्हें नयी नयी बातें मालूम हुई । क्रूसेड वालोंने सरल शिक्षाका भी भार लिया । धर्मयात्रियोंका संसर्ग अरब वालोंसे हुआ । ये उनसे कहीं अधिक विज्ञ थे और इनसे उन लोगोंने नये नये विलासिताके भाव ग्रहण किये ।

पश्चिमीय यूरोपपर क्रूसडके ऋणकी गणना करनेमे इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि नये आगन्तुक विषयोंमे कितनी बातें कुस्तुन्तुनिया, सिसिली और स्पेनके सारसेन लोगोंसे मिली हैं, जिनसे सीरियाके सशस्त्र आक्रमणका

कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी यूरोपके नगरोंकी वृद्धि अति शीघ्रतासे हो रही थी। व्यवसायियोंकी भी वृद्धि हो रही थी। पाठशालयोंका प्रादुर्भाव हो रहा था। यह मान लेना कि बिना क्रूसेडकी यात्राके वह सब न हुआ होता सर्वथा हास्यजनक है। इस उन्नतिकी आशा तो क्लेमेन्टके उर्बान भाषणके पूर्व सेही दिखलायी दे रही थी। उपर्युक्त यात्राओंसे केवल इसका मार्ग सरल अवश्य हो गया था।

अध्याय १५

मध्ययुगकी धर्म-संस्थाकी उन्नत अवस्था।

विगत पृष्ठोंमें अनेकश. धर्म-संस्था और पादरियोंके उल्लेख-की आवश्यकता हुई थी। वास्तवमें उनके उल्लेख बिना मध्ययुगका इतिहास शून्य प्रतीत होता है, क्योंकि उस समयमें यही लोग सबसे विख्यात थे और उसके अधिकारी लोग समस्त उद्यमोंके मूल कारण थे। भूत पूर्व अध्यायोंमें धर्म-संस्थाओंका और उनके मुख्य अधिकारी पोप तथा महन्तोंका जो कि सारे यूरोपमें फैल गये थे, उल्लेख किया जा चुका है। अब इस अध्यायमें हम उन धर्म सस्थाओंके विषयमें कुछ विचार प्रगट करेंगे जो बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीमें उन्नतिके शिखरपर पहुंच गयी थीं।

हमने अभी देखा है कि मध्ययुग तथा आधुनिक धर्म-संस्थाओंमें चाहे वे कैथलिक हों वा प्रोटेस्टेन्ट बड़ा भारी अन्तर पड़ा है।

प्रथमत जैसे आधुनिक समयमें पत्येक मनुष्यको राजासे सम्बन्ध रखना पड़ता है उसी प्रकार प्राचीन समयमे भी प्रत्येक मनुष्यको धर्म संस्थासे सम्बन्ध रखना पड़ता था। यद्यपि कोई मनुष्य धर्म-संस्थामें उत्पन्न नहीं होता था, तथापि कार्य्यारम्भके प्रथम ही उसका बपातिस्मा कर दिया जाता था। समस्त पश्चिमीय यूरोपका एक ही धर्म्म था और उससे विरोध करना महापाप समझा जाता था। धर्म्मसंस्थासे सम्बन्ध न रखना, उसकी शिक्षा और अधिकारका विरोध करना परमेश्वरसे विरोध करना समझा जाता था और ऐसे विरोधी मनुष्यको मृत्युका दण्ड दिया जाता था।

झगड़े तय करनेका भी अधिकार उसे ही था। वह दोनों प्रतिवादियोंको हटाकर स्वयं किसीको अधिकारी नियुक्तकर सकता था, जैसा कि तृतीय इन्नोसेन्टने किया था। उसने केन्टरवरीके महन्तोंके चुने हुए दोनों प्रतिवादियोंको निकाल कर स्टीफन लङ्गटनका निर्वाचन कराया था।

सप्तम ग्रेगरीके समयसे ही पोपने विशपको निकालने और बदली करानेका अधिकार ले लिया था। इधर दूतोंके कारण पोपका अधिकार ईसाई गिरजोंपर विशेष बढ़ गया। पोपके इन दूतोंको वहुत अधिकार दिया गया था। इन दूतोंके उद्दण्ड व्यवहारसे समस्त राजा तथा धर्माध्यक्ष जिनके पास ये पोपके अधिकारकी वार्त्ता लेकर जाते थे, चिढ़ जाते थे, जैसा कि पोपके दूत पैन्डाल्फने इंगलण्डके राजा जॉनकी प्रजाको उसके समक्ष ही सम्बन्धकी शपथ ग्रहण करनेसे मुक्तकर दिया था।

पश्चिमीय देशके शासन करनेका जो भार पोपने अपने ऊपर लिया था, उससे उसे रोममें वहुतसे अधिकारी नियुक्त करने पड़े। उनके द्वारा वह समस्त राजकार्य सम्पन्न कराता तथा सम्पूर्ण आज्ञापत्र प्रचारित कराता था। धर्माध्यक्ष और पोपके अधिकारीवर्गसे पोपका दर्बार सुसज्जित था।

राज्यका प्रबन्ध तथा आश्रितोंका भरण-पोषण करनेके लिए पोपको अधिक आमदनीकी आवश्यकता रहती थी जिसकी प्राप्ति उसे भिन्न भिन्न रूपसे हो जाया करती थी। जो लोग इसके न्यायालयमें अभियोगके निर्णयार्थ आते थे उनसे अधिक शुल्क लिया जाता था। आर्क-विशप अपना अभिषेक पद (पालियम) पानेपर पोपको अधिक धन भेंटमें देता था, इसी प्रकार विशप और एवट अपनी नियुक्तिके अनुमोदनपर अधिक धन भेंटमें दिया करते थे। तेरहवीं शताब्दीमें कितने ही पदोंपर पोप स्वयं नियुक्ति करता था और उन लोगोंसे उस वर्षका आधा लाभ ले लेता था। पोपके अधिकारको प्रोटेस्टेन्टोंके अधिक्षेप करनेके कई शताब्दी पूर्व, चारों ओरसे पादरियों और सामान्य जनोंकी यही शिकायत होती थी कि पोप सरकार (क्यूरिया) ने कर तथा शुल्क कहीं अधिक लगा दिया है।

संस्थाओंमे पोपके नीचेका पद आर्क-विशपोंका था। आर्क विशप वे विशप कहाते थे जिनका अधिकार अपनी सस्थाकी सीमाके बाहर तक होता था और जो अपने प्रान्तके समग्र विशपोंके ऊपर कुछ न कुछ अधिकार रखते थे। आर्क विशपका एक मुख्य अधिकार यह भी था कि वह अपने प्रान्तके समग्र विशपोंको प्रान्तीय सभामें बुलाता था। विशपके निर्णय किये हुए अभियोगोंकी अपील इनके यहां होती थी। आर्कविशप और विशपमें केवल इतना ही अन्तर था कि उसका मानपद बड़ा था, वह बड़े बड़े नगरोंमें रहता था और उसको शासनकार्यमें अधिक अधिकार प्राप्त था।

मध्ययुगके समग्र पुरुषाम विशपके अधिकारका पूर्ण परिचय रखना अत्यावश्यक है। वे अपासलोंके उत्तराधिकारी समझे जाते थे और उनमें। ईश्वरीय शक्ति म नी जाती थी। उनके अधिकारके चिन्ह माइटर तथा सब क्रोजियरसे विदित होता है। प्रत्येक विशपकी अलग अलग अपनी विशेष संस्था होती थी जिसको "कैथड्रल" कहते हैं। साधारणतः और संस्थाओंकी अपेक्षा यह परिमाण और सौन्दर्य्यमें भी बढ़ चढ़ कर थी।

नये पादरी नियुक्त करने तथा प्राचीन पादरियोंको पदसे च्युत करनेका अधिकार केवल विशपको ही था। वही केवल धर्म-संस्थाओंका निर्माण और राजाओंका अभिषेक कर सकता था। अभिषेक संस्कारोंको दृढ़ करनेका अधिकार उसीको था। यद्यपि पुरोहित होनेसे वह उन संस्कारोंको स्वतः भी करा सकता था, तथापि धार्मिक कार्योंके अतिरिक्त वह अपनी संस्थामें सम्पूर्ण अध्यक्षोंका अधिष्ठाता था। उसका अपना न्यायालय होता था जिसमें वह अनेक प्रकारके अभियोगोंका निर्णय करता था। यदि कोई न्यायपरायण विशप हुआ तो वह अपनी संस्थाके समस्त धर्मचक्र (पेरिश) के गिरजों और मंदिरोंकी यात्रा करता था जिसका अभिप्राय यह निरीक्षण करनेका था कि पुरोहित लोग अपना कार्य उचित रीतिसे सम्पन्न करते हैं या नहीं और महन्तोंका व्यवहार भी ठीक प्रकारसे होता है या नहीं।

अपनी संस्थाके कार्यावलोकनके अतिरिक्त वह विशपोंसे सम्बन्ध रखने-
वाली शेष भूमिका प्रबन्ध भी करता था, इसके अतिरिक्त उसको राज्य-
प्रबन्ध भी देखना पड़ता था, जिसको जर्मनीके सम्राट्ने उसके ऊपर छोड़
दिया था। वह राजाके सभासदोंमें सबसे उत्कृष्ट समझा जाता था।
सारांश यह कि बिशप राजाका सामंत था और सामंतोंके समस्त धर्मोंसे नि-
यन्त्रित था। कितने ही लोग उसके आश्रित थे और वह स्वयं किसी राजा
या पार्श्ववर्ती सामन्तके आश्रित होता था। बिशपरियोंके वृत्तान्तोंको पढ़नेसे
यह नहीं निश्चय किया जा सकता कि विशपोंकी गणना धर्माध्यक्षोंमें की
जाय या सामन्तोंमें। विशपोंके अधिकार मध्य-युगकी धर्म-संस्थाकी भांति
बहुत अधिक थे।

सप्तम ग्रेगरीके सुधारके अनुसार बिशपोंकी नियुक्तिका अधिकार कैथेड्रलके
"चेप्टर" को दे दिया गया था अर्थात् यह अधिकार उन पादरियोंको
दे दिया गया जो कैथेड्रल चर्चसे सम्बन्ध रखते थे। परन्तु इससे राजाके
प्रस्तावके कार्यमें तनिक भी विघ्न न पड़ा क्योंकि चेप्टर लोग राजासे
अनुमोदन पत्र लिये विना यह कार्य नहीं कर सकते थे। यदि
वे उसकी सम्मति न लें तो वह उनसे नियुक्त किये हुए लोगोंको उनके पद-
से सम्मिलित भूमि और अधिकारपदसे वञ्चित रख सकता था।

गिरजेका सबसे छोटा भाग पेरिश (धर्मचक्र) होता था। इसकी पारिमि-
सीमा थी, यद्यपि इसके आश्रयमें कुछ गृहोंसे लेकर कभी कभी नगर त
रहता था तथापि इसका अधिकारी पुरोहित होता था जो कि पेरिशके गिरजा-
प्रार्थना किया करता था और अपने आश्रितोंके बपतिस्मा, विवाह और
मृत्यु-क्रिया भी कराया करता था। इन लोगोंकी जीविका पेरिशके गिरजे-
से सम्बन्ध रखनेवाली भूमि तथा टाइथ नामी करसे चलती थी। परन्तु कभी
पोपके ... ये दोनों वृत्तियां सामान्य जनों या पार्श्ववर्ती मंदिरोंके अधिकारमें
... ओरसे पादरियों और पेरिशको थोड़ा बहुत पेट पालनार्थ मिल जाता था।
सरकार (क्यूरिया) ना गांवका केन्द्र स्थान था। उसके पुरोहित भी जनताके

घटा तो देता था, पर मिटा नहीं सकता था। यदि कोई ईसाई उस पाप-वासनासे घोर पाप कर बैठे तो तपके संस्कारसे उसको परमेश्वरसे एक बार पुनः क्षमा मिल जाती थी। वह नरकके मुखसे खींचकर बचा लिया जाता था। नियुक्तिके संस्कारसे पुरोहितको पापियोंको क्षमा करनेका अधिकार मिलता था। उसको एक मासकी अलौकिक क्रिया करनेकी शक्ति थी अर्थात् पापियोंके अपराधोंको निर्मूल करनेके लिये वह ईसू मसीहका पुनरुत्थापन करता था।

'मास'के साथ तप संस्कारक' विशेष महत्व है। नियुक्तिके समय पुरोहितसे विशप कहता था "तुममें परमेश्वरकी पवित्र आत्माका निवास हो" जिसके अपराध तुम क्षमा करोगे वे क्षमा हो जायगे और जिनके पापोंको तुम स्थायी रक्खोगे वे स्थायी रहेंगे। इस प्रकारसे पुरोहितको ही स्वर्गद्वारकी ताली मिली थी। घोर पापमें पड़ा हुआ मनुष्य जबतक अपने पापोंका प्रक्षालन पुरोहितजीसे न करा लेता था तबतक उसकी मुक्ति नहीं हो सकती थी। जो कोई पुरोहितकी शिक्षाकी निन्दा करता था उसकी मुक्ति कठिनसे कठिन पश्चात्ताप और प्रार्थना करनेपर भी नहीं हो सकती थी। पुरोहितके क्षमा-प्रदानके पूर्व पापीको पुरोहितके समक्ष अपने पाप स्वीकार (कान्फेस) करने पड़ते थे, उनकी घोर घृणा दिखलानी पड़ती थी और पुनः पाप न करनेकी प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। जबतक पुरोहित पापको जान न लें, वे उसका कुछ भी निर्णय नहीं कर सकते थे। जबतक पापीको अपने पापके लिये पश्चात्ताप न हो तबतक उसको क्षमा-प्रदानका अधिकार भी नहीं था। इससे प्रकट होता है कि मुक्तिके लिए स्वीकृति और पश्चात्ताप बहुत आवश्यक है।

क्षमा-प्रदानसे अनुतापी पापीकी मुक्ति अपने पापोंके सम्पूर्ण फलों से नहीं होती थी, केवल उसकी आत्मा उन घोर पापोंसे मुक्त हो जाती थी जिसके कारण उसे आजन्म दुःखका दण्ड मिलता था, परन्तु पुरोहित अनुतापीको लौकिक दुःखसे नहीं बचा सकता था। यह दंड चाहे पुरोहित

लेखोंमें मिले। पीटरके इन मतोंका लोगोंपर बड़ा प्रभाव पड़ा, क्योंकि इनका प्रादुर्भाव ऐसे समयमें हुआ था जब लोगोंको धर्ममें एक नये प्रकारका अनुराग उत्पन्न हो रहा था, विशेषकर पारिस नगरमें जहां कि धर्म-विद्यापीठकी उत्पत्ति हो रही थी।

पहले पहल पीटर लम्बर्डने ही सप्त संस्कारके नियम निकाले थे। उसकी शिक्षामें केवल उन्हीं विषयोंका विन्यास ो उसे धर्म-पुस्तक तथा धर्माधिष्ठाताओंके लेखोंमें मिले थे, परन्तु उसके विन्यास तथा व्याख्याने मध्ययुगके लिए नयी स्थिति प्रदान की। उसके समयके पूर्व "संस्कार" शब्दसे अनेक पवित्र वस्तुओंका बोध होता था, अर्थात् बपतिस्मा, क्रास, लेन्ट (४० दिनका वार्षिक उपवास) और पवित्र जल। परन्तु उसका मन्तव्य था कि "संस्कार" शब्दसे केवल सात विषयोंका बोध होता है, अर्थात् बपतिस्मा (दीक्षा), अनुमति, अनुलेप, विवाह, तप, नियोग और भगवद्भोग। इन्हीं संस्कारोंसे सब धर्म कार्य प्रारम्भ होकर वृद्धि पाते हैं और यदि नष्ट हो गये हैं तो पुनः उद्धृत होते हैं। मुक्तिके लिये ये अति आवश्यक हैं और इनके विना किसीकी भी मुक्ति नहीं हो सकती।

संस्कारोंकेही द्वारा गिरजेने सच्चे सच्चे श्रद्धालुओंका साथ दिया। बपतिस्मासे आदमके स्वर्गसे गिरनेके पापका नाश हुआ था, क्योंकि केवल उसी मार्गसे आत्मा आध्यात्मिक जीवन पा सकती थी। पवित्र तैल तथा विलेपनको सुशीलताका परिमल मानकर अनुमतिके समय लड़कों तथा लड़कियोंके मस्तकमें लेपन किया जाता था, जिससे कि वे ईश्वरका नाम सदा स्मरण रक्खा करें। यदि कोई भी धर्मावलम्बी बीमार हो जाता था तो पुरोहित परमेश्वरका नाम लेकर उसके शरीरमें तैल या चन्दनका लेप करते थे और इस अनुलेपनके संस्कारसे उसके प्राचीन पापोंके अंश दूर करके उसकी आत्माको पवित्र कर देते थे। वैवाहिक कार्य भी केवल पुरोहित ही सम्पन्न करा सकते थे और जब एक सम्बन्ध स्थिर या नियमबद्ध हो जाता था तब वह पुनः तोड़ा नहीं जा सकता था। पापवासनाको बपतिस्मा

क विशेष बनों तथा विशेष कर मृतकोंकी रक्षाके लिए प्रर्थनाएं की जाती थीं। ऐसे गृहोंका निर्माण किया गया जिनकी आमदनीसे पुरोहितका प्रतिपालन होता था और वह दाताओं और उनके कुटुम्बियोंकी आत्माकी शांतिके लिए नित्य गिरजेमें प्रार्थना किया करता था। गिरजों तथा मठोंमें दान देनेवालोंके लिए सालाना या वर्ष भरमे निश्चित समयपर प्रार्थना करनेके लिए पुरस्कार दिया जाता था।

गिरजेके अत्युत्कृष्ट अधिकारने अद्वितीय शासनप्रणाली तथा असंख्य धन-प्राप्तिने पादरियोंको मध्ययुगमें सर्वशक्तिमान और सामाजिक बना दिया स्वर्गके द्वारकी ताली उन्हींके पास रहती थी और उनकी सहायताके विना कोई भी वहां प्रवेश नहीं पा सकता था। किसी अपराधीको बहिष्कृत कर वह उन गिरजोंसे केवल निकाल ही नहीं देता था किन्तु उसे शैतानका मित्र बना, उसके सहवासियोंसे भी परस्पर मिलनेसे रोक देता था। वह घोषणापत्र निकाल कर सम्पूर्ण नगर या गांवमें गिरजोंका द्वार बन्द करवाकर और समस्त पूजा बन्द करवाकर धर्मकी सान्त्वनासे भी उसको वञ्चित कर सकता था।

केवल यही लोग पढ़े लिखे भी होते थे इसीसे इनका प्रभाव विशेष हो गया था। पश्चिममें रोम राज्यके पतनके ६ या ७ शताब्दी पर्यन्त पादरियोंके अतिरिक्त इतर लोगोंने लिखने पढ़नेपर किञ्चित् मात्र भी ध्यान नहीं दिया था, यहां तक कि तेरहवीं शताब्दीमें भी यदि कोई अपराधी गिरजेके न्यायालयसे अपना अपराध निर्णय करानेके लिए अपनेको पादरी निर्धारित करना चाहता था, तो उसे केवल एक पंक्ति पढ़ देनी पड़ती थी क्योंकि न्यायाधीशोंने यह निश्चय किया था कि सिवा गिरजे वालोंके दूसरे किसीका पढ़ने लिखनेसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

इन सब बातोंसे यह अनिवार्य है कि सब प्रकारकी पुस्तकें केवल पुरोहित और महन्त ही लोग लिखा करते थे और समस्त मानसिक कला तथा साहित्यके विषयमें वही प्रधान थे अर्थात् वे समस्त सभ्यताके

इसी जन्ममें देदे या मृत्युके पश्चात् जब स्वर्ग-प्रदानके लिए आत्मा अग्निमें पवित्र की जाती है उस समय दें।

पुरोहितके दंडको "तप" कहते थे। यह कई प्रकारका होता था। जैसे उपवास करना, प्रार्थना करना, धर्मभूमिमें जाना (तीर्थयात्रा), अपनेको विषयसुख एवं वैलासिक वस्तुओंसे वाञ्चित रखना इत्यादि। धर्म भूमिकी यात्रा तीर्थ करना, सब तपोंसे उत्तम समझा जाता था। प्राचीन समयमें गिरजेने यह स्थिर किया था कि पापी व्रत, यात्रा इत्यादि न करके अर्थ-प्रदान कर सकता है जिसका उपयोग किसी धर्म-कार्यमें किया जायगा, जैसे गिरजा-निर्माण, बीमार तथा निर्धनोंकी सहायता इत्यादि।

पुरोहित केवल क्षमा-प्रदान ही नहीं करते थे, किन्तु "मास"की विस्मया वह विधि करनेकी भी आज्ञा देते थे। प्राचीन समयके ईसाई लोगोंने "भगवद् भोग" संस्कारको कई प्रकारसे किया था और उसके विधान तथा रहस्यके कतिपय अर्थ लगाये जाते थे। शनैः शनैः यह बात सब लोगोंमें प्रचलित हो गयी कि रोटी और मद्यका जो भोग लगाया जाता है वह ईसामसीह के शरीरको पुष्ट करता है, क्योंकि रोटी उसके शरीरका मांसभूत और मद्य रुधिर हो जाता है। इसी पदार्थको रूपान्तर होना कहते हैं। गिरजे वालोंका यह विश्वास है कि इस संसारसे शूलीके समयकी भांति पुनः ईसूमसीह परमेश्वरको बलिरूपसे समर्पित किया जाता है। यह बलि उपस्थित, अनुपस्थित, अतीत तथा वर्तमान सभी प्रकारके पापके लिये की जा सकती है। इसके अतिरिक्त ईसूमसीहकी पूजा अन्न बलिकी शकलमें होती था। यह पूजाका सबसे उत्तम प्रकार माना जाता था। जब कभी अकाल या महामारीके समयमें परमेश्वरके प्रसन्न करनेकी आवश्यकता होती थी तो अन्नबलिकी भक्तिपूर्वक सवारी निकाली जाती था।

"मास"की क्रियाको बलिका रूप देनेमें कुछ व्यावहारिक परिणाम भी निकलता था। यह पुरोहितके कामोंमें सबसे उत्तम कार्य समझा जाता था और धर्म-संस्थाका मुख्य कर्तव्य था। सर्व साधारणके रक्षार्थ प्रार्थनाओंके अति-

अध्याय १६

नास्तिकता और महन्त

अब स्वभावत: यह प्रश्न उठता है कि इस गिरजेकी बड़ी सेनाके अध्यक्ष पापोंके विरुद्ध युद्ध करनेमे शक्तिशाली नेता हुए कि नहीं। क्या वे लोग उन प्रलोभनोंको जो कि उनके अनन्त अधिकार था असीम सम्पत्तिसे सर्वदा उनके मार्गमें उपस्थित हुआ करते थे, दमन कर सके या नहीं? क्या उनलोगोंने अपनी विपुल आयको अपने उस नेताके कार्योंकी उन्नातिमें लगाया जिसके वे लोग विनीत अनुयायी तथा दास बनते थे? अथवा वे लोग उलटे स्वार्थी कलुषित थे और गिरजेकी शिक्षासे अपना स्वार्थ सिद्ध करते थे और अपने स्वकीय दुष्प्रबन्ध तथा दुष्टतासे जनताकी आंखोंमें उसके मन्तव्योंका निरादर करते थे?

इन प्रश्नोंका कोई सरल उत्तर नहीं हो सकता। जो मनुष्य जानता है कि मध्ययुगमें जीवनके प्रत्येक विभागपर तथा जन साधारणके समस्त लाभोंपर धर्म संस्थाका कितना अधिक प्रभाव था, उसको उनके गुण तथा दोषोंकी तुलना करना कठिन कार्य है। परन्तु इसमें सन्देह भी नहीं कि चर्चसे पश्चिमीय यूरोपको अकथनीय लाभ पहुंचा है। उसके मुख्य कर्तव्य अर्थात् ईसाई धर्म द्वारा लोगोंके आचार उन्नातिके सम्बन्धमे न कहकर हमको केवल यही देखना है कि इसकी छायातले रहकर असभ्य लोग किस प्रकार सभ्य बने? इनके जातीय वंश किस प्रकार स्थापित हो गये, ईश्वरीय शान्तिकी शिक्षा देकर उनका कलह किस प्रकार रोका गया और ऐसे समयमें जब कि

प्रतिपालक तथा परिवर्धक समझे जाते थे । इसके अतिरिक्त शास-
कोंको भी घोषणा तथा लेख्यपत्र लिखवानेके लिए गिरजे वालों हीं
पर निर्भर रहना पड़ता था। पुरोहित और महन्त राजाके स्थानपर
लिखने पढ़नेका कार्य किया करते थे। पादरियोंके प्रतिनिधि राजा-
ओंकी सभामें बराबर रहते थे और मन्त्रीका भी काम करते थे। यथा
र्थमें शासनका अधिकतर भार इन्हीं लोगोंके ऊपर रहता था ।

कितने ही गिरजोंका पद सर्वसाधारणके लिए था और साधारण
मनुष्य पोपके पदपर भी पहुंचे थे । इस प्रकार गिरजोंमें प्रायः सर्वदा
नये नये मनुष्य आया जाया करते थे। राजकार्यकी भांति किसी मनु-
ष्यको गिरजोंमें कोई भी पद इस कारणसे नहीं मिलता था कि पूर्वमें
उसके पूर्ववंशज इस पदपर आरूढ़ रह चुके हैं।

जो मनुष्य गिरजोंमें किसी पदपर आरूढ़ हो जाता था उसकी
गृहस्थीके झगड़ों तथा कुटुम्बके बन्धनोंसे मुक्ति हो जाती थी। गिरजा
ही उसका नगर, गृह तथा सर्वस्व हो जाता था। आध्यात्मिक, मानसिक
तथा शारीरिक बल जो साधारण जनोंमें देशानुरागके अभिमान, स्वार्थ-
साधनके लिए कलह, और पुत्र कलत्रोंके लिए उत्पादनके कार्यमें विभाजित थे,
गिरजेमें सर्वसाधारणके हितके लिए एकत्र होगये थे गिरजेकी सफलतामें सब
कोई भाग ले सकता था। अस्तित्वकी आवश्यकता सबको बतलायी जाती
थी, पर भविष्यके लिए भी चिन्तित न होनेके लिए कहा जाता था। इस
प्रकार धर्म-संस्था भी एक प्रकारका सैन्य-समूह था जो कि ईसाई मतरूपी
स्थलपर सन्निवेशित था, इसके स्तम्भ सर्वत्र वर्तमान थे और इसकी
व्यवस्था अत्यन्त विचक्षण थी। सब एक उद्देश्यसे उत्तेजित थे और
समस्त सैन्य-समूह अभेद्य सर्वाङ्ग कवच धारण किये हुए आत्माको
नाश करनेवाले भयानक शस्त्रको धारण किये हुए थे।

अध्याय १६

नास्तिकता और महन्त

अब स्वभावत यह प्रश्न उठता है कि इस गिरजेकी बड़ी सेनाके अध्यक्ष पापोंके विरुद्ध युद्ध करनेमे शक्तिशाली नेता हुए कि नहीं । क्या वे लोग उन प्रलोभनोंको जो कि उनके अनन्त अधिकार था असीम सम्पत्तिसे सर्वदा उनके मार्गमें उपस्थित हुआ करते थे, दमन कर सके या नहीं ? क्या उनलोगोंने अपनी विपुल आयको अपने उस नेताके कार्योंकी उन्नतिमे लगाया जिसके वे लोग विनीत अनुयायी तथा दास बनते थे ? अथवा वे लोग उलटे स्वार्थी कलुषित थे और गिरजेकी शिक्षासे अपना स्वार्थ सिद्ध करते थे और अपने स्वकीय दुष्प्रवन्ध तथा दुष्टतासे जनताकी आखोंमे उसके मन्तव्योंका निरादर करते थे ?

इन प्रश्नोंका कोई सरल उत्तर नहीं हो सकता । जो मनुष्य जानता है कि मध्ययुगमें जीवनके प्रत्येक विभागपर तथा जन साधारणके समस्त लाभोपर धर्म संस्थाका कितना अधिक प्रभाव था, उसको उनके गुण तथा दोषोंकी तुलना करना कठिन कार्य है । परन्तु इसमें सन्देह भी नहीं कि चर्चसे पाश्चिमीय यूरोपको अकथनीय लाभ पहुंचा है । उसके मुख्य कर्तव्य अर्थात् ईसाई धर्म द्वारा लोगोंके आचार उन्नतिके सम्बन्धमें न कहकर हमको केवल यही देखना है कि इसकी छायातले रहकर असभ्य लोग किस प्रकार सभ्य बने ? इनके जातीय वंश किस प्रकार स्थापित हो गये, ईश्वरीय शान्तिकी शिक्षा देकर उनका कलह किस प्रकार रोका गया और ऐसे समयमें जब कि

बहुत ही कम लोग पढ़ते लिखते थे किस प्रकार एक शिक्षित समाज स्थापित हुआ? उसके ये कुछ एक स्पष्ट सुधार थे। इसके अतिरिक्त चर्चने जो आश्वासन तथा रक्षा-स्थान दुर्बलों, दुःखियों तथा हृदय पीड़ितोंको दिया था, उसका निरूपण तो कोई कर ही नहीं सकता।

उधर चर्चका इतिहास पढ़नेसे स्पष्ट प्रगट होता है कि उसमें ऐसे दुराचारी पादरी भी थे जो अपने अधिकारोंका दुरुपयोग किया करते थे। जैसे आधुनिक समयमें भी अनेक सरकारी पेदाधिकारी ऐसे अयोग्य हैं जिन्हें इतने भारी पदका भार कभी भी मिलना न चाहिये उसी प्रकार उस समयमें भी अनेक चर्चके कर्मचारी अपने पदके सर्वथा अयोग्य होते थे।

इतना होते हुए भी जब कभी हमलोग पादरियोंके दुष्कर्मोंकी, जो प्रायः प्रत्येक युगके इतिहासमें पाये जाते हैं, कठिन अलोचनाएं पढें, तो हमें इस वातका ध्यान रखना चाहिये कि समालोचक अच्छी वातोंको सत्य रूपसे मान लेता है और केवल बुरी वातों की ही समालोचना किया करता है। विशेषतः उन बड़ी बड़ी धर्म संस्थाओंके सम्बन्धमें दुराचारकी अधिकता आदि वातोंका उल्लेख समस्त रूपण सत्य है। एक दुष्टात्मा विशप अथवा किसी दुराचारी दुष्कर्मी पादरीके दुष्कर्म या दुराचारोंका प्रभाव सैकड़ों धर्मात्मा तथा ईश्वरभक्त पुरोहितोंके सत्कर्मोंके प्रभावसे कहीं अधिक होगा। यदि हम लोग यह बात मान भी लें कि बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीके लेखकोंने धर्माधिकारियोंके सत्कर्मोंपर किञ्चिन्मात्र भी ध्यान नहीं दिया तो भी हमलोगोंको यह मानना ही पड़ेगा कि उन लोगोंने पादरी पुरोहित तथा महन्तोंके जीवनका और गिरजोंकी बुराइयोंका अत्यन्त कलंकित चित्र खींचा है।

सप्तम ग्रेगरीका कहना था कि चर्चके दुराचारोंके वास्तवमें वे राजा महाराजा कारण थे जो अपने अपने प्रिय पार्श्वचरोंको चर्चके अधिकार-पदपर नियुक्त करते थे। परन्तु सम्पूर्ण कठिनाइयोंका कारण चर्चकी प्रचुर सम्पत्ति तथा अधिकार था जिसके कर्त्ता धर्त्ता पादरी लोग थे। उनके

सदुपयोगमें लाने और प्रलोभनोंके दमन करनेके लिए वस्तुतः सन्तो तथा महात्माओंकी आवश्यकता थी । किसी धनी पदरीके अधिकारपर ध्यान देनसे उसके दुराचारोंको देखकर किंचिन्मात्र भी आश्चर्य नहीं होता । आधुनिक शासनपदोंके समान, उस समयमें चर्च-पद भी धन कमानेके साधन समझे गये थे । अथवा यों कहिये कि जिस प्रकार आजकल अमरीकामे साधारण गूढ नियामक हैं, उसी प्रकार चर्चके अधिकारी भी थे । बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीके चर्चोंके वर्णनसे स्पष्ट प्रगट होता है कि चाहे वे कैथलिक हो या प्रोटेस्टेन्ट इनके अधिकारि-वर्ग आधुनिक पादरियोंके समान ही पेशेदार राजनीतिक थे ।

लोगोंमे नास्तिकता तथा चर्चकी ओरसे घृणा क्यों उत्पन्न हुई यह दिखलानेके पूर्व अब पादरियोंके अति विकट तथा घोरतम दुराचारोंका संक्षेपतः वर्णन करना आवश्यक है । बारहवीं शताब्दीमे ये लोग चर्चके अधिकारोंपर आक्षेप करने लगे जिसका परिणाम सोलहवीं शताब्दीमें प्रोटे-स्टेन्टोंका घोर विद्रोह है । पादरियोंके दुराचारोंसे ही भिक्षुक महन्त फ्रान्सि-स्कन् तथा डोमिनिकन लोगोंका आविर्भाव हुआ और ये ही तेरहवीं शताब्दी-के सुधारोंके कारण है ।

प्रथम तो साइमनी (धर्माधिकार विक्रय) का पाप इतना बढ़ गया था कि तृतीय इन्नोसन्टने उसे असाध्य बतलाया था । इसका वर्णन पिछले परिच्छेदमें हो चुका है अपने मित्रों तथा सम्बन्धियोंके प्रभावसे छोटे छोटे लड़के भी बिशप और ऐबट बनाये जाते थे । सामन्तोंने भी समृद्ध बिशपरी तथा मन्दिरोंको अपने कनिष्ठ पुत्रोंकी जीविकाका अत्युत्कृष्ट मार्ग समझा था क्योंकि उनके उत्तराधिकारी उनके ज्येष्ठ पुत्र ही हुआ करते थे । बिशप और एबट सामन्तोंके समान जीवन व्यतीत करते थे । यदि कोई पादरी युद्धप्रिय हुआ तो वह युद्ध यात्रा करनेके लिए सैन्य एकत्र करता था या अपने किसी पड़ोसीको दुःख देने वा अपनी ईर्षा मिटानेके हेतु उसपर चढ़ाई कर बैठता था ।

धर्माधिकार विक्रय (साईमनी) और पादरियोंके दुराचारोंके अतिरिक्त और भी अनेक बुराइयां थीं जिनके कारण चर्चकी निन्दा होती थी। यद्यपि बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीके पोप स्वयं बड़े सज्जन तथा नीतज्ञ थे और प्रायः वे उस संस्थाकी जिसके वे अधिपति थे, उन्नतिका ध्यान रखते थे। पोपके न्यायालयमें अभियोगोंपर विचार करनेवाले अधिकारि-वर्ग अत्यन्त दुराचारी होते थे। सब लोगोंमें प्रचलित था कि अभियोगका निर्णय उसीके अनुकूल होगा जो अधिक रुपया दे सकेगा उस समय निधनोंपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता था। बिशपके न्यायालयमें तो बड़ी क्रूरता दिखलायी जाती थी, क्योंकि समान्तोंके समान बिशपोंकी भी आमदनी उसी अर्थ दंडसे हुआ करती थी जो उनके अधिकारि-वर्ग अभियुक्तोंपर लगाते थे। कभी कभी तो ऐसा भी होता था कि एक ही मनुष्य एक ही समयमें राजाज्ञा द्वारा भिन्न भिन्न न्यायालयोंमे बुला लिया जाता था और जब वह किसी एकमें उपस्थित नहीं हो सकता था तो उसे अर्थ-दण्ड कर दिया जाता था।

इसी प्रकार पुरोहित भी अपने अध्यक्षोंके दुष्कर्मोंका अनुकरण करते थे। चर्चके सभी कार्योंसे विदित होता है कि कभी कभी पुरोहित दुकानोंमे बैठकर मद्यादि वस्तुएं भी बेचा करते थे। जैसा कि हम पहले लिख आये हैं कि ये बपतिस्मा, विवाह और अन्त्येष्टि क्रियासे अपनी विशेष आय बढ़ाते थे।

बारहवीं शताब्दीके महन्तोंने भी अधिक अंशोंमें पादरियोंकी न्यूनताकी पूर्तिका प्रयत्न कभी नहीं किया था। वे लोग भी जनताको न तो कभी उत्तम शिक्षा ही देते थे और न सच्चरित्रता ही सिखलाते थे, परन्तु स्वयं पादरियों और बिशपोंकी भांति आनन्द किया करते थे। ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दीमें महन्तोंके सुधारनेका प्रयत्न किया गया।

उस समयके यात्रियोंके लेख पढ़नेसे स्पष्ट प्रगट होता है कि उस समयके समस्त धर्माधिकारिगणोंमें स्वार्थपरता और दुश्चरित्रता सर्वव्यापक हो गयी थी। इस बातका परिचय विशेषतः पोपोंके पत्रोंमें,

महात्मा बर्नर्ड जैसे धर्मात्माओंकी निर्भर्त्सनाओंमें, समितियोंके कानूनोंमें, उत्तेजक प्रतिभावान् कवियोंकी प्रहसनपूर्ण सर्व प्रिय कविताओंमें और प्रत्युत्पन्न मति आशु कवियोंके पद्योंमें मिलता है । पादरियोंके अन्याय उनके प्रलोभन तथा धर्मकार्यकी अवहेलनाके लिए सर्व साधारण भी उनकी निन्दा करते थे। महात्मा बर्नर्ड शोकसे प्रश्न करते हैं, "क्या कोई भी पादरी ऐसा बताया जा सकता है जो कि अपने आश्रितोंका धन न चूसकर उनके दुष्कर्मोंके दूर करनेका प्रयत्न करता हो।"

धर्माध्यक्षोंके अवगुण सामान्य जनको भली भाति विदित ही थे और वे उसकी समालोचना भी किया करते थे। पादरियोंमें सच्चे हृदयवालोंके स्थायी दोषोंके सुधार करनेका प्रयत्न प्रारम्भ हुआ। परंतु धर्माध्यक्षोंमें कोई भी ऐसा न था जो गिरजेके मन्तव्योंकी सत्यता तथा संस्कारोंकी अमोघतापर विश्वास न करता हो। सामान्य जनोंमें कुछ ऐसे सर्वप्रिय नेता निकले जिन्होंने व्यक्त शब्दोंमें उद्घोषित किया कि गिरजा शैतानका सभागृह है और अबसे मुक्तिके लिए किसीको उसपर भरोसा नहीं करना चाहिये। इसके समस्त संस्कार निरर्थक और हानिकारक हैं। इसका भगवद् भोग, पवित्र जल और धर्मचिन्ह केवल दुराचारी पुरोहितोंके द्रव्योपार्जनका उपाय मात्र हैं और इससे कोई भी स्वर्गकी आशा नहीं कर सकता। जिन लोगोंको पूरा विश्वास था कि दुश्चरित्र पादरियोंका शासन पापियोंका कुछ भी उद्धार नहीं कर सकता और जिनपर टाइथ नामक कर तथा अन्यान्य करोंका बोझ था उन लोगोंमें चर्चके विरुद्ध उठे घोर आन्दोलनके बहुतसे समर्थक होगये।

गिरजेके मतको खण्डन करनेवालों तथा उसके अधिकारपर आक्षेप करनेवालोंपर उस समयके अनुसार घोर नास्तिकताका दोष लगाया गया। जिस धर्मका उपदेश ईश्वरके पुत्र (ईसा)के द्वारा अपने अनुयायीवर्ग रोमके गिरजेने किया उस धर्मकी अवहेलना कर ईश्वरसे विद्रोह करनेके पापसे बढ़कर किसी कट्टर धर्मावलम्बीकी आखोंमें दूसरा कोई भी पाप नहीं हो

सकता। इसके अतिरिक्त सन्देह और अविश्वास करना केवल पाप ही नहीं था परन्तु उस समयकी प्रचलित धर्मप्रथा—जिसकी पश्चिमीय यूरोपमें बड़ी प्रतिष्ठा थी—के प्रतिकूल विद्रोह भी था, यद्यपि उसके कुछ अध्यक्ष दुराचारी थे। बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीमें नास्तिकताकी वृद्धि तथा विकास और अग्निप्रक्षेप, अस्त्रबल और विचारालयोंकी कठोरतासे उसको दबानेके लिए गिरजेवालोंके घोरदमनका मध्य युगके इतिहासमें अति दारुण तथा विचित्र वर्णन है।

नास्तिकोंके दो भेद थे। एक तो वे जो कैथलिक गिरजेके कुछ मन्तव्योंका त्याग कर चुके थे, पर ईसाई धर्मको मानते थे और यथाशक्ति ईसामसीह और अपासलोंके साधारण जीवनके अनुकरण करनेका प्रयास करते थे। दूसरे वे लोकप्रिय नेता थे जो इसाई धर्मको सर्वथा झूठा बतलाते थे। इनका मत था कि संसारमें केवल दो ही पदार्थ हैं, पाप और पुण्य। वे दोनों विजयके लिए आपसमें सदा लड़ा करते हैं। उनका कहना था कि प्राचीन "धर्म-व्यवस्था" (अंजील) का जहोवा पापात्मा है अतएव कैथलिकका गिरजा पापात्माकी पूजा करता है।

यह नास्तिकता प्राचीन कालसे चली आती है। प्रारम्भिक अवस्थामें महात्मा अगस्टाइन भी इसमें फंस गये थे। ग्यारहवीं शताब्दीमें इटलीमें इसका आविर्भाव हुआ और बारहवींमें दक्षिण फ्रांसमें इसका बहुत प्रचार हुआ। इसके पक्षपातियोंने अपना नाम 'कथारी' (श्रेष्ठ) रक्खा, पर हम उन्हें अलिब गणोंके नामसे पुकारेंगे क्योंकि इनकी संख्या दक्षिणी फ्रांसके अलिब नगरमें बहुत अधिक थी।

जो लोग ईसाई धर्मको तो ग्रहण करते थे, पर दुराचारके कारण पादरियोंको नहीं मानते थे उनमें सबसे विख्यात वाल्डो पन्थी थे। ये लोग लीयन नगरके रहनेवाले पीटर वाल्डोके शिष्य थे जो अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति त्याग कर अपासलोंके समान तपस्वियोंका जीवन बिताते थे। ये लोग देश विदेश जाकर धर्मपुस्तकका लोगोंकी भाषामें अनुवाद

करके उसकी शिक्षाका प्रचार करते थे । उन लोगोंने बहुतोंको अपने मतमें मिला लिया और बारहवीं शताब्दीके अन्ततक बहुतसे लोग पश्चिमीय यूरोपमें फैल गये ।

जो लोग ईसा मसीह तथा अपासलोंके साधारण जीवनका अनुकरण करना चाहते थे गिरजेने उनके प्रयासकी निन्दा नहीं की, परन्तु उन लोगोंकी स्थिति जनताके ऊपर गिरजके प्रभावका नाशक थी, वे लोग इस विश्वासका खण्डन करते थे कि अखिल मुक्तिका मार्ग गिरजा ही है और उन्होंने शिक्षक तथा आचार्य पदपर अपना अधिकार जमा कर खुल्लम खुल्ला इस बातकी शिक्षा दी थी कि प्रार्थना चाहे गिरजेमें की जाय, या बिछौनेंपर की जाय, या अस्तबलमें की जाय वह सामान रूपसे गुणकारी होती है ।

बारहवीं शताब्दीके अवसानके पूर्व ही राजा लोग भी नास्तिकता-पर ध्यान देने लगे । संवत् १२२३ (सन् ११६६) में द्वितीय हेनरीने उद्घोषित किया कि इंग्लैण्डमें नास्तिकोंको कोई निवासस्थान न दे और जो उनको अपने घरमें ठहरायेगा उसका मकान जला दिया जायगा । संवत् १२५१ (११६४ ई०) मे अरागानके राजाने भी घोषणा की कि जो कोई वाल्डोपन्थियोंकी शिक्षा सुनेगा या उन्हें भोजनादि देगा, उसपर राजविद्रोहका अभियोग चलाया जायगा और उसकी सारी सम्पत्ति छीन कर राज्यमें मिला ली जायगी । इसी प्रकारकी अनक निर्दयताकी घोषणाएं बहुतसे व्युत्पन्न राजाओंने तेरहवीं शताब्दीमें उन सभीके प्रतिकूल निकाली जिन लोगोंपर अल्बिगण अथवा वाल्डोपन्थी होनेका अभियोग लगाया जा सकता था, राजा तथा धर्माध्यक्ष दोनोंने स्थिर किया कि ये साधु लोग दोनोंके कुशलके लिए भयावह हैं और उन्हे इन अपराधोंके कारण जीते जी जला देना चाहिये ।

आजकलके लोगोंको जो कि सहनशील युगमें वर्तमान हैं उस समयके नास्तिकताके सर्वव्यापार तथा हृदय स्थित रुद्रताको समझना

कठिन हो जाता है जिसका प्रचार केवल बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दी हीं में ही नहीं, किन्तु अठारहवी शताब्दीमें भी था। इस बातपर अधिक जोर नहीं दिया जा सकता कि नास्तिकता उस धर्मसंस्थाका विद्रोह थी जिसकी स्थिति की आवश्कताको विद्वान् तथा मूर्ख लोग भी केवल मुक्ति के लिये ही नही, किन्तु सभ्यता तथा शान्तिके लिए भी आवश्यक समझते थे। पादरियों तथा पोपके दुराचारोंकी समालोचना खुल्लमखुल्ला होती थी परन्तु इसको भी कोई नास्तिकता नहीं कहता था। यह पूरा विश्वास था कि पोप और अधिकाश पादरी दुराचारी थे तो भी गिरजेकी स्थिति तथा मन्तव्योंकी सत्यतामें किसीको भी सन्देह नहीं होता था। जैसे आधुनिक समयमें हमलोग किसी राज्यकर्मचारीको मूर्ख या धूर्त कह सकते हैं, परन्तु इससे राजाके प्रतिकूल होनेके अभियोग नहीं वन सकते, वैसे ही नास्तिक लोग मध्य युगमे अराजकता के विस्तारक थे। क्योंकि वे गिरजेके अधिकारी वर्गोंकी केवल निन्दा ही नहीं किया करते थे, किन्तु स्वयं गिरजेको व्यर्थ तथा हानिकारक वतलाते थे। उनका प्रयत्न लोगोंका गिरजेसे सम्बन्ध छुड़ाने तथा उसकी आज्ञा और नियमोंके भंग करानेका था। इन कारणोंसे राजा और धर्माध्यक्ष दोनों ही इनके ऐसे प्रतिकूल खड़े हो गये, मानो वे जनता और शान्तिके शत्रु हैं। इसके अतिरिक्त नास्तिकता छूतसे बढ़नेवाले रोगके समान थी। इसकी वृद्धि इतनी अधिक और गुप्तरूपसे हो रही थी कि इसके रोकनेके लिए कठिनसे कठिन उपचारका प्रयोग न्यायानुकूल ज्ञात होता था।

नास्तिकताके दवानेके कई उपाय थे, उनमेसे पहिला पादरियोंके चाल चलनका सुधार और प्रधान संस्थाके दोषोंका दूर करना था, क्योंकि उस समयके लेखोंसे ज्ञात होता है कि इन्हीं कारणोंसे लोग असन्तुष्ट थे और नास्तिकता फैलाते थे। तृतीय इन्नोसेन्टने प्रधान संस्थाओंकी उन्नतिके लिए संवत् १२७२ (सन् १२१५ ई०) में रोममें एक सभा की, परन्तु वह प्रयत्न फलीभूत न हुआ। उसके उत्तराधिकारियोंका कथन है कि इससे और भी हानि हुई।

दूसरा उपाय द्रोहियोंके प्रतिकूल युद्धयात्रा कर उन्हे तलवारसे दबानेका था। इससे काफी सफलता प्राप्त हो सकती थी यदि एक ही नगरमें बहुतसे नास्तिक एकत्र मिल जाते। दक्षिण फ्रांसमें विशेष कर टोलोस नगरमें अल्बिगण तथा वाल्डोपान्थी दोनोंके अनेक अनुयायी थे। तेरहवीं शताब्दीके आरम्भमे इस प्रान्तके लोग गिरजेकी बड़ी घृणा करते तथा नास्तिकताकी शिक्षाकी बड़ी प्रशंसा करते थे।

संवत् १२६५ (सन् १२०८.) मे तृतीय इन्नोसेन्टने इस हरे भरे देशपर भी धर्मयुद्ध यात्राका आदेश किया। समिन्डे मान्टफोर्टके नेतृत्वमे एक सेना उत्तर फ्रांससे इस निर्दिष्ट देशको रवाना हुई और अत्यन्त भयानक तथा रुधिरस्रावी युद्धके पश्चात् नास्तिकताको घोर नृशंसता-पूर्ण हत्याके बलसे दमन किया। इसका यह परिणाम हुआ कि सभ्यताकी वृद्धि रुक गयी और फ्रांसके सबसे उन्नत प्रदेशकी सम्पतिका नाश हो गया।

नास्तिकताको रोकनेके लिए तीसरा उपाय यह किया गया कि पोपके अधिपतित्वमें न्यायालय स्थापित किये गये जिनका कार्य नास्तिकताके गुप्त अभियोगोंका अन्वेषण कर अपराधियोंको दण्डित करना था। इससे अधिक सफलता प्राप्त हुई। विज्ञोंके इन न्यायालयोंने अपना सम्पूर्ण समय नास्तिकोंके अन्वेषण करने और उनके अभियोग निर्णय करनेमें ही लगा दिया था। और येही धर्मविचारालय बने, जिन्होंने शनै. शनै. अल्बिवासियोके प्रति क्रूरदण्डका ढाचा पकड़ा। विचारालय स्थापनके दोसौ वर्ष पश्चात् स्पेनमें ये भी बहुत बदनाम हो गये। यहांपर इनकी दशाका वर्णन करना असंगत है। इन लोगोंने इस आशासे कि नास्तिक लोग या तो अपने अपराधको स्वीकार करेंगे या दूसरे अपराधियोंका नाम बतलावेंगे, अभियोगोंके निर्णय करनेमें अन्याय करना प्रारम्भ किया। उनको बहुत दिनोंतक कारागारमें रखकर या शारीरिक वेदना-देकर बहुत

अधिक कष्ट दिया जाता था। इन्हीं कारणोंसे विचारालयका नाम भी कलंकित हो गया था।

जिन उपचारोंसे ये लोग काम लेते थे उनके सम्बन्धमें कुछ न कहकर यह कहना असंगत न होगा कि ये न्यायाधीश अधिकांश धार्मिक तथा न्यायशील होते थे और उनके विचार भी सत्रहवीं शताब्दीके डाकनियोंके अभियोगके निर्णय करनेवाले न्यायाधीशोंके समान ही होते थे। इन विचारालयोंके विधान भी उसी समयके अन्य सरकारी न्यायालयोंके विधानोंसे अधिक कठोर और क्रूर न थे।

यदि किसीपर नास्तिक होनेका सन्देह किया जाता और वह नास्तिक न होनेका प्रमाण देता तो उसपर ध्यान नहीं दिया जाता था क्योंकि यह समझा जाता था कि आजकलके अपराधियोंकी तरह ये लोग भी अपने अपराधको स्वीकार नहीं करेंगे। अतः प्रत्येक मनुष्यके धर्मका ज्ञान उसके बाह्य कार्योंसे कर लिया जाता था। इसका परिणाम यह होता था कि कभी कभी कई मनुष्य केवल नास्तिकोंसे बातचीत करने, या किसी कारणवश संस्थाका यथार्थ सत्कार न करने तथा अपने पड़ोसियोंके विद्वेषके कारण भी अपराधी प्रमाणित किये जाते थे। वास्तवमें यह विचारालयों और उनके संविधानोंका बड़ा भयानक रूप था। ये लोग किंवदन्तीपर भी ध्यान देते थे, जो लोग अपने विचारों और मुख्य संस्थाके मन्तव्योंमें किसी प्रकारका मतभेद हृदयसे स्वीकार नहीं करते थे वे उन लोगोंके साथ भी अति निष्ठुर वर्ताव करते थे।

यदि किसीपर सन्देह हुआ और वह अपना अपराध स्वीकार कर नास्तिकताको छोड़ देता था तो उसे क्षमा कर दी जाती थी और वह पुनः संस्थामें सम्मिलित कर लिया जाता था, परन्तु साथ ही साथ उसे आजन्म कारागारका दंड भी दिया जाता था जिससे उसके असंख्य पापोंका नाश हो जावे। जिन अपराधियोंको अपने कृत्यपर पश्चात्ताप नहीं होता था उन्हें राज्याधिकारियोंके हाथ सौंप दिया जाता था. संस्थाको स्वतः

रुधिर बहाना वर्जित था इसलिये वह उन अपराधियोंको राज्यकर्मचारीके हाथ सौंप देती थी वे उनको पुनः विचार किये बिना जीवित जला देते थे।

अब हम यहांपर संक्षेपतः उन व्यवस्थाओंका वर्णन कर देना चाहते हैं जिनका असीसीके महात्मा फ्रांसिसने चर्च संस्थाके प्रतिवादियोंके प्रतिकूल उपयोगमें लानके लिए आविष्कार किया था। उसकी शिक्षा और उसके सौम्य जीवनसे प्रभावित होकर लोगोंका मुख्य संस्थासे जो प्रेम सम्बन्ध बढ़ा, वह न्यायालयोंके घृणित नृशंस उपचारोंसे कहीं अधिक था।

यह पहिले लिखा जा चुका है कि वाल्डोंके अनुयायियोंने सरल जीवन व्यतीत किया और धर्म पुस्तककी शिक्षा दी इससे उन्होंने संसारको उन्नत करनेका बहुत प्रयत्न किया। मुख्य संस्थाके अधिकारी उनसे सहमत नहीं थे, इससे उन लोगोंने इनकी शिक्षाको मिथ्या और अनर्थकारी बतलाया, इन लोगोंको अपना धर्मकार्य प्रकटरूपमें करनेसे रोका। समस्त विवेकी मनुष्य वाल्डोपन्थियोंसे इस बातपर सहमत थे कि पादरियोंके कुकर्म तथा प्रमादके कारण समस्त देशकी अवस्था शोचनीय हो रही थी। महात्मा फ्रांसिस तथा महात्मा डामिनिकने इस कर्मकी पूर्त्ति करनेके लिए एक नये प्रकारके पादरी नियुक्त किये जिनको 'भिक्षुक बन्धु' (फ्रायर) कहते थे। इन्हें वही कार्य समर्पित किया गया था जिसे विशप तथा पुरोहित नहीं कर सके थे अर्थात् आत्मसमर्पणका पवित्र जीवन बिताना, नास्तिकोंके आक्षेप तथा निभर्त्सनासे सच्चे धर्मकी रक्षा करना, नये अध्यात्मिक जीवनका लोगोंमें सञ्चार कराना. और यतियोंकी संस्थाका स्थापन करना। यही मध्य युगका बड़ा विख्यात काम है।

महात्मा फ्रांसिससे बढ़ कर इतिहास भरमें दूसरा ऐसा लोक-प्रिय तथा हृदय-आकर्षक व्यक्ति नहीं हुआ। इन महात्माका जन्म संवत् १८४६ (सन् १८८२ ई०) में मध्य इटलीके असीसी नामके एक छोटेसे ग्राममें हुआ था आप एक धनिक व्यवसायीके पुत्र थे। युवावस्थामें आपने अपनी पैत्रिक सम्पत्तिको फूँक कर जीवनका खूब आनन्द लिया था। आपने उस समय

आशंका होने लगी कि कहीं धीरे धीरे ये चिथड़े पहने हुए स्वेच्छाचारी विलासी तथा धनिक पादरियोंसे भिन्न जीवन बिताकर मुख्य संस्थाकी ही निन्दा न करने लगें। यदि वह इन भिक्षुकोंकी निन्दा करता तो मानो वह स्वयं ईसूमसीहके वचनोंकी अवज्ञा करता, क्योंकि ये वचन स्वयं उन्होंने अपने अनुयायियोंको दिये थे अन्तको उसने मौखिक अनुमोदन देकर उन्हे अपने आन्दोलन और प्रचारको जारी रखनेका अधिकार देना निश्चय किया तब उन्होंने मुण्डन करवा कर रोमन चर्चसे अध्यात्मिक अधिकार लिया।

सात वर्ष बाद जब फ्रांसिसके अनुयायियोंकी संख्या अधिक होगयी तो उन्होंने शिक्षाका कार्य स्थूल रूपसे प्रारम्भ किया। सम्प्रदायने भिक्षुकोंको जर्मनी, फ्रांस, हंगरी स्पेन और सीरियामें भी भेजा। इसके थोड़े ही दिनों पहिलेका एक अंग्रेज ऐतिहासिकका वर्णन बड़ा मनोरंजक है जिसमें उसने लिखा है कि " जिस समयमें नग्नपाद जीर्णवस्त्रवेष्टित रस्सी कमरमें बांधे ईसाई धर्मके प्रचारक हमारे देशमें आने लगे उस समय इन्हें देखकर आश्चर्य होता था। इन्हें भविष्यकी किंचितमात्र भी चिन्ता न थी और उन लोगोंको विश्वास था कि उनके स्वर्गीय पिता उनकी आवश्यकताओंको भली भांति जानते हैं। "

इन दीर्घ-प्रचार-यात्राओंमें भिक्षुकोंको बहुत कुछ यातनाएं भी झेलनी पड़ीं। इन लोगोंने पोपसे प्रार्थना की कि आप हमलोगोंको एक पत्र लिखकर दे दीजिये कि 'ये लोग बड़े विश्वासी कैथोलिक हैं इसलिए प्रत्येक मनुष्यको इनके साथ सद्व्यवहार करना चाहिये।' यहींसे इन्हें पोपकी ओरसे अनगिनत अधिकारोंका मिलना आरम्भ होता है। ए छोटेसे सम्प्रदायने इतनी बड़ी तथा शक्तिशाली संस्था बनते देख महात्मा फ्रांसिसको कुछ दुःख हुआ। उनको मालूम होने लगा कि शीघ्र ही वे लोग इस पवित्र जीवनको त्यागकर तृष्णालु तथा धनी हो जायंगे। इस बातको समझ कर उसने यों लिखा 'जीसस क्राइस्टके मतलबसे भिक्षुक जीवनका मैं

भी अनुसरण करना चाहता हूं इसालिए आपलोगोंसे प्रार्थना करता हूं कि अपना जीवन इसी भिक्षुक दशामें व्यतीत कीजिये और इस बातका ध्यान राखिये कि किसी भी मनुष्यके उपदेशसे चाहे वह कैसा ही प्रभावशाली क्यो न हो इस सम्प्रदायसे विचलित न होइये"।

फ्रांसिसको धर्म पुस्तककी कुछ एक चुन हुए वाक्योंके स्थानपर नये तथा अधिक सारवान् आदेशोंकी व्यवस्थाका निर्माण करना पड़ा । संवत् १२८५ (सन् १२२८ ई०) मे तृतीय होनोरियसने वहुत उलट पलटके पश्चात् अपने तथा और अध्यक्षोंके आशयके अनुसार फ्रांसिसके नियमोंका अनुमोदन किया । उक्त नियमोंमें लिखा हुआ था कि ' सम्प्रदायके लोग अपने लिए कुछ भी न लें, वे किसी नियमित स्थानमें न रहें, परन्तु यात्रियोंके समान परिव्राजक बनकर निर्धन तथा विनीत दशामें रहकर परमेश्वरकी सेवा करे और भिक्षासे अपना जीवन निर्वाह करें। इस बातसे उन्हे लज्जित भी न होना चाहिये, क्योंकि हमलोगोंके लिए ईश्वरने स्वयं अपनेको दरिद्र बनाया था"। यदि धर्म कार्यसे अवकाश मिले और यदि काम करनेके योग्य हो तो इनको काम भी करना चाहिये । इनकी तथा सम्प्रदायके अन्य सदस्योंकी आवश्यकता-पर इस परिश्रमका इन्हें वेतन दिया जाय परन्तु स्वय भिक्षुकको रुपया पैसा न ग्रहण करना चाहिये । यदि कोई बिना जूतोंके नहीं रह सकता तो जूता धारण कर ले, अपने वस्त्रोंका जीर्णोद्धार उन्हें टाटके चिथड़ोंसे करना चाहिये उन्हें अपने अध्यक्षोंकी अध्यक्षतामें रहना चाहिये, उन्हें विवाह नहीं करना चाहिये और सम्प्रदायसे सम्बन्ध भी नहीं तोड़ना चाहिये ।

संवत् १२८३ (सन् १२२६) में महात्मा फ्रांसिसका स्वर्गवास हुआ । इस समय तक इस सम्प्रदायके सहस्रो सदस्य हो चुके थे। इनमेंसे कुछ तो अभी तक भी भिक्षुकका जीवन बिताना चाहते थे, पर दूसरोंका यह मत था कि लोग जो द्रव्य इस संस्थाको देना चाहते हैं उससे बहुत लाभ हो

सकता है, उनका कहना था कि सम्प्रदायके अधीन सुन्दर सुन्दर गिरजे तथा सुखकर मंदिरोंके हो जानेपर भी यदि कोई सदस्य चाहें तो वह निर्धन रह सकते हैं। उनके जिस नेताने अपना जीवन निर्जन कुटीमें विताया उसका मृत शरीर (शव) गाड़नेके लिए असिसीमें एक उन्नत गिरजा बनवाया गया और दान एकत्र करनेके लिए गिरजेमें एक दानपात्र (chest) रक्खा गया।

भिक्षुक सम्प्रदायके द्वितीय संस्थापक महात्मा डामिनिक फ्रांसिसके समान साधारण मनुष्य नहीं थे। वे स्वत. गिरजेके अध्यक्ष थे और उन्होंने स्पेनके धर्म्म-विद्यापीठमे दशवर्ष तक विद्याभ्यास किया था। संवत् १२६५ (सन् १२०८ ई०)मे वे अपने विशपके साथ अल्बिगणोंके प्रतिकूल धर्मयुद्ध यात्राके प्रारम्भमें दक्षिणी फ्रांसमें गये थे। वहांपर नास्तिकता का प्रचार देखकर उन्हें बड़ा दु.ख हुआ। टोलोंस नगरमे जिसके घरपर वे अतिथि हुए थे वह स्वत. अल्बिगण था। डामिनिक रात भर उसके मत परिवर्त्तनका प्रयत्न करते रहे। उन्होंने वहींपर नास्तिकताके दूर करनेका संकल्प किया। उनके विषयमें हम लोग जो कुछ जानते हैं उससे विदित होता है कि वे दृढ़ प्रतिज्ञ थे। ईसाई धर्ममें उनको प्रचण्ड उत्साह था, साथ ही वे बड़े मिलनसार थे।

संवत् १२७१ (सन् १२१४) मे यूरोपके भिन्न भिन्न प्रदेशोंसे कुछ लोगोंने म० डोमिनिकसे सहानुभूति दिखलायी और उसके सहगामी हुए। उन लोगोंने तृतीय इन्नोसेन्टसे उस नयी संस्थाको प्रमाणपत्र देनेको कहा। पोप पुनः आगा पीछा करने लगा, परन्तु उसने स्वप्नमे देखा कि "लैटरनका रोमन गिरजा जीर्ण होकर गिरने वाला ही था कि म० डोमिनिकने अपने हाथ से उसे संभाल लिया।" इससे उसने यह परिणाम निकाला कि किसी न किसी समय यह संस्था पोपको बड़ी सहायता देगी और यही समझकर उसने अपनी स्वीकृति देदी। जिस प्रकार फ्रांसिसके अनुयायी प्रथम धर्म यात्रा कर रहे थे उसी समय म० डोमिनिकने अपने सोलह अनुयायियोंको

देश विदेशमें धर्म प्रचार करनेके लिए भेजा। संवत् १२७८ (सन् १२२६ ई०) में डोमिनिकका सम्प्रदाय पूर्णरूपसे स्थित हुआ और पश्चिमीय यूरोपमें उनके प्राय साठ मन्दिर स्थापित हो गये। गर्मीकी धूप तथा जाड़ेके शीत में वे लोग सारे यूरोपमें पैदल घूमा करते थे। वे धनकी भिक्षा न लेकर जो कुछ भी अच्छा या बुरा भोजन मिल जाता था उसे सहर्ष ग्रहण करते थे। वे भूखको धीरताके साथ सहने करते थे और भविष्यकी तनिक भी चिन्ता न करते थे। पापी आत्माका उद्धार करने, उसको बुराइयोंको दूर करने और उनके शून्य हृदयमें स्वर्गीय ज्योति प्राप्ति करानेके लिए वे लोग अपना सारा समय व्यतीत कर देते थे। इस प्रकार प्राचीन समयमें स० फ्रांसिस और डोमिनिकके अनुयायी (फ्रान्सिस्कन्स और डोमिनिकन्स) भी लोगोंके प्रेम तथा आदरके पात्र बने।

बेनिडिक्टाइन * महन्तोंके समान इन भिक्षुकोंको केवल अपने प्रत्येक मठके अधिपति ही के आधिपत्यमें नहीं, किन्तु सम्पूर्ण सम्प्रदायके मुखिया-की अध्यक्षतामें भी रहना पड़ता था। साधारण सैनिकके समान उनका अधिपति सम्प्रदायकी आवश्यकतानुसार उन्हे हर यात्रापर भेज सकता था। ये लोग अपनेको स्वयं ईसामसीहके सैनिक समझते थे। प्राचीन-कालके महन्तोंके समान अपने जीवनको एकान्त समाधिमें न बिताकर उन्हे सर्व साधारणसे मिलना पड़ता था। अपनी तथा अपने साथियोंकी रक्षाके निमित्त दुःख उठानेके लिए उन्हें सदा तत्पर रहना होता था।

डोमिनिकन लोग "शिक्षक" के नामसे प्रसिद्ध थे, धर्मशास्त्रकी उन्हे प्रबल शिक्षा दी जाती थी। जिससे वे नास्तिकोंके आक्षेपोंका भलीभांति प्रत्युत्तर दे सकें। पोपने अभियोगनिर्णयका कार्य इन्हें दे दिया था। आरम्भ ही में इनका प्रभाव विद्यापीठोंपर पड़ने लगा। तेरहवीं शताब्दीके मुख्य धर्मशिक्षक अल्बर्टस मेगनस और टामस आक्विनस

* इस पन्थके प्रवर्त्तक सन्त बेनिडिक्ट थे जिसका संक्षेपतः वर्णन पश्चिमी यूरोपके पृ० २९,३० पर किया गया है।

आशंका होने लगी कि कहीं धीरे धीरे ये चिथड़े पहने हुए स्वेच्छाचारी विलासी तथा धनिक पादरियोंसे भिन्न जीवन विताकर मुख्य संस्थाको ही निन्दा न करने लगें। यदि वह इन भिक्षुकोंकी निन्दा करता तो मानो वह स्वयं ईसुमसीहके वचनोंकी अवज्ञा करता, क्योंकि ये वचन स्वयं उन्होंने अपने अनुयायियोंको दिये थे अन्तको उसने मौखिक अनुमोदन देकर उन्हें अपने आन्दोलन और प्रचारको जारी रखनेका अधिकार देना निश्चय किया तब उन्होंने मुण्डन करवा कर रोमन चर्चसे आध्यात्मिक अधिकार लिया।

सात वर्ष बाद जब फ्रांसिसके अनुयायियोंकी संख्या अधिक होगयी तो उन्होंने शिक्षाका कार्य स्थूल रूपसे प्रारम्भ किया। सम्प्रदायने भिक्षुकोंको जर्मनी, फ्रांस, हंगरी स्पेन और सीरियामें भी भेजा। इसके थोड़े ही दिनों पहिलेका एक अंग्रेज ऐतिहासिकका वर्णन बड़ा मनोरंजक है जिसमें उसने लिखा है कि "जिस समयमें नग्नपाद जीर्णवस्त्रवेष्टित रस्सी कमरमें बांधे ईसाई धर्मके प्रचारक हमारे देशमें आने लगे उस समय इन्हें देखकर आश्चर्य होता था। इन्हें भविष्यकी किंचित्मात्र भी चिन्ता न थी और उन लोगोंको विश्वास था कि उनके स्वर्गीय पिता उनकी आवश्यकताओंको भली भांति जानते हैं।"

इन दीर्घ-प्रचार-यात्राओंमें भिक्षुकोंको बहुत कुछ यातनाएँ भी झेलनी पड़ीं। इन लोगोंने पोपसे प्रार्थना की कि आप हमलोगोंको एक पत्र लिखकर दे दीजिये कि 'ये लोग बड़े विश्वासी कैथोलिक हैं इसलिए प्रत्येक मनुष्यको इनके साथ सद्व्यवहार करना चाहिये।' यहींसे इन्हें पोप-की ओरसे अगणित अधिकारोंका मिलना आरम्भ होता है। एक छोटेसे सम्प्रदायमें इतनी बड़ी तथा शक्तिशाली संस्था बनते देख महात्मा फ्रांसिसको कुछ दुःख हुआ। उनको मालूम होने लगा कि शीघ्र ही वे लोग इस पवित्र जीवनको त्यागकर तृष्णालु तथा धनी हो जायंगे। इस बातको समझ कर उसने यों लिखा 'जीसस क्राइस्टके मतसे भिक्षुक जीवनका मैं

फ्रा-बार्टोलोमियोके समान कलाकुशल, और रोजर बेकनके समान वैज्ञानिक, लोग इसके सदस्य थे । तेरहवीं शताब्दीके व्यापृत संसारमें भिक्षुकोंके अतिरिक्त भलाई करनेवाली कोई भी संस्था ऐसी जागृत अवस्थामे न थी तथापि उनकी स्वतन्त्रता--जिससे कि वे लोग गिरजेके आधिपत्यसे भी मुक्त थे-तथा लोगोंके दिये हुए प्रचुर धनने जो प्रलोभन उन्हें दिये, उन्हें वे अधिक समय तक न दबा सके । संवत् १३१४ (१२५७ ई०) मे बोनावेन्टरा फ्रान्सिस्कन सम्प्रदायका मुख्याधिकारी बनाया गया । उसने लिखा है कि इन भ्रष्ट सम्प्रदायवालोंके लोभ, आलस्य तथा बुराइयोंके कारण लोग इनसे घृणा करने लग गये थे और ये लोग भिक्षा मांगनेमें इतने आग्रही हो गये थे कि यात्रियोंको ये ठगोंसे भी अधिक दुख देने लग गये थे। इतने पर भी सब लोग इन्हे पुरोहितोंसे अधिक चाहते थे ! अब गावों तथा नगरोंमें आध्यात्मिक जीवनकी शिक्षा पादरी तथा पुरोहित नहीं देते थे परन्तु ये ही लोग देते थे ।

अध्याय १७

ग्राम तथा नगर निवासी।
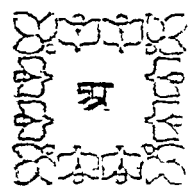
अर्थशास्त्रके नवीन विज्ञानके प्रादुर्भावके साथ ही साथ इतिहास के लेखक अब इस बातपर अधिक ध्यान देते हैं कि मध्य युगमें किसानों, व्यवसायियों तथा कारीगरोंकी क्या अवस्था थी। कितना ही विवरण क्यों न किया जाय, पर जंगलियोंके आक्रमणके बादकी पांच या छः शताब्दियोंमें लोगोंकी दशाका कुछ भी पता नहीं चलता। मध्य युगके इतिहासलेखकको इस बातका कभी भी ध्यान न था कि वह अपने पार्श्ववर्ती परिचित वस्तुओंका—जैसे उस समयके किसानोंकी क्या स्थिति थी और वे खेत इत्यादि किस प्रकार जोतते थे इत्यादि बातोंका—वर्णन भी करता। उसने केवल विख्यात जनों तथा हृदयग्राही वृत्तान्तोंका ही वर्णन किया है। इतना होनेपर भी मध्ययुगके ग्रामों तथा नगरोंके सम्बन्धमें इतना तो अवश्य विदित है जिससे सामान्य इतिहासका कार्य भलीभांति चल सकता है।

बारहवीं शताब्दी के पूर्व पश्चिमीय यूरोपके नगरोंमें जीवन ही न था। जर्मनीके आक्रमणसे रोमके नगर दिनपर दिन क्षीण हुए चले जाते थे। आक्रमणके बादके संग्राममें उनकी अवनति शीघ्र होने लगी और कितने नगर तो लापता हो गये। इतिहास बतलाता है कि जो कुछ नगर बचे खुचे रह गये या जो उनके स्थानपर नये उत्पन्न हुए वे सब मध्ययुगके आरम्भकालमें प्रसिद्ध न थे। इससे विदित होता है कि थियोडोरिकसे लेकर फ्रेडरिक बारबरोसाके समयतक इंग्लैण्ड जर्मनी तथा उत्तरीय और मध्य फ्रांसके अधिकतर निवासी ग्रामोंमें या सामन्तों, एबटों तथा बिशपोंके राज्योंमें रहते थे।

मध्य युगके इन ग्रामोंका नाम "विला या मेनर" था। ये पूर्व वर्णित रोमके "विला" के समान होते थे। राज्यका एक भाग तो राजा अपने

लिए रखता था और शेष किसानोंको दे दिया जाता था और उसे वे लोग आपसमें लम्बे लम्बे खंडोंमें बांट लेते थे। इनमेंसे प्रत्येक किसानके कई खंड गांवके चारों ओर फैले होते थे। ये लोग प्रायः कृषक दास (serfs) कहलाते थे। क्षेत्र स्वयं इनके न होते थे, किन्तु जबतक अपने स्वामीका कार्य किया करते थे और उसे कर देते रहते थे, वे भूमिसे निकाले नहीं जा सकते थे। उन लोगोका सम्बन्ध भूमिसे रहता था और यदि वह भूमि एक स्वामीसे दूसरेके हाथ गयी तो वे भी उसीकी अध्यक्षतामें हो जाते थे। इन कृषक दासोंको अपने स्वामीकी भी भूमि जोत बो कर अन्न एकत्र करना पड़ता था। अपने स्वामीकी आज्ञाके विना वे अपना विवाह भी नहीं कर सकते थे, उनकी स्त्रियां और बच्चे स्वामीके गृहका आवश्यक कार्य किया करते थे। महिलागृहोंमें इन कृषकोंकी लड़किया कातने, बुनने, सीने, भोजन बनाने, तथा मद्य निकालनेका काम करती थीं। कपड़े, भोजन तथा मद्य सर्व साधारणके कार्यमें आते थे।

ग्रामोंके प्राचीन वर्णनसे हमें उस समयके कृषकदासोंकी अवस्थाका पूरा पूरा पता चलता है। उसमें भली भांति दिखलाया गया है कि प्रत्येक जातिको अपने स्वामीके लिए क्या क्या करना पड़ता था। उदाहरणार्थ पिटरबरोके बिशपके पास एक ग्राम था जिसमें हफ़मिलर आदि सत्रह कृषक रहते थे। इन लोगोंको बड़ा दिन, ईस्टर तथा ह्विटसन्टाइड के सप्ताहोंको छोड़कर शेष प्रत्येक सप्ताहमें तीन दिन उसके लिए काम करना पड़ता था। प्रत्येक कृषकको वर्ष भरमें एक बुशल गेहूं, अट्ठारह पूल मनवा, तीन मुर्गियां तथा एक मुर्गा और ईस्टरमें पांच अण्डे देने पड़ते थे। यदि वह अपने पशुओंको साढ़े सात रुपयेसे अधिक मूल्यपर बेंचता था तो उसे अपने एवटको चार आना आय-कर देना पड़ता था। इसी प्रकार पांच अन्य कृषकोंने भी हफकी भूमिकी अपेक्षा आधीभूमि आधे ठेकेपर उससे आधे कार्यके लिए ली थी।

कभी कभी किसी ग्राममें ऐसे भी लोग रहते थे जो कृषक नहीं थे।

लय था उसमें ग्रामपतिके एक प्रतिनिधिकी अध्यक्षतामें ग्रामके सम्पूर्ण कार्योंका निर्णय होता था। ग्रामके सभी लोग इस न्यायालयमें उपस्थित रहते थे। यहांपर आपसके झगड़े तय किये जाते थे। ग्रामकी प्रथाका उल्लंघन करनेवालोंको अर्थदंड दिया जाता था और ग्रामकी भूमिका बंटवारा होता था।

साधारणतः दास कोई अच्छे कृषक नहीं होते थे। वे क्षेत्रोंको ठीक प्रकारसे नहीं जोतते थे और इसी कारण उनकी फसलें भी थोड़ी और घटिया दर्जेकी होती थीं। जबतक भूमिकी अधिकता थी तब तक दासता भी रही। बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीमें पश्चिमी यूरोपकी जनसंख्या शनैः शनैः बढ़ने लगी। अब कृषकोंकी दासता धीरे धीरे लुप्त होने लगी, क्योंकि जनसंख्या अब इतनी अधिक हो गयी कि क्षेत्रोंको बेपरवाहीसे जोत कर उत्पन्न किया हुआ अन्न लोगोंकी बढ़ी हुई जनसंख्याके लिए पर्याप्त नहीं होता था।

बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीमें व्यवसायकी जागृति हुई। धीरे धीरे रुपयेका प्रयोग बढ़ने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामका जीवन भी विध्वंस होने लगा। अब एक वस्तुके लिए दूसरी वस्तुके बदलनेकी प्रथा उठने लगी। शार्लमेन के समयकी सब पुरानी प्रथाएँ समयके परिवर्त्तनके साथ साथ लोगोंको अप्रिय मालूम होने लगीं। कृषक दास लोग समीपके बाजारमें अपनी वस्तुएं बेंचकर रुपया जोड़ने लगे। अपने स्वामीको श्रम रूपसे कर देनेके बदले रुपया देना उन्हें सुविधाजनक विदित होने लगा, क्योंकि ऐसी दशामें वे लोग अपना सम्पूर्ण परिश्रम अपने क्षेत्रोंमें लगाते थे। ग्रामपतियोंने भी अपनी प्रजासे श्रम तथा सेवाके स्थानमें रुपया लेना ही अधिक अच्छा समझा। वे वेतनपर नौकर रख अपने क्षेत्रका कार्य कराते थे और व्यवसायकी वृद्धिके कारण विलासिताके नये नये अभिलषित पदार्थ भी रुपयेसे ही खरीद लेते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामपतियोंका कृषकोंके ऊपरसे अधिकार हट गया

और अब कृषक दास तथा स्वतन्त्ररूपसे नियत कर देने वाले व्यक्तिमें कोई भेद नहीं ज्ञात होता था। कृषक दास नगरोंमें भागकर स्वतन्त्र हो सकते थे। यदि एक साल एकदिन बाद तक उसका पता नहीं लगता था या उसका स्वामी उसपर कोई अधिकार नहीं दिखाता था तो वह स्वतन्त्र ही हो जाता था।

बारहवीं शताब्दीके प्रारम्भसे ही पश्चिमी यूरोपमें कृषक दासता धीरे धीरे लुप्त होती जारही थी। तेरहवीं शताब्दीके अन्तमें फ्रांस देशमें और इसके कुछ समय बाद इंग्लैण्डमें भी कृषकदासताका सम्पूर्ण लोप होगया यद्यपि फ्रान्स में कुछ न कुछ कृषक दासताकी प्रथा क्रांतिके समयतक संवत १८४६ (सन् १७८६ ई०) पर्य्यंत भी रही। इस सम्बन्धमें जर्मनी कहीं पीछे था। वहां लूथरके समयमें कृषक लोग अपने दौर्भाग्यका घोर विरोध कर रहे थे और प्रशियामें तो उन्नीसवीं शताब्दीमें कृषक दासोंको स्वतन्त्रता प्राप्त हो गयी थी।

पश्चिमीय यूरोपमें धीरे धीरे नगरोंका प्रादुर्भाव हुआ। इसका वृत्तान्त इतिहासके छात्रोंके लिए बड़ा मनोरंजक है। यूनान तथा रोमकी सभ्यताओंके केन्द्र नगर ही थे और आधुनिक समयमें संसारका उच्च-जीवन, उन्नत व्यवसाय तथा सभ्यता नगरों ही में है। यदि नगरोंका लोप हो जाय तो हम लोगोंके ग्रामके जीवनमें भी परिवर्त्तन हो जायगा। और हम लोग पुनः शार्लमेनके समयकी प्राथमिक दशामें आजायंगे।

मध्ययुगमें नगरोंके दृश्य हम लोगोंको प्रायः संवत् १०५७ से (सन् १००० ई०) से दीखने लगते हैं, ये नगर अधिकांशमें सामन्तोंका ग्राम भूमियों या मन्दिरों तथा दुर्गोंके समीप उत्पन्न हुए थे। फ्रांसमें नगरको (विला) कहते हैं और इस शब्दकी उत्पत्ति (विल) शब्दसे हुई है जिसका अर्थ ग्राम है। नगरोंके स्थापनके लिए उसकी रक्षाके निमित्त उसके चारों ओर कोटकी आवश्यकता थी जिससे अवसर पड़नेपर समीप-के ग्रामवासी लोग उसमें बाह्य आक्रमणोंसे अपनी रक्षा कर सकें। मध्य-युगके ग्रामोंकी बनावट देखकर यही परिणाम निकलता है। यदि इनसे

प्राचीन रोमके विलासी नगरोंकी तुलना की जाय तो ये बड़े घने आबाद ज्ञात होते थे। बाजारके अतिरिक्त इनमें कोई भी खुले हुए मैदान नहीं थे। रोमके नगरोंके समान न तो इनमें अखाड़े ही थे और न स्नानागार ही बने थे। मार्ग बड़े संकीर्ण थे और उन्हींपर बड़ी बड़ी हवेलियां बनीं थी जिनके ऊपरके भाग आपसमें आलिंगन करते थे। चौड़ी तथा मोटी भीतसे घिरे रहनेके कारण आधुनिक नगरोंके समान उनका सुगमतासे विस्तृत होना असम्भव था।

ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दीमें इटलीके नगरोंके अतिरिक्त सभी नगर अत्यन्त छोटे छोटे थे और जिन ग्रामोंके आधारपर उनकी वृद्धि हुई थी उनके समान ही उनका भी बाहरसे बहुत ही थोड़ा व्यवसाय था। वहांके निवासियोंकी आवश्यकताकी सभी वस्तुएं वहीं बनायी जाती थीं। केवल अनाज सब्जी आदि ही उनके लिए पड़ोसके ग्रामोंसे आती थी। जबतक कि ये नगर सामन्तों तथा मठोंके अधीन थे तबतक इनकी वृद्धिकी भी बहुत आशा न थी। नगरके लोग यद्यपि कोटोंसे रक्षित स्थानोंमें रहते थे और खेती न करके केवल व्यवसायमें लगे रहते थे तथापि वे लोग कृषक दासोंसे किसी प्रकार अच्छे न थे। उन्हें तबतक सिंचाईका कर देना ही पड़ता था मानों तबतक भी वे लोग कृषक सम्प्रदायके भाग ही थे। नगरके जीवनको स्वतन्त्र करनेके लिए इन दो बातोंकी बड़ी आवश्यकता थी, एक तो नागरिकोंको उनके स्वामीसे स्वतन्त्र कर दिया जाता और दूसरे, उन नगरोंके लिए उचित राज्यपद्धति बनायी जाती।

ज्यों ज्यों व्यवसायकी वृद्धि होने लगी त्यों त्यों स्वतन्त्रताकी चाह बढ़ने लगी। जैसे जैसे पूर्व तथा दक्षिणसे नई तथा मनोहर वस्तुएं आने लगीं वैसे वैसे ही नागरिकोंको वस्तुओंके बनानेकी अभिलाषा होने लगी, जिन्हें वे पार्श्ववर्त्ती हाटोंमें बेंच कर दूरसे आयी हुई वस्तुओंके लिए द्रव्य एकत्र कर सकें। ज्योंही इन लोगोंने शिल्प निर्माण करना आरम्भ

किया त्योंहीं उन्हें ज्ञात हुआ कि हम लोग दासताके बंधनोंसे बन्धे हुए हैं। जो कर हम लोगोंसे बलात्कारेण लिया जाता है और जो बन्धन हम लोगोंके ऊपर है उससे हम लोगोंकी उन्नति नहीं हो सकती। इसका परिणाम यह हुआ कि बारहवीं शताब्दीमें नागरिक लोगोंने अपने स्वामियोंके प्रतिकूल विद्रोह खड़ा किया और उनसे ऐसा (चार्टर) शासनपत्र मांगने लगे जिसमे नागरिक तथा स्वामी दोनोंके अधिकारोंका पूर्णतया विवरण किया गया हो।

स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिए फ्रासक नागरिकोंने लोक संघ या कम्यून स्थापित किया। सामन्तोंकी दृष्टिमें यह कम्यून शब्द नवीन था। वे उसे घृणासे देखते थे। उनकी सम्मति मे यह शब्द उस संघका दूसरा नाम है जिसे कृषक दासोंने ग्रामपतियोंके प्रतिकूल स्थापित किया था। ये सामन्त कभी कभी इन विद्रोहियोंका बड़ी क्रूरताके साथ दमन करते थे। कुछ सामन्त यह भी सोचते थे कि यदि नागरिकोंको अन्य असंगत करोंसे मुक्त कर दिया जाय और स्वयं शासनका अधिकार भी दे दिया जाय तो इनकी दशा सुधर जायगी इंग्लैण्डमें नागरिकोंने धीरे धीरे सामन्तासे सम्पूर्ण भूमि क्रय कर ली और इस प्रकारसे अपना सत्व भी पा लिया।

नगरका शासन–पत्र नागरिक व्यवसायियो तथा सामन्तोंमें एक लिखित नियमपत्र था। शासन-पत्र नगरकी उत्पत्ति तथा रचनाका प्रमाणपत्र था। इस शासन-पत्रमें सामन्तोंने व्यवसायी संस्थाको स्वीकार करनेका वचन दिया था। सामन्तोके अधिकार कम किये गये थे क्योंकि उन्हें नागरिकोंको अपने दर्बारोंमें बुलाकर जुर्माना भरनेका अधिकार नहीं था। और जो जो कर वे लोग नागरिकोंने लेना चाहते थे उनका भी उसमें उल्लेख कर दिया गया था। पहलेके शेष कर या श्रम या तो छोड़ दिये गये या उनका द्रव्यमें चुका देना स्वीकार किया गया था।

इंग्लैण्डके राजा द्वितीय हेनरीने वेलिंगफोर्डके निवासियोंको वचन दिया

था कि "हमारे इंग्लैएड, नारमंडी, अक्विटेन, तथा आन्जू राज्योमेंसे जो व्यापारी व्यवसाययात्राके लिए जल या स्थल, जंगलो या नगरोद्वारा जहां कही जावेगे उन्हें मार्ग कर नही देना पड़ेगा और यदि इस विषयमे उन्हे कोई दुःख देगा तो उसे १५०) रु० (१० पौ०) का अर्थदण्ड देना होगा उसने साउथम्पटन नगरमे यह घोषणा करायी थी कि हमारे हम्पटनके निवासी जल या स्थलसे शान्ति न्याय, सुख तथा आदरयोग्य उपायोसे अपनी संस्थाके स्थापन करने और अपनी प्रथाका अनुकरण करनेमे वैसे ही स्वतन्त्र हैं जैसे मेरे पितामह राजा हेनरीके समयमे थे और इस विषयमे उन्हें कोई ज त नही पहुंचा सकेगा।

शासनपत्रोंमे जो उस समयकी प्रथाका विवरण दिया गया था वह हमें सर्वथा प्रारम्भिक ज्ञात होता है। संवत् १२२५ (सन ११६८ ई०) में फ्रांसके सेन्ट ओमर नामके नगरके शासन-पत्रमे ऐसा विधान है कि "जो कोई हत्या करेगा उसे नगरमे कहीं भी आश्रय न मिलेगा। यदि वह भाग कर दंडसे वचना चाहेगा तो उसका मकान गिरा दिया जायगा और उसकी सम्पत्ति जप्त करके राजकोषमें मिला ली जायगी। यदि वह नगरमें पुनः आना चाहेगा तो प्रथम उसे मृतकके सम्वन्धियोंसे सन्धि कर लेनी होगी और उसे १५०) रु० अर्थ दंड देना होगा, जिसमे-से आधा तो राजाके प्रतिनिधि लोग ले लेंगे और आधा नगरसंस्थाको दे दिया जायगा। और यह आय नगरकी रक्षाकी मरम्मतमे व्यय होगी, यदि कोई किसीको मारेगा तो उसे सौ साउस * तथा दूसरेके केश खींचने वालेको चालीस साउस अर्थ दण्ड देना पड़ेगा।"

कितने नगरों में स्वतन्त्रताका चिन्ह एक घंटाघर था। वहांपर रात दिन एक रक्षक रहता था। वह सकटके समयपर इस घंटेको वजा देता था। इसमें एक सभाभवन होता था जिसमे नागरिक लोगोंके संघका अधिवेशन होता था और इसीमे कारागार भी होता था। चौदहवीं

* टि०—फ्रांसीसी सिक्का=$\frac{१}{२०}$ फ्रांक।

शताब्दीमें आश्चर्यजनक समाभवन बनने लग गये थे। ये कैथड्रल त
और गिरजोंके अतिरिक्त प्राचीन सम्प्रदायके यूरोपके व्यवसायी नगर
सबसे अपूर्व प्रासाद हैं जिनको अब भी यात्री आश्चर्यसे देखते हैं।

मध्य युगके नगरोंमें लोग कारीगर तथा व्यवसायी दोनों
होते थे। वे केवल वस्तु निर्माण ही नहीं करते थे किन्तु अपनी दूकान
बनी वस्तुओंका विक्रय भी किया करते थे। व्यवसायियोंके संघोंके अतिरि
जिन्होंने कि नगरको अपने अधिकारकी प्राप्ति तथा रक्षामें सहायता दी
ऐसी अनेकशः नयी नयी संस्थाओंकी वृद्धि भी हुई जिन्हें क्रेफ्टगिल्ड
व्यापारसंघ कहते हैं। पेरिस नगरमें सबसे प्राचीन व्यवस्था मोमबत्ती
बनाने वाले संघकी है जिसकी स्थापना संवत् १११८ (सन १०६१ ई०)
हुई थी। प्रत्येक नगरमें भिन्न भिन्न प्रकारके व्यवसाय किये जाते थे, पर
सब संघोंका एक यही प्रयोजन था कि जो मनुष्य संघमें विधिपूर्व
सम्मिलित नहीं हुआ है वह व्यवसाय करने नहीं पावे।

व्यवसाय सीखनेमें कई वर्ष लगते थे। सीखने वाला किसी निपु
व्यवसायीके घरपर रहता था। वह प्रथम वेतन नहीं पाता था। फिर व
घूम घूम कर व्यवसाय करता था और उस श्रमके लिए वेतन पाता था
उस समय भी वह जनताका कार्य न करके अपने शिक्षकका ही कार्य करत
था। साधारण व्यवसाय तीन वर्षमें आजाता था, पर स्वर्णकार बननेके लि
कमसे कम दश वर्ष तक शागिर्द बनना पड़ता था। प्रत्येक शिक्षकके पा
निश्चित ही शागिर्द रह सकते थे जिसमें कि घूम कर बेचनेवाले अधि
न हो जायँ। प्रत्येक व्यवसायके चलानेके विशेष नियम बना दिये गये थे
प्रत्येक दिवस कार्य करनेका समय भी निश्चित कर दिया गया था
वणिक्-संघने साहस तो कम कर दिया और प्रत्येक व्यवसायमें कारीगर
समान रूपसे बनाये रक्खा। यदि ये संघ स्थापित न किये गये होते तो ये
दीन निःसहाय कारीगर प्राचीन कृषकोंके समान अपने स्वामी सामन्तों
न कभी स्वतंत्र ही हुए होते और न नागरिक स्वतंत्रता ही मिलती।

नगरोंकी उन्नति तथा उनकी वृद्धिका मुख्य कारण पश्चिमी यूरापमे व्यवसाय वृद्धि थी । रोम साम्राज्यके जमानेके मार्गोका नाश हो जानेसे व्यवसाय प्राय: नष्ट हो गया था और जगलियोंके आक्रमणोसे चारो ओर अराजकता छा रही थी । मध्ययुगमे प्राचीन रोमक स्थलपथोंका उद्धार करनेवाला कोई न था । जब स्वतंत्र सामन्त अथवा इधर उधरकी छोटी छोटी जातिया साम्राज्य स्थापनमे लगीं तो मर्सियासे ब्रिटन पर्यन्त सभी मार्ग उजड़ गये थे । व्यवसाय घटने लगा, क्योंकि विलासिताकी जिन वस्तुओंको रोमवाले बाहरके नगरोंसे मँगाते थे अब उनकी आवश्यकता ही न रह गयी । द्रव्यका अभाव था अत विलासिताका नाम भी नहीं था । वहाके बड़े लोग भी अपने एकान्त सादे तथा बड़े प्रासादोंमें साधारण जीवन व्यतीत करते थे ।

इटलीमे व्यवसाय एक दम वन्द नहीं हो गया था । धर्मयुद्ध यात्राके पूर्व ही वेनिस, जिनोआ अमल्फी तथा इटलीके अन्य नगरोंमें भूमध्यमें समुद्रसे व्यवसायकी अधिक उन्नति हुई थी । जैसा कि पहले लिख आये हैं वहाके वणिकोंने जरुजेलम विजयके लिए आवश्यक वस्तुएं निराश्रय धर्म-युद्ध यात्रियोंको दी थी । तीर्थयात्राके उत्साहसे इटलीके वणिक् पूर्वमें गये । वहा वे यात्रियोंको उतार कर पूर्व देशकी उत्पन्न वस्तुऍ अपने यहा ले आते थे । इन लोगोंने पूर्वमे व्यवसायस्थान बनाया और संघोद्वारा उन स्थानोंसे स्पष्ट व्यवसाय स्थापित किया और वे अरब. फारस. भारत तथा मसालोंके द्वीपोंसे पदार्थ मंगाने लगे । दक्षिणी फ्रासके नगर और वार्सेलोनाका भी उत्तरीय अफ्रीकाके मुसल्मानोंके साथ व्यवसाय था ।

दक्षिण प्रदेशकी उन्नति देखकर समस्त यूरोप जाग उठा । नये नये वाणिज्यसे व्यवसायमें बड़ा आन्दोलन होने लगा । जबतक ग्रामकी प्रथा प्रचलित रही और प्रत्येक मनुष्य अपने सहवासी वणिकोंकी आवश्यकताकी वस्तुऍ उत्पन्न करता रहा तब तक बाहर भेजने और बिला

सिताकी वस्तुओंके विनिमयके वास्ते कुछ भी नहीं था। परन्तु जब वाहरके व्यापारी प्रलोभन प्रद वस्तु लेकर आने लगे तो लोग अपनी आवश्यकतासे अधिक वस्तुएं भी उत्पन्न करने लगे और उन बची हुई वस्तुओंसे बाहरकी वस्तुएं विनिमयसे लेने लगे। धीरे धीरे ये शिल्पी और वणिक् लोग ही अपनी आवश्यकताके साथ दूसरोंकी आवश्यकता पूर्ण करनेके लिए भी वस्तु उत्पन्न करने लगे।

वारहवीं शताब्दीकी आख्यायिकाओंसे प्रगट होता है कि पूर्वकी विलासिताकी वस्तुओंसे पश्चिमीय यूरोपके लोग अति प्रसन्न होते थे। अमूल्य मलमल, पूर्वीय दरिया, अमूल्य रत्न, सुगन्धित और नशीली वस्तुएं, रेशमी वस्त्र, चीनके वर्त्तन, भारतके मसाले, और इजिप्टकी रूई यूरोपमें जाती थी। वेनिस नगरके लोग रेशमका व्यवसाय पूर्व देशोंसे अपने यहां लाये उन्होंने और उन शीशोंका बनाना भी प्रारम्भ किया जो अबतक भी वेनिसमें मिल सकते हैं। धीरे धीरे पश्चिमने रेशम, मखमल, रंगीन रूई तथा मलमल आदि बनाना सीखा। पूर्वीय देशोंके समान रंगोंका काम भी खोला गया। धीरे धीरे पेरिसमें सार्सेनोंके समान सुन्दर पर्दे बनानेका कार्य आरंभ किया गया। जिन विलासिताकी वस्तुओंको वे लोग उत्पन्न नहीं कर सकते थे उनके बदले फ्लेमिशनगरोंसे ऊनी कपड़े और इटलीसे शराब आना भी आरंभ हुआ। इतना होनेपर भी पश्चिमीय प्रदेशोंको कुछ न कुछ धन अवश्य पूर्व देशोंको देना पड़ता था, क्योंकि पूर्व प्रदेशोंसे मंगाया माल उनकी प्रेषित वस्तुओंसे कहीं अधिक होता था।

उत्तरीय प्रदेशोंका व्यवसाय प्रधानतः वेनिस नगरसे ही था। वे लोग अपनी वस्तुओंको ब्रेनर होकर राइन प्रान्तमें लाते थे या समुद्रद्वारा फ्लैन्डर्समें भेज देते थे। तेरहवीं शताब्दीमें व्यवसायके लिए बड़े बड़े केन्द्रस्थान बनाये गये। उनमेंसे कितने ही इस समय तक भी व्यवसायमें संसारके सब नगरोंसे बढ़े चढ़े हैं। हम्बर्ग, ल्यूवेक, तथा ब्रेमेन नगरोंका बाल्टिक तट तथा इंगलैन्डसे व्यवसाय होता रहा। दक्षिण जर्मनीके

आस्वर्ग तथा न्युरेम्वर्ग नगर इटली तथा उत्तरीय प्रदेशोंके व्यवसायके पथमें होनेसे विख्यात हो गये। ब्रगेज् तथा घेन्टकी उत्पादक वस्तु प्रायः सर्वत्र ही जाती थी, मेडिटरेनियनके बड़े बड़े नेताओंकी तुलनामें इंग्लैण्डका व्यवसाय अत्यन्त अल्प था।

मध्ययुगके व्यवसायोंके मार्गमें उपस्थित होनेवाली वाधाओंके वारेमें कुछ शब्द कहना यहांपर भी आवश्यक ज्ञात होता है। व्यवसायकी उन्नतिके लिए जिस स्वतंत्रताकी वहुत आवश्यकता समझी जाती है वह नहींके बराबर थी। मध्ययुगमें आजकलके थोक वेचनेवाले व्यापारी घृणाकी दृष्टिसे देखे जाते थे। जो लोग थोक माल खरीदकर उसे अधिक मूल्यपर बेचना चाहते थे उनका "फोरस्टालर्स" के घृणास्पद नामसे पुकारा जाता था। सब लोगोंको विश्वास था कि प्रत्येक वस्तुका मूल्य ठीक उस वस्तुके बनानेमें जो पदार्थ लगे हैं उनके मूल्य तथा कारीगरके मेहनतानेके बराबर होता था। चाहे विक्रीकी कितनी ही आवश्यकता क्यों न हो किसी वस्तुको उसके ठीक ठीक मूल्यसे अधिकपर वेचना लूट (अत्याचार) समझा जाता था। प्रत्येक व्यवसायीकी एक दूकान होती थी जिसमें वह अपनी बनायी वस्तु वेचनेके लिए रखता था। जो लोग नगरोंके समीप रहते थे वे लोग नगरके बाजारोंमें ही बेच सकते थे, परन्तु वे सीधा ग्राहकोंके हाथ वेच सकते थे। वे लोग एक ही ग्राहकके हाथ अपना संपूर्ण माल नहीं वेच सकते थे क्योंकि इस बातका भय था कि सम्पूर्ण वस्तु अपने हाथमें लेकर कहीं वह मूल्य न बढ़ा दे।

जिस प्रकार लोग थोक व्यापारके प्रतिकूल थे उसी प्रकार वे सरल व्याजवृद्धि (महाजनी)के भी प्रतिकूल थे। लोगोंका मत था कि रुपया जड़ तथा अनुत्पादक पदार्थ है। इसे उधार देकर कुछ भी मात्रासे अधिक लेनेका किसीको अधिकार नहीं है। सूद लेना बुरी वस्तु है, क्योंकि दूसरोंके क्लेशसे लाभ उठानेवाले ही इसका लाभ उठाते हैं। मुख्य धर्म-संस्थाने किंचितमात्र साधारण सूद लेना भी वल पूर्वक रोक रखा था। वहांके

अध्यक्षोंने यहांतक घोषित कर दिया था कि कठोर-हृदय सूदखोर ईस धर्मके अनुसार विधि पूर्वक न तो गाड़े जायंगे और न उनकी अन्ति इच्छाओंको प्रमाणित ही किया जायगा। इस कारण रुपयोंका लेनदे जो व्यवसायके लिए अत्यन्त आवश्यक था केवल मगरोंके हाथमें था, उनसे ईसाई आचारकी प्रत्याशा न थी।

इन अभागोंने यूरोपकी उन्नतिमें बड़ा भारी भाग लिया था किन् ईसाइयोंने इनके साथ घोर दुर्व्यवहार किया, क्योंकि ईसामसी की हत्याका घोर दोषारोपण इन्हींपर किया जाता था। तेरहवीं शताब्दीके पूर्व यहूदियोंपर अत्याचार करनेका कार्य नहीं प्रारम्भ हुआ था। अब ये लोग एक विचित्र प्रकारकी टोपी और चिन्ह धारण करनेके लिए वाध्य किये गये जिससे ये लोग सहजमें ही पहचाने जाते थे और लोग इनको निरादरकी दृष्टिसे देखते थे। बाद उन्हें नगरके किसी खास प्रदेशमें जिन्हें ज्यूअरी कहते थे बन्द होकर रहना पड़ता था। उन लोगों को संघोंसे वहिष्कृत कर दिया गया था इससे ये स्वभावत लेनदेनका व्यवहार करने लगे जिसको कोई भी इसाई नहीं करता था। इस व्यवसायसे भी इनकी अधिक अप्रतिष्ठा होती थी। कभी कभी राजा लोग इन्हें कहीं अधिक दरपर सूद लेनेकी आज्ञा भी दे देते थे। राजकोशके शेष होनेपर सम्पूर्ण लाभ ले लेनेकी व्यवस्थापर फिलिप अगस्टसने उन्हें सैकड़ेपर ४६ रुपया सूद लेनेकी आज्ञा भी दे दी थी। इंग्लैण्डमें साधारण दर प्रत्येक सप्ताह पन्द्रह रुपयेपर एक आना थी।

तेरहवीं शताब्दीमें इटलीके लम्बार्ड नगरवालोंने भी महाजनीका कार्य प्रारंभ किया। इन लोगोंने हुण्डीका प्रयोग अधिक फैलाया। ये लोग ऋणके लिए सूद तो नहीं लेते थे परन्तु यदि ऋण लौटानेमें विलम्ब होता था तो वह लेते थे। जो लोग सूद लेनेकी निन्दा करते थे उन्हें भी यह उचित मालूम होने लगा। महाजन लोग व्यवसायमें रुपया लगा देते थे और जबतक सूद नहीं दिया जाता था तबतकके हुए लाभका कोई भाग लेते

थे। इस प्रकार सूद लेनेके प्रतिकूल विचारोको घटाया गया और व्यवसायके लिए बड़ी बड़ी कम्पनिया—विशेषतः इटलीमें—स्थापित हुई।

मध्ययुगके वणिकोंके मार्गमे दूसरी बाधा यह थी कि जिन राजाओंके राज्यमे उन्हें जाना पड़ता था वहां उन्हें असंख्य कर देने होते थे। उन्हें केवल पथ, पुल तथा पहाड़ी नदियो ही के लिए कर नही देना पड़ता था, किन्तु उन बेरन लोगोको भी कर देना पड़ता था जिनका प्रासाद भाग्यवश किसी नदीके ऊपर स्थित होता था, क्योंकि वे लोग मार्ग बन्द कर देते थे। यद्यपि उनकी टेक्सकी मात्रा अधिक न थी परन्तु इनके वसूल किये जानेके ढंग तथा बार बारके विलम्बसे वणिकोंको अत्यन्त कष्ट होता था और वाणिज्यमे बड़ी क्षति पहुंचती थी। जैसे कोई मछली लिये नगरको जा रहा है और मार्गमे मठ पड़ गया, मठाधिपतिने आज्ञा दी कि मछलीवाला ठहर जाय और महन्तोंको तीन आनेके मूल्यकी मछलिया मठमें दे, चाहे शेष मछलियोंकी कुछ भी भली बुरी दशा क्यो न हो जाय। इसी प्रकार मद्यसे लदी एक नाव सानसे पेरिस जा रही है। धर्मसंस्थाके अधिपतिके भृत्यको उनसे तीन बोतल कर लेना है। अब वह भी समस्त पात्रोमेंसे स्वाद लेकर जिसमे सबसे अच्छी होगी उसीमेंसे लेगा। बाजारमें तो अनेक प्रकारके कर देने पड़ते थे जैसे उनको बनियेकी तराजू तथा मापनेका गज़ रखनेका कर भी चुकाना होता था। इसके अतिरिक्त उस समय यूरोपमें अनेक प्रकारके सिक्के प्रचलित थे उनसे भी देशको बहुत क्षति पहुंचती थी।

सामुद्रिक व्यवसायमे भी बड़े बड़े सकट थे वहापर केवल झंझावात, तरग, चट्टान, तथा उथले स्थानो ही से भय न था। उत्तरीय समुद्रमें बहुत लुटेरे थे। वे लोग तो कभी कभी उच्चश्रेणीके पुरुषोके नेतृत्वमे बड़ी उत्तम रीतिसे संगठित होते थे और वे लोग इस कार्यको कोई अपमानजनक नहीं समझते थे। इसके अतिरिक्त "स्टैन्ड लाज़" या 'समुद्रतट-विधान" बने थे जिनके अनुसार टूटे हुए या भटके हुए जहाज भी उस

मनुष्यकी सम्पत्ति हो जाते थे जिसके किनारेपर वे टूट या भटक जाते थे। उस समय मार्गप्रदर्शक ज्योतिःस्तम्भ बहुत कम थे और तटमार्ग आपत्ति जनक थे और साथ साथ एक आपत्ति यह भी थी कि लुटेरे लोग झूठे संकेतोंसे जहाजोंको किनारे बुलाकर उनको लूट लेते थे।

इन सब विपत्तियोंको दूर करनेके लिए नगरनिवासी लोग परस्पर मिलकर रक्षाके निमित्त संघ स्थापित करने लगे। इनमेंसे सबसे प्रसिद्ध जर्मनीके नगरका हन्स संघ था। ल्यूबेक नगर इसका सर्वदा नेता रहा था परन्तु उन सत्तर नगरोंके नामोंमें जो किसी न किसी समय संघमें सम्मलित किये गये थे कोलोन, ब्रेमेन, ब्रन्जविक, डैन्टजिक तथा और प्रसिद्ध नगरोंके नाम ही विशेष हैं। इस संघने लण्डन नगरका वह भाग खरीदा और अपने प्रबन्धमें रखा जो अब लंडन पुलके समीप 'स्टीलयार्ड' के नामसे प्रसिद्ध है। उन्होंने विस्बी बर्गन तथा रूसके नवगरड नगरका प्रदेश भी खरीदा। संधियोंके बलपर अथवा अपने प्रभावसे ही उन्होंने बाल्टिक तथा उत्तरीय समुद्रका सम्पूर्ण व्यवसाय अपने अधिकारमें लेना चाहा।

संघने डाकुओंपर आक्रमण करना प्रारम्भ किया और वाणिज्यके संकटोंको बहुत कुछ घटा दिया। अब इनके पोत अलग अलग बेड़ोंमें रवाना होकर किसी सेनाकी रक्षामें रहकर यात्रा करते थे किसी समय डेन्मार्कके राजाने इनके कार्यमें कुछ हस्तक्षेप किया। इसपर इन लोगोंने उनसे युद्ध कर विजय पायी। दूसरी बार इंगलैण्डसे भी लड़ाई कर उसे दमन किया। अमरीकाकी खोजसे दो शताब्दी पूर्व इस संघने पश्चिमी यूरोपके व्यवसायकी वृद्धिमें प्रधान कार्य किया, परन्तु पूर्वीय तथा पश्चिमीय इन्डीजको पहुंचनेके नये मार्गके आविष्कारके पूर्व ही से वह संघ क्षीण होने लगा था।

यहांपर यह लिख देना उचित जान पड़ता है कि तेरहवीं, चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दियोंमें देश देशमें परस्पर व्यवसाय नहीं होता था।

पर एक नगर दूसरे नगरसे व्यवसाय करता था जैसे वेनिस, ल्यूबेक, घेन्ट तथा ब्रेजेज और कोलोन। कोई वणिक् स्वतंत्र व्यवसाय नहीं कर सकता था। वह किसी वणिक्संघका सदस्य रहता था और अपने नगर तथा सम्मेलनसे स्थिर रक्षा प्राप्त करता था। यदि किसी नगरका कोई वणिक् ऋण नहीं दे सका तो उसी नगरका दूसरा वणिक् भी पकड़ा जा सकता था। जिस समयके इतिहासका हम वर्णन कर रहे हैं उस समयमे लण्डन नगरका वणिक् आधुनिक कोलोन तथा आन्टवर्प नगरके निवासियोंके समान ब्रिस्टल नगरमें भी विदेशी ही समझा जाता था। धीरे धीरे समस्त नगर एकत्र होकर देश बन गये।

धनकी बढ़तीके कारण संघसमाजमें इनकी प्रतिष्ठा भी बढने लगी। समृद्ध होनेसे ये लोग शिक्षामें पादरियो तथा विलासभवनोंमें नागरिकों-की समानता करने लगे। उनका ध्यान शिक्षाकी ओर भी आकर्षित होने लगा। चौदहवीं शताब्दीमे कई किताबे केवल उन्हींकी रुचि तथा आवश्यकताके अनुसार बनायी गयी थी। वे नगरके राजाओंके सभामे प्रतिनिधिरूपसे निमन्त्रित किये जाते थे, क्योंकि ये लोग भी राज्य-प्रबन्ध-के लिए द्रव्य देते थे इससे इनका मत भी राज्य-प्रबंधमे लेना पड़ता था। प्राचीन पादरियों तथा सामन्तोंके संघके साथ साथ नागरिकसघकी वृद्धि तेरहवीं शताब्दीमें घोर आकस्मिक परिवर्त्तनका उदाहरण है।

वालोंकी तरह उच्चारण नहीं कर सकते थे, इसके अतिरिक्त जिस भाषा का प्रयोग लेखमें होता था उसका प्रयोग बोल चालमें नहीं होता था। जैसे भाषा में लोग घोड़ेको "केवालस" कहते थे परन्तु लेखमें लिखने वाले उसे "इकुअस" लिखते थे। फ्रांस, इटली और स्पेनके अश्ववाचक शब्द (कवेलो, कवेलो, शेवाल) "केवालस" शब्दसे ही उत्पन्न है।

समयके साथ साथ बोलचाल तथा लेखकी भाषाओंमें बड़ा अन्तर होता गया। लैटिन भाषा कठिन है, क्योंकि इसके नाना प्रकारके रूप तथा व्याकरणके नियम जटिल हैं, अतः इस भाषामें व्युत्पत्ति प्राप्त करनेके लिए बड़े परिश्रमकी आवश्यकता है। रोमके निवासी तथा आगन्तुक असभ्य लोग कारक प्रक्रियाके शुद्ध प्रयोगपर विशेष ध्यान नहीं देते थे, क्योंकि वे अपने अपने भावोंको प्रगट करनेके लिए सरलसे सरल विधि चुन लेते थे। जर्मनीके आक्रमणके पश्चात् कई शताब्दियों तक भी बोलचालकी भाषामें कुछ भी नहीं लिखा गया था। जब तक कि अनपढ लोग लिखी लैटिन भाषा किताबोंको सुनकर समझ सकते थे, तबतक तो साधारण बोलचालकी भाषामें कुछ लिखनेकी आवश्यकता ही नहीं थी, परन्तु शार्लमेनके राजत्व कालमें भाषित तथा लिखित भाषामें अधिक अन्तर पड़ गया और उसने आज्ञा दी थी कि आजसे उपदेश बोल चालकी भाषामें दिया जाय क्योंकि साधारण लोग लिखित लैटिन भाषाको नहीं समझ सकते है। फ्रांसमें जो भाषा उत्पन्न हो रही थी उसका प्रथम उदाहरण हमें स्ट्रास्बर्गकी शपथोंमें मिलता है।

जर्मनीकी भाषाओंमें साम्राज्यके विभ्रंश होनेके पूर्व कमसे कम एक भाषा लेखमें आ चुकी थी। एड्रियानोपलके युद्धके पूर्व ही जब गाथ देश-के निवासी डेन्यूब नदीके उत्तरीय तट पर रहते थे, एक पश्चिमीय बिशप उल्फिलास उनके धर्म परिवर्तनका प्रयत्न कर रहा था। अपना कार्य सम्पादन करनेके लिए उसने बाइबिलके अधिकांश भागका "गाथिक भाषामें" उल्था किया था। इस अनुवादमें उच्चारण स्पष्ट करनेके लिए उसने

ग्रीक अक्षरोंका प्रयोग किया था। गाथिक भाषाके अतिरिक्त शार्लमेन-के समयके पूर्व किसी जर्मन भाषामें भी लिखे जानेका कोई प्रमाण नहीं मिलता है। जर्मनोंके पास मौखिक साहित्य था और वही कई शताब्दी तक परम्परासे चलता रहा और पीछे लिखा गया। शार्लमेनने अनेक कविताओंका संग्रह कराया था, इनमें क्रांतिके समयके जर्मन वीरोंकी वीरता-ओंका वर्णन था। पवित्रात्मा लूईको जर्मनोंकी देवपूजा देखकर बड़ा खेद हुआ। उसने जर्मनीकी प्राचीन तथा अमूल्य प्रतिमाओंको नष्ट करवा दिया। जर्मनीका प्राचीन इतिहास—जिसे "निवेलंगूसका गीत कहते थे—अधिक काल तक मुखाग्र ही सुना जाता था। अन्तको बारहवीं शताब्दीके अन्तमें यह भी लेख बद्ध हो गया।

प्राचीनकालकी इंग्लिश भाषाको "एंग्लो सैक्सन" भाषा कहते हैं। आधुनिक अंग्रेजी भाषामें तथा इसमें इतना अंतर है कि अंग्रेजोंको भी यह विदेशी भाषाके समान जान पड़ती है। शार्लमेनके एक शताब्दी पूर्व वीडीके समयमें सीडमन नामी एक अंग्रेजी कवि था। बेओं वुल्फ नामी एंग्लो सैक्सनके इतिहासका हस्त लेख सुरक्षित रखा है जिसे देखने-से प्रतीत होता है कि यह कदाचित् आठवीं शताब्दीमें लिखा गया है। पहिले कहा जा चुका है कि राजा अल्फ्रैडको मातृभाषासे बड़ा प्रेम था। नार्मन विजयके बाद भी प्राचीन भाषा प्रचलित था। एंग्लोसैक्सन इतिहासका अन्त संवत् १२११ (सन् ११५४ ई०) में होता है। यह एंग्लोसैक्सन भाषामें लिखा गया था। भाषाके क्रमिक परिवर्त्तन भिन्न २ कालोंके ग्रन्थोंके पढ़नेसे स्पष्ट प्रतीत हो जाते हैं और इसी प्रकार शनैः शनैः कालके साथ साथ भाषामें भी परिवर्त्तन होता गया और वर्त्तमान प्रचलित भाषाका रूप बन गया। संवत् १३१३ (सन् १२५६ ई०) में तृतीय हेनरीके राज-त्वकालमें अंगरेजी भाषामें प्रथम लेख्यपत्र लिखा गया था। बिना विशेष अध्ययन किये यह लेख्यपत्र समझमें आता ही नहीं है। परन्तु इसके पुत्रके समयमें एक कविता लिखी गयी थी जो पर्याप्त रूपसे समझमें आ जाती है।

वह समय शीघ्र आनेवाला था, जब अंग्रेजी भाषाका प्रवेश इंग्लिश चैनलके पार भी होती और वहांकी भाषाओंपर इसका अधिक प्रभाव भी पड़ता। मध्ययुगमें पश्चिमी यूरोपकी सबसे प्रसिद्ध भाषा फ्रेंच थी। बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीमें फ्रांसकी बोलचालकी भाषामें अनेक साहित्यकी किताबें निकलीं। इटली स्पेन, जर्मनी, तथा आग्ल देशमें लिखी किताबोंपर इनका अधिक प्रभाव पड़ा।

रोमन साम्राज्यकी बोलचालकी लैटिन भाषासे फ्रान्समें शनैः शनैः दो भाषाओंकी उत्पत्ति हुई। यदि चित्र पर ला रोशेलसे लेकर अटलान्टिक के पूर्व आल्प तक तथा लियानके नीचे रोनके पार तक एक लकीर खेंच दी जाय तो दोनों भाषाओंकी सीमाका पूरा पता चल जाय। उत्तरमें फ्रेंच तथा दक्षिणमें पिरनीज और आल्पके मध्य "प्रोवेंकल" भाषा बोली जाती थी

संवत् १९५७ (सन् १९०० ई०) के पूर्व प्राचीन फ्रेंच भाषाके बहुत कम लेख सुरक्षित हैं। पश्चिमीय फ्रेंचवाले बहुत पहले ही से अपने मुख्य वीर क्लाविस, डेगोबर्ट, और चार्लस मार्टेल आदिके वीर कर्मोंका यशोगान किया करते थे। पश्चात् शार्लमेनने इन विख्यात शासकोंको दबा दिया और मध्य युगका कविता तथा अद्भुत कथाओंका वह भी एक अप्रतिद्वन्द्वी नायक हो गया। लोगोंका मत है कि उसने १२५ वर्ष तक राज्य किया था और उसके तथा उसके वीरोंके नामपर संसारमें बलके अद्भुत तथा विस्मयावह कार्य प्रसिद्ध थे। ऐसा समझा जाता था कि उसने जेरुसलममें क्रूसेडकी भी यात्रा की थी। ऐसे वृत्तान्तोंको जिनमें इतिहासकी अपेक्षा और घटनाकी कथा अधिक थी, संग्रह करके बड़ा इतिहास बनाया गया। यही फ्रेंच लोगोंका प्रथम लिखित साहित्य था इन कविताओं तथा साहसिक कार्योंकी कथाओंसे फ्रेंच लोगोंमें बड़ा साहस और उत्साह उत्पन्न हुआ। फ्रांसके लोग समझने लगे कि हमारा देश स्वयं परमेश्वरसे सुरक्षित है।

यह जानकर विशेष आश्चर्य नहीं होता कि बादको इसमेंसे सबसे अच्छी कविताओंने फ्रासके जातीय इतिहासका रूप धारण किया। "रोलैंडका गीत" प्रथम धर्म युद्धकी यात्राके पूर्व लिखा गया था। इस कवितामे शार्लमेनके स्पेनसे भाग जानेका वर्णन है, जिसमे कि उसके सेनापति रोलैन्डने पिरनीजके संकीर्ण मार्गोंमेसे गुजरते हुए एक साहसिक प्रतियुद्धमे अपनी जान दे दी।

बारहवीं शताब्दीके मध्य भागमे राजा आर्थर और उसके 'राउन्ड-टेबुल" के वीरोंके आश्चर्य कार्य प्रारम्भ होते हैं। शताब्दियो पर्यन्त पश्चिमीय यूरोपमें इनकी बड़ी प्रशंसा थी और अब भी लोग इन्हें एक दम भूल नही गये हैं। आर्थरकी ऐतिहासिक स्थितिका पता नहीं चलता परन्तु विदित होता है कि वह सैक्सनों लोगोंके इग्लैण्डपर अधिकार करनेके पश्चात् ही ब्रिटेनका राजा हुआ। दूसरी लम्बी कवितामे सिकन्दर, सीजर तथा अन्य प्राचीन वीरोंका वर्णन किया गया है। ऐतिहासिक घटनाओंपर ध्यान देकर मध्ययुगके लोग इंग्लैण्डके विजय करने वाले वीरोंका समय मध्य युग ही बतलाते हैं। इससे विदित होता है कि मध्ययुग वालोंको प्राचीन तथा आधुनिकके भेदका ज्ञान ही नहीं था। ये सब कथाएं मनोरंजक तथा विस्मयजनक वीरोचित कार्योंसे भरी पड़ी हैं। इनसे सच्चे वीरोंकी राजभक्ति तथा वीरताका परिचय मिलता है और यह भी विदित होता है कि उनको मनुष्य जीवनसे घृणा तथा निस्पृहता थी।

'रोलैन्ड' के समान बहुत सी ऐतिहासिक कविताओं तथा आख्यायिकाओंके अतिरिक्त भी अनेक छोटी छोटी कवितायें थीं, जिनमें अधिकांशमें जीवनकी प्रत्येक दिनचर्याका विशेषकर विनोदोंका वर्णन था। इसके अतिरिक्त बहुत सी कहानियां थीं जिनमें सबसे प्रसिद्ध रेनार्ड और लोमड़ीकी कहानी थी। इन कहानियोंमें उस समयकी प्रथाओंपर, विशेषकर पुरोहितोंकी चरित्रहीनतापर बहुत आक्षेप किये गये थे

दक्षिणी फ्रांसके इतिहासमें हमें भाट लोगोंके सुललित कवित्त मि
मिलते हैं जो प्रोवेंकल भाषाके कीर्तिस्थापक हैं। इससे विदित होत
है कि उस समयके सामन्त बड़े प्रसन्न चित्त तथा सभ्य थे। उस सम
यके शासक केवल कवियोंकी रक्षा तथा उनको उत्साहित ही नहीं कर
थे, परन्तु वे स्वयं भी कवि होना चाहते थे और भाटोंकी पदवी लेन
चाहते थे। यह गीत बांसुरीके साथ गाये जाते थे। जो लोग कविता
करना नहीं जानते थे और केवल गाते ही थे वे जोंगलियर (गायक) के
नामसे प्रसिद्ध थे। ये भाट तथा जोंगलियर केवल फ्रांस ही में नहीं
परन्तु दक्षिणी फ्रांसकी वेष-भूषा धारण किये हुए भाषाके कवित्त गाते
हुए उत्तरी जर्मनी तथा दक्षिणी इटलीकी राजसभाओंमें भी भ्रमण
किया करते थे। संवत् ११५७ (सन् ११०० ई०) के पूर्व प्रोवेंकल
भाषाके हमको बहुत कम उदाहरण मिलते हैं, परन्तु उस समयके बाद
दो शताब्दी पर्यन्त अगणित कवितायें लिखी गयीं और कित
ही भाटोंका यश सर्वत्र देशोंमें फैल चुका था। टोलेस तथा अ
नगरोंके अध्यक्ष अल्बिगन लोगोंके साथ सरल व्यवहार करते थे। इस
कारण इनके आस पास बहुत नास्तिक लोग भी एकत्र हो गये थे।
अल्बिगेन्सियनकी भयानक धर्मयुद्ध-यात्रासे इनपर घोर आपत्ति तथा
मृत्युकी व्याधि उपस्थित हुई। परन्तु साहित्य समालोचकोंका कथन है कि
इस दुर्घटनाके पूर्व ही इस प्रान्तिक कविताओंकी अवनति हो रही थी।

इतिहासके पाठकोंको दक्षिणकी कविता तथा उत्तरीय फ्रांसके इति
हासोंसे विशेष मनोरंजन इस कारण भी होता है कि इनमें सामन्तोंके
समयके जीवन तथा आकांक्षाओंका मार्मिक वर्णन मिलता है। इन सबको
एक शब्दमें हम 'वीरता' कह सकते हैं। यहांपर इसका संक्षेपत दर्शन
करना आवश्यक है, क्योंकि यदि यह साहित्य रूपसे उपयोगी न होता तो इसे
—ननेकी हमें विशेष आवश्यकता भी न होती। मध्ययुगकी समस्त श्र
काव्योंमें वीर नायक ही मुख्य भाग लेते हैं, अधिकतर भाट लोग

इन्हीं वीरोंमेंसे थे, इससे इनके छन्दोंमें भी इनका ही विशेष वृत्तान्त पाया जाता है।

"वीरो" (नाइट) की कोई संस्था किसी विशेष समयमें स्थापित नहीं हुई थी। मनसबदारीसे इसका घना सम्बन्ध था और उसीके समान कोई इसका प्रवर्तक नहीं था, परन्तु उस समयकी आवश्यकताएं और लौकिक अभिलाषाएं पूरी करनेके लिए पश्चिमी यूरोपमें इसका अचानक प्रादुर्भाव हुआ। टेसिटससे विदित होता है कि उसके समयमें भी जब किसी नवयुवक वीरको सैनिकके शस्त्रोंसे सुशोभित किया जाता था तो जर्मनीवाले उस समयको अत्यन्त महत्त्वका समझते थे। "यह इस बातका चिन्ह था कि नवयुवक अब पूर्ण युवा हो गया है और यही उसका प्रथम सत्कार था।" कदाचित् वीर (जवान, Knight) शब्दमें भी इसी भावकी मुख्यता है। जब कोई उच्चवंशका युवक घोड़ेकी सवारी करने, तलवार चलाने, मृगया करने तथा अपने बाजको सम्हालनेमें निपुण हो जाता था तब उसे 'नाइट' पदसे विभूषित किया जाता था यह पद उसे कोई वृद्ध नाइट ही प्रदान करता था और इस संस्थामें धर्म संस्था भी भाग लेती थी।

नाइट (वीर क्षत्रिय) ईसाई सैनिक होता था. वीर क्षत्री (नाइट) तथा इसके सहयोगी लोग मिलकर अपनी रक्षा तथा उन्नतिके हेतु एक योग्य व्यवस्थामें संघटित प्रतीत होते थे। इस संस्थाके नियम और उद्देश्य अपने वर्गके लिए उच्च तथा गौरवप्रद थे। यह कोई ऐसी संस्था न थी जिसमें सदस्य अपने प्रधानके अधीन कुछ लिखित नियमों-में बद्ध हों। यह एक आदर्श कल्पित संस्था थी। इस सस्थामें रहनेके लिए राजा महाराजा भी सदा उत्सुक रहते थे। जैसे जन्मसे ड्यूक वा काउंट हो सकता था उसी प्रकार जन्मसे कोई नाइट नहीं हो सकता था। ऊपर कथित विशेष दीक्षासे ही नाइट बन सकते थे। कोई सरदार होकर भी "नाइट" की संस्थाका सदस्य नहीं हो सकता था किन्तु

एक साधारण मनुष्य शूर वीरताका परिचय देकर नाइट संस्थाका सदस्य हो सकता था।

'नाइट' को ईसाई होना आवश्यक था। उसको सर्वदा धर्म संस्थाकी रक्षा करनी पड़ती थी। उसे सब निर्बलताएं और भय त्यागकर सदा दुर्बलोंकी सहायता तथा दीनोंकी रक्षा करनी पड़ती थी उसको नास्तिकोंसे लगातार निर्दय होकर युद्ध करना पड़ता था। रणसे भागना उसके धर्मके विरुद्ध था, उसे मनसबदारीका सम्पूर्ण कार्य्य संपादन करना पड़ता था, अपने स्वामीका सर्वदा सच्चा विश्वासपात्र रहना पड़ता था झूठ बोलना और अपनी प्रतिज्ञा भंग करना उसके लिए पाप था, उसको उदार और दुखिया दरिद्रोंका सहायक होना पड़ता था, अपनी पत्नीके प्रति सच्चा तथा उसके मानकी रक्षाके लिए सर्वस्व त्याग कर भी तत्पर रहना पड़ता था। उसे अन्याय और क्रूरताके प्रतिकूल सर्वदा न्यायका रक्षक बनना पड़ता था। संक्षेपतः क्षात्रियता या नाइट बनना ईसाई धर्मसे विहित सैनिकका पेशा था।*

राजा आर्थर तथा उसके सहायकों ('गाउड टेबुल' के) बहादुरोंकी कथामें वास्तविक नाइटका उत्तम नमूना दिखाया गया है। लेन्सलाटके देहान्त होनेपर एक शोकातुर वीरने उसे सम्बोधित कर यों कहा था "तुम खड्ग चर्मधरोंसे सबसे अधिक विनीत, स्नेहियोंके प्रति सच्चे मित्र और उत्तम अश्वारोही, कामियोंमें भी स्त्रियोंके प्रति सच्चे कामदेव अभिचारियोंमें भी दयार्द्र, हृदय सब वीर नाइट यशस्वियोंमें सबसे श्रेष्ठ, सबसे अधिक नम्र सभ्यतम, अनुरक्त, कान्त और असिधारी शत्रुओंके प्रति सबसे अधिक कठोर और अमत्य विक्रम थे।"

जर्मनोंने भी "वीरता" के साहित्यकी वृद्धि की थी। तेरहवीं शताब्दीके जर्मन कवियोंका नाम मिनासिंगर (शृंगारगायक) है। भाटोंके

* भारतवर्षके क्षत्रियोंके समान ही ये नाइट थे इनके सब वही धर्म थे जो मनु आदिकने क्षत्रियोंके लिए नियत किये हैं। (स)

समान वे लोग भी प्रेमानुरागवर्धक गीत गाया करते थे। जर्मन गायकोंमें सबसे प्रसिद्ध 'वाल्टर वानडेर वोगेल वाइड' था। उसके गीतोंमें मातृभूमि जर्मनीकी अनुपम शोभाका वर्णन तथा वीर रस पूर्ण देश भक्ति कूट कूट कर भरी है। वोलफ्रमवान इशनबाकने अपनी पर्सिफूलकी आख्यायिकामें एक नाइटके संकटपूर्ण साहस कार्योंका वर्णन किया है। वह वीर उस "पवित्र कलश" (होली ग्रेल) की खोजमें निकला था, जिसमें ईसा मसीहका रक्त भरा था। लोगोंको इस बातका विश्वास था कि जो लोग मन वाणी तथा कर्मसे शुद्ध हैं वे ही उसका दर्शन कर सकते हैं। पार्सिफूल पीड़ित दुखिया मनुष्यसे सहानुभूति नहीं करता था। इसके लिए उसने बहुत दिन तक पश्चात्ताप किया अन्तको उसे ज्ञात हुआ कि केवल दया नम्रता, तथा ईश्वर भक्तिसे 'पवित्र कलश' पानेकी आशा की जा सकती है।

जिस शूरताका वर्णन रोलन्डके गीतों तथा उत्तरीय फ्रांसकी अन्य गम्भीर कविताओंमें किया गया है वह बहुत ही भयानक और उग्र है। इसमें विशेष कर मूर्तिउपासकोंके प्रतिकूल धर्म संस्थाकी सेवाओं और मनसबदारोंके प्रति कृतज्ञता प्रकाशको प्रधान स्थान दिया है। दूसरी ओर आर्थरकी कथाओं तथा भाटोंके छन्दोंमें एक वीर कुलीन नायक और उसकी प्रियतमा नायिकाके प्रति उसके प्रेमानुरागोंका वर्णन किया गया है। इसके बादके शतकोंके साहित्यमें ऐसी वीरताके अर्थमें नाइट शब्दका प्रयोग होता था। अब किसीको विधर्मियोंसे लड़नेका ध्यान न रहा क्योंकि धर्म युद्ध समाप्त हो गये थे और नाइट लोग अपने देशके समीप ही साहस कार्य खोजनेमें लग गये थे।

उस समय छापाखाना न होनेसे सब ग्रन्थ हाथसे ही लिखे जाते थे, इस लिए आधुनिक समयके समान उस समय अधिक ग्रन्थ न थे। सब लोग काव्य साहित्यका अध्ययन नहीं कर सकते थे, परन्तु कविता हो जिनका व्यवसाय हो गया था, वे लोग छन्द पढ़ा करते थे और सब लोग सुना करते थे। घूमता घूमता जोंगलियर (मिरासी) जहां कहां भी

परन्तु चोटीदार महराबकी ऊंचाई तथा चौड़ाईमें बहुतसे भेद हो सकते हैं। सहायक महराब (Flying Buttres) के आविष्कारसे गाथिक पद्धतिमें बड़ी उन्नति हुई । यह रचना बाहरको निकली रहती थी और खम्भेके बोझको भी बहुत कुछ सम्भालती थी इसका परिणाम यह हुआ कि अब खिड़कियां भी बनने लगीं और गिरजोंमे प्रकाश भी अधिक आने लगा।

इन बड़ी खिड़कियोंसे जो प्रकाश प्रविष्ट होता था वह बहुत प्रखर होता था. इन खिड़कियोंमें अत्युत्तम पत्थरकी जालियोंमे रंगीन शीशे जड़े रहते थे जिनके कारण प्रकाश हलका हो जाता था। मध्ययुगके गिरजोंमे रंगीन शीशोंके कार्यकी बड़ी प्रख्याति थी, विशेष कर फ्रांसमें, क्योंकि वहांके शीशेकी कारीगरीने इस शिल्पकी विशेष उन्नति की थी। इनमें से अधिकांश तो नष्ट भ्रष्ट हो गये, तो भी जो बचे हैं उनको बहुत मूल्यवान समझा जाता है और उनको बड़ी सुरक्षासे रखा गया है । इनकी समानताका अब तक दूसरा नमूना बना भी नहीं। इनके छोटे छोटे टुकड़ोंकी बनी जालीदार खिड़कियां आज कलके अच्छेसे अच्छे नमूनेकी रचनासे भी कहीं अधिक सुन्दर होती थीं।

ज्यों ज्यों गाथिक पद्धतिकी उन्नति होती गयी और कारीगर चतुर होते गये त्यों त्यों गिरजोंमे प्रकाशकी मनोरंजक विचित्रताओं और सुन्दर और सुकुमार शिल्पोंकी वृद्धि होती गयी, परन्तु उनकी सुन्दरता तथा गौरवकी मात्रा तब भी वैसी ही बनी रही। मूर्तिकारोंने अपनी कला कौशलकी अच्छी अच्छी रचनाओंसे उन्हे सजाया। मूर्ति तथा स्तम्भ शिखर, आसन, वेदी, गायक-जवनिका, पादरीगणके बैठनेके लिए लकड़ीके बने आसन इत्यादि वस्तुओं पर सुन्दर सुन्दर पत्तियां तथा पुष्प पालतू पशु, अथवा विचित्र दैत्य, ग्रामिक घटना तथा दैनिक जीवनके ग्रामीण दृश्य खुदे रहते थे । इंगलैंडके वेल्स नगरके एक गिरजेके स्तम्भ शिखरपर एक चित्र अंकित है। उसमें अंगूरों और पत्तोंके बीचमें पीड़ाके कारण म्लानमुख एक बालक अपने पैरमेंसे कांटा निकाल रहा है । दूसरे चित्रमें चोरी पकड़े जानेके

दृश्य दिखाया गया है । उसमे एक चोर अंगूर चुराकर भागा जा रहा है और क्रुद्ध किसान हाथमे लाठी लिए उसके पीछे दौड रहा है । मध्ययुग मे हास्यजनक विनोदोंकी विशेष कल्पना की जाती थी । उस कालके लोगोका विलक्षण पशु, आधा उकाब तथा आधा सिंह, चमगीदडोंके समान भीषण जन्तु, दैत्यसमान विकटाकार तथा काल्पनिक आकृतियोंमे अत्यन्त प्रेम था । ये आकृतियां परदोंपर बनी फूल पत्तियोंमे बनायी जाती थीं, और दीवार तथा स्तम्भपर मनुष्यपर देखते हुई मुद्रामे बैठा दी जाती थीं, अथवा पतनालों या शिखरोंपर सिंहादिका मुख लगा दिया जाता था ।

गाथिक पद्धतिमें एक विचित्रता यह है कि इसमे अपासलों, सन्तों और राजाओंकी मूर्तियां बनायी जाती थीं । इनसे गिरजेके बाह्य भाग और विशेष कर प्रवेशद्वारको शोभा बढायी जाती थी । जिन पत्थरोंसे भवन बनते थे उन्हीं पत्थरोंकी मूर्त्तिया भी बनायी जाती थी इससे वे उसीके एक भाग ज्ञात होते थे । यदि उनकी तुलना बादके शिल्पसे करें तो वे कुछ भद्दे और घटिया जचेंगे, तो भी वे उनकी रचनाके बहुत अनुरूप हैं और उनमेंसे जो अच्छे है वे तो अत्यन्त सुन्दर और सुकुमार प्रतीत होते हैं ।

यहा तक तो हमने गिरजेके शिल्पका वर्णन किया और उस युगमे इस शिल्पकी ही बडी प्रधानता थी । बादको चौदहवीं शताब्दीमें गाथिक पद्धतिके अनेक सुन्दर सुन्दर भवन बनाये गये । इनमें सबसे चित्तपहारी तथा विख्यात व्यापारी कम्पनियोंके बनवाये विशाल भवन तथा मुख्य मुख्य नगरोंके नगर भवन थे । परन्तु गाथिक पद्धतिका विशेष प्रयोग तो धर्मसंस्थाओं-मे ही था । इसके उन्नत शिखर, खुले फर्शदार मैदान, ऊंची ऊंची गगन चुम्बित महरावें तथा इसकी स्वर्ग समृद्धिको याद करानेवाली खिड़कियां आदि सभी वैभव मध्ययुगके लोगोके प्रेम तथा भक्तिको अत्यन्त बढाते होंगे

मध्ययुगके प्रासादोका वर्णन करते हुए हमने प्रासाद निर्माण-शिल्पका कुछ वर्णन किया था । इनमें प्रास [illegible] दुर्ग कहे तो अनुक्त

होंगे, क्योंकि दृढ़ता तथा दुर्गमता इनमें प्रधान होती थी। उनमें कई फीट मोटी दीवालें, उनमें झरोखोंके समान छोटी छोटी खिड़कियां, और पत्थरके फर्श होते थे। बड़े बड़े भवन बड़ी भट्टियोंसे खूब गर्म रहते थे, जिनसे प्रकट होता है कि आधुनिक गृहोंके समान इनमें कुछ भी सुख नहीं था। साथ ही साथ इनसे यह भी स्पष्ट है कि उस समयके लोग अत्यन्त सरल रुचिके और शरीरके बलिष्ठ थे, वर्तमानमें हम इसी बातके लिए तरसा करते हैं।

उस समयके लोगोंकी भाषा पुस्तक, कला तथा शिक्षितोंका व्यवसाय देखकर यह प्रश्न उठता है कि इन्हें शिक्षा कहांसे मिलती थी? जस्टीनियन के सरकारी विद्यालय बन्द करने तथा फ्रेडरिक बारबरोसाके आगमनके बीचके कालमें इटली तथा स्पेनके अतिरिक्त पश्चिमी यूरोपमें आधुनिक विद्यापीठ तथा विद्यालयोंके समान शिक्षाका कुछ भी प्रबन्ध नहीं था। शार्लमेनकी आज्ञासे जिन विद्यालयोंको विशप तथा एबटोंने स्थापित किया था उनमेंसे कुछ तो अवश्य ही उसकी मृत्युके बादके अन्धकार तथा अराजकताके समयमें भी बनाये गये थे। परन्तु वहांकी शिक्षाप्रदानकी व्यवस्था जाननेसे प्रकट होता है कि ये विद्यालय प्रारम्भिक थे, यद्यपि इनके अध्यक्ष कभी कभी अच्छे विद्वान् भी होते थे।

संवत् ११५७ (सन् ११०० ई०) में अबिलार्ड नामका एक उत्साही नवयुवक अपने देश ब्रिटनीसे इस प्रयोजनसे रवाना हुआ कि वह न्याय तथा दर्शन शास्त्रमें विशेष शिक्षा प्राप्त करनेके लिए विद्यापीठोंका दर्शन करे। उसने इन शास्त्रोंमें शिक्षा पानेके लिए देश विदेश भ्रमण किया। उसने लिखा है कि फ्रांसके कई नगरोंमें विशेषतः पेरिस नगरमें बहुतसे पंडित रहते थे। उनके पास दूर दूरसे छात्रगण न्याय, छन्द तथा तत्व विद्याकी शिक्षा पानेके लिए आते थे। अबिलार्ड अपने अध्यापकोंसे भी तीव्र था। उसने उन लोगोंको वादविवादमें कई बार निरुत्तर करके अपनी विवेकबुद्धिका परिचय दिया। शीघ्र ही

वह स्वयं भी शिक्षा देने लगा । इस कार्यमें उसे इतनी अधिक सफलता हुई कि सहस्रों छात्र शिक्षा पानेके लिए उसके पास आने लगे ।

उसने एक छोटी सी पुस्तिका रचा जिसका नाम 'अस्ति नास्ति' था । इस पुस्तकमें उसने धर्मसंस्थाके पादरियोंका त्रिविध विषयोंपर मतभेद दिखलाया था । छात्रोंको बहुत सोच समझ कर इन मतभेदोंका परिहार करना पड़ता था । अबिलार्डका मत था कि निरन्तर प्रश्नोंसे ही सच्चा ज्ञान मिल सकता है । जिन विद्वानोंपर मनुष्योंका धर्म-विश्वास जमा हुआ था उनके साथ उसका स्वतंत्र वादविवाद अनेक समानकालिकोंको खटकता था । विशेषकर महात्मा बर्नर्ड जिन्होंने उसे बहुत कष्ट दिया था उसके बड़े विरोधी थे । अब ईसाई मन्तव्योंपर स्वतंत्र विवाद करना उस समय की रीति हो गयी थी । और लोगोंने अरस्तूके न्यायका अवलम्बन कर ईश्वरवादका एक उच्च कोटिका दर्शन बनाना चाहा । अबिलार्डकी मृत्युके बाद पीटर लम्बर्डने अपनी 'सेन्टेन्स' (महावाक्य) नामकी पुस्तक प्रकाशित की ।

कई लोगोंका मत है कि अबिलार्डने पेरिसके विद्यापीठकी स्थापना की थी । यह असत्य है, परन्तु उसने धर्म विषयक मतभेदोंको सर्व साधारणमें प्रचार करनेका बड़ा यत्न किया । उसकी शिक्षा देनेकी रीति इतनी उत्तम थी कि उसके पास बहुत छात्र एकत्र होते थे । अन्तमें उसे संकटोंने आन घेरा । उसी दशामें उसने अपने जीवनका दु:ख वृत्तान्त लिखा है । इस वृत्तान्तके पढ़नसे विदित होता है कि उसकी शिक्षामें कितनी अभिरुचि थी और इसीसे पेरिसके विद्यापीठकी उत्पत्तिका भी पता चलता है ।

बारहवीं शताब्दीके अन्ततक पेरिसमें इतने शिक्षक हो गये थे कि उन्होंने अपनी वृद्धिके लिए एक संघ स्थापित किया । शिक्षकोंके इस संघका नाम "युनिवर्सिटस" (विद्या-संघ) था । इसीसे युनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय)शब्दकी उत्पत्ति हुई है । राजा तथा पोप दोनोंको इस

विद्यालयपर कृपादृष्टि थी । इन लोगोंने पादरियोंके अनेक अधिकार, शिक्ष नए छात्रोंको प्रदान किये थे । इन लोगोंको गणना भी इन्हींमें क जाता था, क्योंकि अनेक शताब्दियों तक शिक्षा केवल पादरियों अधीन थी ।

जिस समय शिक्षकोंके संघ अथवा विद्यापीठकी स्थापना हुई थे उसी समय बोलोनियामें एक बड़े शिक्षालयकी उत्पत्ति हो रही थी । इस विद्यापीठमें पेरिसके विद्यापीठके समान आस्तिकवादपर विशेष ध्यान न देकर रोमके तथा व्यवस्थाके कानूनोंपर विशेष ध्यान दिया जाता था बारहवीं शताब्दीके आरम्भमें इटली नगरमें रोमके कानूनोंमें विशेष रु उत्पन्न हुई । कारण यह था कि उस समय तक भी रोमका व्यवस्था-शास्त्र इटलीवासियोंको न भूला था । संवत् ११९६ (सन् ११४० ई०) में ग्रेशियन नामक महन्तने एक बृहद् ग्रन्थ प्रकाशित करा । उसका अभिप्राय राजा तथा पोपोंके परस्पर विरोधी नियमोंको एकत्र कर-ना करके चर्चकी व्यवस्थाओंका एक प्रमाणिक ग्रन्थ बनानेका था । अब बोलोनियामें भी बहुतसे विद्यार्थी उपस्थित होने लगे । अपरिचित नगरमें अपनी रक्षा करनेके लिए उन्होंने अपना एक संघ स्थापित किया जो कुछ दिनोंमें इतना शक्तिशाली होगया कि उसके नियमोंका पालन उनके शिक्षकोंको भी करना पड़ता था ।

आक्सफोर्डका विश्वविद्यालय द्वितीय हेनरीके समयमें स्थापित हुआ । आंग्ल देशके छात्र तथा शिक्षकोंने पेरिस नगरके विद्यापीठसे असन्तुष्ट होकर इसको स्थापित किया था । केम्ब्रिजका विद्यापीठ तथा फ्रांस, इटली, और स्पेनके अनेक विद्यापीठ तेरहवीं शताब्दीमें ही स्थापित हुए थे । जर्मनीके विद्यापीठ जो अबतक भी प्रसिद्ध हैं परन्तु वे चौदहवीं शताब्दीके मध्य अथवा पन्द्रहवीं शताब्दीमें स्थापित हुए थे । उत्तरीय विद्यापीठोंने पेरिसके विद्यापीठको अपना आदर्श बनाया और दक्षिण यूरोपके विद्यापीठोंने बोलोनियाके विद्यापीठको अपना आदर्श बनाया ।

कुछ समयके उपरान्त शिक्षकगण छात्रोंकी परीक्षा लेते थे। जो उत्तीर्ण हो जाते थे वह संघके सदस्य बना लिये जाते थे और वे भी स्वयं शिक्षक हो जाते थे। जिसे वर्तमानमें पदवी या डिग्री कहा जाता है मध्य युगमें उसको अध्ययन योग्यताकी प्राप्ति कहा जाता था। परन्तु तेरहवीं शताब्दीमें अनेक पुरुष उपाध्याय अथवा डाक्टरकी उपाधिके उत्सुक थे क्योंकि वे साधारण शिक्षक बनना नहीं चाहते थे।

मध्य युगके विद्यापीठोंमें भिन्न २ वयसके छात्र थे। उनकी अवस्था १३ वर्षसे लेकर साठ वर्ष तकके बीचमें होती थी। उस समयतक विश्वविद्यालयोंके विशाल भवन नहीं बने थे, अध्यापकगण अपने पाठ छप्परोंमें पढ़ाते थे। किरायेके मकान लेकर उसमें घास फूस बिछा दिया जाता था। अध्यापकगण उसीपर बैठकर अपने छात्रोंको शिक्षा देते थे। उस समय रसशालाएं भी नहीं थीं, क्योंकि परीक्षाओं की आवश्यकता ही न होती थी। केवल पाठ्य पुस्तककी एक प्रतिकी आवश्यकता थी, चाहे वह प्रेशिअनका "डिक्रेटम दि सेन्टेन्स" हो अथवा अरस्तूके निबन्ध हों वा आयुर्वेदकी कोई पुस्तक हो। इनका प्रत्येक वाक्य शिक्षक भली भांति समझाते थे और छात्र भी ध्यान पूर्वक श्रवण किया करते थे। वे कभी कभी संक्षेपमें लिख भी लेते थे।

उस समयमें न तो विश्वविद्यालयोंके विशाल भवन ही थे और न विशेष उपकरण ही थे। इससे शिक्षक तथा छात्र स्वतन्त्र भ्रमण किया करते थे। यदि किसी स्थानमें उनसे दुर्व्यवहार होता था तो वे लोग उस स्थानको त्याग कर दूसरे स्थानमें चले जाते थे। इससे वहांके व्यापारियोंकी बड़ी हानि होती थी, क्योंकि इन लोगोंकी स्थितिमें उन्हें विशेष लाभ था। इसी प्रकार और आक्सफोर्ड लिप्ज़िक विद्यापीठ उक्त प्रकारके शिक्षकों और छात्रोंने ही स्थापित किये थे।

आधुनिक विद्यालयोंकी भांति कलामें "आचार्य" (एम० ए०) की उपाधि प्राप्त करनेमें पेरिसके विद्यापीठमें ६ वर्ष लगते थे। वहां तर्क शास्त्र

और विज्ञानकी विविध शाखाएं जैसे भौतिक विज्ञान तथा गणित आदि, अरस्तूके ग्रन्थ, दर्शन शास्त्र, तथा आचार शास्त्र आदि पढ़ाये जाते थे। वहां इतिहास तथा ग्रीक भाषा नहीं पढ़ायी जाती थी। कार्य सम्पादनके लिए लैटिन भाषाका अध्ययन आवश्यक था। रोमकी प्राचीन भाषापर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था। आधुनिक भाषाएं पंडितोंको महसा विद्वानोंके अयोग्य जान पड़ती थीं। यहांपर यह जान लेना भी आवश्यक है कि आज कलकी आंगल, फ्रेन्च, स्पेन, इटली भाषाओंमें बड़ी बड़ी पुस्तकें उस समयतक लिखी ही नहीं गयी थीं।

मध्य युगके विद्यापीठोंमें अरस्तूके ग्रन्थोंपर विशेष बल दिया जाता था। शिक्षकोंको अधिक समय उसीके ग्रन्थोंके समझानेमें व्यतीत हो जाता था। उनमेंसे भौतिक विज्ञान, अध्यात्म विद्या, उसके तर्कके ग्रन्थ, आचार शास्त्र, आत्मा, स्वर्ग, तथा पृथिवी विषयक अनेक पुस्तकें प्रधान थीं। अरस्तूके समस्त लेख भूल गये थे अबिलार्डको केवल उसके तर्कका ही ज्ञान था, परन्तु तेरहवीं शताब्दीके आरम्भमें उसके विज्ञानके समस्त ग्रन्थ पश्चिम देशोंमें भी चले गये। इनका प्रचार या तो कुस्तुन्तुनियासे या अरबोंद्वारा हुआ था। जिन्होंने इनका प्रचार स्पेनमें किया था, लैटिनके अनुवाद न तो अच्छे थे और न स्पष्ट ही थे। उनका तात्पर्य निकालने, अरब दर्शनिकोंके अभिप्राय समझाने, और ईसाई धर्मसे उनकी समता दर्शानेमें शिक्षकोंको बड़ा श्रम करना पड़ता था।

वास्तवमें अरस्तू ईसाई न था। मृत्युके उपरान्त आत्माकी सत्तामें उसको पूरा विश्वास नहीं था। वह बाइबिलके विषयमें कुछ भी नहीं जानता था। उससे यह भी ज्ञात नहीं था कि प्रभु ईसामसीहके द्वारा मनुष्यकी मुक्ति हो सकती है। कदाचित् कोई समझते हों कि अन्धश्रद्धालु इसाई धर्मावलम्बियोंने उसे अपने यहांसे निकाल दिया हो। परन्तु ऐसा नहीं। उस समयके शिक्षकगण उसकी तर्कशैलीपर मुग्ध थे और

उसकी विद्वत्तापर विस्मित थे, उस समयके बड़े २ धार्मिक विद्वान् अल्वर्टस मैग्नस तथा टामस आक्विनसने विना किसी संकोचके इसके सम्पूर्ण ग्रन्थोंपर टीका की थी । इसको सब लोग दार्शनिक तत्व वेत्ता कहा करते थे । उस समयके विद्वानोंका मत था कि परमेश्वरने असीम कृपाकर अरस्तूको इस योग्य बनाया कि वह प्रत्येक विषयोंपर. प्रत्येक शाखापर भी अन्तिम सिद्धान्त लिख सकता था । वाइबिल, पोप. धर्म शास्त्र, तथा रोमके कानूनोंके साथ साथ वे लोग इसकी बड़ी प्रतिष्ठा करते थे । उन लोगोको विश्वास था कि अरस्तू स्वत मानव संसारका एक मात्र मार्गदर्शी ऋषि है जो आचार तथा शास्त्रोंमे स्वत· प्रमाण है ।

"सिद्धान्तवाद" शब्दसे दर्शन, धर्म तथा मध्ययुगके शिक्षकोंकी विवाद-पद्धतिका बोध होता है । जिनकी श्रद्धा, तर्क तथा अरस्तूके लिए बहुत थी: उन लोगोका मत था कि वाद से शिक्षाको विशेष लाभ नहीं पहुच सकता, क्योंकि इसमे रोम तथा ग्रीक साहित्यको स्थान नहीं दिया गया था । यदि हम टामस आक्विनसके आश्चर्य भरे निबन्ध पढ़े तो हमें इतना तो ज्ञात होता है कि वादी तार्किक असाधारण मर्मज्ञ और बहु श्रुत थे । वे अपने पक्षपर आनेवाले सब आक्षेपोंको समझते थे तथा अपने सिद्धान्तको पूर्णतया समझा सकते थे । यदि तर्कसे छात्रकी ज्ञान वृद्धि नहीं होती तो भी उसकी विवेचना शक्ति बढ जाती थी और वह अपने विषयको व्यवस्थित रूपसे रख सकता था ।

तेरहवीं शताब्दीमें भी कुछ विद्वान् थे जो समस्त विषयोंपर अरस्तूको प्रमाण मान लेना अनुचित समझते थे । सबसे प्रसिद्ध आलोचक रोजर बेकन था, वह एक अंग्रेज फ्रान्सिस्कन महन्त था । उसका कथन था कि यद्यपि अरस्तू बहुत बुद्धिमान् था तथापि "उसने केवल ज्ञान वृक्ष लगाया है जिसकी अभीतक न तो सब शाखायें निकली हैं

और न सब फूल ही खिले हैं'' "यदि हम लोग अनन्त शताब्दियों पर्यन्त जीवित रहें तो भी हमलोग पूर्ण ज्ञातव्य विद्याका ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते। कोई भी प्रकृतिका इतना पूर्ण ज्ञानी नहीं है जो बता सके कि एक साधारण मक्खीका ऐसा रंग क्यों है? उसके इतने पैर क्यों हैं, कम और ज्यादा क्यो नहीं? ।" बेकनको विश्वास था कि अरस्तूके निबन्धोंके अशुद्ध लैटिन अनुवादोंकी अपेक्षा सार पदार्थोंपर निरीक्षण और परीक्षण करनेसे सहस्र गुण ज्ञान प्राप्त हो सकता है। उसने लिखा है कि " यदि मुझे स्वतन्त्रता मिले तो अरस्तूके सम्पूर्ण लेख आगमें जला दूं, क्योंकि उनके पढनेसे समय व्यर्थ नष्ट होता है और उनसे अज्ञान तथा मिथ्याज्ञानकी वृद्धि होती है।'

इससे विदित होता है कि जिस समय विद्यापीठोंमें वादोंकी अधिक चर्चा थी। उस समय भी अनेक वैज्ञानिक थे जो तत्व-अन्वेषणकी आधुनिक प्रथाका प्रचार किया करते थे। इसमें तर्कके नियमानुसार प्राचीन-कालके ग्रीक दार्शनिकोंके वचनोंपर विचार नहीं किया जाता था, परन्तु उपस्थित वस्तुओंपर ही शान्ति पूर्वक विचार किया जाता था।

यहा तक तो हम ने उन पन्द्रह सौ वर्षोंके आधे कालकी समालोचना की है जो वर्तमान यूरोपको पन्द्रहवीं शताब्दीके विच्छिन्न रोम साम्राज्यमे विभक्त करती है। अब आगेके आठ सौ वर्षोंमें जिसमें अलरिक, आटिला, लियो, क्लोबिस, तृतीय इन्नोसेन्ट, सेन्ट लुई तथा प्रथम एडवर्ड आदि उत्पन्न हुए और इसी कालमें बड़े बड़े विख्यात परिवर्तन भी हुए।

प्रथम देखनेसे विदित होता था कि असभ्य गाथ, फ्रैंक्स, बन्डाल तथा बर्गन्डीवाले, सर्वत्र उजाड़ और तबाही फैलाते थे। इनकी शक्ति इतनी प्रबल थी कि शार्लमेनकी शक्ति भी इस अत्यन्त उपद्रवको कुछ कालके लिए ही रोक सकी थी। उसके बाद उसके पौत्रोंमे कलह तथा नार्थमैन हंग्रीगले स्लाव और सारसेनोंका आक्रमण प्रारंभ हुआ।

परिणाम यह हुआ कि सातवीं तथा आठवीं शताब्दीके समान एक समय पश्चिमी यूरोप पुन उसी अराजकता तथा अन्धकारमें निमग्न हो गया।

शार्लेमनके राज्यके दो सौ वर्ष बाद पुनः यूरोपमें जागृतिकी झलक दिखायी दी। यद्यपि ग्यारहवीं शताब्दीके सम्बन्धमें विशेष हाल ज्ञात नहीं तथापि उस समयके अच्छे अच्छे विद्वानोंको भी छात्रोंके अतिरिक्त शेष सभी भुला चुके थे। परन्तु निःसन्देह इस बीचमें भी बारहवीं शताब्दीका तय्यारी हो रहा थी। ग्यारहवीं शताब्दी ही की बदौलत बारहवीं शताब्दीमें अबिलार्ड, सेन्ट बेर्नर्ड आदि नाना धर्मशास्त्री, कवि शिल्पी तथा दार्शनिकोंका प्रादुर्भाव हुआ।

हम मध्ययुगको दो विशेष भागोंमें बाट सकते हैं। सप्तम ग्रेगरी तथा विजयी विलियमके शासनसे पूर्वके कालको "अन्धकारका काल" कह सकते हैं। यद्यपि उस समय यूरोपमें कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य हुआ था, तथापि वह समस्त अराजकता तथा अन्धकारका काल था। मध्य युगके पिछले भागमें मनुष्यके प्रत्येक कार्यमें निःसन्देह उन्नति हुई थी। तेरहवीं शताब्दीके अन्तमें जो परिवर्तन हुए हैं उन्हींके कारण आधुनिक यूरोपकी दशा रोमन साम्राज्यके अधीन पश्चिमीय यूरोपकी दशासे बहुत बदल गयी। इन परिवर्तनोंमेंसे कुछ एक यह हैं।

(१) कुछ राष्ट्रोंने एक संघ स्थापित किया जिसमें भिन्न २ प्रकारकी राष्ट्रीयताओंका प्रादुर्भाव हो रहा था। उस संघने रोम साम्राज्यका स्थान ग्रहण किया। इन लोगोंने अपने शासनमें इटली, गाल, जर्मनी तथा ब्रिटनके मतभेदोंको स्थान नहीं दिया। अनवस्थित मनसबदारी जो अपना गत अन्धकारयुगमें शासन कर रही थी, राजशक्तिके आधिपत्यके नीचे झुक गयी। जर्मनी और इटली इस राजशक्तिके नीचे न थे और पश्चिमी यूरोपमें एक साम्राज्य स्थापित करनेकी कोई आशा भी न थी।

(२) एक प्रकारने धर्म-संस्था भी रोम साम्राज्यके अधिकार

हथियारही थी। पोपने पश्चिमी यूरोपके बहुतसे लोगोंको अप अधीन कर लिया था जब कि सामन्त लोग न्याय तथा शान्तिके स्थाप समर्थ न थे, इस कारण उसने राज्यका भी समस्त कार्य अपने हाथमें लिया। स्वच्छन्द राजाकी भाति मध्य युगकी धर्मसंस्था सबसे अधि शक्तिशाली हो गयी थी। इसकी राजनीतिक दशा तेरहवीं शताब्दी आरम्भमें तृतीय इन्नोसेन्टके समय उच्च शिखरपर पहुंच गयी थी। तेरह शताब्दीके समाप्तिके पूर्व ही संगठन इतना शक्तिशाली हो गया कि देखनेसे प्रतीत होता था कि वह पोप तथा पादरियोंके हाथसे शासन-अधिकार छीन लेगा और उनके हाथमें केवल धर्मका रह जायगा।

(३) पादरी तथा नाइट लोगोंके संघके साथ साथ एक नयी साम जिक संस्था और उत्पन्न हुई। इससे कृपक दासोंके सुधार, नगरोंकी स्थापन और व्यवसायकी उन्नति हुई और वणिकों तथा कारीगरोंको भी अवस मिला कि वे भी द्रव्योपार्जन कर विख्यात तथा प्रभावशाली हो जाय आधुनिक विद्वानोंका यहींसे प्रादुर्भाव होना प्रारंभ होता है।

(४) नाना प्रकारकी आधुनिक भाषाओंका प्रयोग लेखमें होने लगा जर्मनोंके आक्रमणके ६ सौ वर्ष पर्यन्त लैटिनका प्रयोग होता रहा, परन्तु ग्यारहवीं तथा बादकी शताब्दियोंमें बोलचालकी भाषाने पुरानी भाषाओंका स्थान ले लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वे साधारण लोग जो प्राचीन रोमन भाषाकी गूढताको नहीं समझते थे अब फ्रेन्च प्रोवेंकल, जर्मन, अंग्रेजी, स्पेनिश तथा इटली भाषामें लिखी कथाओंका आस्वाद भी लेने लगे।

यद्यपि शिक्षाका प्रबन्ध अब भी पादरियों के ही हाथमें था और साधारण लोग भी लिखने पढ़ने लगे थे तथापि वाङ्मयसाहित्य पादरियोंका एकाधिकार धीरे धीरे लुप्त होने लगा।

(५) संवत् ११५७ (सन् ११०० ई०) ही से छात्र ने।

शिक्षकोंके निकट एकत्र होने लगे और रोमकी धर्मव्यवस्था, तर्क, दर्शन तथा धर्म शास्त्रकी शिक्षा भी लेने लगे। अरस्तूके ग्रन्थ एकत्र किये गये और छात्र वर्ग विद्याकी समस्त शाखाओंमें उत्साहके साथ उसके ग्रन्थोंका मनन करने लगे। उसी समयमें आधुनिक सभ्यताके विशेष अंगरूप विद्यापीठोंका भी प्रादुर्भाव हुआ था।

(६) अब शिक्षक लोग केवल अरस्तूके प्राप्त निबन्धोंसे ही सन्तुष्ट न हो सके इनसे उन्होंने स्वयं अपने प्रयत्नसे विद्याकी उन्नति करनी चाही। रोजर बेकन तथा उसके समकालिक विद्वान एक वैज्ञानिक वर्गके अंग थे। इस वर्गने विज्ञानकी सभी शाखाओंमें उन्नति तक पहुंचनेका मार्ग तय्यार कर दिया वे आधुनिक समयकी भी एक मान प्रतिष्ठा हैं।

(७) बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीके गिरजोंका शिल्प देखकर उस समयकी कलाभिरुचिका पता चलता है। यह सब किसी प्राचीन कलाका अनुकरण नहीं था, परन्तु उस समयके शिल्पी तथा मूर्त्तिकारोंकी स्वमूलक रचना थी।

अध्याय १६

शतवर्षीय युद्ध ।

चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दीके यूरोपीय इतिहासका वर्णन निम्नलिखित क्रमसे किया गया है। (१) आंगल देश तथा फ्रान्सका वर्णन एक साथ किया गया है, क्योंकि आंगल देशके राजा लोग फ्रांसके राज्यपर भी अपना अधिकार जतलाते थे। दोनों प्रदेशोंके बीच शतवर्षीय युद्धसे प्रथम दोनों देशोंमें दुर्व्यवहार और कलह उत्पन्न होता है और पश्चात् इनका सुलह होती है। (२) दूसरे पोपके अधिकार तथा कान्स्टेन्सकी सभा में धर्मसंस्थाकी उन्नतिके प्रयत्नके इतिहासका वर्णन है। (३) इसके बाद जागृतिकी उन्नतिका वर्णन है विशेषत इटलीके उन नगरोंका संक्षेपत. वर्णन है जो उस समयमें विज्ञान वृद्धिके अग्रसर नेता थे। इसके साथ साथ पन्द्रहवीं शताब्दीके बाद के भागमे जो छापाखाना तथा भूगोल विद्याकी नवीन खोज और उनसे हुई उन्नतिका वर्णन है (४) चतुर्थ भागमें सोलहवीं शताब्दीके यूरोपका वर्णन है। इससे मार्टिन लूथरके नेतृत्वमें हुए धर्म संस्थाके नवीन आन्दोलनको पाठक भली भांति समझ सकेंगे।

सबसे पहले आंगल देशकी दशा देखनी उचित है। प्रथम एडवर्डके पूर्व के शासकोंका ग्रेटब्रिटनके द्वीपके एक अंशपर ही शासन था, उनके राज्य के पश्चिममें वेल्सका पहाड़ी प्रान्त था। इस प्रान्तमें आदि ब्रिटन जाति के लोग बसे थे जिनको जर्मन आक्रामक लोग परास्त नहीं कर सके थे। इनके उत्तरमें स्काटलेण्डका राज्य था यह राज्य भी स्वतंत्र

था। वह केवल कभी कभी आंग्ल देशीय शासकोंको अधिपति मान कर उच्चश्रेणीका सामन्तराज्य मान लिया जाता था। प्रथम एडवर्डने वेल्जको सर्वदाके लिए तथा स्काटलैण्डको कुछ समयके लिए जीत लिया था।

कई शताब्दियों पर्यन्त आंग्लदेश तथा वेल्ज़की सीमाओंपर लड़ाई होती रही। विजयी विलियमने आवश्यक समझकर वेल्ज़की सीमा पर "अर्लडम" स्थापित किया था और चेस्टर, श्रूजवरी तथा मन्मथ नार्मन लोगोंके लिए अच्छी रोक थी। वेल्ज़ वालोंकी लगातार आक्रान्तिसे अंग्रेजी राजा क्रुद्ध होकर वेल्ज़पर चढाई करना चाहते थे। परन्तु शत्रु-पर विजय पाना सरल नहीं था, क्योंकि वे लोग स्नोडानके समीप बर्फीली पहाड़ी कन्दराओंमें छिप जाते थे और अंग्रेजी सैनिकोंको वहांकी जंगली भूमिमें भूखों मरना पड़ता था। वेल्ज़ वासी सफलताके साथ इतने अधिक समय तक शक्तिशाली अंग्रेजी सेनाओंका सामना करते रहे, इससे वेल्ज़ केवल उनके रक्षास्थान ही नहीं थे, परन्तु वहांके भाटोंने भी अपने उत्साह भरे कवित्तोंसे वहांके लोगोंको उत्तेजित किया था। इन लोगोंको विश्वास था कि जो आंग्ल देश एंगल तथा सैक्सनों-के आगमनके पूर्व इनके अधिकारमें था उसको ये लोग पुनः जीत लेंगे।

सिंहासनारूढ होते ही प्रथम एडवर्डने आज्ञापत्र भेजा कि वेल्ज़ जातिका अधिपति लूएलिन जो वेल्ज़का युवराज कहलाता है हमारे दरबारमें आकर सिर झुकावे। लूएलिन प्रभावशाली तथा योग्य पुरुष था। उसने राजाकी आज्ञा न मानी। इसपर एडवर्डने वेल्ज देशपर आक्र-मण किया। लगातार दो युद्धोंके बाद वेल्जका दम उखड़ गया। लूएलिन युद्धमें मारा गया और उसीके साथ वेल्ज़की स्वतन्त्रता भी सदाके लिए लुप्त हो गयी। एडवर्डने सम्पूर्ण देशको शहरोंमें बांट दिया और आंग्ल देशके नियम तथा प्रथाओंका प्रचार किया। उसको सान उपायसे इतनी सफलता हुई कि एक शताब्दी पर्यन्त उस देशमें आक्रान्ति

हुई ही नही। पश्चात् उसने अपने पुत्रको वेल्ज़का युवराज बनाया और उसी समयसे आंग्ल देशके राज्यके उत्तराधिकारीको "वेल्ज़के युवराज" (प्रिंस आव वेल्स) की उपाधि मिलती है।

स्काटलैण्डका जीतना वेल्जके जीतनेसे भी अधिक कठिन था। स्काटलैण्डका प्राचीन इतिहास बड़ा जटिल है। जिस समय एंगल तथा सैक्सन लोग आंग्ल देशमें आये, उस समय फोर्थके मुहानेके उत्तरके पहाड़ी प्रदेशमें पिक्टनामी केल्टिक जाति बसी हुई थी। पश्चिमीय तटपर एक छोटा सा राज्य आयरिश केल्ट लोगोंका था जो स्काट कहाते थे। दशवीं शताब्दीके आरम्भमें पिक्ट लोगोंने स्काट लोगोंको अपना शासक मान लिया था और इतिहास लेखकोंने हाइलैण्ड नामक प्रदेशको स्काट लोगोंका देश लिखना प्रारंभ कर दिया था। समयके परिवर्तनके साथ २ आंग्ल देशके राजाओंने अपने लाभार्थ सीमापरके कुछ नगर स्काटवालोंको दे दिये जिसमें ट्वीड् तथा फोर्थ नदीकी खाड़ीके मध्यका लोलैण्ड नामक प्रदेश भी था। इसके निवासी अंग्रेज थे और वे लोग आंग्ल भाषा बोलते थे परन्तु हाइलैण्डवाले अबतक भी गैलिक भाषा बोलते हैं।

स्काटलैण्डके इतिहासमें यह एक बड़े महत्वकी घटना थी कि उसके राजा लोग हाईलैण्डमें न रहकर लोलैण्डमें रहे और इन्होंने अपनी राजधानी दुर्भेद्य दुर्गान्वित एडिनबराको नियत किया था। विजयी विलियमके सिंहासनपर बैठते ही अनेक आंग्ल देशीय तथा असन्तुष्ट नार्मन अमीर लोग भी इंग्लैण्डकी सीमाको पारकर लोलैण्डमें आ बसे। इन्होंने बड़े बड़े कुटुम्ब स्थापित किये। इनमें बेलियल तथा ब्रूस अत्यन्त विख्यात हैं जिन्होंने बादको स्काटलैण्डकी स्वतन्त्रताके लिए भीषण युद्ध भी किये। बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दीमें यह देश, विशेषतः इसके दक्षिणी प्रान्त इन ऐंग्लो नार्मन पड़ोसियोंके प्रभावसे अति शीघ्र उन्नत हुए और इनके नगर समृद्धि और व्यवसायमें भी उन्नत होगये।

प्रथम एडवर्डके पूर्व आंग्ल देश तथा स्काटलैण्डके बीच कुछ भी

वैमनस्य न था। संवत् १३४७ (सन् १२९० ई०) में स्काच्-वंशके अन्तिम राजाकी मृत्यु हुई। इसके मरनेपर राजमुकुटके कई उत्तराधिकारी प्रकट होगये। अपने गृहकलहके शान्त करनेके लिए लोगों-ने एडवर्डको न्याय करनेके लिए निमन्त्रित किया। उसने अपनी स्वीकृति इस शर्तपर दी कि नया स्काट नरेश आंग्ल देशके अधीन सामन्त होकर रहना स्वीकार करे। यह शर्त मान ली गयी और रावर्ट वेलियलको राजा बनाया गया। एडवर्ड मूर्खता-से स्काटलैण्डवालोंसे कर मांग बैठा। इससे उत्तेजित होकर उन्होंने उसकी अधीनता भी स्वीकार न की। इसके अतिरिक्त स्काटलैण्डवालोंने आंग्ल-देशके शत्रु फ्रांसके फिलिपसे सन्धि कर ली। इसके पश्चात् आंग्ल देशवालोंको अपने तथा फ्रांसके मध्य द्वेषके कारणोंकी गणना करते समय स्काटलोगोंकी भी गणना करनी पड़ती थी क्योंकि ये लोग सर्वदा आंग्ल देशके शत्रुओंकी बड़ी प्रसन्नतासे सहायता करते थे।

संवत् १३५३ (सन् १२९६ ई०) में एडवर्डने स्वयं स्काटलैण्डपर आक्रमण किया और विद्रोह शान्त किया। उसने घोषित कर दिया कि राजद्रोहके कारण वेलियलसे उसका प्रान्त छीन लिया गया है और स्काट-लैण्डका राजा आंग्लदेशका अधिपति ही है इससे समस्त मन-सवदारोंको चाहिये कि वे उसके अधीन रहें। वहांकी राजधानी स्कोनसे दह भाग्यशिला उठा ली गयी जिसपर स्काटलैण्डके राजाओंका युगयुगान्तरसे अभिषेक होता चला आया था और इस प्रकारसे उसने स्काटलैण्डपर अपना आधिपत्य स्थापित किया। कई शताब्दियोंके लगातार विग्रहके कारण एडवर्डने वेल्ज़की भांति स्काटलैण्डको भी आंग्ल देशमें मिला लेना चाहा। यहां आंग्लदेश तथा स्काटलैण्डके मध्य तीनसौ वर्षका युद्ध प्रारम्भ होता है जिसका अन्त संवत् १६६० (सन १६०३ ई०) में हुआ जब कि स्काटलैण्डका राजा छठा जेम्स प्रथम जेम्सके नामसे आंग्ल-देशकी राजगद्दीपर बैठा।

रावर्ट ब्रूस नामक एक राष्ट्रीय वीरने सामान्य जन तथा सर्दारोंको
ने नेतृत्वमें मिलाकर स्काटलैण्डकी स्वतन्त्रताकी रक्षा की। संवत्
१३६४ (सं १३०७ ई०) में ब्रूसने उत्तरमें विद्रोह खड़ा किया। एडवर्ड
ना दमन करनेके लिए प्रस्तुत हुआ। रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो
थी। स्काटलैण्डके दमनका कार्य उसके पुत्र द्वितीय एडवर्डके ऊपर
पड़ा। वह इस कार्यके लिए समर्थ न था। अब स्काटलैण्डवालोंने
ब्रूसको अपना राजा मान लिया था। उसने बैनक्बर्नकी प्रसिद्ध रण
भूमिमें द्वितीय एडवर्डको एकदम परास्त किया। स्काटलैण्डके इतिहासमें
यह बड़ा प्रसिद्ध युद्ध है। इतना होनेपर भी आंग्लदेश-निवासियोंने
संवत् १३८५ (सन् १३२८ ई०) के पूर्व स्काटलैण्डकी स्वाधीनता
स्वीकार नहीं की।

आंग्ल-देशियोंसे निरन्तर युद्ध होते रहनेके कारण स्काटलैण्डनिवासी
आपसमें और भी दृढ़तासे बद्ध हो गये थे। यद्यपि वहाँकी स्वतन्त्र-
ताके लिए बहुत अधिक रक्तपात करना पड़ा, तथापि इससे कुछ ऐसे
परिणाम निकले जिन्होंने स्काच जातिको आंग्ल जातिसे सर्वदाके लिए
पृथक् कर दिया। स्काच लोगोंकी विशेषताका परिचय बर्न्स, स्काट
तथा स्टीवेन्सनके समान स्काटलैण्डनिवासी प्रख्यात लेखकोंके लेखोंमें
मिलता है।

द्वितीय एडवर्डके शत्रुओंने उनकी दुर्बलतासे लाभ उठाकर उसका
नाश करना चाहा। परन्तु इन लोगोंने यह कार्य पार्लमेन्टद्वारा किया।
इससे राष्ट्रीय सभा और भी पुष्ट हो गयी। हमने देखा है कि
संवत् १३५२ (सन् १२९५) की राष्ट्रीय सभामें प्रथम एडवर्डने
नागरिकों, सर्दारों तथा पादरियोंके प्रतिनिधियोंको निमन्त्रित किया था।
इस विख्यात नूतन रीतिको उसके पुत्रने सदाके लिए स्थिर कर दिया।
उस समय उसने यह प्रतिज्ञा की कि उसके राज्यके सम्पूर्ण कार्य इन
राष्ट्रीय सभाद्वारा सम्पादित किये जायेंगे और इनमें सर्वसाधारण

नागरिक भी सम्मिलित होगे। इसके बाद इनकी सम्मति विना कोई भी नियम नहीं बनाया जा सकता था। सं० १३८४ (सन् १३२७ ई०)में पार्लमेन्टने द्वितीय एडवर्डको सिंहासनसे उतार और उसके पुत्रको सिंहासनारूढ़ कर अपने अधिकारका स्वरूप दिखलाया। तभीसे यह भी नियम हो गया कि यदि कोई राजा अयोग्य हो तो राष्ट्रके प्रतिनिधि उसको गद्दीसे उतार सकते हैं। इसके पश्चात् राष्ट्रीय सभा दो विभागोंमें बँट गयी जिनका नाम "लोक-सभा" तथा "अमीर-सभा" हुआ। आधुनिक समयमें यूरोपके प्रायः समस्त देशोंने इसी सभाका अनुकरण किया है।

जिस शतवर्षीय युद्धका वर्णन किया जा रहा है यह अंग्रेजों तथा फ्रान्सके बीच बहुत दिनों चलती आयी युद्ध मालाका एक भाग था। इसका प्रारंभ इस प्रकार हुआ। जॉनकी मूर्खतासे आंग्ल देशका राजा नारमंडी तथा अपने द्वीपान्तर्गत राज्यका अधिक उपजाऊ भाग भी खो बैठा। अब उसके हाथ गियानाकी डची रह गयी जिसके लिए उसे फ्रांसको कर देना पड़ता था। उसका यह सबसे अधिक शक्ति-शाली सामन्त था। इस बन्दोबस्तके कारण प्रायः सर्वदा कठिनाइयां उपस्थित होती रहती थीं। इसका विशेष कारण यह भी था कि फ्रांसके राजा जितना जल्दी हो सके उतना ही इन सामन्तोंकी शक्ति छीनकर आप इनका स्थान ग्रहण करना चाहते थे। यह सहसा असम्भव था कि आंग्लदेशका राजा गियानाकी डचीको चुप चाप ले लेने दे, तथापि फिलिप और उसके उत्तराधिकारियोंका सर्वदा यही प्रयत्न रहता था।

तृतीय एडवर्डने फ्रांसके राज्यपर अपना अधिकार स्थापित करना चाहा। इसका परिणाम यह हुआ कि आंग्लदेश तथा फ्रांसके अनिवार्य कलहने और भी भीषण रूप धारण किया। उसने स्वयं फ्रांसके राज्यका उत्तराधिकारी होनेका दावा किया। उसका कथन था कि मेरी माता "इसाबेला" फिलिपकी पुत्री थी। संवत् १३७१ (सन् १३१४ ई०) में फिलिपकी मृत्यु हुई। उसकी मृत्युके पश्चात् उसके तीनों पुत्र क्रमशः राज-सिंहा-

सनारूढ़ हुए। उनमेंसे किसीको पुत्र नहीं हुआ, अतः कपेशियन वंश संवत् १३८५ (सन् १३२८ ई०) में लोप होगया। फ्रांसके व्यवस्थापकोंने कहा कि फ्रांसका राज्यनियम है कि स्त्री कभी राज्याधिकारिणी नहीं हो सकती। साथ ही इस नियमकी भी प्रधानता दिखलायी कि कोई भी स्त्री अपने पुत्रको राज्य नहीं दे सकती। इसका परिणाम यह हुआ कि तृतीय एडवर्ड राजपदसे बाहिष्कृत किया गया और चतुर्थ फिलिपका भतीजा वालवाका छठा फिलिप गद्दीपर बैठा।

तृतीय एडवर्ड संवत् १३८५ (सन् १३२८ ई०) में बालक था। अपने अधिकृत देशपर आधिपत्य स्थिर रखनेके लिये उसने भी गियानाने छठे फिलिपको कर देना स्वीकार किया। परन्तु जब उसने देखा कि फिलिप केवल मेरे स्वत्वको ही दबा नहीं रहा है, पर स्काच लोगोंकी सहायतार्थ अपनी सेना भी भेज रहा है तो उसे फ्रांसपर अपने उत्तराधिकारका फिर स्मरण हो आया।

उसने खुल्लम खुल्ला घोषित कर दिया कि फ्रान्सके सच्चे अधिकारी हम हैं। इसके पश्चात् ही फ्लैन्डर्सके समृद्ध नगरोंने जो भाव दर्शाया उससे इस घोषणाको बड़ी सहायता मिली। छठे फिलिपने फ्लैण्डर्सके काउन्टकी सहायता कर वहांके निवासियोंको स्वतंत्र होनेसे रोका था। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्लैण्डर्स-निवासियोंने फिलिपको त्यागकर एडवर्डको अपना राजा स्वीकार किया।

उस समयमें फ्लैण्डर्स पश्चिमीय यूरोपका शिल्प और व्यवसायका सबसे भारी तथा प्रसिद्ध प्रदेश था। घेन्ट वर्तमानमें मानचेस्टरके समान बड़े शिल्प-व्यवसायका नगर था। ब्रजका पोत—स्थान सर्वदा जहाजोंसे आज कलके अण्टवार्प और लिवरपूलके समान घिरा रहता था। यह सब समृद्धि आंग्लदेशपर निर्भर थी क्योंकि फ्लैण्डर्स-निवासी कपड़े तथा जेरा बनानेके लिये सब ऊन वहांसे ही मंगाते थे। संवत् १३९३ (सन् १३३६ ई०) में फिलिपकी रायसे फ्लैण्डर्सके

काउंटने वहांके सम्पूर्ण अंग्रेजोंको जेलमें डाल दिया। एडवर्डने ऊन-का भेजना तथा कपड़ोंका अपने देशमें आना बन्द कर इसका बदला लिया। साथ ही वह फ्लैन्डर्ससे नार्फोकमें आये हुए फ्लैन्डर्सके शिल्पव्यवसायी लोगोंकी सहायता तथा रक्षा करने लगा।

इन सब बातोंसे स्पष्ट प्रकट होता है कि फ्लैन्डर्स निवासियोंने अपने लाभार्थ एडवर्डको अपना राजा मान आंग्लदेशसे अपना सम्बन्ध स्थिर रखना चाहा। उन लोगोंने उसे फ्रांस जीतनेके लिये खूब उत्तेजित किया था। संवत् १३९७ (सन् १३४० ई०) में हम आंग्ल-देशके राज्य चिन्हमें फ्रांसके फ्लरडलेको भी लगा देखते हैं।

कुछ समयतक एडवर्डने फ्रांस देशपर आक्रमण नहीं किया परंतु उसके जहाजी फ्रांस राज्यके लड़ाऊ जहाजोंका नाश करके अपने राजाका अधिकार समस्त समुद्रपर फैलाने लगे। संवत् १४०३ (सन् १३४६) में एडवर्ड स्वयं नार्मण्डी पहुंचा। उस नगरको उजाड़ कर वह पेरिस नगरके समीप सीन तक आ गया और पेरिसकी ओर भी बढ़ा परंतु वहांसे उसे लौटना पड़ा क्योंकि उसका सामना करनेके लिये फिलिपने एक बड़ी भारी सेना एकत्र कर रक्खी थी। एडवर्ड क्रेसीमें ठहरा और यहांपर एक इतिहासप्रसिद्ध युद्ध हुआ। बैनकबर्नके युद्धके समान इस युद्धने भी संसारको यह कठिन शिक्षा दी कि यदि पैदल सैनिक सुस-ज्जित तथा सुशिक्षित हों तो सामन्तोंके अश्वारोहियोंको भली भांति पराजित कर सकते हैं फ्रांसके अभिमानी अश्वारोही नाइट एकाकी अत्यन्त वीरताका कार्य करते थे, परन्तु वे एकतासे नहीं लड़ सके। इसका परि-णाम यह हुआ कि आंग्लदेशीय धनुर्धरोंके लम्बे लम्बे धनुषोंसे छूटे हुए तीक्ष्ण बाणोंके सामने उन लोगोंके पैर उखड़ गये। आंग्लदेशके साधारण पदातियोंने फ्रांसके चुने चुने अश्वारोहियोंका घात कर दिया। यहींपर एडवर्डके पुत्रने श्याम कुमारकी प्रख्याति पायी थी। वह राजकुमार श्याम इसलिये कहाता था कि वह काला कवच धारण करता था।

इस समय बर्गण्डी तथा ओर्लियंसके लोग अपना आपसका कलह आंग्लदेशियोंके आक्रमणके भयसे भूल गये थे। इसी बीचमें धोखेसे बर्गण्डीके ड्यूककी हत्या की गयी। जब वह अपने भावी राजा डाफिनका हाथ चूमनेके लिये झुक रहा था उसके शत्रुओंने उसपर धोखेसे आक्रमण किया और उसे मार डाला। उसके पुत्र बर्गण्डीके नये ड्यूकने आंग्ल-वासियोंसे मित्रता करली। उसे सन्देह था कि उसके पिताकी हत्या डाफिनहीके कारण हुई है। हेनरीने संवत् १४७७ (सन् १४२० ई०) में ट्रायमें सन्धि-पत्रपर हस्ताक्षर करनेके लिये फ्रांसको बाधित किया। इस सुलहसे यह निश्चित हुआ कि छठें चार्ल्सकी मृत्युके पश्चात् फ्रांसका राजा हेनरी हो।

दो वर्ष पश्चात् पंचम हेनरी तथा छठें चार्लसकी मृत्यु हुई। इस समय पाचवें हेनरीका पुत्र छठा हेनरी नौ मासका था। अल्पवयस्क होनेपर भी ट्रायेकी सन्धिके अनुसार वह फ्रांस तथा आंग्लदेशका राजा हुआ परन्तु फ्रांसके एक ही भागने उसे अपना राजा माना। उसका चाचा बेडफोर्डका ड्यूक बहुत योग्य पुरुष था। उसने इसके अधिकारोंकी रक्षा इतनी सावधानीसे की कि थोड़े ही दिनोंमें आंग्लदेशके राजाने लायरके उत्तर फ्रांसका सम्पूर्ण प्रदेश जीत लिये यद्यपि दक्षिण प्रान्तमें षष्ठ चार्ल्सके पुत्र सप्तम चार्ल्सका ही राज्य रहा।

सप्तम चार्ल्सको राजगद्दी नहीं हुई थी इससे उसके सहायक भी उसे डाफिन कहा करते थे। वह शक्तिहीन तथा निरुद्यम था इसलिये आंग्ल-देशीय विजयकी वृद्धिको रोकनेका उसने कुछ भी प्रबन्ध नहीं किया और न उसने प्रजाको उत्साहित कर उनके दुःख दूर करनेका ही कोई प्रयत्न किया। जिस कार्यको चार्ल्स न पूरा कर सका था उसको फ्रांसकी पूर्वीय सीमापर रहनेवाली एक कृषक बालिकाने किया। अपने वंशजों तथा सगिनियोंके लिये वीर बालिका 'जोन आव आर्क' कृषककी एक साधारण कुमारी ही थी, परन्तु फ्रांस देश तथा वहांकी प्रजापर जो विपत्ति आ पड़ी थी उसकी उसे सदा चिन्ता लगी रहती थी। वह भावी दुर्दशा देख सदा

दया अनुभव करती थी। उसे सदा स्वप्न देख पड़ा करते तथा आकाशवाणी सुन पड़ती थी कि "तू राजाकी सहायताके लिये जा और उसको रीम्झ तक लेजाकर राजगद्दी दिला।

लोगोंको उसपर बड़ी मुश्किलसे विश्वास हुआ और तब वे डाफिनकी सहायतार्थ खड़े हुए। परन्तु उसके अटल विश्वासहीने उन समस्त बाधाओं तथा संशयोंको दूर किया। अन्तमें लोगोंको विश्वास हो गया कि परमेश्वरने स्वयं इसे भेजा है, तब उसे कुछ सेना लेकर ओर्लियन्सकी रक्षाके लिये भेजा गया। यह नगर "दक्षिण फ्रान्सका दिल" कहलाता था। कई महीनेसे आंग्ल-देशियोंने इसे घेर रक्खा था और अब यह उनके हस्तगत होने वाला ही था कि जोनने पुरुषकी भांति कवच और शस्त्र धारण करके घोड़ेपर सवार हो अपने सैनिकों सहित उधरको प्रस्थान किया। इसके सैनिक इसको देवताके समान मानते थे। इसके अदम्य विक्रम, शान्त चित्त तथा प्रचंड उत्साहसे उत्तेजित तथा संचालित सैनिकोंने आंग्ल-देशियोंको हराकर ओर्लियन्सकी रक्षा की। उसे ओर्लियन्सकी रानीकी उपाधि दी गयी। वह स्वच्छन्दतासे डाफिनको रीम्झ ले गयी। संवत् १४८६ (१७ जुलाई सन् १४२९) के श्रावणमें डाफिनका रीम्झके गिरिजेमें राज्याभिषेक हुआ।

उस नवयुवतीने कहा कि अब मेरा कर्तव्य पूरा हो गया, मुझे घर जानेकी आज्ञा दीजिये। राजा इससे सहमत न हुआ। इससे वह पूर्ण राजभक्तिके साथ राजाके शत्रुओंसे लड़ती रही। परन्तु अन्य सेनापति उससे ईर्षाद्वेष रखते थे और उसके साथी सैनिक भी स्त्रीके नेतृत्वमें रहनेमें लज्जा करते थे। संवत् १४८७ (सन् १४३० ई०) में वह कम्पेनकी रक्षा कर रही थी। उस समय वह निस्सहाय छोड़ दी गयी, बर्गण्डीके लोगों ने उसे बन्दी बना आंग्लदेशियोंके हाथ बेच दिया। वे लोग उसके बन्दी ही करनेसे सन्तुष्ट न हुए, उन लोगोंने सोचा कि इस औरतने हम लोगोंको बहुत नीचा दिखाया है अतएव उचित है कि इसके लिये ...

सम्पूर्ण कार्यकी अवहेलना की जाय। यह निश्चित्कर उन लोगोंने घोषित कर दिया कि यह जादूगरनी है, इसके समस्त कार्योंमें भूत पिशाच सहायक हैं। धर्माध्यक्षोंके न्यायालयमें इसका विचार हुआ। उसपर नास्तिकताका दोषारोपण करके वह संवत् १४८८ (सन् १४३१ ई०) में रुआन नगरमें जीते जी जला दी गयी। उसकी वीरता तथा धैर्य्यका उसके शत्रुओंपर भी ऐसा प्रभाव पड़ा कि एक सैनिक जो उसकी मृत्युपर हर्ष मनाने आया था चिल्ला उठा कि "हम लोगोंका नाश हो गया, हम लोगोंने एक देवीको जला दिया"। उसके शौर्य्यसे फ्रांसके सैनिकोंको इतना उत्साह मिला कि उन लोगोंने आंग्ल-शासनको फ्रांससे सर्वदाके लिये दूर कर दिया।

अब जब विजय बन्द हो गयी तो आंग्लदेशकी पार्लमेन्ट पुन द्रव्य देनेसे मुहं मोड़ने लगी। बेडफोर्ड जो अपनी योग्यतासे बराबर आंग्लदेशके स्वत्वोंकी रक्षा करता रहा था संवत् १४९२ (सन् १४३५ ई०) में मर गया। इसी समय बर्गण्डीके ड्यूक फिलिपने भी आंग्ल-देशियोंसे अपना सम्बन्ध तोड़ सप्तम चार्लससे मित्रता करली। उसने नेदरलैण्टको अपने अधिकारमें कर लिया फिलिपके राज्यका विस्तार अब इतना फैल गया कि वह यूरोपमें एक नरेशके तुल्य हो गया। फ्रांसने इसकी नयी मित्रताके प्रभावसे आंग्ल-देशियोंका प्रयत्न निष्फल हो गया। इस समयसे आंग्लदेशके हाथसे धीरे धीरे फ्रांसकी भूमि निकल गयी। संवत् १५०७ (सन् १४५० ई०) में वे नार्मण्डीसे निकाल दिये गये। तीन वर्षके बाद फ्रांस देशमें उनका बचा खुचा राज्य भी फ्रांसके राजाके अधीन हो गया। यही शतवर्षीय युद्धका अवसान है। यद्यपि केले अब भी आंग्ल-देशियोंके अधीन था तथापि उनका फ्रांस द्वारा अधिकार फैलानेका प्रयोजन सर्वदाके लिये समाप्त हो गया।

शतवर्षीय युद्धके समाप्त होते ही 'गुलाबका युद्ध' प्रारंभ हुआ।

इस युद्धमें दो प्रतिद्वन्द्वी थे जो आंग्ल देशकी राजगद्दीके लिये आपसमें युद्ध कर रहे थे। इनमें एक लैंकास्टरके वंशज थे। इसी वंशमें न हेनरीका जन्म हुआ था। दूसरे यार्कके ड्यूक थे। पहलेका चिह्न "लाल गुलाब" तथा दूसरेका "श्वेत गुलाब" था। यार्कका ड्यूक छठे हेनरीको गद्दीसे उतारना चाहता था। प्रत्येक प्रतिद्वन्द्वीके बड़े बड़े सामन्तोंकी सहायता अवश्य मिलती थी। जिस समयका वर्णन हो रहा है उस समयका इतिहास इन्हीं सरदारोंकी लड़ाई, झगड़े, विश्वासघात तथा हत्याओंसे भरा है। वे लोग धनाढ्य घरानेकी स्त्रियोंसे विवाहकरके प्रचुर धनके मालिक बन गये थे। इनमेंसे अनेक राजवंशसे भी सम्बन्ध रखते थे इसी कारण इन्हें इस झगड़ेमें भाग लेना पड़ा।

अमीर उमराओंकी शक्ति अब उन बातोंपर निर्भर नहीं थी जिनसे उनके साथ युद्धमें जाना ही पड़ता। राजाओंकी भांति वे लोग भी वेतनभोगी सैनिकोंको रखते रहते थे। ऐसे मनुष्य बहुतसे मिल जाते थे जो केवल [illegible] यथेच्छ व्यवस्था हो जानेसे सरदारोंके यहां सिपाहियोंमें नौकरी कर लेते थे और उनसे यह आशा की जाती थी कि वे लोगोंको निर्भर्त्सना करते रहें और काम पड़नेपर अपने स्वामीकी हानि करनेवालोंको मार डालेंगे। फ्रांसके युद्ध समाप्त होते ही बहुतसे उद्दण्ड लोग वेतन पाकर आंग्लदेशमें आये और अमीरोंके सैनिक बन देशको अशान्त करने लगे। वे लोग न्यायाधीशोंको भय दिखलाते थे और पार्लमेन्टके प्रतिनिधियोंके चुनावके अधिकार अमीरोंके हाथमें देते थे।

यहांपर "गुलाबके युद्ध" की अनेक छोटी छोटी लड़ाइयोंका वर्णन करना निष्प्रयोजन है। ये लड़ाइयां सम्वत् १५१२ (सन् १४५५ ई०) में आरम्भ हुईं। तबसे यार्कका ड्यूक तीन वर्ष तक अर्थात् ट्यूडर वंशज सप्तम हेनरीके आरोहण पर्यन्त लंकास्टर [illegible] निःशक्त रहा छठे हेनरीको राज्यसे च्युत करनेका [illegible] प्रयत्न करता रहा। कई लड़ाइयोंके पश्चात् संवत् १५१८ (सन् १४६१ ई०) में

पार्लमेण्टने यार्कके नेता चतुर्थ एडवर्डको राजा बनाया और हेनरी तथा उसके दो लैंकास्टरी पूर्वजोंको राज्यका चोर घोषित किया। एडवर्ड शक्तिशाली राजा था। उसने अपने अधिकारको अन्ततक स्थिर रक्खा। संवत् १५४० (सन् १४८३ ई०) में उसकी मृत्यु हुइ।

एडवर्डका पुत्र पंचम एडवर्ड उसकी मृत्युके समय अबोध बालक था इससे उसके चाचा ग्लूस्टरके ड्यूक रिचर्डने राज्यप्रबन्ध अपने हाथमें ले लिया। उसे राजगद्दीकी लालचने इतना सताया कि वह उसे न दबा सका, अन्तको उसने राजगद्दीपर भी हाथ मारा। रिचर्डकी अनुमतिसे चतुर्थ एडवर्डके दोनो पुत्र लन्दनके धवरहरमें मारे गये। यद्यपि उस समयमें यह प्रथा सी थी कि अपने प्रतिद्वन्द्वीकी हत्यामें किसी प्रकारके कलंककी सम्भावना न थी तथापि इस हत्याके कारण रिचर्ड बदनाम हो गया। राज्यका एक नया दावेदार खड़ा हुआ और उसने भी एक षड्-यन्त्र रचा। संवत् १५४२ (सन् १४८५ ई०) में वास्वर्थ फील्डमें घोर युद्ध हुआ। उस युद्धमें रिचर्डकी हार हुई और वह मारा गया। उसके सिरका भूतलपर गिरा मुकुट अब ट्यूडर वंशज सप्तम हेनरीके सिरपर रखा गया। इसका राजमुकुटपर कुछ भी हक नहीं था यद्यपि उसकी माता तृतीय एडवर्डके वंशसे थी। उसने पार्लमेण्टकी अनुमति शीघ्र प्राप्त करली। उसने चतुर्थ एडवर्डकी पुत्रीसे विवाह कर ट्यूडर वंशके चिन्हमें "लाल तथा श्वेत गुलाबों" को मिला दिया।

गुलाबके युद्धका मुख्य परिणाम यह हुआ कि इस युद्धमें आंग्लदेशके समस्त प्रधान अमीर उमराव शामिल हुए। इनमेंसे अधिकतर तो युद्धमें ही मारे गये और कितनोंकी हत्या विजयी प्रतिद्वन्द्वियोंने करवा डाली। इसका परिणाम यह हुआ कि राजाकी शक्ति पहिलेसे अधिक हो गयी। राजा पार्लमेन्टको तोड़ तो न सकता था, परन्तु उसने उसको अपने अधिकारमें अवश्य कर लिया था। एक शताब्दी या कुछ अधिक काल तक ट्यूडर राजाओंने अनियन्त्रित राज्य किया। जिस स्वतन्त्रताकी नींव एडवर्ड तथा अन्य लंका:

स्टर राजाओंके समयमें पड़ गयी थी उसका आनन्द आंग्लदेशको कुछ समय
पर्यन्त किंचिन्मात्र भी न मिला । उस समय बाहर तथा भीतर दोनों ओरसे
व्याकुल किये जानेपर उनको अपने देशपर ही भरोसा रखना पड़ता था ।

शतवर्षीय युद्धकी समाप्तिके बाद फ्रांस देशमें नृपतन्त्र सैन्य विभाग
की अधिक उन्नति हुई, इससे राजाकी शक्ति और बढ़ गयी । सामन्तदारोंसे
सेनाका कमीशन लोप हो चुका था । युद्धके छिड़नेके पूर्वहीसे सामन्तदारोंके
सैन्यसहायताके लिये रुपया दिया जाने लगा था । अब उन्हें अपनी जागीरोंके
बदले सेना नहीं देनी पड़ती थी । सैन्यश्रेणियां यद्यपि नामको राजकीय सेना-
पतियोंके अधीन रहती थीं पर वास्तवमें राजाके अधीन न थीं । सैनिकोंके
वेतन निश्चित नहीं रहते थे इस कारण वे अपने देशवासियों तथा शत्रुओं
दोनोंको लूटतेथे । युद्ध समाप्त होनेके पश्चात् ये अनियमित सैन्यसमूह देशके
लिये एक भयानक यमदूत से हो गये । लोग इन्हें फ्लेयर (खाल खींचनेवाले)
कहा करते थे क्योंकि ये कृषकोंसे रुपया वसूल करनेके लिये उन्हें बड़ी कठ-
से भयंकर यातना देते थे । संवत् १४९६ (सन् १४३९ ई)में राजने
इस त्रासको दूर करनेके लिये एक उपाय निकाला । जनताके प्रतिनिधियों-
ने भी इसका समर्थन किया । इसके बाद यह नियम हो गया कि कोई
कोई मनुष्य बिना राजाकी आज्ञाके सैन्य एकत्र न करे, राजा ही सेनापति
नाम, सैनिकोंकी संख्या तथा अस्त्र शस्त्रका ब्योरा निश्चित करता था ।

संस्थाने यह भी नियम बनाया कि सीमाकी रक्षाके लिये नि-
सेनाकी आवश्यकता हो उसके वेतनके लिये राजा टैल नामी कर लगा दे ।
यह विशेष अधिकार बहुत हानि-कारक हुआ क्योंकि इससे राजाके
अधिकारमें सेना हो गयी और उसके वेतनके लिये वह इच्छानुसार
सर्वदा कर संचित कर सकता था । इस करको समय समयपर उसने
बढ़ाया । वह आंग्लदेशीय राजाओंके समान प्रजाके प्रतिनिधियोंके
नियत किये हुए मापरूपी करोंके भरोसे नहीं था ।

यदि फ्रांसका राजा अपने राज्यको संगठित करना चाहता था तो उ

पश्चिमी यूरोप

११वे लुईके अधीन
फ्रांस
११ वे लुईके राज्यारोहण के
समय राजकीय प्रदेश
" के विजित प्रदेश
फ्यूडल प्रदेश
बर्गण्डी राज्य
इंग्लैण्ड
इंग्लिश चैनल
पेरिस
बर्गण्डी
स्विज़रलैण्ड
प्रोवेन्स
भूमध्य सागर
स्पे न

उचित था कि वह अपने सामन्तोंकी शक्ति नष्ट करे क्योंकि उनमेंसे कितने उसीके समान शक्तिशाली थे पूर्वमे लिख आये हैं कि सेन्ट लुई तथा तेरहवीं शताब्दीके अन्य राजाओंकी कठोरता तथा कुटिल नीतिके कारण प्राचीन वंशोंका नाश हो चुका था। परंतु उसने तथा उसके उत्तराधिकारियोंने अपने पुत्रोंको भिन्न भिन्न प्रदेश प्रदान कर प्रतिद्वंद्वियोंके नूतन वंश उत्पन्न कर दिये। इस प्रकार मन्सबदारोंके नये तथा शक्तिशाली वंश चलने लगे जिनमें ओर्लिअन्स, आजू, बोरबोन तथा बर्गण्डी सबसे शक्तिमान् थे। पहले चित्रसे आंग्लदेशियोंको भगानेके बाद राजाके राज्य का परिचय मिलता है। उसीसे प्रकट होता है कि फ्रांसको मन्सबदारोंसे स्वतन्त्र करके एक शक्तिशाली राज्य बनानेके लिये राज्यमे कितने संगठनकी आवश्यकता थी। सरदारोंके अधिकार घटने प्रारंभ हो गये थे। उनको सिक्का बनाना, सेना रखना तथा कर लगाना मना था और राजाके न्यायाधीशोंका अधिकार सारे राज्यपर कर दिया गया। परंतु फ्रांसको संगठित करनेका कार्य सप्तम चार्ल्सके पुत्र ग्यारहवें लूईके हाथसे पूरा हुआ। यह बहुत ही विचक्षण तथा मायावी था। इसने संवत् १५१८ से लेकर १५४० (सन् १४६१-१४८३ ई०) पर्यन्त राज्य किया।

बर्गन्डीका ड्यूक फिलिप (संवत् १४७६-१५२४, सन् १४१९-१४६७ ई०) तथा उसका पुत्र चार्ल्स (संवत् १५२४-१५३४, सन् १४६७-१४७७ ई०) दोनों लूईके सबसे भयानक मन्सबदार थे। ग्यारहवें लूईके एक शताब्दी पूर्व बर्गन्डी वंशका लोप हो गया था। अब संवत् १४२० (सन् १३६३ ई०) में जिस राजा जॉनको आंग्ल देशीय बन्दी कर ले गये थे उसीने बर्गण्डीको अपने पुत्र फिलिपको दे दिया। इस वंशके भाग्यसे कई अच्छे अच्छे वंशोंमें विवाह हो गये तथा दैवात् कई सम्पत्तियां मिल गयीं इसलिये बर्गन्डीके ड्यूकोंने अपने राज्यको इतना फैला लिया कि कुछ समयके पश्चात् फ्रान्चे, कामटे, लक्सेम्बर्ग, फ्लैन्डर्स, आर्टोई, ब्रावन्ट तथा अन्य प्रदेश जिनसे आधुनिक हालैण्ड तथा बेल्जियम बने हैं सब बर्गण्डीके अधीन हो गये।

अपने पिताकी मृत्युके कुछ समय पहले चार्ल्स फ्रांसके अन्य [illegible]
दारोंको लूईके प्रतिकूल विद्रोह करनेके लिये मिलाता रहा। [illegible]
होनेके बाद उसने अपना ध्यान दो ओर दौड़ाया। प्रथम तो [illegible]
लारेनके विजयका संकल्प किया क्योंकि इस प्रदेशने उसके राज्यको दो भागोंमें
विभाजित कर रक्खा था जिससे फ्रान्चे-कान्टेसे लक्सेम्बर्ग जानेमें उसे [illegible]
कठिनता पड़ती थी। दूसरे वह अपने पूर्वजों द्वारा जीते हुए देशका [illegible]
जर्मनी तथा फ्रांसके मध्य एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करना चाहता [illegible]

चार्ल्सकी तृष्णासे न तो फ्रांसके राजाको और न जर्मनीके सम्राट्को [illegible]
सहानुभूति थी। अपने महत्वाकांक्षी मन्सबदारको विदलित करनेके लिये
लूईको अपनी प्रखर बुद्धिका पूरा प्रयोग करना पड़ा। जब उसने ट्रवरमें राजपदके
आकांक्षा की तो सम्राट्ने भी उसको राजा बनाना स्वीकार नहीं किया। [illegible]
साथ चार्ल्सको एक ऐसी अपमानजनक हार खानी पड़ी जिसकी उसे आशा
भी न थी। स्विस लोगोंने उसके शत्रुकी सहायता की थी। इससे क्रुद्ध हो उसने [illegible]
देनेके हेतु उनपर आक्रमण किया पर दो स्मरणीय युद्धोंमें परास्त हुआ।

दूसरे वर्ष उसने नान्सी नगर लेनेका प्रयत्न किया। वह भी [illegible]
हुआ और वह मारा गया। उसकी सन्ततिकी उत्तराधिकारिणी [illegible]
पुत्री मेरी हुई। उसने तत्काल सम्राट्के पुत्र मैक्सिमीलियनसे [illegible]
विवाह कर लिया। इस सम्बन्धसे लूई बहुत असन्तुष्ट हुआ [illegible]
बर्गन्डीकी डची तो उसके अधिकारमें आही चुकी थी। [illegible]
सम्पत्ति लेनेकी भी वह आशा करता था। इस विवाह सम्बन्धके [illegible]
[illegible] पता तब लगेगा जब हम पंचम चार्ल्स तथा उसके विस्तृत [illegible]
[illegible] का वृत्तान्त आरम्भ करेंगे।

अपने प्रधान मन्सबदारोंकी शक्तिको रोकने तथा बर्गन्डी प्रदेशको
अपने राज्यमें मिलानेके अतिरिक्त ११ वें लूईने फ्रांसके राज्यके [illegible]
और भी कितने ही कार्य किये। मध्य तथा दक्षिणी फ्रांसके कितने प्रदेशोंका
वह स्वयं उत्तराधिकारी बना। ये प्रदेश अपने स्वामियोंकी मृत्युके [illegible]

सम्वत् १५३८ (सन् १४८१ ई०) में उन लूईके हाथ लगे। इसने उन सब मन्सब-दारोंका जिन्होंने वीर चार्ल्सके साथ इसके प्रतिकूल विद्रोह किया था। अनेक प्रकारसे अपमान किया। इसने आर्लिंकनके ड्यूकको वन्दी कर लिया तथा नीमर्सके विद्रोही ड्यूकको बेरहमीसे मार डाला। लूईके राजनीतिक उद्देश्य उत्तम थे, परन्तु उनके साधनके उपाय अति घृणित थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उसको इस बातका बड़ा गर्व था कि जिन दुष्टों तथा विश्वासघातियोंको वह फ्रांस राज्यकी भलाईके लिये फंसा लेता था वह आप उन सबसे बढ़कर दुष्ट तथा विश्वासघाती था।

शतवर्षी युद्धसे छुटकारा पानेपर फ्रान्स तथा आंग्ल दोनों देश पहलेसे कहीं अधिक शक्तिशाली हो गये। दोनों देशोंमें मन्सबदारोंकी शक्तिको नष्ट कर राजाने अपनेको उनके भयसे मुक्त कर लिया। राज-शक्ति दिन पर दिन बढ़ती जाती थी। व्यवसाय तथा वाणिज्यकी वृद्धि होनेसे राजलक्ष्मी भी समृद्ध हो रही थी। इनसे इतना अधिक कर मिलता था कि राजा कानून तथा देशकी रक्षाके लिये प्रस्तुत सैन्य तथा कर्म्मचारी रखते थे। अब उन्हे अपने मन्सबदारोंके अनिश्चित वचनोंके भरोसे नहीं रहना पड़ता था। साराश यह है कि फ्रांस तथा आंग्ल दोनों देश स्वतंन्त्र हो रहे थे। इनमें जातीयताका प्रादुर्भाव हो रहा था और राजा-के प्रति प्रेम, भक्ति तथा आज्ञाकारिताकी उत्पत्ति हो रही थी।

ज्यों ज्यों राजा की शक्तिका बल बढ़ता जाता था त्यों त्यों मध्ययुगकी धर्मसंस्था की दशामें भी परिवर्त्तन होता जाता था। इसके पहले जैसा कि हम लोग देख चुके हैं यह केवल एक धर्मसंस्था ही न थी, परन्तु सर्वव्यापी साम्राज्यकी भांति बहुत कुछ शासनका भी प्रबन्ध करती थी। इन कारणोंसे अच्छा होगा कि हम लोग प्रथम एडवर्ड तथा फिलिपके समयसे लेकर सोलहवीं शताब्दीके प्रारम्भ काल तक धर्मसंस्थाके इतिहासकी आलोचना करें।

अध्याय २०

पोप तथा राज्य-परिषद् ।

मध्य युगमें धर्मसंस्था तथा उसके अध्यक्षोंने शासनप्रबन्ध का जो अधिकार अपने हाथमें ले रक्खा था उसका मुख्य कारण यह था कि उस समयमें कोई भी राजा इतना शक्तिशाली तथा योग्य नहीं था जिसकी प्रजा बहुसंख्यक, सम्पन्न तथा राजभक्त हो। जब तक मन्सबदारोंके कारण देशमें अराजकता वर्त्तमान थी तब तक तो धर्मसंस्था वाले शान्ति स्थापन कर, न्यायपरायण हो, दीनोंकी रक्षा तथा शिक्षाकी उन्नति कर उस समयके अयोग्य तथा उद्दण्ड राजाओंकी अयोग्यताकी पूर्ति करते रहे। अब आधुनिक राज्यकी उत्पत्तिसे विशेष कठिनाइयां उपस्थित होने लगीं। प्राचीन समयमें पादरी लोग जिस अधिकारका उपभोग कर चुके थे उस अधिकारको वे अब भी अपने हाथमें रखना चाहते थे क्योंकि उन्हें विश्वास था कि यह अधिकार वास्तवमें उन्हींका है। इधर जब नरेशोंने देखा कि हम अपनी प्रजाका शासन तथा रक्षा करनेके योग्य हो गये हैं तो वह पादरियों तथा धर्माध्यक्ष पोपके हस्तक्षेपका प्रतिरोध करने लगे। अब साधारण लोग भी अच्छे शिक्षित होने लगे। इस कारण शासनके लिये राजाको पादरियोंके भरोसे नहीं रहना पड़ता था। उनके अधिकार राजाकी आंखमें गड़ने लगे क्योंकि इस दशामें उनकी अवस्था अन्य प्रजाने पृथक् हो गयी थी और उतना धन होनेके कारण वे लोग राजाके लिये भी शंकास्थल हो गये थे। ऐसी दशामें यह आवश्यक हो गया कि राजा तथा धर्म संस्थाएं

सम्बन्धका निर्णय कर दिया जाय । इस समस्याको सार। यूरोप चौदहवीं शताब्दीसे सुलझा रहा था तो भी वह सफल नहीं हुआ था ।

राजाके प्रतिकूल अपने स्वत्वकी रक्षा करनेमे जो कठिनाई धर्माध्यक्षों-को उठानी पड़ी थी उसका ठीक ठीक पता उस कलह-वृत्तांतसे चलता है जो सेन्ट लुईके पौत्र फिलिप तथा अष्टम बोनीफेसके बीच हुआ था । यह मनुष्य असीम उत्साही था और वृद्धावस्थामें सम्वत् १३५१ में (सन् १२९४ ई०) पोप पदपर आया। प्रथम कलहका प्रारम्भ यों हुआ । आंगल् तथा फ्रास दोनोके राजा साधारण प्रजाकी भाति धर्माध्यक्षोंपर भी कर लगाते थे। यह स्वाभाविक था कि यहूदियो, नगरनिवासियों तथा मन्सब-दारोंसे यथाशक्ति धन संचित कर चुकनेपर राजा अपना ध्यान पादरियोकी समृद्ध सम्पत्तिकी ओर भी डालता यद्यपि पादरियोंका कहना था कि उनकी सम्पत्ति देवार्पण थी और उसका राजाके अधिकारसे कोई मतलब नहीं था । प्रथम एडवर्डने संवत् १३५३ मे (सन् १२९६ ई०) पादरियोंसे उनकी निजी सम्पत्तिका पांचवां अश कररूपसे मागा । फिलिपने पादरियों तथा साधारण प्रजाके धनका शतांश और पुनः पचासवां अंश कर-मे लिया ।

बोनीफेसने सम्वत् १३५३ मे (सन् १२९६) इस न्याययुक्त प्रथाका अपने " क्लेरिसिस लेइकस " नामी घोषणापत्रमे विरोध किया । उसमें उसने कहा था कि साधारण जन पादरियोंके सर्वदा प्रतिरोधी रहे हैं और धर्मसंस्थाओंपर कर लगाकर राजा भी वही विरोध प्रकट कर रहा है । कदाचित् उसको इस बातका ध्यान नहीं है कि पादरी तथा उसकी सम्पत्तिपर उसका कुछ भी अधिकार नहीं है । इस कारण उसने समस्त पादरी तथा पुरोहितोंको मना कर दिया कि उसकी आज्ञा बिना किसी भी बहानेसे या किसी प्रकारसे भी वे लोग राजाको कुछ भी कर न दे ।' उसने यह भी उद्घोषित किया कि जो राजा या युवराज धर्म-संस्थापर कर लगावेगा वह पदच्युत कर दिया जावेगा ।

इधर तो पोपने यह घोषणा कर पादरियोंको कर देनेसे रोका था उधर फिलिपने अपने देशसे सोने तथा चांदीका भेजना एकदम बन्द कर दिया । इसका परिणाम यह हुआ कि पोपकी प्रधान आमदनी बन्द हो गयी क्योंकि फ्रांसकी धर्मसंस्था रोमको कुछ भी नहीं भेज सकती थी। अन्तमें पोपको अपना हठ छोडना पड़ा । दूसरे वर्ष उसने उद्घोषित किया कि उसका तात्पर्य यह नहीं था कि पादरी लोग अपना साधारण भौमिक कर और राजाके ऋण भी न दें ।

सम्वत् १३५७ में (सन् १३०० ई०) रोममें एक बड़ा भारी उत्सव मनाया गया। इसमें बोनीफेसने पश्चिमीय यूरोपके समस्त धर्माध्यक्षोंके निमन्त्रित किया था। नयी शताब्दीके आरम्भपर खुशी मनायी जाय थी । इतनी असुविधा होनेपर भी जो प्रतिष्ठा इस समय पोपकी हुई वह कभी भी नहीं हुई थी । उस समय विदित होता था कि पश्चिमीय यूरोप का प्रधान आधिपति वही है । लोगोंका विचार है कि उस समय यूरोपके भिन्न भिन्न प्रान्तोंसे लगभग २० लाख मनुष्य रोममें एकत्र हुए थे। वहां इतनी अधिक भीड़ हुई कि सड़कोंके चौडा कर देनेपर भी कितने तो दबकर ही मर गये । पोपके कोषमें इतना अधिक धन बहा चला आ रहा था कि दो मनुष्य केवल महात्मा पीटरके समाधिपर चढी हुई भेंट-पूजाको फावड़ोंसे बटोर रहे थे ।

पर बोनीफेसको शीघ्र ही विदित हो गया कि चाहे ईसाई संसार रोमको प्रधान माने भी पर कोई राष्ट्र उसे अपना शासक नहीं मानेगा । जब फिलिपने फ्लैण्डर्सके काउंटको बन्दी कर लिया था तो पोपने उसके पास एक उद्धत दूत भेजकर कहलाया था कि वह काउंटको छोड़ दे । इसपर फिलिपने बिगड़कर कहा कि दूत की इतनी कठोर भाषा राजद्रोहात्मक है और उसने अपने किसी वकीलको पोपके पास भेजकर कहलाया कि इस दूतको तनज़्जुल कर दिया जाय और दंड भी दिया जाय ।

फिलिपके सलाहकार कुछ वकील लोग थे और फ्रांसके वस्तुतः शासक

वे हो थे। उन लोगोंने रोमन शासनप्रणालीका खूब अध्ययन किया था और वे नव रोमन राजाओंके अनियन्त्रित अधिकारको बहुत अच्छा समझते थे। उनके विचारमे राजा सबसे प्रधान था अतः वे लोग राजासे सर्वदा कह करते थे कि आप पोपको उसके उद्धत व्यवहारके लिये उचित दंड दीजिये। पोपके प्रतिकूल किसी भी कारवाई करनेके प्रथम फिलिपने अपनी नागरिक प्रजा महाजनो तथा पादरियोंके प्रतिनिधियोंको निमन्त्रित किया यह प्रतिनिधि-संस्था फिलिपके एक वकीलसे सब कथा सुनकर राजाकी सहायताके लिये कटिबद्ध हो गयी।

फिलिपको सबसे बड़ा मंत्री नोगारट था। उसने पोपका सामना करनेका बीड़ा उठाया। उसने इटलीमें कुछ सैन्य एकत्रित कर बोनीफेस-पर आक्रमण किया। उस समय वह अनागनीमें था। वहांपर उसके पूर्व अधिकारियोंने फ्रेडरिक बारबरोसा तथा द्वितीय फ्रेडरिकको पदच्युत किया था। इस समय बोनीफस घोषित कराना चाहता था कि फ्रांसका राजा ईसाई धर्मसंस्थासे निकाल दिया गया है। ठीक उसी समय नागरट पोपके प्रासादमें अपने सैनिको सहित घुस गया और उस वृद्ध तथा अभिमानी पोपका निरादर करने लगा। नगरवासियोंने नागरेटको दूसरे ही दिन वहांसे चले जानेके लिये बाधित किया पर बोनीफसका हौसला टूट गया था इससे वह शीघ्र ही मर गया।

फिलिपकी इच्छा अब पोपसे विवाद करनेकी नहीं थी। संवत् १३६२ (सन् १३०५ ई०) में उसने बोर्डोके आर्कबिशपको इस शर्तपर पोप बननेमें सहायता दी कि वह अपनी राजधानी फ्रांसमें रखे। नये पोपने समस्त कार्डिनलोंको (धर्मसंस्थाके एक प्रकारके उच्च पदाधिकारियोंको) लियनमें निमन्त्रित किया और पंचम क्लेमेण्टके नामसे पोप पदपर आरूढ़ हुआ। जबतक वह धर्माध्यक्ष रहा वह फ्रांसमें ही रहा और एक अबेसे दूसरे अबेमें भ्रमण करता रहा। फिलिपकी आज्ञानुसार

अपनी इच्छाके प्रतिकूल उसने स्वर्गीय बोनीफेसपर एक प्रकारका अभियोग चलाया। राजाके वकीलोंने बोनिफेसकी अनेक प्रकारकी शिकायतें कीं। उसके अधिकांश आज्ञापत्र तोड़ दिये गये और जिन लोगोंने उसके विरुद्ध आचरण किया था वे विमुक्त कर दिये गये। राजाको प्रसन्न करनेके लिये पोपने टेम्पलर नामक मठवासियोंपर अभियोग चलाया। यह संस्था तोड़ दी गई और राजाकी अभिलाषाके अनुसार उसकी सम्पत्ति राज्य-में मिला ली गयी। पोपके राज्यमें रहनेसे राजाको विशेष लाभ हुआ। संम्वत् १३७१ (सन् १३१४ ई०) में क्लेमेण्टकी मृत्यु हुई। उसके उत्तराधिकारीने अपना निवास उस समयके फ्रांस राज्यकी सीमाके बाहर अविग्नान नगरमें रक्खा। वहांपर उन्होंने एक विस्तृत प्रासाद बनवाया। इसमें साठ वर्ष पर्यन्त कई पोप बड़े समारोहके साथ रहे।

(१३०५–१३७७ ई०) संम्वत् १३६२ से लेकर सम्वत् १४३४ के समयको "बैबेलोनियन कारावास" कहते हैं। इतने समयतक पोप रोमसे निर्वासित रहा। इस समयमें धर्मसंस्थाकी बड़ी निन्दा हुई। इस समयके पोप अच्छे तथा परिश्रमी थे पर सबके सब फ्रांस-देशीय थे इनसे लोगोंको इस बातका सन्देह होता था कि ये फ्रांसके राजाके आधिपत्यमें हैं। इस सन्देह तथा विलासप्रियताके कारण उनका अन्य राज्योंमें अपमान होने लगा।

जब पोप रोममें रहते थे तो उन्हें इटलीकी सम्पत्तिसे कुछ कर मिल जाया करता था। अविग्ननमें रहनेसे उनको इसका अधिक भाग मिलना बन्द हो गया। इस कमीको कर बढ़ाकर पूरा करना पड़ा क्योंकि इधर शानदार पोपदर्बारका व्यय भी बढ़ गया था। उन लोगोंने द्रव्य एकत्र करनेका जो उपाय रचा उससे उनकी और भी अप्रतिष्ठा हुई। इन उपायोंमें पोपके दरबारियोंको समस्त यूरोपीय धर्मस्थानोंमें नियुक्त करना, धनादान, बिशपोंकी नियुक्ति तथा अभियोगोंके विचारके लिये अधिक शुल्क रखना सबसे घृणित थे।

धर्मसंस्थाके पदोपर रहनेवाले बहुतसे बिशप और एबट आदि अधिकारियोंकी आवश्यकतासे कहीं अधिक आय थी। अपनी आमदनी बढ़ानेके लिये पोप इन पदोंमेंसे जितनी अधिक हो सके अपने अधिकारमे लाना चाहता था। उसने रिक्त पदोपर पुनर्नियुक्ति करनेका अधिकार अपने हाथमें रक्खा था। वह लोगोंको धर्मसंस्थामे स्थान खाली होनेपर अधिकारी बना देनेका प्रलोभन देकर अपना अर्थ सिद्ध करने लगा। जिन लोगोंकी नियुक्ति इस प्रकार होती थी वे लोग "प्रोवाइजर" कहाते थे और ये लोग बड़े बदनाम थे। इनमे से कितने तो परदेशी होते थे। लोगोको यही सन्देह होता था कि इनकी नियुक्ति केवल करके लिये हुई है। ये धर्मपदके योग्य हैं या नहीं इसका विचार नहीं किया गया है।

पोपके लगाए करोका आंग्ल देशमें बड़ा प्रतिरोध किया गया। क्योंकि फ्रास तथा आंगल देशसे युद्ध हो रहा था और पोप फ्रासका पक्षपाती था। (सन् १३५२ ई०) संम्वत् १४०६ में पार्लमेन्टने एक नियम बनाया। इसके अनुसार पोपके नियुक्त किये हुए सम्पूर्ण धर्माधिकारी राजद्रोही समझे गये। जो कोई चाहे इन्हें दण्ड दे सकता था क्योंकि राजा तथा राज्यके विरोधी होनेसे इनकी रक्षाका कोई उपाय नहीं था। ऐसे ऐसे नियमोंसे कोई लाभ न हुआ और पोप स्वेच्छानुसार अधिकारपद प्रदान कर अपनी तथा अपने दरबारियोंकी भलाई करता रहा। किसी न किसी बहानेसे आंग्ल देशका द्रव्य अविग्नन तक पहुंच ही जाता था। राजा इसे नहीं रोक सका। (सन् १२७६ ई०) संम्वत् १४३३ में पार्लमेण्टने अनुसन्धान किया तो प्रकट हुआ कि जो कर राजाको दिये जाते थे उनसे पाचगुना अधिक कर पोपको दिये जाते थे।

पोप तथा रोमन धर्मसंस्थाकी कड़ी आलोचना करनेवालोंमें आक्सफर्डका धर्म्मोपदेशक जान विक्लिफ सर्वश्रेष्ठ था। वह (सन् १३२० ई०) संम्वत् १३७७ में पैदा हुआ था पर उसकी प्रसिद्धि (सन् १३६६ ई० संम्वत् १४२३ में हुई। जब पंचम अर्बनने आंग्ल देशसे वह कर

मांगा जो कि पोपका सामन्त होनेपर राजा जानने देनेका वचन दिया था। पार्लामेंटने उत्तर दिया कि विना अनुमति लिये प्रजाको इस प्रकारके बन्धनमें डालनेका जानको कोई अधिकार नहीं था। विक्लिफके पोपके विरोध करनेका समय यहींसे प्रारंभ होता है। उसने सिद्ध करना चाहा कि पोप तथा जानके मध्य जो सुलह हुई थी वह न्याययुक्त न थी। उसने इस बातकी शिक्षा देनी आरंभ की कि यदि धर्मसंस्थाकी सम्पत्तिका दुरुपयोग हो तो राजा उसे जब्त कर सकता है और बाइबिलके अनुकूल काम करनेके अतिरिक्त पोपको और किसी बातका अधिकार नहीं है। दश वर्षके बाद पोपने विक्लिफके प्रतिकूल घोषणा निकाली। शीघ्र ही वह पोप पदके अस्तित्व तीर्थ यात्राओं तथा स्वर्गवासी साधु महात्माओंकी पूजापर आक्षेप करने लगा। वह रूपान्तरी भावके * सिद्धान्तका भी खण्डन करने लगा।

वह केवल धर्माध्यक्षोंके उपदेशों तथा व्यवहारके दोषोंकी ही निन्दा नहीं करता था। उसने "उपदेशकों" की एक संस्था स्थापित की। इनका काम घूम घूम कर परोपकार करके अपने उदाहरणसे उपदेशकों तथा महन्तोंका सुधारना था।

अपने प्रयत्नकी सफलताके लिये उसने "बाइबिल" का अनुवाद सरल आंग्ल भाषामें कराया। उसने आंग्लभाषामें अनेक धर्मोपदेश तथा उपदेशपूर्ण पुस्तिकाएं लिखीं। आंग्लभाषामें गद्यका वही जन्मदाता है। लोगोंका कहना है कि उसके "अति रम्य करुणा रस" तीव्र तथा ललित व्यंग्योक्तिसे तथा छोटे छोटे और ओजस्वी वाक्योंके प्रभावजनक

---

* Transubstantiation or change—एक पदार्थका दूसरे पदार्थमें बदल जाना। ईसाई साहित्यमें यूकारिस्ट या भगवद्भोगकी विधिमें रोटीका ईसाके शरीर और शराबका उनके रुधिरके रूपमें बदल जानेका सिद्धान्त 'रूपान्तरी भाव' का सिद्धान्त कहा जाता है।

भावोंसे भाषाके दोष उत्तमता छिप जाते है। यद्यपि उस समय आंग्ल भाषा अपरिपक्व दशामें थी फिर भी विक्लिफकी रचनाको आज भी पढ़ते समय हम लोग मुक्तकंठसे उसकी प्रशंसा किये बिना नही रह सकते। उसके अनुयायी लोलाड कहाते थे। उसके सिद्धान्त पीछेसे 'ओपन एयर प्रीचर्स, (खुली हवामें प्रचारकों) द्वारा खूब फैले। लूथरने भी फिर इन्हीं सिद्धान्तोंको अपनाया।

विक्लिफ तथा उसके "सरल उपदेशकों" पर यह अभियोग लगाया गया कि जिस असन्तोष तथा अराजकताके कारण कृषक-युद्ध आरंभ हुआ था उसको उभाड़ने वाले येही लोग हैं। चाहे यह अभियोग सच्चा था या झूठा पर इसका परिणाम यह हुआ कि उसके कितने अमीर साथी उसका साथ छोड़कर चले गये। पर इससे तथा धर्मसंस्थाकी ओरसे प्राप्त परिवादसे भी उसे विशेष क्षति नहीं हुई। उसने (सन् १३८४ ई०) संवत् १४४१ में शान्तिपूर्वक देह त्यागा। उसकी मृत्युके उपरान्त उसके साथियोंपर अभियोग चलाया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि सबके सब ढीले हो गये। पर उसके सिद्धान्तोंका प्रचार वोहेमियामें दूसरे उत्साही सुधारक जान हसने बड़े उत्साहसे किया। उसने धर्मसंस्थाको भी वहुत तंग किया। विक्लिफ उन सुधारकोंमें प्रथम है जिन लोगोंने पोपकी प्रधानता तथा रोमकी धर्मसंस्थाके व्यवहारोंका खंडन किया। इन्हींका खंडन डेढ सौ वर्ष बाद लूथरने मध्य युगकी धर्मसंस्थाके प्रतिकूल अपने प्रवल आन्दोलनमें किया।

(सन् १३७७ ई०) सम्वत् १४३४ में नवां ग्रेगरी पुन रोम लौट आया। पोप लोग सत्तर वर्ष पर्यन्त निर्वासित रहे थे और इन दिनोंमें ऐसी बहुत सी बातें हुई थीं जिनसे पोपके अधिकार तथा महत्वमें कमी हुई थी पर अविग्नान रहनेसे पोपकी जो कुछ अप्रतिष्ठा हुई वह उनके रोम लौटनेके बादकी आपत्तियोंके सामने कुछ भी नहीं है।

प्रश्नको हल करना चाहा। जनतामें यह प्रश्न उठा कि ईसाई मतमें एक शक्ति ऐसी होनी चाहिये जो पोपसे भी उच्च हो। क्या एक ऐसी समिति नहीं स्थापित की जा सकती जिसमें समस्त ईसाई धर्मके प्रतिनिधि हों और वह ईसाकी पवित्रात्मासे संचालित होकर पोपके कार्योंपर भी विचार करे ? पूर्वीय रोमन साम्राज्यमें ऐसी कई सभाएं समय समय पर हुई थीं। ऐसी सभा सबसे प्रथम कान्स्टैण्टाइनके समयमें निकीयामें हुई थी। इन लोगोंने धर्मसंस्थाकी शिक्षाका प्रबन्ध किया था तथा सर्वसाधारण और पादरियोंके लिये नियम बनाये थे। पर इसका कुछ भी परिणाम न हुआ।

(सन्० १३८१ ई०) सम्वत् १४३८ में पेरिसके विद्यापीठने एक सर्वसाधारण सभाके लिये प्रस्ताव किया जो प्रति स्पर्द्धी पोपोंके अधिकारों का निर्णय कर इसाई धर्मपर पुनः एक मुख्य नेताकी नियुक्ति करे। इससे प्रश्न उठा कि सभा पोपसे उच्च है या नहीं ? जिनका मत था कि यह सभा उच्च है उनका कहना था कि समस्त धर्मावलम्बियोंने ही धर्म-सदस्योंको पोपके चुननेका अधिकार दिया है और जब उनलोगोंने ही पोप पदको नीचे गिरा दिया तो उनका हस्तक्षेप करना भी आवश्यक है और पवित्र आत्मासे प्रेरित धर्मावलम्बियोंकी सर्वसाधारण महा सभा महात्मा पीटरके उत्तराधिकारी पोपसे कहीं श्रेष्ठ हैं। कुछलोग इस मतका घोर प्रतिवाद करते थे। इनलोगोंका मत था कि पोपको सीधे ईसामसीहसे अधिकार मिले हैं। यद्यपि किसी समयमें इसने कुछ अधिकार सभा-को दे दिया था तथापि इसका अधिकार सदासे श्रेष्ठतम रहा है। कोई भी सभा जो पोपकी अनुमतिके प्रतिकूल होगा सर्वसाधारण सभा नहीं कही जा सकती क्योंकि रोमके बिशप अथवा धर्मसंस्थाकी आज्ञा बिना कोई भी सभा समस्त धर्मावलम्बियोंकी नहीं हो सकती। पोपके अधिकारके समर्थक यह भी कहता था कि प्रधान न्यायकर्ता पोप ही है। वह किसी सभाका भी

पूर्व पोपके नियमोंमें उलटफेर भी कर सकता है । वह दूसरोंका फैसला कर सकता है पर उसके कार्योंपर कोई विचार भी नहीं कर सकता ।

बहुत दिनों पर्यन्त दोनों संस्थावालोंमें इसी प्रकार बहुत विवाद और व्यर्थका संविधान होता रहा । अन्तको (सन् १४०६ ई०) सम्वत् १४६६ में पीसा नगरमें एक सभा इस कलहको शान्त करनेके लिये बैठी । बहुतसे धर्माध्यक्ष निमन्त्रणपत्रके उत्तरमें आये और बहुतसे राजाओंने सम्मिलित होकर बड़े उत्साहसे कार्य किया पर इनके कार्यमें उतावलापन तथा नासमझी थी । इन लोगोंने बारहवें ग्रेगरी जिसकी नियुक्ति रोममें (सन् १४०६ ई०)सम्वत् १४६३ में हुई थी और आविग्नानके पोप तेरहवें बेनेडिक्टको जिसकी नियुक्ति (सन् १३६४ ई०) सम्वत् १४५१ में हुई थी पीसामें निमन्त्रित किया । ये दोनों उपस्थित न हुए । लोगोंने इनपर धृष्टताका दोष लगाकर पोपपदसे च्युत कर दिया । नया पोप चुना गया । एक वर्ष बाद इसकी मृत्यु हुई । इसके बाद तेइसवां जान पोप हुआ । अपनी युवावस्थामें वह विख्यात तथा भाग्यशाली सैनिक था । जानकी नियुक्ति केवल उसके पराक्रमके कारण हुई थी । नेपिल्सके राजाकी आन्तरिक अभिलाषा रोमपर अधिकार कर लेनेकी थी । ऐसी अवस्थामें पोपकी सम्पत्तिकी रक्षाके लिये किसी ऐसे ही मनुष्यकी आवश्यकता थी । बहिष्कृत दोनों पोपोंमेंसे किसीने भी इस सभाकी आज्ञा न मानी । ये दोनों कुछ न कुछ अधिकारका उपभोग अवश्य ही करते थे और कुछ न कुछ लोग इनके सहायक भी थे । इससे पीसाकी सभासे कलह तो शान्त न हुआ प्रत्युत तीसरा पोप भी खड़ा हो गया जो ईसाई धर्मके प्रधान अधिपति होनेका दावा करने लगा ।

कलहकेसमयके पोप

ग्यारहवां ग्रेगरी (स: १४३०—१४३५)

स: १४३४ में रोम लौट आया

रोम-निवासी

छठां अर्बन (सं० १४३५–१४४६)

ग्यारहवां वोनिफेस (१४४६–१४६१)

सातवं इनोसेण्ट (१४६१–१४६३)

बारहवां ग्रेगरी (१४६३–१४७२)

अविग्नन–निवासी

सातवां क्लेमेण्ट (१४:५–१४५१)

तेरहवां बेनेडिक्ट (१४५१–१४७४)

पीसाकी सभा द्वारा नियुक्त

पांचवा अलेग्जैण्डर (१४६६–१४६७)

तेइसवां जान (१४६७–१४७२)

पांचवा मार्टिन (१४७४–१४८८)

पीसाकी सभाका कुछ फल न हुआ । इससे ईसाई धर्मावलम्बियोंको दूसरी सभा करनी पड़ी । उस समय सम्राट् सिगिस्मण्डका बहुत प्रभाव था । इस कारण तेइसवें जानको अपनी इच्छाके प्रतिकूल मानना पड़ा कि यह सभा जर्मनीमें साम्राज्यकी राजधानी कान्स्टेन्स नगरमें हो । इस सभाका आरंभ सम्वत् १४७१ के अन्तमें हुआ । राष्ट्रीय सभाओंमें यह बहुत विख्यात है । यह सभा तीन वर्ष तक होती रही । इसने समस्त यूरोपमें नया उत्साह पैदा कर दिया था । इसमें पोप और सम्राट्के अतिरिक्त तेइस कार्डिनल, तैंतीस आर्कबिशप तथा बिशप, एक सौ ड्यूक तथा अर्ल और सैकड़ों साधारण जन उपस्थित थे ।

सभाके सामने तीन बड़े महत्त्वके कार्य उपस्थित थे । (१) वर्तमान कलहको दूर करना जिसमें वर्तमान तीनों पोपोंको निकालकर धर्मसंस्थाके लिये एक सर्वमान्य प्रधानका चुनना सम्मिलित था । (२) नास्तिकताको मिटाना क्योंकि बोहीमियाका जान हस जो अपने कालका बड़ा प्रामाणिक विद्वान् तथा प्रसिद्ध सुधारक था धर्मसंस्थाको क्षति पहुंचा रहा था (३) धर्मसंस्थामें पोपसे लेकर साधारण अधिकारी तकका साधारण सुधार करना ।

(१) सभाके हाथमें सबसे भारी काम चिरकालके विद्वेषका शमन करना था। कान्स्टेन्समें तेइसवां जॉन बड़ा बेचैन था । उसको भय था कि पद-त्यागके लिये बाध्य किये जानेके अतिरिक्त मेरे सन्देहजनक अतीतके विषयमें जाच पड़ताल भी की जायगी । अपने कार्डिनलोंको अकेला छोड़कर वह चैत्र [मार्च] मास में वेष बदल कर कान्स्टेन्ससे भागा । उसके भाग जानेसे सभाको भी भय था कि कहीं पोप उसकी शक्तिके बाहर होकर सभा तोड़नेका प्रयास न करे, इसपर सम्वत् १४७२ के (४ अप्रेल सन् १४१५ ई०) २४ चैत्रको सभाने एक घोषणापत्र निकाला जिसमें उसने अपने अधिकारके पोपसे श्रेष्ठ बतलाया । उसने घोषित किया कि सर्वसाधारणकी सभा-

सीधे ईसामसीहसे अधिकार मिला है। इससे प्रत्येक मनुष्य और
पोप भी उसका अधिकार न माननेसे दंडका भागी होगा।
जानके ऊपर अनेक दोषारोपण किये गये और उसे नियमपूर्व
बहिष्कृत किया गया। उसने सभाका विरोध किया पर उसे विशेष सहाय
न मिली। इस कारण अन्तमें उसने अपनेको विना किसी शर्तके स
के हाथ समर्पण कर दिया। रोमन पोप बारहवें ग्रेगरीने जुलाई(सावन)मा
स्वयं पद त्याग किया। तीसरे पोप तेरहवें बेनिडिक्टने पदत्याग करने
स्पष्ट इनकार किया। उसके समर्थक केवल स्पेननिवासी थे। सभाने इ
लोगांको बेनेडिक्टका साथ छोड़नेको बाधित किया और कहा कि अपना दूत
कान्स्टेन्समें भेजो। तदनुसार सम्वत् १४७४ के (जुलाई सन् १४१७) सावनमें
बेनिडिक्ट पदच्युत किया गया और दूसरे वर्ष नये पोप पञ्चम मार्टिनकी
कार्तिकमें नियुक्ति हुई। इस प्रकार इस प्राचीन कलहका अन्त हुआ।
प्रथम वर्ष कांन्स्टेन्सकी महासभा कलहशान्ति तथा नास्तिकताके
दमनका उद्योग करती रही। विक्लिफकी मृत्युके थोड़े ही दिन बाद
राजा द्वितीय रिचर्डका विवाह बोहीमियाकी राजकुमारीसे हुआ। इस
सम्बन्धसे आँगल देश तथा बोहीमिया को परस्पर मिलनेका अवसर
प्राप्त हुआ। बोहीमियामें भी कुछ ऐसे लोग थे जो धर्मसंस्थाका सुधार
चाहते थे। इस सम्मेलनसे आँगल देशीय सुधारकार्यपर बोहीमिया-
वासियोंकी भी दृष्टि पड़ी। वे पहलेसे ही चर्च के सुधार पर दृष्टि
लगाये हुए थे। इनमें सबसे अधिक विख्यात जान हस था। इसका जन्मसम्वत्
१४२६ (सन् १३६६ ई०) में हुआ था। इसे बोहीमियन जातिकी उन्न
और सुधारके प्रति विशेष उत्साह था, इन कारणोंसे प्रेग विद्यापीठमें इस
बड़ी प्रतिष्ठा थी और उससे इसका बड़ा सम्बन्ध था।
इसका सिद्धान्त था कि ईसाइयोंको उन लोगोंकी आज्ञा पालन
करनी चाहिये जो संसारमें पाप कर रहे हैं और स्वयं स्वर्ग पानेकी इच्छा
नहीं रखते। इस विचारका धर्मसंस्थावालोंने घोर प्रतिवाद किया

उनका कहना था कि इससे शान्ति तथा अधिकार नहीं रह सकता। उनके कहनाके अनुसार किसी नियुक्त अधिकारीके अधिकारको हमलोग इस कारणसे नहीं मानते कि वह योग्य है वरन् इस कारण कि वह न्याय्य व्यवस्थाके अनुसार शासन करता है। सारांश यह कि जान हसकी शिक्षासे केवल विक्लिफके आन्दोलनका ही प्रचार हीं होता था परन्तु शासनप्रणाली तथा धर्मसंस्थाको भी घोर क्षति पहुँचती थी।

जान हसको पूर्ण विश्वास था कि वह अपने मन्तव्यकी सत्यताका सभाके सदस्योंको भलीभाँति विश्वास करादेगा। इससे वह कान्स्टेन्स गया। उसको सम्राट् सिगिसमण्डने अभयपत्र दिया जिसमें लिखा था कि कोई भी उसके साथ किसी प्रकारका असद्व्यवहार न करे और उसकी जिस समय इच्छा हो कान्स्टेन्स छोड़ कर कहीं भी जा सके। इसके होते हुए भी वह सम्वत् १४७१ (दिसम्बर सन् १४१४ ई०) के पौषमें बन्दी करालिया गया। उसके साथ जो व्यवहार किया गया उससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि मध्ययुगमें धार्मिक मतभेदसे लोग किस प्रकार घृणा करते थे। अपने अभयपत्रके प्रतिकूल व्यवहारको न सहकर सम्राट् ने घोर प्रतिवाद किया पर सभाने स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि नास्तिकताके अभियोगी को दिये अभयवचनका पालन आवश्यक नहीं माना जा सकता। नास्तिक लोग राजाके अधिकारके बाहर हैं। सभाने यह भी कहा कि कैथोलिक धर्मके प्रतिकूल किसी भी वचनका पालन नहीं किया जायगा। न सब कारणोंसे सम्राट् सिगिस्मण्ड इसकी रक्षा नहीं कर सका। इस- प्रकट होता है कि उस समय नास्तिकताका अपराध हत्यासे भी अधिक झा जाता था, और लोगोंका मत था कि यदि सिगिस्मण्ड हस- अभियोगका प्रतिरोध करता तो वह स्वयं भी अपराधी समझा जाता। हमारी दृष्टिसे हसके साथ बहुत कठोर व्यवहार किया गया पर सभाके ोंकी दृष्टिसे उसे बहुत सुविधाएं दी गयी थीं। उसे सर्वसाधारणके

सामने अपना मत प्रकट करनेका अवसर दिया गया । सभाकी इच्छा थी कि हस अपने मतसे फिर जाय पर वह सहमत न हुआ । अन्तमें सभाने उसके लेखोंसे उसके कुछ मन्तव्योंका संग्रह किया और उसका अपराध चिताया और कहा कि "इन विचारोंको छोड़ दो, इनकी शिक्षा कभी मत दो तथा इनके प्रतिकूल उपदेश देनेका वचन दो" । सभाने इस बातका विचार नहीं किया कि उसका मन्तव्य न्यायसंगत था या नहीं, उसने केवल इसी बातपर ध्यान दिया कि उसका मत धर्मसंस्थाके मतके अनुकूल है या नहीं ।

सभाने उसे घोर नास्तिक ठहराया । सम्वत् १४७२ के २४ मीन (६ वीं अप्रैल १४१५ ई०) को वह नगरके द्वारके बाहर एक बार फिर लाया गया और उसे अपना मार्ग बदल देनेका एक और अवसर दिया गया पर उसने स्वीकार नहीं किया । वह पुरोहितपदसे च्युत कर दिया गया और सरकारके हाथ सौंपा गया कि उसपर नास्तिकताका अभियोग चलाया जाय । सरकारी शासकोंने भी अपनी ओरसे कोई अनुसन्धान नहीं किया। उन लोगोंने सभाकी बातको सत्य मानकर हसको जीता जला दिया । उसकी राख राइन नदीमें फेंक दी गई कि कहीं उसके अनुयायी उसकी राखकी भी पूजा न करने लगें ।

हसकी मृत्युसे बोहीमियामें सुधारकोंको नया उत्साह मिला । कुछ वर्ष बाद जर्मनोंने बोहीमियाके प्रतिकूल धार्मिक लड़ाई आरंभ की । इन दोनों जातियोंमें विरोध पैदा हो गया जिसकी जड़ अब तक भी ज्योंकी त्यों बनी है । सुधारक बड़े वीर निकले । कितनी भीषण रोमांचकारी लड़ाइयोंके बाद उन लोगोंने शत्रुको अपने देशसे भगाकर जर्मनीपर भी आक्रमण किया ।

कान्स्टेन्सकी सभाका तीसरा बड़ा कार्य धर्मसंस्थाको सुधारना था । जानके भाग जानेके पश्चात् इसने पोपके सुधारका भी कार्य अपने हाथमें लिया । धर्मसंस्थाकी बुराइयोंको कम करनेका यह अच्छा अवसर था ।

सभामें सर्वसाधारणके प्रतिनिधि थे। प्रत्येक मनुष्यको आशा थी कि यह धर्मसंस्थाके समस्त दोषोको जो उस समय अधिक प्रचण्ड हो गये थे दूर करेगी। कितने सज्जनोंने पादारियोंके घृणित कुव्यवहारोंकी कड़ी समालोचना कर कितनी पुस्तकें और पत्र निकाले। ये सब बुराइयां चिरकालसे चली आ रही थीं। इनका वर्णन पिछले अध्यायोंमें किया जा चुका है।

यद्यपि दोषोंको सभी लोग जानते थे परन्तु इनका बंद करना या उचित सुधार करना सभाने अपनी शक्तिसे वाहर पाया। तीन वर्षके अपने सब श्रमको निष्फल जानकर सभाके सम्पूर्ण सदस्य थक कर हताश हो चुके थे। अन्तको सम्वत् १४७४ के (६ अक्तूबर सन् १४१७ ई०) २२ आश्विनको उन लोगोंने यह आज्ञापत्र निकाला कि धर्मसंस्थाकी समस्त बुराइयां सभाके पहले अधिवेशनोंकी उपेक्षा करनेसे ही उत्पन्न हुई हैं। अव कमसे कम प्रत्येक दशवें वर्ष सभा होनी चाहिये। इससे यह आशा होने लगी कि जिस प्रकार आधुनिक समयमें आंग्लदेशमें पार्लमेन्ट तथा फ्रांसमे सर्वसाधारण समाजने राजाके अधिकारोंको कम कर दिया उसी प्रकार इस सभासे पोपके अधिकार भी कम हो जायेंगे।

इस आज्ञापत्रके निकालनेके पश्चात् सभाने विशेष सुधार करने योग्य दोषोकी सूची बनायी। इस सभाके विसर्जन होनेपर नये पोपने अपने कुछ सदस्योंके साथ इनपर विचार किया। जिन प्रश्नोंकी ओर सभाका ध्यान गया था उनमे प्रधान ये थे—सभामे कितने धर्मसदस्य और किस किस जातिके होने चाहिये? पोपको किस किस पदके अधिकारियोंकी नियुक्तिका अधिकार है? उसके न्यायालयमें कौन कौन अभियोग लाये जा सकते है? किन अपराधोंके लिये पोप पदच्युत किये जा सकते है? नास्तिकताका लोप किस प्रकार किया जा सकता है?

सिवा कलह शमन करनेके सभाने कोई विशेष कार्य नहीं किया। उसने इसको जला तो अवश्य डाला पर इससे नास्तिकताका लोप

नहीं हुआ। वह तीन वर्ष पर्यन्त धर्म-संस्थाके दोषोंके सुधारपर [illegible]
करती रही पर उसमें उसे सफलता न प्राप्त हुई। बादको पोपने सुधा[illegible]
कई घोषणाएं निकालीं पर इससे भी धर्म-संस्थाकी दशा न सुधरी।

जिन लोगोंने शस्त्रके बलसे बोहेमियावासियोंको [illegible] इन्हें अन्तके
पथपर लाना चाहा उनका बोहेमियावासियोंसे कठिन संघर्ष होता रहा।
ये लोग अपने निश्चयोंपर ऐसे कटिबद्ध थे कि अन्य देशवालोंका भी ध्यान
इनकी ओर खिंच गया और बड़ी सहानुभूति भी प्रकट होने लगी।
सम्वत् १४८८ (सन् १४३१ ई०) में इनके प्रतिकूल अन्तिम धार्मिक युद्ध
हुआ जिसका भीषण अन्त हुआ। मजबूर हो कर पंचम मार्टिनने [illegible]
ओंके साथ व्यवहारनीतिका निर्णय करनेके लिये सभा निमन्त्रित की।
उसकी बैठक बेसलमें हुई और यह भी अठारह वर्षसे कम न बनी रहे।
आरंभमें वह इतनी प्रभावशाली हो गयी कि पोपका अधिकार भी उसके
सामने तुच्छ हो गया। संम्वत् १४९१ (सन् १४३४ ई०) में वह अपने
अधिकारकी चरम सीमापर पहुंच गयी थी। अब उसने बोहेमियाके
सुधारवादियोंके उदारदलसे सन्धि कर ली। पर पोप चतुर्थ युजेन
का सभासे विरोध बना ही रहा। सम्वत् १४९४ (सन् १४३७ ई०)
में पोपने इस सभाको विसर्जित करनेकी घोषणा करके दूसरी सभा
फेरारामें निमन्त्रित की। बेसलकी सभाने पोपको पदच्युत कर दूसर [illegible]
द्वन्द्वी पोप नियुक्त किया। इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोपवालोंके
सर्वसाधारणकी सभासे अश्रद्धा हो गयी। धीरे धीरे यह सभा टूट गयी और
सम्वत् १५०६ (सन् १४४९ ई०) में वास्तविक पोप पुनः अधिकार [illegible]
लिया गया।

इधर फेरारा की सभाने पश्चिमीय तथा पूर्वीय यूरोपकी धर्म-संस्था[illegible]
को मिलानेकी कठिन समस्या अपने ले ली थी। ओटोमान तुर्क लो[illegible]
कुस्तुन्तुनियाके पश्चिम प्रदेशोंपर विजय लाभ कर पूर्वीय यूरोप[illegible]
अधिकार जमा लिया था। पूर्वीय सम्राट्के मन्त्रियोंने कहा कि यदि पूर्व[illegible]

तथा पश्चिमीय धर्मसंस्थामें मेल हो जायगा तो पश्चिमीय धर्मसंस्थाका पोप मुसल्मानोंका आक्रमण रोकनेके लिये पश्चिम प्रदेशोंसे सैनिक देगा। जब पूर्वीय धर्मसंस्थाके प्रतिनिधि फेरारामें पश्चिमी धर्मसंस्थाके प्रतिनिधियोंकी सभामें उपस्थित हुए तो ज्ञात हुआ कि दोनोंके मतमें कुछ थोड़ा ही भेद है। परन्तु धर्मसंस्थाओंके प्रधान अधिपतिका प्रश्न बड़ा जटिल था। फिर भी एक प्रकारका संयुक्त नियम बनाया गया जिसमें सब सहमत थे। उसके अनुसार पूर्वीय धर्मसंस्थाने पोपको अपना प्रधान माना पर उसके भी प्रधान अध्यक्षके अधिकार सुरक्षित रहे।

पूर्वीय तथा पश्चिमीय धर्मसंस्थाके परस्पर विभेद मिटाकर मेल करादेने-के कार्यके लिये यूजीनकी बड़ी प्रशंसा हुई। उधर जब यूनानके दूत घर लौटे तो लोगोंने उनकी बड़ी निन्दा की। फेराराकी सभामें जो त्याग इन लोगोंने किया था उसके लिये लोग इन्हें डाकू चोर तथा मातृघातक कहने लगे। इस सभाके मुख्य परिणाम ये हुए,—(१) बेसलकी सभाके विरोध करनेपर भी पोप पुनः ईसाई मतका प्रधान अध्यक्ष हो गया' (२) कुछ यूनानी लोग इटलीमें रह गये और उन्होंने यूनानी साहित्यके लिये उत्साह बढ़ाया।

पन्द्रहवीं शताब्दीमें फिर कोई सभा न बैठी। पोप लोग स्वतन्त्रतापूर्वक इटली राज्यमें अपनी स्थिति जमाने लगे। पंचम निकोलस तथा अन्य पोपोंने कला तथा साहित्यके विशेष विद्वानों का अच्छा आदर किया। यूरोपके इतिहासमें सम्वत् १५०७ (सन् १०५० ई०) से लेकर धर्मसंस्थाके प्रतिकूल जर्मनीके विद्रोहके आरंभ तकके सत्तर वर्षका काल पोपोंके लिये बड़े महत्त्वका था। इस समयमें पोप राज्यकार्यमें अपने तथा अपने सम्बन्धियोंका अधिकार स्थापन करनेमें जी जानसे लग गये थे और अपनी राजधानीकी भी बड़ी उन्नति कर रहे थे।

अध्याय २१

इटलीके नगर और नवयुग ।

जिस समय आँग्ल देश तथा फ्रांस शतवर्षीय युद्धमें पड़कर पारस्परिक कलह मिटा रहे थे, और जर्मनीके छोटे छोटे राज्य बिना नेताके अपने मोटे प्रश्न हलकर रहे थे, इटली यूरोप की सभ्यताका केन्द्र बना हुआ था। इसके नगर, विशेषकर फ्लारेन्स, वेनिस, मिलन इत्यादि इतने समृद्ध तथा उन्नत हो रहे थे कि जिसका आल्प्स पर्वतके दूसरी तरफ वालोंको स्वप्न भी नहीं था। इस देशमें कला तथा साहित्यकी इतनी अधिक उन्नति हुई थी कि इस समयका इतिहासमे एक विशेष नाम है। यह नाम नवयुग, 'नूतन जन्म" है। प्राचीन यूनानकी भाँति इटलीके नगरोंमे भी छोटे छोटे राज्य थे। इनका अपने ढंगका जीवन तथा अपनेही ढंगका प्रबन्ध था। रोम तथा यूनानके कृतियोंके लिये पुनर्जागृति तथा इटलीके उन्नत शिल्पियों तथा कारीगरोंकी विविध भांतिकी विचित्र मूर्ति-तथा गृहनिर्माण-कलाके विषयमें कुछ कहनेके पूर्व इन नगरोंके सम्बन्धमे कुछ थोड़ासा कह देना आवश्यक है।

जिस प्रकार होहेन्स्टाफनवंशी राजाओं के समयमें इटलीका मानचित्र तीन भागोंमें बंटा था उसी प्रकार उसकी दशा चौदहवीं शताब्दीके आरंभमें भी थी। दक्षिणमें नेपल्स का राज्य था। उसके बाद धर्मसंस्थ का राज्य था। यह प्रायद्वीपके बीचो बीच सीधा चल गया था। उत्तर तथा पश्चिममें छोटे छोटे नगरोंके समूह थे। हम इन्हींका थोड़ा वर्णन करेंगे।

इनमेंसे वेनिस सबसे विख्यात था। यूरोपके इतिहासमें यह भी पेरिस तथा लन्दनकी समता का है। यह अपूर्व नगर इटलीसे दो मीलकी दूरी पर एड्रियाटिक समुद्रके छोटे छोटे बालुकामय टापुओंपर बना है। जिस प्रकार

न्यूजरसीसे दक्षिणका अटलैण्टिक महासागरका तट समुद्रकी लहरोंसे एक वालूके टीले द्वारा रक्षित है, उसी प्रकार यह भी सुरक्षित है। स्वभावत: ऐसा स्थान ऐसे विशाल नगरके लिये कभी भी पसन्द न किया जाता। उसकी निर्जनता और दुष्प्रवश्यताके कारण वहाँ बसना वहाँके प्रथम निवासियोंको बहुत अच्छा प्रतीत हुआ क्योंकि पन्द्रहवीं शताब्दीमें असभ्य हूणोंके आक्रमणोंसे व्याकुल हो अपना देश छोड़ कर इन लोगोंने इसी स्थानमें पूरा शरण पायी। ज्यों ज्यों समय गुजरा यह स्थान- व्यवसायके लिये भी उपयोगी प्रतीत होने लगा। धर्मयुद्ध यात्राओंके पूर्वसे ही वेनिस वैदेशिक व्यवसायोंमें लग चुका था। इसके उत्साहने इसे पूरवका मार्ग दिखलाया और आरभमें ही इसने एड्रियाटिकके पार पूरवमें भी अपना विस्तार फैला लिया था। पूरवके संसर्गके प्रभावोंका प्रत्यक्ष प्रमाण सेण्टमार्क की गिर्जामें मिलता है। उसके गुंवज तथा सुन्दर शिल्पको देखनेसे ही इटलीकी अपेक्षा कुस्तुन्तुन्तिया अधिक याद आता है।

पन्द्रहवीं शताब्दीके आरंभमें वेनिसवालोंको विदित होने लगा कि इटली प्रदेशसे सम्बन्ध करना भी आवश्यक है। उसकी वस्तुएं उत्तरमें आल्प्स पर्वतके मार्गोंसे देसावरको जाती थीं। उसने देखा कि इन मार्गों-पर उसके प्रतिद्वन्द्वी मिलन नगरको अधिकार मिलनेसे उसकी बड़ी भारी व्यावसायिक क्षति होगी। भोजनकी सामग्री भी वह शायद एड्रि-याटिकके पारके अपने अधीन पूर्वीय प्रदेशोंसे न मँगाकर आसपासके नगरोंसे ही ले लेना अच्छा समझता था। वेनिसके अतिरिक्त इटलीके समस्त नगरोंने कुछ न कुछ प्रदेश अपने अधिकारमें कर लिया था। यद्यपि वेनिस प्रजातन्त्र कहलाता था तथापि इसका शासन कुछ थोड़ेसे लोगोंके ही हाथमें जा रहा था। सम्वत् १३५७ (सन् १३०० ई०) में कुछ एक सर्दारोंके अतिरिक्त शासन सभामेंसे समस्त नागरिकोंको निकाल बाहर किया गया। सम्वत् १३६८ (सन् १३११ ई०) में दश सदस्योंकी प्रबन्धकर्ता,

'दशावरा' की उत्पत्ति हुई। इसके सब सदस्य एक वर्षके लिये बड़ी सभा द्वारा चुने जाते थे। इस छोटी सभाके हाथमें जातीय तथा विजातीय समस्त राजप्रबन्धका कार्य दिया गया था। यह सभा प्रजातन्त्रके प्रधान डोज या ड्यूकके साथ प्रबन्ध कार्य किया करती थी यही दोनों अपने कार्योंके लिये बड़ी सभाके प्रति उत्तरदायी थे। इस प्रकार राज्यप्रबन्ध बहुत थोड़े लोगों के हाथमें था। इसका कार्यवाही गुप्त रूपसे चलायी जाती थी। इस कारण फ्लोरेन्सकी भांति स्वतन्त्र विवाद तथा अनेक विद्रोहोंका यहां नाम निशान भी नहीं था। वेनिस के वणिक अपने व्यवसायमें संलग्न थे। उन की आन्तरिक इच्छा यही थी कि राज्य अपना प्रबन्ध हमलोगोंकी सहायता बिना ही स्वयं चलावे तो अच्छा है। यद्यपि सभामें बहुत थोड़े लोगोंके हाथ में अधिकार था तथापि इटलीके और नगरोंकी भांति यहा विद्रोह नहीं होता था। वेनिसके प्रजातन्त्र राज्यने शासनका प्रबन्ध सम्वत् १३५७ (सन् १३०० ई.)से लेकर सम्वत् १८५४ (सन् १७९७ई.) पर्यन्त एक ही प्रकार का रक्खा। अन्तको नेपोलियनने इस राज्यको ही नष्ट कर डाला।

अब मिलन नगरकी दशा देखिये। यह उन नगरोंमें से था जिनमें ऐसे स्वेच्छाचारी तथा प्रजापीड़क नरेश राज करते थे जिन्होंने नगर पर धोखे या बलसे अधिकार प्राप्त कर लिया था और उसका सब प्रबन्ध अपने लाभके हेतु करते थे। जिन नगरोंने फ्रेडरिकबारबरोसाके प्रतिकूल संघ बनाया था, वे चौदहवीं शताब्दीके आरंभमें छोटे छोटे स्वेच्छाचारी शासकोंके अधीन होगये थे। ये शासक आपसमें बराबर युद्ध किया करते थे और अपने पड़ोसी नगरों से कभी हार जाते थे और कभी जीत ले जाते थे। विसकोण्टीके वंशजोंने मिलन नगरपर अपना अधिकार कर लिया। इनके कानूनोंसे ही इटलीके नगरों में होनेवाले अत्याचारोंका अच्छा नमूना मिल जाता है।

विसकोण्टी वंशके अधिकारका प्रथम संस्थापक मिलनका आर्कबिशप था। सम्वत् १३३४ (सन् १२७७) में उसने जिस वंशके हाथमें

नगरका अधिकार था उसके प्रधान लोगोंको लोहेके तीन कटघरोंमें बन्द कर दिया और अपने भतीजे मेटियो विस्कोएटीको सम्राटका प्रतिनिधि नियत कराया। थोड़े ही दिनोंमें मेटियो मिलनका राजा माना जाने लगा और उसका पुत्र उसका उत्तराधिकारी हुआ। डेढ़ सौ वर्षों तक उसके वंशजोंमें कोई न कोई उस अधिकारको सुरक्षित रखने योग्य होता रहा।

इनमें सबसे प्रसिद्ध गियन गेलियज़ो था। उसने अपने चचाको जो उस समय विस्कोएटीके विस्तृत राज्यके एक विस्तृत भागपर शासन करता था कैद कर लिया और विषसे मार कर आप राजगद्दीपर बैठ गया। कुछ काल तक यह प्रतीत होता था कि वह समस्त उत्तरीय इटलीको जीत लेगा पर यह न हो सका क्योंकि फ्लोरेन्सके प्रजातन्त्रराज्यने उसे आगे बढ़नेसे रोका। इसीके पश्चात् उसकी असामयिक मृत्यु होगयी। गियनमें इटलीके स्वेच्छाचारी शासकोंके सम्पूर्ण गुण वर्तमान थे। वह बड़ा चतुर तथा सफल शासक था और उसने अपने राज्यका प्रवन्ध बड़ी निपुणतासे किया था। उसकी सभामें बड़े बड़े पण्डित वर्तमान थे। उसके बनवाये हुए सुंदर सुंदर भवनोंसे उसके कलाप्रियताका पता लगता है। इतना होने पर भी वह किसी स्थिर नियम पर कार्य नहीं करता था। जिन अभिलषित नगरोंको वह न तो जीत सका था और न खरीद सकता था उनको अपने अधिकारमें करनेके लिये घृणितसे घृणित उपायोंका भी प्रयोग करता था।

इटलीके स्वेच्छाचारी क्रूर शासकोंके दारुण व्यवहारोंके कितने ही दृष्टान्त वर्तमान हैं। यह जान लेना आवश्यक है कि इनमेंसे सचमुच कानूनके अनुसार बहुत कम राजा थे। अधिकतर तो वे लोग राज्यको अपने अधिकारमें तभीतक रखनेकी आशा रखते थे जब तक उनमें प्रजाको दबाये रखने तथा अपने पड़ोसी राज्यापहारियोंसे अपनी रक्षा करनेकी शक्ति रहती। इसमें बुद्धिमत्ताकी विशेष आवश्यकता थी। अनेक शासकोंने प्रजाको सुखी रखना लाभप्रद तथा कलाविशारदों और

विद्वानोंका आदर करना अपने लिये प्रतिष्ठाजनक पाया। पर वे अनेक बहुतसे कट्टर शत्रु भी पैदा कर लेते थे और प्रायः अपने पार्श्ववर्तियोंपर ही संदेह किया करते थे। उनको इस बातकी सदा चिंता रहती थी कि कहीं कोई विष पिला कर या सिर काटकर हत्या न कर डाले।

इटलीके नगर बहुधा किरायेके सैनिकों द्वारा युद्ध जारी रखते थे। जब कभी किसीपर आक्रमण करनेका विचार होता था तो किसी सेनानायकसे ठेका कर लिया जाता था और वह आवश्यक सेनाका प्रबन्ध कर देता था। दोनों तरफकी सेनाएँ किरायेकी होती थीं इस कारण युद्धमें उन्हें अधिक उत्साह नहीं होता था। इसी लिये युद्धमें विशेष रक्तपात भी नहीं होता था। दोनों प्रतिपक्षियोंका प्रयत्न बिना किसी अनावश्यक कष्ट दिये एक दूसरेको बन्दी करनेका होता था।

कभी कभी ऐसा भी होता था कि कोई सेनाध्यक्ष किसी नगरको अपने नियोजकके लिये जीत कर स्वयं उसका स्वामी बन बैठता था। संवत् १५०७ (सन् १४५०) ई० में मिलनमें ऐसा ही हुआ। विस्कोण्टोके वंशके लोप होने पर वहांके निवासियोंने फ्रांसिसके स्फोर्जा नामी किसी सेनानायकको किरायेपर रक्खा और उसकी सहायतासे वेनिस नगरसे युद्ध करना चाहा क्योंकि इस समय वेनिसका राज्य मिलन पर्यन्त विस्तृत था। स्फोर्जाने वेनिसवालोंको मिलनसे भगा दिया और स्वयं शासक बन गया। अब मिलनवालोंने देखा कि इसे हटाना सहसा असम्भव है। तबसे वह और उसके उत्तराधिकारी ही नगरके राजा बन गये।

फ्लोरेंसके प्रसिद्ध इतिहासलेखक मेकियावेलीने प्रिंस नामक एक छोटा सा राजनीति-विषयक ग्रंथ लिखा है। इसके पढ़नेसे स्वेच्छाचारी दुर्दान्त तथा क्रूर शासकोंकी दशा तथा शासनप्रणालीका पूरा पता चलता है। इस पुस्तकको उसने तत्कालीन शासकोंके लिये प्रामाणिक पाठ्यपुस्तक बनाया था। उसने इस पुस्तकमें गम्भीर होकर इस बातका सविस्तर वर्णन किया है कि कैसे स्वेच्छाचारी राजा किसी राज्यको एक बार अपने अधिकारमें करके पुनः उसको

शासन किस किस भांति करे । उसने इस समस्याको भी हल किया है कि यदि राजा लोग अपनी प्रतिज्ञानुसार वचन पूरा न कर सकें तो उनको क्या करना चाहिए और आवश्यकता पड़नेपर कितने नगरवासियोंको वह निश्चिन्त होकर मारसकते हैं । मेकियावलीने दिखलाया है कि जिन अत्याचारी शासकोंने अपने वचनोंका पालन नहीं किया वरन् अपने प्रतिद्वन्द्वियोंको बिना किसी संकोचके मार डाला वे अपने विवेकी प्रतिद्वन्द्वियोंसे कहीं अधिक लाभमें रहे ।

इटलीके नगरोंमें फ्लोरेन्स सबसे प्रसिद्ध है । इसका इतिहास वेनिस नगर तथा मिलन नगरके स्वेच्छाचारी शासनके इतिहाससे कई अंशोंमे भिन्न है । फ्लोरेन्स नगरके समस्त निवासी शासनप्रबन्धमें भाग लेते थे । इसका परिणाम यह होता था कि राज्यव्यवस्थामें अधिक परिवर्तन होता था तथा भिन्न भिन्न राजनीतिक दलोंमे स्पर्धा लगी रहती थी । जो दल प्रधान होता था वह अपने प्रतिद्वन्द्वी दलके मुख्य नेताओंको नगरसे निकाल देता था । फ्लोरेन्सनिवासीके लिए देश निर्वासनका दंड सबसे कठिन होता था क्योंकि निवासस्थानके अतिरिक्त वे उसे अपना देश समझकर उससे विशेष प्रेम करते थे ।

पन्द्रहवीं शताब्दीके मध्यमें फ्लोरेन्स नगर मेडिचि वंशके प्रभावमें आगया । इनके व्यक्तियोंने राजनीतिक बातोंमें अत्यन्त चालाकी से काम लिया । प्रतिनिधियों तथा पदाधिकारियोंके चूनावको गुप्त रूपसे अपने अधिकारमें रख कर ये लोग नगरका शासन करते थे । नगर निवासियोंको सन्देहभी नहीं होता था कि उन लोगोंका समस्त अधिकार उनके हाथसे चला गया है । इस वंश का सबसे विख्यात सरदार लोरेन्जो था । उसके शासनकालमें फ्लोरेन्स साहित्य तथा कलामें उन्नतिके शिखरपर पहुंच गया था ।

जो लोग आज फ्लोरेन्स देखने जाते हैं उनके सामने नवयुग समयके युगपद्वर्ती भिन्न परिस्थियोंका दृश्य आता है । राज-पथके दोनों ओर सरदारों के ऊंचे ऊंचे भवन हैं जिनकी प्रतिद्वन्द्विताके कारण बहुत सुन्दर नक्

अशान्ति विराज रही थी। इनके नीचेका भाग दुर्गकी भांति विशाल पत्थरोंसे बड़ा दृढ़ बना है और खिड़कियां भी बन्दीघरकी भांति लोहेके छड़ोंसे जकड़ी हैं। तब भी इनके भीतर विलासिता तथा विशेष भोग-सम्पदा का सामान रहता था। अराजकता तथा अशान्तिसे रक्षा करनेके लिये धनी लोग अपने भवन भी दुर्गकी भांति बनाते थे पर उस समयकी गिर्जाओं आलीशान नगरभवनों, तथा कौतुकागारोंके देखनेसे प्रकट होता है कि शिल्पकलाकी जो उन्नति उस अशान्तिके समयमें था उतनी पहले कभी भी नहीं हुई थी। फ्लारेन्स सभी कलाओं का केन्द्र था। दूसरे दूसरे देश विद्यामें इटलीसे बढ़ गये पर एथेन्सके अतिरिक्त और इसके सदृश दूसरे किसी नगरके निवासी इतने दक्ष, चतुर, बुद्धिमान मर्मवेदी तथा सूक्ष्मदर्शी नहीं हुए। इटलीनिवासियोंकी सूक्ष्म तथा मर्मस्पर्शी भावोंका प्रतिविम्ब फ्लोरेन्स निवासियोंमें सार रूपसे वर्तमान था। केवल वे ही नहीं परन्तु रोम, लाम्बार्डी तथा नेपिल्सके निवासी भी उनकी इस उच्चताको भलीभांति जानते थे। सम्पूर्ण इटली देशने साहित्य, कला, कानूनविद्या, दर्शन तथा विज्ञानमें फ्लोरेन्सवासियोंकी प्रधानता स्वीकार की थी।

जैसा हम पहले लिख आये हैं तेरहवीं शताब्दीमें शिक्षामें लोगों को बड़ा उत्साह था। नये नये विद्यापीठों की स्थापना हुई। यूरोपके सब प्रदेशोंके छात्र आने लगे। अलवर्टस मेगनस, टामस ऐक्विनस, तथा रोजर बेकनके समान बड़े बड़े विद्वानोंने धर्म, विज्ञान तथा दर्शन पर बड़े बड़े ग्रन्थ लिखे। सर्वसाधारणकी भाषामें लिखित तथा उत्साहजनक किस्से कहानियों, उपन्यासों तथा गीतोंको सुनकर लोग बड़े प्रसन्न होते थे। कारीगरोंने गृहनिर्माण शिल्पोंके नये नये प्रकारके नमूने तैयार किये। मूर्तिकारोंकी सहायतासे उन्होंने ऐसे ऐसे भवन बनाये जिनकी बराबरीके अबतक कहीं भी कोई भवन नहीं बन सके। तब फिर इस समयके बादकी दो शताब्दियोंको नवयुगका काल क्यों कहा जाता है?

इससे तो विदित होताहै कि गहरी नींदसे यूरोपके लोग यकायक उठ बैठे थे अथवा यूरोपमें शिक्षा तथा शिल्प कलाका प्रचार चौदहवीं शताब्दी में ही आरंभ हुआ था।

"नवयुग" शब्द का प्रयोग केवल वही लेखक करते थे जिन्हें तेरहवीं शताब्दी का कुछ मूल्य प्रतीत नहीं होता था। उन लोगोंका मत था कि लैटिन तथा ग्रीक भाषाओंके ज्ञान बिना शिक्षाकी अधिक उन्नति हो ही नहीं सकती। परन्तु अब प्रतीत होता है कि तेरहवीं शताब्दी में शिक्षा तथा शिल्पकला दोनोंके प्रति अधिक उत्साह था यद्यपि ग्रीस या रोम तथा आधुनिक समय की शिक्षा तथा शिल्पकलाओं में बड़ा भेद है।

इस कारण चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दी के "नयाजन्म" अथवा "नवयुग" को हम वही स्थान नहीं दे सकते जो स्थान उनके एक शताब्दी बादके लोगोंने पूर्व समयका उचित अवलोकन न कर उन्हें दिया है। तौ भी चौदहवीं शताब्दीके मध्यकालमें लोगोंकी रुचि, विद्या, शिल्प तथा कलामें बड़ा परिवर्तन आरंभ हुआ और इसको हम लोग नवयुगका समय भली भांति कह सकते हैं। उस समयके दो विख्यात लेखक दांते तथा पेट्रार्कके निबन्धोंको पढ़ कर हम लोग चौदहवीं शताब्दीका पता लगा सकते हैं।

दाँते उत्तम श्रेणीका महाकवि समझा जाता था। इसकी गणना होमर वर्जिल तथा शेक्सपियरके साथ की जाती है। कविताओंकी रोचकता तथा मानसिक कल्पनाकी विचित्रताके अतिरिक्त उसमें और गुण भी वर्तमान थे जिस कारण इतिहास-लेखकों को वह अधिक प्रिय है। उसने अपने कालकी सभी विद्याओं का अनुशीलन किया था। वह अपने कालका वैज्ञानिक, पंडित तथा कवि था। उसके लेखोंसे पता लगता है कि तेरहवीं शताब्दी में सूक्ष्म बुद्धिवालों की दृष्टिमें जगत् कैसा प्रतीत होता था और उन समयके सबसे बड़े बिद्वान्को भी कितनी विद्या प्राप्त हो सकती थी।

जिन विद्वानों का हम लोग अबतक वर्णन करते आये हैं उनकी भांति दान्ते पादरी नहीं था। बोईथियसके समयके बाद वही प्रथम विद्वान

गृहस्थ विद्वान् था वह केवल अपनी मातृभाषा जानने वाले अनेक स्वदेश
जनोंको उस शिक्षाका ज्ञान दिया करता था जो केवल लैटिन जाननेवालों
को मिलती थी। लैटिनमें पंडित होनेपर भी उसने डिवाइन कामेडी नामक
कविता अपनी मातृभाषा में ही लिखी। आधुनिक भाषाओंमें इटालियन भाषा
की उन्नति सब से पश्चात् हुई। इसका कारण कदाचित् यह था कि लैटिन
भाषाको इटलीके सर्वसाधारण लोग अधिक काल पर्यन्त बोलते रहे
पर दान्तेको विश्वास था कि साहित्यके लिये लैटिनका प्रयोग दिखाने [illegible]
रह गया है। वह यह जानता था कि अनेक पुरुष तथा स्त्री जो केवल इटली
की भाषा ही जानते हैं उसकी कविता पुस्तकोंको और उसके विज्ञानविषयक
निबन्ध 'बैंक्वेट' को बड़े चावसे पढ़ेंगे।

दान्ते के लेखों से पता चलता है कि मध्ययुगके विद्वान विज्ञानके
बारे में जितने अनभिज्ञ समझे जाते थे उतने न थे। यद्यपि प्राचीन समय
के लोगोंकी तरह वे भी समझते थे कि पृथिवी मध्य में स्थिर है और सूर्य
तथा नक्षत्रगण उसके चारों ओर घूमते हैं तथापि ज्योतिषके
विषयमें वे बहुत कुछ जानते थे। वे पृथिवीको गोल मण्डल मानते थे
और उसके आयतनको भी लगभग ठीक जानते थे। उनको इस बात का
ज्ञान था कि समस्त गुरु वस्तुएं पृथिवीके केन्द्रसे आकर्षित होती हैं और
यदि कोई भूमंडलके दूसरी ओर भी चला जाय तो उसको गिरनेका कोई
भय नहीं है तथा जब पृथिवीके एक भागमें रात होती है तो दूसरे भागमें
दिन होता है।

दान्ते के समय में धर्मशिक्षाका अधिक प्रचार था। उसने भी उसमें
अपना अधिक उत्साह प्रकट किया था। वह अरस्तूको "सब
दार्शनिक[illegible]" कहकर उसकी प्रशंसा करता था पर साथ ही साथ [illegible]
तथा रोम के अन्य कवियों की उसने मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी। उसने
वर्जिल को पथप्रदर्शक बन कर परलोककी एक कल्पित यात्रा [illegible]
वह परलोकके उस प्रदेश में ले जाया गया जिसमें प्रायश्चित्त करके [illegible]

आत्माएं रहती हैं। वहां उसे होरेस ओविड और कविराज होमरके दर्शन हुए। वहीं हरी घासपर लेटे लेटे प्राचीन समय के विद्वान् सुकरात अफलातून तथा अन्य ग्रीक दार्शनिक सीज़र, सिसरो, लिवी, सिनेका, इत्यादिसे भेंट हुई। उनके संगसे वह इतना अधिक आनन्दित हुआ कि अपने अनुभवको शब्दोंमे व्यक्त न कर सका। उनके ईसाई न होनेसे वह अप्रसन्न नहीं हुआ। यह मानते हुए कि उनको स्वर्गका सुख नहीं प्राप्त हुआ वह कहता ह कि उनके लिये जो स्थान नियत है उसीमें वे आनन्दसे रहते हैं।

पेट्रार्क ने प्राचीन लेखकोंकी प्रतिष्ठा दान्तेसे भी कहीं अधिक की है। वह प्रथम विद्वान था जिसने मध्ययुग की शिक्षा का त्याग करके अपने समय के मनुष्योंको ग्रीक तथा रोमन साहित्यके लालित्य तथा सौन्दर्यको तरफ आकर्षित किया। मध्ययुगके विद्यापीठोंमे तर्क, धर्मशास्त्र तथा अरस्तूके ग्रंथों की व्याख्या स्वाध्यायके मुख्य विषय थे। बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दी के विद्वान् लाटिन मे लिखी उन्हीं पुस्तकों को पढ़ते थे जो वर्तमान समयमें भी प्राप्य है। पर वे उनके रसका आस्वादन नहीं कर सकते थे। उनको उदार शिक्षाका आधार बनानेका उनको स्वप्नमें भी विचार न उठा होगा।

पेट्रार्क ने लिखा है जब मैं बालक था मैं सिसेरो की मधुर भाषा पढ़कर ही अति प्रसन्न होता था, यद्यपि मैं उसे समझ नहीं सकता था। कुछ समय व्यतीत होने पर मुझे विश्वास होगया कि इस जीवनमें लाटिन भाषाके साहित्य को एकत्र करनेसे बढ़कर कोई दूसरा उच्च उद्देश्य नहीं हो सकता। वह केवल आपही विद्वान् न था। जो लोग उसके संसर्गमें आते थे उसको देखकर वे भी बड़े उत्साहित हो जाते थे। शिक्षित लोगों में उसने लैटिन शिक्षा का अधिक प्रचार किया। उसने प्राचीन समयकी अलभ्य तथा विस्मृत पुस्तकों के अन्वेषण में बहुत प्रयत्न किया। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगोंमें पुस्तकालय स्थापित करनेका नया उत्साह उत्पन्न हो गया।

"नवयुग" के विद्वानों तथा पेट्रार्कके स्वाध्याय-कार्यमें बड़ी कठिनाइयां थीं। उनके पास यूनान तथा रोमके प्रसिद्ध लेखकोंके ग्रन्थोंकी एक भी ऐसी प्रति न थी जिसके शब्दोंको प्राचीन हस्तलिपियोंसे मिलाकर भली भांति संशोधन किया गया हो। यदि उन्हें किसी विख्यात लेखकका एक भी हस्तलेख मिलजाता तो वे अपने को धन्य समझते पर तो भी वे निश्चय नहीं कर सकते थे कि उनमें अशुद्धि नहीं है। नकल करने वालोंकी असावधानतासे उन पुस्तकोंमें इतनी अशुद्धियां आगयी थीं कि यदि सिसरो तथा लिवी पुनर्जन्म लेकर आवें तो अपनी ही पुस्तक पढ़नेमें उन्हें बड़ी कठिनाई होगी और उन्हें प्रतीत होगा कि यह किताब किसी औरकी, शायद किसी जंगलीकी, लिखी होगी।

यूरोपमें आगे चलकर जितना प्रभाव एरैस्मस तथा वाल्टेयरका हुआ उतना ही उस समयमें पेट्रार्कका था। इटलीके अतिरिक्त आल्प पर्वत के उसपारके नगरोंके विद्वानोंसे भी उसका सम्बन्ध था। उसके कितने ही पत्र अब तक भी सुरक्षित हैं जिनसे उस समयकी संस्कृतिका पूरा पता चलता है।

उसने केवल रोमन विद्वानोंके ग्रन्थोंके स्वाध्यायका ही प्रचार नहीं किया था परन्तु साथ ही साथ उसने उस समयके विद्यापीठोंमें प्रचलित शिक्षाप्रणाली में बहुत परिवर्तन कर दिया। तेरहवीं शताब्दीके विद्वानों के ग्रन्थों को उसने अपने पुस्तकालयमें भी रखना स्वीकार नहीं किया। अरस्तूके भद्दे अनुवादों की प्रतिष्ठा देख देखकर वह रोजर बेकनकी भांति जलता था। उसके मतमें तर्कशास्त्रकी शिक्षा बालकोंके लिये अच्छी है। प्रौढ़ मनुष्यको तर्कशास्त्रके अध्ययनमें लिप्त हुआ देख उसे बड़ा खेद होता था।

इटालियन भाषामें सुन्दर तथा ललित कविताओंके लिये पेट्रार्ककी जितनी प्रसिद्धि है उतनी लेटिन भाषाकी कविता, इतिहास तथा अन्य निबन्धोंके लिये नहीं पर दान्तेकी भांति उसे मातृभाषासे प्रेम न था और वह अपने बनाये पद्योंको जवानीका खिलवाड़ कह कर उनको विशेष महत्व नहीं देता था। उसका तथा जिन लोगोंको लेटिन भाषाके साहित्यके लिये

उसने उत्साहित किया था उनका इटालियन भाषाके प्रति घृणा करना स्वाभाविक था। वह भाषा उन लोगों को गँवारी प्रतीत होती थी। उन लोगों का कहना था कि यह भाषा सामान्य लोगोंके दैनिक काममें प्रयोग करनेके लिये है। जिस भाषामें उनके पूर्वज रोमन कवियोंने अपने काव्य लिखे थे, उस भाषासे वह कहीं निकृष्ट प्रतीत होती थी। जितना अभिमान हम लोगोंको भवभूति तथा कालिदास के काव्योंसे होता है उतनाही अभिमान इटली-वालों को लैटिन साहित्यसे था। चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दीके इटलीके विद्वान् अपनी मातृभाषाको अपना पथप्रदर्शक न बना उसके जन्मदाता-ओंकी प्रणाली तथा भाषाका अनुकरण करने लगे।

जिन लोगोंने अपने सर्वस्व जीवनको पहिले रोमन साहित्य और पीछेसे ग्रीक साहित्यके अध्ययनमें लगायाथा ह्यूमनिस्ट विद्याप्रेमी कहाते थे। इस शब्दकी उत्पत्ति लैटिन "ह्यूमानिटस" शब्दसे हुई है। इस शब्दके अर्थ 'उन्नत ज्ञान' है। इस शब्दसे विशेषकर "साहित्यप्रियता" का बोध होता है। धर्मशास्त्रमें उनकी बहुत कम रुचि थी पर मनुष्यको संस्कृत बनानेके लिये जिस शिक्षाकी आवश्यकता थी उसकी प्राप्तिके लिये वे लोग सर्वदा सिसेरोके ग्रन्थ पढ़ा करते थे।

पेट्रार्ककी मृत्युके पीछेकी शताब्दीमें इटलीके विद्वानोंमें लैटिन तथा ग्रीक भाषाके लिये नयी श्रद्धा उत्पन्न हुई। साहित्यमें उनके इतने अधिक अनुरागका कारण समझनेके लिये यह जान लेना आवश्यक है कि वर्तमान समयके समान उच्चकोटिकी पुस्तकें उन्हें प्राप्त न थीं। वर्तमान समयमें यूरोपके प्रत्येक जातिके पास उसकी मातृभाषामें लिखित अनन्त साहित्य भरा है जिसको सब लोग पढ़ सकते हैं। प्राचीन ग्रंथोंके अनुवादके अतिरिक्त वर्तमान समयमें शेक्सपियर, वाल्टेयर तथा गेटे सदृश बड़े बड़े विद्वानोंके उच्च कोटिके ग्रन्थ हैं जिनका चार शताब्दी-पूर्व नाम भी नहीं सुना जाता था। सारांश यह है कि वर्तमान समयमें लैटिन अथवा ग्रीक भाषा जाने बिना ही हमलोग समस्त युगोंके अच्छे अच्छे

ग्रन्थ पढ़ सकते हैं । मध्य युगमें इस बातकी सुविधा न थी । इस कारण धर्मशास्त्र, तर्क तथा अरस्तूके विज्ञान ग्रन्थोंसे खिन्न होकर लोग आगस्टस अथवा पेरिक्लिज़के समयके ग्रन्थोंपर दत्तचित्त होते थे और उन्होंके साहित्य पथ प्रदर्शक बना अपने जीवनके उद्देश्यकी सिद्धि करते थे।

अनेक विद्वानोंने यूनानी और रोमन विद्वानोंके ग्रन्थोंको ध्यानपूर्वक पढ़ा । इससे उन लोगों को लौकिक तथा पारलौकिक जीवनके सम्बन्धमें मध्य युग वालोंके विश्वासोंसे अश्रद्धा होगयी । वे लोग होरेसकी शिक्षाका प्रचार करने लगे और महन्तों के आत्म त्यागकी प्रथाका ठट्ठा उड़ाने लगे । उन लोगोंका मत था कि मनुष्यको इस जीवनमें आनन्दका उपभोग करना चाहिये, दूसरे जन्मके लिये चिन्तित रहना वृथा है । कहीं कहीं तो वे लोग धर्मसंस्थाका भी प्रतिरोध कर बैठते थे, पर देखनेमें वे सदा उसकी आज्ञा मानते थे और अनेक धर्मपदोंपर नियुक्त भी होते थे।

ह्यूमेनिज़मने उदार शिक्षाकी आदर्शमें क्रान्ति मचा दिया । सोलहवीं शताब्दीमें जर्मनी, फ्रांस ताथ आंगल देशके बहुतसे लोग इटलीमें भ्रमणके लिये जाते थे । उन लोगोंके प्रभावसे अनेक विद्यालयोंने तर्क अथवा मध्ययुगके और विषयों को उठा कर लाटिन तथा ग्रीक साहित्य को मुख्य स्थान दिया। यह तो केवल थोड़े समयसे हुआ है कि विद्यापीठों और विद्यालयों में लैटिन तथा ग्रीकके स्थानमें अनेक प्रकारके विज्ञान तथा इतिहासकी शिक्षा आरंभ की गयी है। अवभी बहुत ऐसे लोग हैं जो पन्द्रहवीं शताब्दीके ह्यूमानिस्टोंसे सहमत हो यही कहते हैं कि और विषयों की अपेक्षा लैटिन तथा ग्रीक भाषाको ही पढ़ाना अच्छा है ।

चौदहवीं शताब्दी के ह्यूमनिस्ट साधारणतः ग्रीक भाषासे अनभिज्ञ थे । मध्ययुगमें इस भाषाका किंचिन्मात्र प्रचार पाश्चिममें था । परन्तु उस समयमें प्लेटो, डिमास्थनीज, एस्किलस अथवा होमरको पढ़नेका कोई भी प्रयत्न नहीं करता था । इन विद्वानोंके निवन्ध पुस्तकालयोंमें भी कठि-

नतासे पाये जाते थे। प्रेट्रार्क तथा उसके अनुयायियोंका ध्यान इस ओर आकर्षित होता था कि होरेस और सिसेरोने बारबार अपना एथन्सका ऋणी होना स्वीकार किया है। प्रेट्रार्ककी मृत्युके थोड़े ही दिन बाद फ्लोरेन्स नगरके विद्यापीठमें कुस्तुन्तुनियासे क्रिसोलोरस नामी ग्रीक भाषाके अध्यापक नियुक्त किये गये।

फ्लोरेन्स नगरके लियोनार्डो ब्रूनो नामक कानूनके कोविद था चित्तमें क्रिसोलोरसकी नियुक्तिका वृत्तान्त सुन कर जो विचार उठे उनको उसने इस प्रकार व्यक्त किया है। "यदि तुम होमर, डिमास्थनीज़, तथा अन्य अनेक बड़े बड़े कवियों और दार्शनिकों तथा विद्वानोंके ग्रन्थों-को जिनकी प्रसिद्धि चारो ओर फैल रही है नहीं पढते हो तो अपना बड़ी भारी क्षति कर रहे हो। तुम्हें भी उनमे दत्तचित्त होकर उनका ज्ञान प्राप्त करना चाहिये? क्या तुम चाहते हो कि यह अमूल्य समय यों ही निकल जाय? सातसौ वर्षसे इटलीमें ग्रीक भाषा जाननेवाला कोई मनुष्य नहीं है, पर तो भी सब लोग मानते हैं कि समस्त भाषाओंकी उत्पत्ति ग्रीक भाषामें हुई है। यदि तुम उस भाषासे परिचित हो जाओगे तो बुद्धि का कितना अधिक विकाश होगा और कितना आनन्द मिलैगा। रोमन कानूनोंके विद्वान् अनेक पाये जाते हैं और तुम्हें उसके स्वाध्यायके अवसरोंकी कमी नहीं होगी। परन्तु ग्रीक भाषा का एक ही शिक्षक है और यदि वह न रहेगा तो तुम्हें ग्रीक भाषा पढनेका अवसर ही प्राप्त न होगा"।

अनेक छात्रोंने इस अवसरसे लाभ उठाकर ग्रीक भाषा पढ़ना आरम्भ किया। क्रिसोलोरसने उनके लिये वर्तमान रीतिपर ग्रीक व्याकरणकी प्रथम पुस्तक बनायी। थोड़े ही दिनोंमें ग्रीक भाषा भी लैटिन भाषाकी भाँति प्रचलित हो गयी। इटलीके कितने लोग ग्रीक भाषा पढ़नेके लिये कुस्तुन्तुनिया गये। पूर्वीय धर्मसंस्था पाश्चिमीय धर्मसंस्थाके साथ तुर्कोंके प्रतिकूल सहायता पानेके लिये जो राजनैतिक सलाहमशविरे (मन्त्रणा) कर रही थी उसके सम्बन्धमें कितनेही ग्रीक विद्वान् इटली आये।

इटलीवालोंने अपने धर्मस्थानोंमें रोमन शिल्पका ही थोड़ासा परिवर्तन करके प्रयोग किया था। उत्तरीय देशोंमें ऊंचे मेहरावों और पत्थरकी नक्काशीका प्रचार विशेष रूपसे था, इधर इटलीमें गुंबज़का अधिक रवाज था।

वे लोग स्तम्भशिखर और भित्तिशिखर आदि छोटी मोटी चीजोंमें विशेष कर सरलता और आनुपातिक सौन्दर्यमें अवश्य पुराने शिल्पका अनुकरण करते थे। जिस प्रकार इटलीने प्राचीन साहित्यको अपनाया था, उसी प्रकार ग्रीक तथा रोमन कला और शिल्पके अनुकरणमें भी वह शेष यूरोपकी अपेक्षा विशेष रूपसे प्रभावित था।

नवयुगके आरंभ कालमें भित्ति-चित्र बनाये जाते थे। गिर्जों अथवा प्रासादोंकी दीवारोंपर ये बनाये जाते थे। कुछ चित्र, विशेष कर गिर्जोंकी वेदियोंपर लगानेके चित्र, काठके पटलों पर भी बनाये जाते थे। सोलहवीं शताब्दीमें कपड़े, काठ या अन्य वस्तुओंपर पृथक् चित्र भी बनाये जाने लगे।

कदाचित् मूर्तिकारोंमें ही प्राचीन समयका अनुकरण अधिक और सबसे पहिले किया गया। शिल्पकी उन्नतिमें पीसा नगरके मूर्तिकार निकोलाका स्थान प्रथम है। देखनेसे विदित होता है कि कुछ प्राचीन मूर्तिखंडोंका उसने उत्साहपूर्वक अनुशीलन किया था। पीसामें एक पत्थरकी बनी शव रखनेकी पेटी* तथा संगमरमरका एक बर्तन पाया गया था उन्हींमें बने कई रूपोंका अनुकरण करके उसने पीसाके गिर्जाके मेम्बर (उपदेशकके खड़े होनेके स्थान) का निर्माण किया था। यद्यपि मूर्तिकारोंकी कलाने लोगोंका ध्यान अपनी तरफ नवयुगके पूर्व आकर्षित किया था पर इसकी उन्नति बहुत धीरे धीरे हुई थी। इटलीका ध्यान तो इसकी तरफ पन्द्रहवीं शताब्दीमें गया तबसे इसकी उन्नति स्वतन्त्र तथा नूतन पथपर होने लगी।

* सार्कोफ़ेगस-पत्थरकी बनी सुन्दर पेटी जिसमें अमीर लोगों या प्रसिद्ध पुरुषोंके शव बन्द करके स्मारकालय में रखे जाते हैं।

चौदहवीं शताब्दीमें इटलीके विख्यात चित्रकार जोटोने चित्र-कला विकासमें विशेष उत्साह दिखलाया। इससे इस कलामें बड़ी शीघ्रताके साथ विशेष उन्नति हुई। उसके पहले भित्तियोंपर वज्रलेप चित्रोंका प्रचार था। व पूर्ववर्णित साधारण चित्रकारीके निदर्शनकी भाँति बहुत सुन्दर न होते थे। जोटोके समयसे चित्रकलामें विशेष परिवर्तन हुआ। जोटोको प्राचीन कलामें ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिसकी वह नकल करता, क्योंकि जो कुछ प्राचीनोंने उन्नति की थी वह सब लुप्त हो गयी थी। इस कारण उसे चित्रकलाकी समस्याओंको सरल करनेके लिये कहींसे कोई सहायता नहीं मिली। वह केवल उनको सरल करनेके कार्यकको आरम्भ कर पाया। उसके वृक्ष और भूभागके चित्र हास्य-जनक प्रतीत होते है, मुखाकृतियाँ सब एक प्रकारकी हैं। यदि कहीं लटके हुए कपड़ोंका चित्र दिया गया है तो उनकी तहें ऊपरसे नीचेतक सीधी हैं। पर उसने वह कार्य कर दिखानेका निश्चय किया था जिसका उसके पूर्वके चित्रकारोंने स्वप्न भी न देखा होगा, अर्थात् उसने जीवित भाव पूर्ण स्त्री तथा पुरुषोंके चित्र बनानेका प्रयत्न किया। उसने अपनी चित्रकारीको प्राचीन समयके केवल बाइबिलहीके दृश्योंतक नहीं सीमित किया। अपने प्रसिद्ध वज्रलेप चित्रमें उसने महात्मा फ्रैंसिसके जीवनके चित्र अंकित किये थ। चौदहवीं शताब्दीके चित्रकारों तथा सर्वसाधारणके चित्तोंपर इस पवित्र जीवनका विशेष प्रभाव पड़ा था। उस शताब्दीकी चित्रकलापर जोटोका विशेष प्रभाव पड़नेका यह भी कारण था कि वह चित्रकार होनेके अतिरिक्त गृहनिर्माण कलाका भी ज्ञाता था। इसके अतिरिक्त वह मूर्तिकारोंके लिये आदर्श चित्र भी तैयार करता था। एक ही कलाधरके हाथसे इतनी कलाओंका अभ्यास होना नवयुगकी अत्यन्त आश्चर्यजनक बातोंमेंसे एक है।

पन्द्रहवीं शताब्दी अथवा नवयुगके आरंभकालमें इटलीमें कलाकी वृद्धि हुई। यह धीरे धीरे उन्नत होकर सोलहवीं शताब्दीमें उच्च शिखर-

पर पहुंच गयी । मध्य युगकी प्रथाओंका परित्याग कर प्राचीन काल शिक्षाका पूर्णतया अभ्यास किया गया । ज्यों ज्यों यंत्रोंके प्रयोगमें वे अभ्य तथा कलाकी सूक्ष्म विधियोंसे परिचित होते गये त्यों त्यों उनकी चित्रकारी अपने अभिलाषित मानस भावोंको चित्रित करनेकी सामर्थ्य बढती गयी।

पन्द्रहवीं शताब्दीमें फ्लोरेन्स नगरमें कला-व्यवसायका केन्द्र था उस समयके सबसे प्रसिद्ध तथा चतुर चित्रकार शिल्पी तथा मूर्तिकार तो फ्लोरेन्स नगरके निवासी थे अथवा अपने अच्छे अच्छे कार्य वहीं संपादन किया करते थे । पन्द्रहवीं शताब्दीके पूर्व भागमें मूर्तिकारी पुनः प्रधानता हुई । फ्लोरेन्स नगरकी गिरजाके कांसेके द्वार जिनको गिब टीने (सन् १४५० ई०) संवत् १५०७ में तय्यार किया था नवयुग शिल्पके उत्कृष्ट उदाहरणोंमेंसे हैं । माईकेल अंजेला उन्हें स्वर्गद्वारके योग्य बतलाता था । बारहवीं शताब्दीके अन्तमें बने हुए पिसाकेद्वारोंसे इनकी तुलना करनेपर इनमें बड़ा भारी अन्तर प्रतीत होता है । ल्यूकाडेल रोबिया, गिबर्टीका समकालीन था । वह चिलकदार मिट्टी अथवा संगमर मर पर सुन्दर सुन्दर चित्र बनानेके लिये प्रसिद्ध था । उनके बहुतसे नमूने अब भी फ्लोरेन्समें पाये जाते हैं ।

पन्द्रहवीं शताब्दीके पूर्व भागमें फ्रा एंजेलिको नामका एक सदन्त विख्यात चित्रकार था । सैन मार्कोके मठकी दीवारों पर उसने जो चित्रकारी की है उससे उसके सौन्दर्य-प्रेम तथा आशामय भक्तिका परिचय मिलता है । इस भक्तिमें और सवानारोलाकी भक्तिमें महान् अन्तर है । सवोनारोला उसी मठका रहनेवाला था । भक्तिके आवेशमें उसने उसी शताब्दीके उत्तरार्द्धमें फ्लोरेन्स निवासियोंकी कलाप्रियताकी घोर निंदा की थी

फ्लोरेन्सका शासक लोरेन्जो कलाओंका बड़ा उन्मादी प्रेमी था । उसके राजत्व कालमें चित्रकलाका प्रधान स्थान फ्लोरेन्स उन्नतिके शिखर पर पहुंचा था । उसकी मृत्यु तथा सवोनारोलाके अल्पकालीन किन्तु प्रबल प्रभावमें कलाओंने रोमको प्राधान्य मिल गया ।

उस समय रोम यूरोपकी सबसे बड़ी राजधानियोंमें परिगणित था। पोप द्वितीय जूलियस तथा दशम लियो कलाओंके बड़े अनुरागी थे। उन्होंने बड़े प्रयत्नसे तत्कालीन विख्यात चित्रकारों तथा शिल्पियोंको महात्मा पीटरके समाधिस्थान तथा वेटिकन अर्थात् पोपकी गिरजा और महलके बनाने और सजानेमें लगाया। गिरजाओंके बीचमें गुम्बज रखना नवयुगके शिल्पियोंको बहुत भाता था। सेराटपीटरके गिर्जाका गुम्बज शिल्पकी पराकाष्ठापर पहुंच गया है।

इस गिरजाके निर्माणका आरंभ पन्द्रहवीं शताब्दीमें हुआ। सम्वत् १५६३ में पोप द्वितीय जूलियसने इसको बहुत उत्साहके साथ आगे बढ़ाया यह कार्य तत्कालीन चतुर तथा विख्यात कारीगर राफेल और माइकेल अंजेलो आदिकी निरीक्षणमें सारी सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दीके कुछ अंश पर्यन्त चलता रहा। पहले खाकोंमे अनेक बार परिवर्तन हुए। परन्तु जब वह भवन बन कर तैय्यार हुआ तो वह लैटिन क्रासके आकारका बनाया गया और उसपर एक विशाल गुम्बज बनाया गया। उसका व्यास एक सौ अड़तीस फुट लम्बा था। यह धर्ममदिरोंमें सबसे अधिक विशाल था। इस विशाल गिर्जाको देखकर लोगोंको एक प्रकारका विस्मय होता है।

सोलहवी शताब्दीमें नवयुगी शिल्पकला उन्नतिके चरम शिखरपर पहुंच गयी थी। उस समयके सम्पूर्ण शिल्पकारोंमें लियोनार्डो डा विंसी माइकेल अंजेलो तथा राफेल सबसे अधिक विख्यात है। इनमेंसे प्रथम तथा द्वितीयने तो भवन, शिल्प-मूर्तिकारी तथा चित्रकला तीनोंमें अनन्त यश प्राप्त किया था। इन तीनोंकी कलाप्रवीणताका परिचय थोड़ी सी पंक्तियोंमें नहीं किया जा सकता। राफेल तथा माइकेल अंजेलोके बनाये हुये सुन्दर सुन्दर भित्तिचित्र तथा अन्य चित्र और माइकेलकी बनायी सुन्दर मूर्तियाँ भी मिलती हैं। उन्हें देखकर उनके उत्कर्षका अनुमान किया जा सकता है। लियोनार्डोकी कलाके सर्वांगपूर्ण नमूने बहुत कम बचे हैं। समस्त चित्रकलामें उसकी विख्याति इस कारण भी है कि उसने

प्रकृति विविध रूपसे विकसित थी, उनके कार्य मौलिक होते थे और व नयी पद्धतियोंका आविष्कार कर उनका प्रयोग करता था। उसको वैज्ञानिक न कह कर परीक्षक कहें तो बहुत यथार्थ होगा।

यद्यपि अब फ्लारेंस इटलीकी शिल्पकलाका केन्द्र स्थान न रह गया था तथापि वहाँ अच्छे २ चित्रकार होते थे जिनमें एण्ड्रिया डेल सार्टो सबसे श्रेष्ठ था। पर सोलहवीं शताब्दीमें रोमके बाहर चित्रकलाका सबसे बड़ा केन्द्र वेनिस था। वहांके चित्रोंमें भड़कीले रंगोंकी विशेषता थी। यह वेनिसके सबसे विख्यात चित्रकार टिशनके चित्रोंसे बहुत स्पष्ट हो जाती है।

इटलीके शिल्पकारोंका यश इतना अधिक विस्तृत हो गया था कि उत्तरीय प्रदेशोंसे लोग वहाँके उस्तादोंके पास आ कर चित्रकलाकी शिक्षा पाते थे, और उस कलामें निपुण हो कर अपने देशको लौट जाते थे और अपने अपने ढंगके अनुसार कलाका प्रयोग करते थे। लगभग इससे एक शताब्दी पश्चात् बेलजियमके वान आइक नामी दो भाई रहते थे जो चित्रकलामें इतने निपुण थे कि इटलीवालोंसे तुलनामें किसी प्रकार कम न थे। उन लोगोंने रंगमिश्रित करनेकी नवीन विधिका आविष्कार किया जो इटलीवालोंसे कहीं बढ़ कर थी। इसके पश्चात् जिस समय इटलीमें चित्रकला उन्नतिके शिखरपर पहुंची थी, उस समय जर्मनीमें ड्यूरर तथा हैन्स हाल्बीन नामी दो प्रसिद्ध चित्रकार हुए जो चित्रकारीमें राफेल तथा माइकेल एंजेलोको मात करते थे। ड्यूरर लकड़ी तथा ताँबेके पत्तरोंपर खुदाईके कामके लिये अधिक विख्यात है। ऐसा प्रतीत होता है कि अबतक इस कार्यमें कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता है।

सत्रहवीं शताब्दीमें आल्प्स पर्वतके उत्तरमें चित्रकलाकी उन्नति होने लगी। उस समय डच तथा फ्लेमिश चित्रकारोंने और रूबेन्स और रेम्ब्रान्टने चित्रकलाकी एक नयी प्रथा निकाली। उनके चित्रकार वानडाइकने कितने ही ऐतिहासिक प्रसिद्ध पुरुषोंके चित्र बनाये

सत्रहवीं शताब्दीमें स्पेनमें वेलास्कीज नामी चित्रकार पैदा हुआ, जो इटलीके सबसे अच्छे चित्रकारोंसे कहीं विशेष चतुर था। वानडाइककी भाँति उसने भी कितने ही विस्मयकारी चित्र बनाये।

छापेकी कलके आविष्कारके थोड़े ही दिन पश्चात् समुद्रयात्रा आरंभ हुई जिससे समस्त भूमण्डलका पता लगाया गया और पश्चिमी यूरोपकी दृष्टिसीमाका विस्तार हुआ। यूनान तथा रोमके निवासी दक्षिणी यूरोप उत्तरी अफ्रीका तथा पश्चिमीय एशियाके अतिरिक्त संसारके सम्बन्धमें बहुत कम जानते थे और जो कुछ वे जानते भी थे उसे भी लोग मध्ययुगमें भूल चुके थे। क्रुसेडयात्रामें बहुतसे यूरोपके निवासी मिश्र अथवा शामपर्यंत गये थे। दान्तेके समयमें वेनिसके पोलो नामी दो वणिक चीन देशमें गये। पेकिंग नगरमें मंगालोंके राजाने उनका अच्छा सत्कार किया। (सन् १२६५ ई०) दूसरी यात्रामें उनमेंसे एकका बेटा मार्को पोलो भी उनके साथ गया। बीस वर्ष पर्यंत भ्रमण करके वे लोग संवत् १३५२ में वेनिस लौटे। वहाँ पहुंच कर मार्कोने अपनी यात्राके अनुभवका जो वर्णन किया है उसको पढ़कर आश्चर्य होता है। उसने स्वर्णद्वीप जियाण्ड (जापान) तथा मसाले उत्पन्न करनेवाले द्वीप मलक्का एवं लंकाका जो झूठसच मिला हुआ वर्णन किया उसने यूरोपवालोंको बहुत आकृष्ट और उत्साहित किया।

सम्वत् १३७६ में वेनिस तथा जिनोआने नेदरलैंडके नगरोंसे सामुद्रिक सम्बन्ध स्थापित किया। उनके नौपोत लिसबन नौकाश्रयमें ठहरते थे। पुर्तगालवालोंका व्यापारमें बड़ा उत्साह बढ़ा और वे लोग भी लंबी लंबी सामुद्रिक यात्रा करने लगे। चौदहवीं शताब्दीके मध्यकाल तक उन लोगोंने कैनरी द्वीप मैडेरा तथा अजार्सका पता लगाया। इसके पहले सहाराके रेगिस्तानके आगे किसीने भी आफ्रिका तटपर जानेका साहस न किया था। वह देश अति भयानक था, वहां बंदरगाह भी नहीं थे और लोगोंको विश्वास था कि उष्णकटिबंध निवासयोग्य नहीं है, इससे नावि-

काक मार्गमें और भी रुकावट पड़ती थी । संवत् १५०२ (सन् १४४५ई०) में कुछ उत्साही नाविक मरुभूमिके पारतक आये। वहाँपर उन्हें गर्म प्रदेशोंमें उत्पन्न होनेवाले वृक्षोंसे हराभरा एक प्रदेश दृष्टिगोचर हुआ। उसका नाम उन लोगोंने वर्ड अन्तरीप रखा । इसका परिणाम यह हुआ कि अब लोगोंके ध्यानसे यह बात जाती रही कि दक्षिणमें कोई बसने योग्य हराभरा प्रदेश नहीं है ।

एक पीढ़ीतक पुर्तगालवाले अफ्रिका तटपर बराबर आगे बढ़ते रहे। उनकी आशा थी कि जहाँ उसका अंत होगा वहाँसे उन्हें समुद्रद्वारा भारतमें जानेका मार्ग मिल जायगा । अंतको संवत् १५४३ (सन् १४८६ई) में डायजने गुड होप नामी अन्तरीपकी प्रदक्षिणा की। ठीक बारह वर्ष बाद संवत् १५५५ में कोलम्बसके नूतन अविष्कारसे उत्तेजित हो वास्कोडिगामा गुड होप अन्तरीपकी परिक्रमाकर जंजबार द्वीपके उत्तरसे हिन्द महासागर पार करता हुआ भारतके पश्चिम तटपर बसे हुए कालीकट नगरमें पहुंचा।

इन साहसिक कार्योंसे मसालेके व्यापारी मुसलमानोंका अनेक प्रकार की शंकाएं उत्पन्न होने लगीं, क्योंकि इनलोगोंको विदित हो गया था कि इन सबका अभिप्राय केवल मसालेके द्वीपोंमें स्वतन्त्र व्यवसाय स्थापन करनेका था । इस समय पर्यन्त मलक्का तथा भूमध्य समुद्रके पूर्वी नौका-श्रयोंके बीचका मसालेका सम्पूर्ण व्यवसाय मुसलमानोंके अधिकारमें था। वहाँसे सब वस्तु इटलीके व्यवसायी ले जाते थे । पुर्तगालवालोंने भारतीय राजोंसे सन्धिकर गोआ तथा अन्य स्थानोंमें व्यवसायस्थान बनाये । इसको मुसलमान लोग किसी प्रकार रोक नहीं सके। संवत १५६६ में वास्कोडिगामाका एक उत्तराधिकारी जावा तथा मलक्का द्वीपोंमें जा पहुंचा। वहाँपर उनलोगोंने एक दुर्ग खड़ा किया। सम्वत् १५७२ में पुर्तगालकी सामुद्रिक शक्ति यूरोपके अन्य समस्त राष्ट्रोंकी सामुद्रिक शक्तियोंसे बढ़ गयी थी । अब इटलीके नगरोंकी मध्यस्थताके बिना ही मसाला लिस्बन नगर पहुंचने लगा । इससे इटलीके नगरोंको बहुत क्षति पहुंची ।

इससे विदित होता है कि भूमण्डलका अन्वेषण केवल मसालेकी प्राप्तिके लिये हुआ था। इस प्रयोजनकी सिद्धिके लिये यूरोपके नाविकोंने पूर्वदेशमे प्रवेश करनेके यथासाध्य सम्पूर्ण प्रयत्न किये। उन लोगोंने अफ्रिकाकी परिक्रमा की। अमेरिकाके अस्तित्वका जाननके पूर्व उन लोगोंने पश्चिमी समुद्र यात्रा कदाचित् इण्डीजमे पहुँचनेके लिये की। अमेरिकाका पता लग जानेके पश्चात् उसके उत्तर तथा दक्षिणसे यात्रा की। यहाँ तक कि उत्तरसे आरम्भ कर समस्त यूरोपकी परिक्रमा की गयी। हमलोगोंकी समझमें नहीं आता कि उस समयमें मसालोंके लिये इतना अधिक उत्साह क्यों प्रकट किया गया था। वर्तमान समयमें यूरोपमें मसालोंकी उतनी माँग नहीं है। उन दिनोंमें माँसकी रक्षा करनेके लिये मसालेका प्रयोग किया जाता था, क्योंकि वर्तमान समयकी भाँति माँस ताजा ताजा एक स्थानसे दूसरे स्थानको इतनी शीघ्रतासे नहीं पहुँचाया जा सकता था और न वर्तमान कालकी भाँति वर्फसे ही उसकी रक्षा की जा सकती थी इसके अतिरिक्त बिगड़ा हुआ पदार्थ भी मसाला मिलानेसे स्वादिष्ट हो जाता था।

दूरदर्शी लोगोंको ऐसा विदित होने लगा कि पश्चिमकी ओर यात्रा करनेसे पूर्वी एशिया द्वीपसमूहमें पहुंचना हो सकता है। पृथ्वीके आकार तथा परिमाणका मुख्य प्रामाणिक विद्वान् उस समय प्राचीन ज्योतिषी टालमी था। उसका वतलाया परिमाण वास्तविक परिमाणसे ⅙ भाग कम था और मार्कोपोलोने अपनी यात्राके वर्णनमें पूरबकी दूरीको अधिक बढ़ाकर कहा था, इससे लोगोंका विश्वास था कि अटलांटिकको पार करके जानेमें यूरोपसे जापान अधिक दूर न होगा।

पश्चिमकी प्रथम यात्राका भावी उपक्रम संवत् १५३१ (सन् १४७४ ई०)में पुर्तगालके राजाको फ्लोरेन्सके एक वैद्य ईस्केनलान टास्कनेलीने दिया था। संवत् १५४९ (सन् १४९२ ई०) मे जिनोआके नाविक कोलम्बसने जिसे समुद्रिक यात्रामें विशेष अनुभव था तीन छोटी छोटी नौका लेकर पूर्व मतहमें जापान (जीपांगु) पहुंचनेकी आशासे यात्रा की थी। हेन्री हडसने दक्षि

...नेके पच्चीस दिन बाद वह सैन सैल्वेडोर द्वीपमें जा पहुंचा। कोलम्बसने ...मझा कि वह पूर्वीय इण्डीजमें पहुंच गया। इससे आगे बढ़कर वह क्यूबा ...पमें पहुंचा। उसको उसने एशिया महाद्वीप समझा था। अन्तको वह ...ती द्वीपमें पहुंचा जिसे उसने अपना निर्दिष्ट प्रदेश जापान ही समझा। उसने तीन और सामुद्रिक यात्रायें कीं और दक्षिणी अमेरिकाके ओरिनोके पर्यन्त पहुंचा और अन्तमें मर भी गया पर तबतक उसे यह ज्ञान नहीं कि वह वस्तुतः एशियाके किनारे तक नहीं पहुंचा।

वास्को डिगामा तथा कोलम्बसके साहस-कार्यसे उत्साहित हो मेगेलनके नेतृत्वमें एक सामुद्रिक यात्रा की गयी। इसने समस्त भूमण्डलकी परिक्रमा की। अब नये नये देशोंका यूरोप-निवासियोंको पता लगने लगा। उत्तरीय अमेरिकाके तटको प्रधानतया आंग्ल देशीय नाविकोंने बड़ी सावधानीसे खोजना शुरू किया। एक शताब्दी इसी कार्यमें बीत गयी। इन्हें आशा लगी रही कि इन्हें मसालेके द्वीपोंको जानेके लिये उत्तरसे कोई मार्ग अवश्य मिल ही जायगा पर यह सब निष्फल हुआ।

संवत् १५७६ में कार्टीजने स्पेनके लिये मेक्सिकोके आजटेक साम्राज्यकी विजय की। कुछ वर्ष पश्चात् पिजारोने पेरू प्रांतमें ... स्पेनका झण्डा गाड़ दिया। यूरोपवासियोंने इन देशोंके आदिम निवासियोंके अधिकारोंपर तनिक भी ध्यान न दिया और उनके साथ अत्यन्त क्रूर और घृणित व्यवहार किया। स्पेनने सामुद्रिक शक्तिमें पुर्तगालको दबा दिया। सोलहवीं शताब्दीमें उसकी उन्नति तथा प्रसिद्धिका कारण उसके नव-प्राप्त देशोंसे आयी लूटसे प्राप्त लक्ष्मी ही थी।

इस युगके अवसानमें दक्षिणी अमेरिकाके उत्तरीय तटोंपर अनेक साहसी नाविक जा पहुंचे। इनमें व्यापारी दास-विक्रेता तथा डाकू भी ... इनमेंसे अधिकतर तो आयर्लैण्ड देशके रहनेवाले थे। आंग्ल देशकी ... नाविक वृद्धि इन्हीं लोगोंके कारण हुई थी।

इधर तो कोलम्बस तथा वास्कोडिगामाके प्रयत्नसे नये नये देशों...

यूरोपवासियोंको परिचय होता जाता था, उधर पोलैण्डका वासी कौपार्निकस नामी ज्योतिषी यह कह रहा था कि इस पृथ्वीको विश्वका केन्द्र मानने-में प्राचीनोंने भूल की थी। उसने पता लगाया कि पृथ्वी भी और ग्रहोंके साथ सूर्यकी परिक्रमा करती है। इससे गगनचारी ग्रहों तथा उनकी चालोंके सम्बन्धमें जो नया ज्ञान प्राप्त हुआ वही वर्तमान ज्योतिषका आधार है।

यह जानकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य और दुःख हुआ कि जिस पृथ्वीपर हम लोग बसते हैं वह ईश्वरीय सृष्टिमें सबसे बड़ी होकर विश्वकी तुलनामें एक रजःकण मात्र है और हमारा सूर्य नक्षत्रोंमेंसे एक नक्षत्र है। प्रत्येक नक्षत्रके साथ अपना अपना ग्रह-परिवार है जो उसकी प्रदक्षिणा करता है। प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथलिक दोनों मतोंके धर्माध्यक्षोंने कहा कि कापर्निकस मूर्ख, दुष्ट और झूठा है क्योंकि उसकी शिक्षा बाइबिलके विरुद्ध है। उसने अपनी मृत्युके कुछ ही पहले अपनी नयी विद्याका प्रकाश किया नहीं तो उसको इसके लिये न जाने क्या क्या कष्ट भुगतने पड़ते।

इन विविध प्रकारकी उन्नतियोंके अतिरिक्त चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दीमें अनेक प्रकारके कला-कौशलोंके आविष्कार हुए जिनमेंसे एकका भी यूनानियों तथा रोमनोंको पता न था, उदाहरणार्थ, छापाखाना, कम्पास (ध्रुवदर्शक) बारूद तथा चश्मेका प्रयोग। लोहेको गलाकर उसको साँचोंमें ढालनेका आविष्कार भी हो चुका था।

सारांश यह है कि यह युग केवल साहित्य-चर्चाहीके लिये विख्यात नहीं था, इस युगमें केवल प्राचीन कला तथा साहित्यका पुनर्जन्म ही नहीं हुआ था, वरन् इस समय यूरोपने ऐसी अनेक उन्नतियोंकी नींव डाली जो प्राचीन समयसे बिलकुल भिन्न थीं और जिनकी सफलताका प्राचीनोंको स्वप्न भी न था।

अध्याय २२

सोलहवीं शताब्दीके आरम्भमें यूरोपकी दशा।

सोलहवीं शताब्दीके आरम्भमें दो ऐसी घटनायें हुईं जिनसे यूरोपके इतिहासमें बड़ा परिवर्तन हुआ।

(१) कई ऐसे ऐसे विवाह हुए जिनसे पश्चिमी यूरोपका अधिक भाग सम्राट् पञ्चम चार्लस्के अधीन हो गया। बर्गण्डी, स्पेन, इटलीका कुछ भाग तथा आष्ट्रियाका राज्य मिला और सं० १५७६ में वह सम्राट् चुना गया। चार्लमेनके समयसे लेकर उस समयपर्य्यन्त उसके साम्राज्यके बराबर कोई साम्राज्य नहीं हुआ था। वियना, ब्रसल्स, मैड्रिड, पेलर्मो, नेपिल्स, मिलन तथा मेक्सिको उसके साम्राज्यके अन्तर्गत थे। इस साम्राज्यका उदय तथा कलहोंके साथ इसका अन्त दोनों ही आधुनिक यूरोपके इतिहासमें बड़े विख्यात हैं।

(२) जिस समय चार्लस् इस लम्बे चौड़े साम्राज्यका उत्तरदायित्व अपने हाथमें ले रहा था, मध्ययुगकी धर्म-संस्थाके प्रतिकूल आन्दोलन भी बड़ी सफलतासे उठ खड़ा हुआ था। इस आन्दोलनसे धर्म-संस्थामें मतभेद हो गया और कैथलिक तथा प्रोटेस्टेण्ट दो दल खड़े हो गये जो अब तक भी वर्तमान हैं। इस परिच्छेदमें पंचम चार्लसके साम्राज्यकी स्थापना, उसके विस्तार तथा विशेषताका वर्णन किया जायगा, इससे पाठक प्रोटेस्टेण्ट विद्रोहके राजनीतिक परिणामोंसे भली भाँति परिचित हो जायँगे।

जिन पारिवारिक सम्बन्धोंके कारण इतना बड़ा साम्राज्य एक युवकके हाथमें लगा उनका विवरण देनेके पूर्व हम पंचम चार्लसके मूल [illegible] और [illegible] स्पेनका [illegible] वंशका संक्षेपतः वर्णन करना चाहते हैं।

राजनीतिमें प्रवेश भी दिखलाना चाहते हैं क्योंकि स्पेनका अब तकके इतिहासमें बहुत कम उल्लेख हुआ है।

जर्मनीके राजा लोग फ्रांसके ग्यारहवें लुई तथा आंग्ल देशके सप्तम हेनरीकी भांति सुरक्षित तथा शक्तिशाली राज्य स्थापित नहीं कर सके। उन लोगोंको अपने मानास्पद सम्राट्-पदके कारण ही बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। जर्मनी तथा इटलीके राज्योंको अपने अधीन रखनेके प्रयत्न करने तथा रोमके विशपके उनके शत्रुओंके साथ मिले रहनेसे वे मटियामेट हो गये। उनकी गद्दियां उनके वंशजोंके हाथमें न रहीं, इस कारण उनकी शक्ति और भी क्षीण हो गयी। यद्यपि सम्राटोंके मरनेपर उनके पुत्र ही प्रायः गद्दीपर बैठाये जाते थे तो भी उनका राज्याभिषेक चुनावके पश्चात् होता था। चुननेवाले इस बातका ध्यान रखते थे और नये सम्राट्से वचन ले लेते थे कि वह उनके विशेष अधिकारों तथा स्वत्वोंमें हस्तक्षेप न करेगा। इसका परिणाम यह हुआ कि होहेन्स्टाफेन वंशके राज्यच्युत होनेके पश्चात् जर्मन साम्राज्य कई स्वतन्त्र रियासतोंमें बंट गया। उनमेंसे कोई भी रियासत बहुत बड़ी नहीं थी पर कितनी तो बहुत ही छोटी थीं।

कुछ समयकी अराजकताके पश्चात् सं० १३३० (सन् १२७३ ई०) में हैप्सबर्ग वंशका रूडल्फ सम्राट् चुना गया। हैप्सबर्ग वंशके लोगोंने यूरोपके इतिहासमें बड़ा भाग लिया है। उनका मूल निवास उत्तरीय स्विट्जरलैंडमें था जहांपर उनके प्रासादोंका भग्नावशेष अब भी पाया जा सकता है। रूडल्फ इस वंशका प्रधान पुरुष था। उसने आस्ट्रिया तथा स्टारियाकी डचियोंको अपने अधिकारमें लेकर अपने वंशकी प्रतिष्ठा और शक्ति बढ़ायी। इन्हींसे बढ़ते बढ़ते उसके उत्तराधिकारियोंके समयमें विशाल आस्ट्रियन राज्यकी स्थापना हो गयी।

रूडल्फकी मृत्युके लगभग डेढ़ सौ वर्ष बाद निर्णायकोंने आस्ट्रियन राज्यके स्वामीको सम्राट् चुननेका नियमसा बना लिया इस लिये सम्राट्की पदवी, हैप्सबर्ग वंशमें, पैतृकसी हो गयी। परन्तु हैप्सबर्गोंको मृतप्राय

पवित्र रोमन साम्राज्यकी हितवृद्धिकी अपेक्षा अपने कौटुम्बिक राज्यकी वृद्धिका अधिक खयाल था। यह साम्राज्य तो, वाल्टेयरके शब्दोंमें, न अब पवित्र रह गया था, न रोमन रह गया था, न साम्राज्य रह गया था।

प्रथम मैक्सिमिलियन जो सोलहवीं शताब्दीके आरम्भमें सम्राट था जर्मनीके शासनके सुधारकी ओर ध्यान न देकर अपनी विदेशी विजय-यात्राओंमें मग्न रहता था। अपने अन्य पूर्वाधिकारियोंकी भांति उसे भी उत्तरीय इटलीपर अधिकार प्राप्त करनेकी प्रबल इच्छा थी। उसका विवाह चार्ल्स दि बोल्ड (धृष्ट चार्ल्स) की लड़कीसे हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि नेदरलैण्डका आस्ट्रियासे सम्बन्ध हो गया। इस सम्बन्धके आगे चलकर कई असाधारण परिणाम निकले। विवाहने हैप्सबर्गोंको स्पेनका भी, जिसका अभी तक जर्मनीसे किसी प्रकारका सम्बन्ध न था, अधिपति बना दिया।

स्पेनपर मुसल्मानोंके विजय पा जानेसे इस देशका इतिहास यूरोपके अन्य देशोंके इतिहाससे भिन्न प्रकारका हो गया। इस विजयका पहिला प्रभाव तो यह पड़ा कि उसके बहुतसे निवासी मुसल्मान हो गये। दशम शताब्दीमें, जब कि सारा यूरोप घोर अन्धकारमें डूबा हुआ था, स्पेनकी अरब सभ्यता उन्नतिके शिखरपर पहुंची। प्रजाके रोमन, गोथिक, अरब और बर्बर आदि भिन्न भिन्न अंग पूर्णतया मिल जुल गये थे। कृषि, व्यापार, व्यवसाय, कला और विज्ञानकी खूब उन्नति हो रही थी। उस समय स्यात् सारी पृथ्वीपर कर्डोवाके समान विशाल और समृद्ध नगर न था। उसकी जनसंख्या ५ लाख थी। उसमें विश्वविद्यालय और प्रासाद-पम भवनोंके सिवाय ३,००० मस्जिदें और ३०० सार्वजनिक स्नानागार थे। जिस समय उत्तरी यूरोपमें केवल पादरी लोगोंको कुछ साधारण अक्षर-बोध था उस समय कर्डोवाके विश्वविद्यालयमें सहस्रों छात्र पढ़ रहे थे। परन्तु यह शानदार सभ्यता भी वर्द्धमान न ठहरी। ११ वीं शताब्दीके अन्त तक कर्डोवाकी खिलाफत नष्टप्राय हो गयी थी और इसके कुछ काल पीछे अर्बोंका नाश

विजेताओंने आकर देशपर अधिकार जमा लिया।'

यह बातें हो रही थीं पर इनके साथही उत्तरीय स्पेनके पहाड़ोंमें ईसाई राज्यके चिन्ह बचे चले आते थे। संवत् १०५० के लगभग कैस्टील, ऐरेगॉन और नैवार आदि कई छोटे छोटे ईसाई राज्योंका जन्म हो चुका था। कैस्टीलने विशेष उन्नति की। उसने हतोत्साह अरबोंको पीछे हटाना आरम्भ किया और संवत् ११३२ में टालीडो उनसे छीन लिया।

ऐरेगॉनने बार्सिलोनाको मिलाकर अपनी सीमा बढ़ा ली और एब्रोके किनारोंपरकी भूमि जीत ली। संवत् १३०० तक स्पेनके मुसलमानों और ईसाइयोंकी लम्बी लड़ाई समाप्त हो गयी। कैस्टीलका राज्य दक्षिणी समुद्र-तटतक पहुंच चुका था और कर्डोवा और सेविलके नगर उसके अन्तर्गत थे। पुर्तगालका राज्य उतनाही विस्तृत हो गया था जितना कि वह आज है।

स्पेनके मुसलमान मूर कहलाते थे। दो सौ वर्षतक उन्होंने स्पेनी प्रायद्वीपके दक्षिणी पहाड़ी भागमें गरनातामें अपना राज्य स्थिर रक्खा। इस बीचमें स्पेनके सबसे बड़े ईसाई राज्य, कैस्टीलको, घरेलू झगड़ोंने इतना व्यग्र कर रक्खा था कि उसे मूरोंसे लड़नेका अवकाश ही न था।

स्पेनके उल्लेखनीय शासकोंमें कैस्टीलकी रानी इसावेलाका स्थान पहिला है। इन्होंने संवत् १५२६ में ऐरेगॉनके युवराज फर्डिनेण्डसे विवाह किया।

इस विवाहके द्वारा कैस्टील और ऐरेगॉनका जो संयोग हुआ उसीने यूरोपीय इतिहासमें स्पेनके महत्त्वकी नींव डाली। इसके बाद सौ वर्ष तक स्पेन यूरोपका सबसे प्रबल राज्य रहा। फर्डिनेण्ड और इसावेलाने पहिले प्रायद्वीपकी विजयको पूर्ण करनेका विचार किया और संवत् १५४९ में गरनाता उनके हाथमें आया। बस फिर स्पेनमें मूरोंका आधिपत्यका लेशमात्र भी न रहा।

जिस समय प्रायद्वीपपर पूर्ण अधिकार प्राप्त हुआ उसी समय

कोलम्बसने जो रानी इसावेलाकी सहायतासे यात्रा करने गया था, अमेरिकाका उद्घाटन किया और स्पेनके लिये अनन्त धनराशिका द्वार खोल दिया। सोलहवीं शताब्दीमें स्पेनका जो अल्पकालिक अभ्युदय हुआ उसका कारण यही अमेरिकासे आया हुआ धन था। मेक्सिको और पेरु के नगरोंकी लूट और चाँदीकी खानोंकी आयने कुछ कालके लिये स्पेनको वह स्थान दिला दिया जिसे अपने निजी वल और सम्पत्तिसे वह कभी प्राप्त न कर सकता।

परन्तु दुर्भाग्यकी वात यह थी कि स्पेनके सबसे पारिश्रमी, मितव्ययी और गुणी निवासियों अर्थात् मूरों और यहूदियोंके साथ जिनके व्यवसायसे प्रायः सारे देशका पालन पोषण होता था, ईसाइयोंका व्यवहार बहुत बुरा था। इसावेलाको अपने राज्यसे ईसइयोंको निकालनेकी इतनी तीव्र इच्छा थी कि उसने इंक्विजिशन नामक धार्मिक न्यायालयोंको फिरसे जारी किया। वीसों वर्ष तक ये न्यायालय जारी रहे। सहस्रों मनुष्य, जिनपर विधर्म्मी होनेका अभियोग चलाया जाता था, इनमें लाये जाते थे और इनकी आज्ञासे जला दिये जाते थे। संवत् १६६६ में सब मूर स्पेनसे निकाल दिये गये। इन अत्याचारोंने उन लोगोंको निरुत्साह बना दिया जो स्पेनकी जनतामें सबसे अधिक उद्यमी थे। इसका परिणाम यह हुआ कि, स्पेनको सोलहवीं शताब्दीमें समृद्ध और वलशाली बननेका जो अवसर मिला था वह उसके हाथसे निकल गया।

जर्मन सम्राट् मैक्सिमिलियनको धृष्ट चार्लसकी लड़कीसे विवाह करनेसे बर्गण्डी तो मिल गया पर वह इतनेसे सन्तुष्ट न हुआ। उसने फर्डिनेण्ड और इसावेलाकी लड़की जोआनासे अपने लड़के फिलिपका विवाह कराया। संवत् १५६३ में फिलिपकी मृत्यु हो गयी और जोआनाको पतिवियोगने पागल कर दिया, इसलिये वह राज्य करनेके योग्य न रही। इसलिये उसके लड़के चार्लसका भविष्य बड़ाही उज्ज्वल था। अपने दादा मैक्सिमीलियन और नाना फर्डिनेण्डके मरनेपर वह

बहुतसी उपाधियों और बहुत बड़े अधिकारका स्वामी होनेवाला था।*

१५७२ में फार्डिनेण्डकी मृत्यु हुई। उस समय चार्लस सोलह वर्षका था। वह आजन्म नेदरलैण्डमें ही रहा था। जब वह स्पेन आया तो उसे कई कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। स्पेनवाले उसके नेदरलैण्ड-वासी साथियोंसे चिढ़ते थे। बात बातमें सन्देह, शंका और अविश्वासका परिचय मिलता था। स्पेनका साम्राज्य कई राज्योंमें बंटा था। इनमें-से प्रत्येक राज्य यह चाहता था कि चार्लसको सम्राट् माननेके पहिले उसे कुछ विशेष अधिकार मिल जायं।

स्पेन-नरेश बननेमें तो आपत्तियाँ थीं ही, चार वर्षके भीतरही उसको एक और दायित्व-पूर्ण पद मिला। मैक्सिमिलियनकी बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि उसके मरनेपर उसका पोता सम्राट् हो। १५७६ में

---

* आस्ट्रिया — बर्गन्डी — कैस्टील — एरेगॉन

प्रथम मैक्सिमीलियन (मृ॰ १५०६) = मेरी (मृ: १५६१) (धृष्ट चार्लसकी लड़की) — इसाबेला (मृ: १५६१) = फार्डिनन्ड (मृ: १५७२)

फिलिप (मृ॰ १५६३) = जोआना (मृः १६२२)

पञ्चम चार्लस (मृ १६१५) (सम्राट्) — फार्डिनेण्ड (मृः १६२१) (सम्राट्) = ऐना (बरहामिया और हंगरीकी उत्तराधिकारिणी)
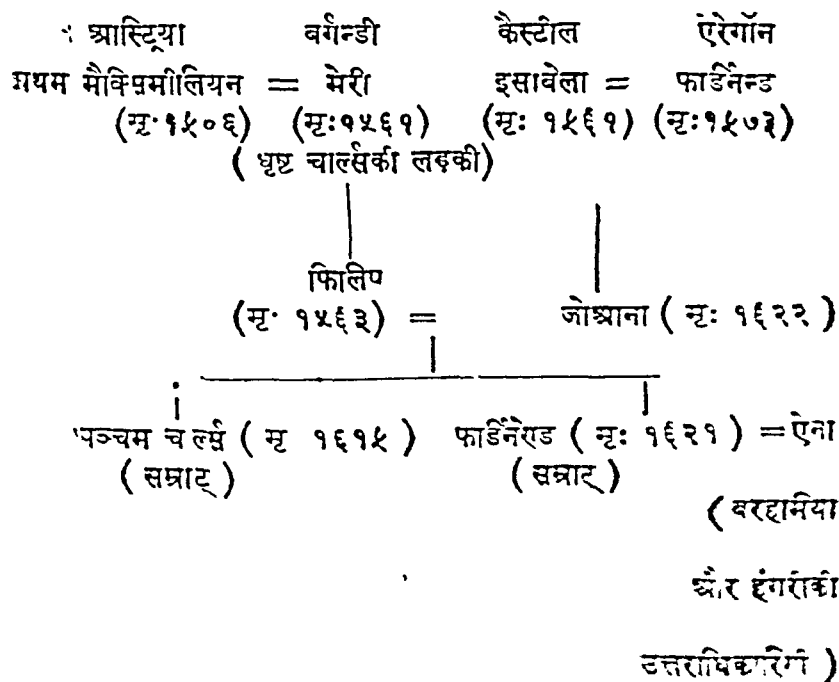
उसकी मृत्यु हुई। फ्रांसका राजा प्रथम फ्रांसिस सम्राट् होना चाहता था पर निर्णायकोंने चार्ल्सको ही चुना। इस चुनावका यह फल हुआ कि स्पेन का नरेश जो न तो आज तक जर्मनी गया था न जर्मन-भाषा जानता था उस देशका अधिपति होगया और वह भी ऐसे समय जब कि लूथरकी शिक्षाके कारण अभूत पूर्व मतभेद और राजनीतिक उद्वेग फैल रहा था। सम्राट् होनेपर उसकी उपाधि पञ्चम चार्ल्स हुई।

फ्रांसका राजा अष्टम चार्ल्स (१५४०-१५५५) अपने पिता ग्यारहवें लुईकी भाँति बुद्धिमान् न था। वह तुर्कोंपर आक्रमण करने और कुस्तुन्तुनिया जीतनेके स्वप्न देखा करता था। उस समय नेपल्सका राज्य ऐरेगॉनके राज-वंशके अधिकारमें था परन्तु उसपर ग्यारहवें लुईका भी स्वत्व था। वह तो इस विषयमें चुपचाप था परन्तु चार्ल्सने उस स्वत्वके आधारपर नेपल्सपर आक्रमण करनेका विचार किया। दक्षिणमें इतने बलशाली नरेशके अधिकार जमा लेनेसे इटलीको सरासर हानि थी परन्तु इस बातकी कोई आशा न थी कि उस देशके छोटे छोटे राज्य मिलकर इस विदेशीका सामना करेंगे। ऐसा करना तो दूर रहा, कुछ इटलीवालोंने ही चार्ल्सको अपने देशमें बुलाया।

यदि लारेञ्जो जीता होता तो शायद वह फ्रेञ्च-नरेशके विरुद्ध एक संघ खड़ा करता पर वह चार्ल्सकी यात्राके दो वर्ष पहिलेही मर चुका था। उसके लड़कोंका फ्लारेंसपर वह प्रभाव न था। इस समय नगरका नेतृत्व डोमिनिकन सम्प्रदायके पादरी सावोनारोलाको मिला जिसके उत्साहपूर्ण उपदेशोंसे कुछ कालके लिये फ्लारेंसकी दुर्बलसंकल्प जनता शुद्ध हो गयी। उसे अपने ऋषि होनेपर विश्वास था। वह कहा करता था कि ईश्वर इटलीको उसके पापोंके लिये दण्ड देने वाला है और लोगोंको चाहिये कि उसके क्रोधसे बचनेके लिये पाप और विलासका जीवन त्याग दें।

जब सावोनारोलाने फ्रांसीसी आक्रमणका समाचार सुना तो उसने

ऐसा प्रतीत हुआ कि यह वही ईश्वरीय दण्ड है जिसकी वह प्रतीक्षा किया करता था। उसको यह विश्वास हो गया कि ईसाई-धर्मका अब संस्कार हो जायगा। उसकी भविष्यद्वाणीको सच होते देख कर लोग डर गये। जब चार्ल्सकी सेना फ्लारेंसके निकट पहुँची तो लोगोंने मेडिची वंशका प्रासाद लूट लिया और लोरेंजोके तीनो लड़कोंको निकाल दिया। जो नया प्रजातन्त्र स्थापित किया गया उसमें सावोनारोला ही प्रधान पुरुष होगया। चार्ल्सको फ्लारेंसमें प्रवेश करनेकी आज्ञा दी गयी परन्तु नगर-निवासी उसकी भद्दी आकृति देखकर अप्रसन्न होगये। उन्होंने उसे स्पष्टतया बतला दिया कि वे उसे अपना विजेता न स्वीकार करेंगे। सावोनारोलाने उससे कहा 'लोगोंको तुम्हारा फ्लारेंसमें अधिक काल तक रहना अच्छा नहीं लगता। तुम व्यर्थ अपना समय खो रहे हो। ईश्वरने तुमको धर्म्म-संस्थाको संस्कृत करनेका कार्य सौंपा है। जाओ अपना काम पूरा करो नहीं तो ईश्वर इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये किसी दूसरे मनुष्यको चुनेगा और तुमको दण्ड देगा"। इसलिये एक सप्ताह ठहर कर फ्रांसीसी सेना दक्षिणकी ओर बढ़ी।

यहाँसे चलकर चार्ल्सको एक ऐसे व्यक्तिका सामना करना पड़ा जिसका चरित्र और स्वभाव सावोनारोलासे नितान्त भिन्न था। यह व्यक्ति तत्कालीन पोप छठाँ सिकन्दर था। धार्मिक मतभेदके उपशमके बाद पोपोंने अपने इटालियन राज्यको सुदृढ़ बनानेका प्रयत्न आरंभ किया। इस काममें दो बाधाएँ पड़ती थीं। एक तो उनको वृद्धावस्थामें पोप पद मिलता था, इसलिये अपनी नीति निबाहनेके लिये पर्य्याप्त समय न मिलता था, दूसरे वे अपने सम्बन्धियों और कुटुम्बियोंके भरण-पोषणकी चिन्तामें लग जाते थे, इससे और लोग बहुत अप्रसन्न रहते थे।

छठे सिकन्दरके बराबर अत्याचारी और दुराचारी शासक इटलीमें कोई दूसरा हुआ ही नहीं। यह स्पेनके बोर्जिया वंशका था। इतर शासकोंकी भाँति इसने अपने लड़कोंका हित-साधन करना आरंभ किया।

इसने अपने लड़के सीजर वोर्जियाकी फ्रांसके पूर्व एक ढवी देन
विचार किया । सीजर अपने पितासे भी बढ़कर दुष्ट था । अपने शत्रु
को मारना तो एक साधारण बात थी, उसने अपने भाईको मारकर उ
नदीमें फेंकवा दिया । यह कहा जाता है कि यह पिता-पुत्र वि
अद्भुत ज्ञान रखते थे ।

फ्रांसीसी आक्रमणसे पोप घबराया । ईसाई धर्मका अध्यक्ष होते हु
भी उसने तुर्की सुलतानसे सहायता मांगी पर चार्ल्स न रुका । उसने र
में प्रवेश कर ही लिया ।

उसकी विजयपर विजय होती गयी । शीघ्रही नेपल्स भी उसके ह
में आ गया, परन्तु दक्षिणकी विलास-सामग्रीने उसके सिपाहियोंको आल
बना दिया और उसके शत्रुओंने उसके विरुद्ध चक्र रचना आरंभ कि
फर्डिनेण्डको सिसिली खो बैठनेका डर था और मैक्सिमीलियन यह
चाहता था कि इटलीपर फ्रांसवालोंका दबाव रहे । अन्तमें संवत् १५५
में चार्ल्सको इटलीसे चला जाना पड़ा ।

यों तो ऐसा प्रतीत होता है कि चार्ल्सका परिश्रम निष्फल गया प
वस्तुतः इसका बड़ा गम्भीर प्रभाव पड़ा । पहिली बात तो यह हुई
सारे यूरोपको यह बात विदित हो गयी कि यद्यपि इटलीवाले आल्प
पर्वतके उत्तर रहने वालोंको बर्बर कहकर घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं पर उन
में राष्ट्रीयताका नितान्त अभाव है । इस समयसे लेकर १६ वीं शताब्दी
अन्त तक इटलीपर विदेशों, विशेष कर स्पेन और आस्ट्रिया, क
प्रभुत्व रहा । दूसरी बात यह हुई कि फ्रांस वालोंका इटलीकी कला
संस्कृतिसे प्रेम होगया । जो विद्या अब तक इटलीमें ही फूली फली
उसका फ्रांस ही नहीं वरन् इंग्लैण्ड और जर्मनीमें भी विकास होने ल
अतः जिस समय इटली अपनी राजनीतिक स्वाधीनता खो रहा था
समय उसके हाथसे वह विद्यासम्बन्धी महत्त्व भी निकला जा रहा
जो उसे अब तक प्राप्त था ।

चार्ल्सके लौट जानेपर भी सावोनारोला फ्लोरेंसकी उन्नतिमें लगा रहा था। उसको आशा थी कि कुछ कालमें यह नगर पृथ्वी भरके लिये आदर्श बन जायगा। कुछ दिनोंतक तो लोग उसकी बात मानते गये। संवत् १४५४ के कार्निवल उत्सवके अवसरपर सिटी हालके सामने मैदानमें चित्र, अश्लील पुस्तकें, गहने इत्यादि-जिनको सावोनारोला विलास वस्तुएं, सामग्री समझता था जला दी गयीं।

परन्तु इस सुधारकके कई शत्रु थे। स्वयं उसके सम्प्रदायवालोंमें उसके कई विरोधी थे। फ्रांसिस्कन तो उसे बराबर ही दम्भी कहा करते थे। पोप भी उससे रुष्ट था क्योंकि वह फ्लोरेंसवालोंको फ्रांससे मिले रहनेका परामर्श दिया करता था। कुछ दिनोंमे जनताका विश्वास भी उसपर से उठ गया। १५५४ में वह पोपकी आज्ञासे क़ैद किया गया। उसे फांसीका दण्ड दिया गया और उसकी लाश उसी मैदानमें जलायी गयी जहां साल भर पहिले उसेन विलास-सामग्री जलवायी थी।

उसी साल चार्ल्सकी भी मृत्यु हुई। उसे कोई लड़का न था इसलिये एक दूरका सम्बन्धी, जिसने अभिषिक्त होनेपर बारहवें लुईकी उपाधि धारण की, उत्तराधिकारी हुआ। इसकी दादी मिलनके राजवंशकी थी इसलिये यह अपनेको मिलन और नेपल्स दानाका अधिकारी समझता था। इसने मिलनपर शीघ्रही कब्जा कर लिया और फिर ऐरेगानके फर्डिनेण्डसे नेपल्सको बॉट लेनेके लिये एक गुप्त समझौता किया। पीछेसे दोनोंमें निभी नहीं और इसने अपना हिस्सा फर्डिनेण्डके हाथ बेच दिया।

छठे सिकन्दरके (संवत् १५६०) बाद द्वितीय जूलियस पोप हुआ। यह भी वैसा ही विलासी और धर्म्मविमुख था पर इसके साथ ही वह सिपाही प्रकृतिका मनुष्य था। एक बार तो स्वयं शस्त्र लेकर लड़ाईमें गया था। यह जेनोआ-निवासी था और जेनोआके प्रतियोगी वेनिससे जलता था। वेनिसवालोंने उसके राज्यकी उत्तरी सीमाके पासके कुछ नगरोंके छीनकर उसे और भी क्रुद्ध कर दिया। उसने उनको यह धमकी दी कि मैं तुम्हारे

नगरको छोटासा मछुआहोंका गाँव बनाकर छोड़ूंगा। इसके उत्तरमें वेनिसके दूतने कहा कि यदि आप न मान जायंगे तो हम आपको एक देहाती पादरी बनाकर छोड़ेंगे।

संवत् १५६५ में सम्राट् फ्रांस, स्पेन और पोपने वेनिसके राज्यके उस भागको जो इटालियन प्रायद्वीपपर था, बाँट लेनेके उद्देश्यसे 'कम्ब्रेकी संघ' नामक एक मित्रसंघ बनाया। शीघ्रही वेनिसके राज्यका बहुतसा भाग छिन गया परंतु उसने पोपसे क्षमा-प्रार्थना करके मेल कर लिया। अब पोपने वेनिसकी ओरसे फ्रांससे लड़नेका विचार किया और इंगलिस्तानके नये बादशाह अष्टम हेनरीको भी अपनी ओर मिला लिया। परिणाम यह हुआ कि १५६९ में फ्रांसवालोंको इटली छोड़ना पड़ा।

१५७०में जूलियसकी जगह फ्लारेंसके लारेञ्जोका लड़का दशम लिओ पोप हुआ। यह कला और साहित्यका प्रेमी था पर धार्म्मिक भाव उसमें बिलकुल न था। अपने थोड़ेसे तुच्छ लाभके लिये वह युद्धको जारी रखना चाहता था।

लुईके बाद उसका चचेरा भाई प्रथम फ्रांसिस फ्रांसका बादशाह हुआ। यह उस समय केवल २० वर्षका था पर इसका स्वभाव बड़ा मिलनसार और लोगोंके साथ व्यवहार बड़ा ही शिष्ट था। 'सज्जननरेश' उसकी यही प्रशस्त उपाधि थी। वह भी कला और साहित्यका प्रेमी था, परन्तु वह अच्छा राजनीतिज्ञ न था। उसकी नीति बराबर बदलती रहती थी। अपने राज्यकालके आरम्भमें उसने एक उल्लेख्य विजय प्राप्त की। वह अपने सिपाहियोंको एक ऐसी घाटीसे इटलीमें उतार ले गया जो उस समय तक सवारोंके लिये अगम्य समझी जाती थी। इटलीमें आकर उसने पोपके स्विस सिपाहियोंको सहसा परास्त किया। इसके बाद उसने मिलनको कब्जाकर लिया। अन्तमें उसमें और पोपमें यह समझौता हुआ कि मिलन पर फ्रांसका अधिकार रहे और फ्लारेंस मेडिची वंशको मिल जाय। तबसे फ्लारेंसका प्रजातंत्र नरेशोंके अधीन होगया और उसका नाम टस्कनीका ग्राण्डड्यूकी पड़ गया। वह फिर अपने पूर्व गौरव तक कभी न पहुंचा।

पहिल पहिले प्रथम फ्रांसिस और पंचम चार्ल्समें मैत्री थी पर कई ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिन्होंने निरन्तर लड़ाईका द्वार खोल दिया। फ्रांस उस समय चार्ल्सके राज्यके उत्तरी और दक्षिणी भागोंके बीचमें दबा था और उसकी सीमा प्राकृतिक न थी। बर्गण्डीपर दोनों अपना स्वत्व समझते थे। चार्ल्स अपनेको मिलनका हकदार भी समझता था। कई वर्षों तक इन दोनों नरेशोंमें लड़ाई होती रही। इतनाही नहीं, यह लड़ाई उस लड़ाईकी भूमिकामात्र थी जो इसके बाद २०० वर्ष तक फ्रांस और बलान्मत्त हैप्सबर्ग वंशमें हुई।

भावी युद्धके लिये दोनों पक्षोंका इंग्लिस्तानके नरेशसे सहायता मांगना स्वाभाविक ही था। हेनरीकी भी यूरोपीय मामलोंमें हस्तक्षेप करनेकी इच्छा थी। वह संवत् १५६६ में १८ वर्षके वयमें नरेश हुआ था। वह भी फ्रांसिसकी भाँति सुन्दर और सुशील था और उसके राज्यकालके प्रारम्भमें लोग उससे बहुत प्रसन्न थे। कुछ लोग उसकी विद्वत्ता पर भी मुग्ध थे। उसने अपना पहिला विवाह चार्ल्सकी एक बुआ कैथरीनसे किया। उसका मंत्री टामस वुल्सी था जिसका अभ्युदय और पतन इस अभागी रानीके भाग्यके साथ साथ, जैसा कि हम आगे चलकर दिखलायेंगे, बँध गया

१५७७ में चार्ल्स एज़ ला· शैपेलमें अपना अभिषेक कराने जर्मनी चला। रास्तेमें हेनरीको फ्रांसिससे सन्धि करनेसे रोकनेके लिये वह इंग्लिस्तानमें उतर पड़ा। इस उद्देश्यसे उसने वुल्सीको जिसे दशम लियोने कार्डिनल बना दिया था और जिसकी बात इंग्लिस्तानमें बहुत चलती थी, खूब उत्कोच (रिश्वत) दिया। जर्मनी पहुंचकर उसने वर्म्समें पहिली राजसभा बुलायी। इस सभाके सामने सबसे पहिला और महत्त्वका काम मार्टिन ल्यूथर नामक एक अध्यापकके विषयमें विचार करना था। इसपर अधर्ममूलक पुस्तकोंके लिखनेका अभियोग चलाया गया था।

अध्याय २३।

प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलनके पहिले जर्मनीकी दशा।

उत्तरी और पश्चिमी यूरोपके एक बड़े भागका मध्ययुगीन धर्म्मपद्धतिसे विमुख हो जाना सोलहवीं शताब्दीकी सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी। पाश्चात्य जगत्के इतिहासमें इस घटनाका बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके पहिले दो बार लोग और सिर उठाचुके थे। १३ वीं शताब्दीमें दक्षिण फ्रांसमें आल्बीजिन्सों और पन्द्रहवींमें बोहीमियावालोंने सुधारके लिये प्रयत्न किया था पर दोनों आन्दोलन बड़ी क्रूरतासे दबा दिये गये और पुरानी पद्धति फिर ज्योंकी त्यों स्थापित हो गयी।

पर अन्तमें यह बात निर्विवाद रूपसे सिद्ध हो गयी कि अपने अद्भुत संगठन और असाधारण शक्तिके होते हुए भी धर्म्मसंस्था सारे पश्चिमीय यूरोपको पोपके अधीन रखनेमें समर्थ नहीं है।

संवत् १५७७ (सन् १५२० ई०) की शरदऋतुमें अध्यापक मार्टिन लूथर विटिन वर्गके विद्यापीठके सम्पूर्ण छात्रोंको लेकर नगरके बाहर चले गये और वहांपर मध्ययुगकी धर्मसंस्थाकी समस्त नियमपद्धतिमें आग लगा दी गयी। इस भांति उन्होंने तत्कालीन धर्मसंस्थाकी बहुतसी नीतियों तथा मन्तव्योंको खंडन करनेकी अभिलाषा प्रत्यक्ष प्रकट की। उनकी शिक्षाको रोकनेके लिये पोपने जो घोषणा निकाली उसको नष्ट करके उन्होंने पोपका भी अपमान किया।

जर्मनी, स्विटजरलेंड, आंग्ल देश तथा अन्य स्थानोंमे पृथक् पृथक् नेताओंने भी धार्मिक विद्रोह खड़े किये। राजाओंने भी सुधारकोंकी

शिक्षाका आदर किया। और पोपके अधिकारको न मानने वाली धर्म-संस्थाओंके संस्थापनमें सहायता देनेका प्रयत्न किया। इस भांति पश्चिमीय यूरोपमें दो धार्मिक दल हो गये। अधिकतर लोगोंने तो पोपहीको प्रधान धर्माध्यक्ष मानकर जिस धार्मिक शिक्षाको थियोडोसियसके समयसे उनके पिता-पितामह स्वीकार करते आये थे उसीको स्वीकार किया। जो प्रदेश रोम साम्राज्यमें थे वे तो रोमनकैथलिक रह गये। परन्तु उत्तरीय जर्मनी, आंग्ल देश, और स्विटजरलैंडके कुछ प्रदेश स्काटलैण्ड तथा स्कैण्डिनेवियाने क्रमशः पोपके आधिपत्यको अस्वीकार कर, मध्य-युगकी धर्मसंस्थाके नियमोंको न मानकर नयी नयी धर्मसंस्थाएं स्थापित कीं। जिन लोगोंने रोमकी धर्मसंस्थासे अपना सम्बन्ध तोड़ा था उन्हें प्रोटेस्टेण्ट* कहते थे। इन लोगोंमे इस बातपर सहमति नहीं थी कि मध्य-कालिक पद्धतिके स्थानपर किस प्रथाको चलाना चाहिये। पोपको न मानने और अतिप्राचीन धर्मसंस्थाको अपना पथप्रदर्शक तथा बाइबिल-को एकमात्र धर्मपुस्तक माननेमें वे लोग अवश्य एक मत थे।

प्रधान धर्मसंस्थाके प्रतिकूल विद्रोहसे लोगोंके आचार-व्यवहारमें भी अनेक प्रकारके परिवर्त्तन हो गये। यह होना भी स्वाभाविक था क्योंकि धर्मसंस्था केवल धर्मसे ही सम्बन्ध न रखकर जीवनके समस्त व्यापार तथा सामाजिक कृत्योंपर प्रभाव डालती थी। शताब्दियों पर्यन्त प्रारम्भिक तथा उच्चशिक्षाका अधिकार इसीके हाथमें था। गृहमें, पंचायतमें, अथवा नगरमें अर्थात् सर्वत्र और सदैव ही कोई न कोई धार्मिक पूजा आवश्यक थी। उस समय पर्यन्त जितनी किताबें प्रकाशित हुई थीं उनमेंसे [illegible] पादरियोंकी लिखी हुई थीं। वे लोग राजसभाके सदस्य थे और [illegible] गुप्त तथा विश्वासी मन्त्री होते थे। सारांश यह कि इटली [illegible] विद्वान् कहीं थे तो वही लोग थे। सर्वसाधारणके कार्यमें [illegible]

*इस शब्दका अर्थ विरोध करनेवाला है इससे [illegible] वालोंका यह नाम रक्खा गया क्योंकि वे उसके विरोधी थे।

वर्तमान हैं और अब भी जर्मन साम्राज्यके भाग हैं परन्तु अपने आस पासके छोटे छोटे राज्योंको मिलाकर अब यह सोलहवीं शताब्दीके राज्योंसे बहुत बड़ा हो गया है।

तेरहवीं शताब्दीमें एक बड़ा भारी आर्थिक आन्दोलन हुआ। यहींसे व्यवसाय तथा रुपयेका प्रयोग आरम्भ हुआ। इस समयसे जिन नगरों की उन्नति हुई वे उत्तरी यूरोपमें ज्ञानके वैसेही केन्द्र थे जैसे दक्षिणमें इटलीके नगर थे। जर्मनीमें न्यूरेम्बर्ग सबसे सुन्दर नगर है। वहां सोलहवीं शताब्दीके बने हुये बड़े बड़े विशाल तथा विचित्र भवन तथा शिल्पोंके नमूने अभी अधिकांशमें वैसेके वैसेही बने हुए हैं। कितने नगर स्वयं सम्राट्के अधीन थे। इन्हें लोग स्वतन्त्र नगर अथवा साम्राज्याधीन प्रदेश कहते थे। इनको भी जर्मन साम्राज्यके अंगभूत राज्योंमें गिनना चाहिये।

जो नाइट लोग जर्मनीके छोटे छोटे प्रदेशोंपर राज्य करतेथे वे लोग पहले विशेष वीर योद्धाओंकी श्रेणीमें समझे जाते थे। पर गोला, बारूद तथा युद्धकी नयी नयी सामग्रीके आविष्कारोंसे उनके वैयक्तिक बलका विशेष आदर नहीं रहा। उनकी आय इतनी कम थी कि कौटुम्बिक व्यय भी भली भांति नहीं चल सकता था, इससे ये लोग बहुधा लूट मार किया करते थे। ये लोग नगरोंसे द्वेष करते थे क्योंकि प्रचुर धनके कारण नगरके लोग बड़ी विलासितासे रहते थे, जिनकी ये दरिद्र नाइट बराबरी नहीं कर सकते थे। ये राजाओंसे भी द्वेष करते थे, क्योंकि वे लोग भी इनके छोटे छोटे प्रदेशोंको अपनी रियासतोंमें मिला लेना चाहते थे। इनमेंसे कई जागीरें नगरोंकी भांति स्वयं सम्राट्के अधीन और स्वतन्त्र-प्राय थीं।

पंचम चार्ल्सके राजत्व-कालके जर्मनराज्यकी सम्पूर्ण रियासतोंको स्पष्ट रूपसे दिखलाने वाला मानचित्र बनाना अति कठिन काम होगा। उदाहरणार्थ यदि साथके चित्रकी ओर ध्यान दिया जाय और उसमें उस साम्राज्यके भागोंका चित्र दिखलाया जाय तो देखनेसे विदित होगा कि

उल्म नगरमें आईवेकके लार्डकी अनेक छोटी छोटी जागीरें तथा इलिंक-जनके एवटके दो प्रदेश भी आ जाते हैं। इसकी सीमापर चार न नाइटों की भूमियां हैं।

इनके अतिरिक्त वर्टेम्वर्गके कितने हिस्से तथा आस्ट्रियाके भी प्रदेश इनमें शामिल हैं। इस अनवस्थित विभागका मुख्य कारण यह था कि उस समयके शासक लोग उन प्रदेशोंको अपनी पैतृक सम्पत्ति समझकर वहांके निवासियोंका कुछ भी खयाल न करके उनको अपनी इच्छानुसार अपने पुत्रोंमें बांट देते थे अथवा थोड़ा थोड़ा करके बेच देते थे। ये सब छोटे अथवा बड़े राज्य आपसमें ऐसे जकड़े हुए थे कि परस्पर-का विरोध होना अनिवार्य्य था। ऐसी दशामें साम्राज्यके इन प्रान्तोंके आपसके कलहको किसी न किसी विशेष प्रकार शमन करना आवश्यक था। यहभी आवश्यक था कि उन अवस्थाओंके अनुसार कोई सर्वमान्य न्यायालय या न्यायाधीश होता और साथ ही साथ एक सैनिक बल भी होता जो उसके फैसलेपर चलनेके लिये इन्हें बाधित करता। यद्यपि सम्राट्की बड़ी राजसभा थी पर उसतक पहुंचना ही कठिन था क्योंकि वह भी सम्राट्के साथ साथ भ्रमण किया करती थी और यदि उसमें प्रवेश कर फैसला भी हो गया तो पीड़ित दल अपना निर्णय कार्यमें परिणत करानेमें असमर्थ था क्योंकि बड़े बड़े सामन्तोंको दबानेके लिये सम्राट्के पास पर्याप्त शक्ति ही न थी। इससे सबको अपने भरोसे रहना पड़ता था। इस लिये आपसमें युद्ध होता रहता था पर कुछ औपचारिक नियमोंका पालन किया जाता था। जैसे यदि कोई राजा वा नगर साम्राज्य के किसी दूसरे राजा अथवा नगरसे युद्ध करना चाहे तो आक्रमणके तीन दिवस पूर्व उसे सूचना देनी पड़ती थी इत्यादि।

किसी शक्तिशाली तथा प्रधान शासकके न होनेसे पन्द्रहवीं शताब्दीके अन्तमें बड़ी अराजकता फैल गयी। अब राजसभाने इन बुराइयोंको दूर करनेका प्रयत्न करना चाहा। यह निश्चित किया गया कि इन राजाओंके

झगड़ोंको निपटानेके लिये एक न्यायालय स्थापित किया जाय। यह किसी सुविधाके स्थानपर सर्वदा लगा करे। साम्राज्यको कई एक प्रान्तों या चक्रोंमें विभक्त करनेका प्रबन्ध किया गया। प्रत्येक प्रान्तमें शान्ति रक्षाके निमित्त उचित सेना रखी जाय जो न्यायालयके निर्णयोंको उचित रूपसे पालन करावे। यद्यपि राजसभा कई बार बैठी और राजनैतिक तथा सामाजिक विषयोंपर विशेष विवाद हुआ, पर कोई उपयोगी नतीजा नहीं निकला।

संवत्–१५४८ से प्रत्येक नगरने अपने प्रतिनिधि राजसभामें भेजने प्रारम्भ किये, पर नाइटों तथा अन्य छोटे छोटे अमीर उमरावोंका सभाके कार्यमें कोई भाग नहीं था। इससे वे लोग प्रतिनिधि सभाके निर्णयोंसे अपनेको सदा बंधा हुआ अनुभव नहीं करते थे। यह सभा लूथरके समयमें जर्मनीके किसी न किसी नगरमें प्रत्येक वर्ष बैठती रही। इसके विषयमें आगे चलकर और वर्णन होगा।

जर्मनीके इस समयके इतिहासके विषयमें प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथलिक इतिहास-लेखकोंमें बड़ा मतभेद है। प्रोटेस्टेण्ट लोगोंने प्रायः उस समयके सब कामोंका सदोष भाग दिखलाया है क्योंकि इससे लूथरके कार्यका महत्व बहुत बढ़ता है और वह अपने देशवासियोंका रक्षक सिद्ध होता है। उधर कैथलिक इतिहासलेखकोंने कठिन प्रयत्न कर यह दिखलाना चाहा है कि उस समय जर्मनीकी दशा बहुत अच्छी थी। चारों ओर शान्ति विराज रही थी। भविष्य भी आशापूर्ण प्रतीत होता था, पर लूथर तथा विद्रोहियोंने धर्म-संस्थाका विरोध करके मातृभूमिमें फूटका बीज डालकर उसका सत्यानाश कर डाला।

प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलनके आरम्भ होनेके सौ पूर्वके पचास वर्षोंका इतिहास पढ़नेसे विदित होता है कि उस समय जर्मनीके रहनसहन तथा आचारविचारोंमें अनेक प्रकारकी भिन्नता थी। यह समय जितना उन्नतिके लिये प्रसिद्ध है। लोगोंके लिखाई और बहुत अधिक बढ़ा

था। छापेखानेके अविष्कारसे लोग बहुतही प्रसन्न थे क्योंकि उसीके द्वारा इटलीकी नवीन शिक्षा तथा समुद्रपारके देशोंकी नयी नयी बातोंका पता लगता था। उस समयके विदेशी यात्रियोंका जर्मनीके धनाढ्य व्यापारियोंकी विलासिता तथा समृद्धिको देखकर बड़ा विस्मय होता था। वहांके धनाढ्य अपना धन विद्यालय, कला-भवन तथा पुस्तकालयोंकी स्थापनामें बहुत अधिक व्यय करते थे।

इधर तो उन्नति हो रही थी, उधर सब वर्गोंमें परस्पर विरोध भी बढ़ता जा रहा था। छोटे छोटे राजाओं, नागरिकों, नाइटों तथा कृषकोंमें आपसमें घोर शत्रुता थी, वणिक व्यापारियोंपर लोग धोखा, सूदखोरी तथा कठोर व्यवहारका दोष लगाते थे और उनकी समृद्धिके यही कारण समझते थे। भिखमंगोंकी अधिकता, अन्धविश्वासकी विशेषता, अशिष्टता तथा रुक्षताकी प्रधानता जैसी उस समय थी वैसी और कभी नहीं देखी गयी। शासन-पद्धतिमें सुधार तथा आपसके कलह शांत करनेके प्रयत्न प्रायः निष्फल हुए। इसके अतिरिक्त ईसाई प्रदेशोंपर धीरे धीरे तुर्कलोग बढ़ने लगे थे। पोपकी आज्ञा थी कि सब लोग प्रतिदिन मध्याह्न समय विधर्मियोंके आक्रमणसे बचनेके लिये परमेश्वरसे प्रार्थना किया करें।

लोगोंकी ऐसी घोर विषमता और पारस्परिक स्पर्द्धाको देखकर विस्मित न होना चाहिये क्योंकि सभी उन्नतिके युगोंका इतिहास ऐसी बातोंसे भरा पड़ा है। समाचारपत्रोंके पढ़नेसे विदित होता है कि आज कल भी हम लोगोंकी दशा वैसेही है। एक ही साथ भले बुरे, धनी दरिद्र, शान्त लड़ाके, पंडित मूर्ख, सन्तुष्ट असन्तुष्ट, तथा सभ्य और असभ्य सभी एक ही राष्ट्रमें संगठित हैं।

धर्म-संस्थाकी जर्मनीमें तत्कालीन अवस्था तथा जर्मनीकी धार्म्मिक दशा जाननेके लिये चार बातोंको जानना आवश्यक है जिनसे प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलन और उसकी उत्पत्तिका पूरा परिचय मिलता है। पहले तो प्राचीन समयकी धार्मिक पूजा तथा आडम्बरमें लोगोंकी विशेष रुचि

थी। तीर्थयात्रा, देवचिन्ह, सिद्धियों तथा अन्य वस्तुओंमें, जिनका प्रोटेस्टेण्ट मतवालोंने शीघ्रही तिरस्कार कर दिया, अधिक विश्वास था। दूसरे बाइबिलका पाठ करनेमें लोगोंकी विशेष भक्ति थी। सदा ईश्वरकी दृष्टिमें अपनेको पापी माननेकी प्रवृत्ति थी, केवल धर्मके बाह्य कार्योंपर ध्यान नहीं दिया जाता था। तीसरे लोगोंको, विशेषकर विद्वानोंको, पूरा विश्वास था कि धर्मशास्त्रियोंने सूक्ष्म तर्कवितर्कसे धर्मको अनावश्यक रूपमें जटिल बना दिया था। चौथे सर्वसाधारणमें यह विश्वास बहुत दिनोंसे चला आता था कि इटलीके पादरी तथा पोप जर्मनीके निवासियोंको मूर्ख बनाकर उनसे द्रव्य खींचनेके नवीन नवीन उपाय रचा करते हैं। हम इन चारों विषयोंको पृथक् पृथक् उल्लेख करेंगे।

मध्ययुगकी धर्मसंस्थाकी पूजापद्धतियोंका मान तथा प्रचार जिस भांति पन्द्रहवीं शताब्दीके अन्त तथा सोलहवीं शताब्दीके आरम्भमें था वैसा कभी भी नहीं हुआ। देखनेसे प्रतीत होता था कि यूरोपके दो धार्मिक दलोंमें बंट जानेके पहले सम्पूर्ण जर्मनीके निवासी प्राचीन धर्मके अनुसार उपासनामें बड़ी धूम धामके साथ अंतिम बार सम्मिलित हो रहे हैं। बड़े-से गिर्जे स्थापित और जर्मनीके बहुमूल्य कारीगरीसे सज्जित किये गये, सहस्त्रों यात्री तीर्थस्थानोंकी यात्रा करते थे और साम्राज्यके समृद्ध नगरोंके रमणीक बाजारोंमेंसे धर्मसंस्थाके शानदार जलूस निकला करते थे।

राजाओंने महात्माओंके शवावशेषोंके संग्रह करनेमें अत्यन्त उत्साह दिखलाया, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि इससे मुक्तिमें सहायता मिलती है। सैक्सनीके इलेक्टर मतिमान फ्रेडरिक्न जो लूथरका संरक्षक हो गया पाँच सहस्र शवावशेष पदार्थ एकत्र किये थे। उसने इन वस्तुओंका एक सूचीपत्र बनवाया जिनमें नूहकी दाढ़ी तथा कुमारी मरियमके [illegible] करते हुए मूल भी सम्मिलित थे। मेन्सके इलेक्टरने इससे भी कहीं अधिक बड़ा संग्रह किया था। इसके पास महात्माओंके [illegible] थे। इसने दमिश्कके [illegible] मूर्तिकी [illegible] भी [illegible]

जिसके विषयमें माना जाता था कि परमेश्वरने मनुष्यका प्रथम पुतला वहींकी मिट्टीसे बनाया था ।

प्रधान धर्म-संस्थाकी शिक्षा थी कि प्रार्थना, व्रत, उपवास, धर्मोत्सव तीर्थयात्रा तथा अनेक प्रकारके सत्कार्योंका संचय किया जाय ताकि जिन लोगोंने सत्कार्य नहीं किये हैं उनकी कमी ईसामसीह तथा अन्य महात्माओंके अपरिमित पुण्य-भण्डार से पूरी हो जाय ।

यह विचार अत्यंत मनोहर था कि ईसाईधर्मावलंबी पुण्य कार्योंमें परस्पर सहायता किया करें अर्थात् दृढ़ तथा श्रद्धालु भक्त निर्बलात्मा तथा उदासीन ईसाइयोंकी सहायता किया करें । परंतु धर्मसंस्थाके विज्ञ शिक्षक जानते थे कि लोग पुण्यकार्यके संचयके सिद्धांतोंको संभवतः समझनेमें भूल करेंगे । लोगोंको पूरा विश्वास था कि बाह्य उपचारोंसे जैसे उपासनामें उपस्थित रहने, दान देने, संतोंके पवित्र चिन्होंकी पूजा करने, तीर्थयात्रा करने, इत्यादिसे परमेश्वरको प्रसन्न किया जा सकता है । यह भी प्रत्यक्ष प्रतीत होता था कि दूसरेके सत्कार्योंसे लाभ उठानेकी आशासे लोग अपनी आत्माके सच्चे हितको भूल जायंगे ।

यद्यपि बाह्य कार्योंमें तथा भक्तिहीन पूजा पाठमें लोगोंका प्रेम अधिक था तथापि बहुधा गंभीर तथा आध्यात्मिक धर्मकी विशेष उत्कंठाके चिन्ह प्रकट हो रहे थे । छापेखानेके नवीन आविष्कारसे धार्मिक पुस्तकोंकी वृद्धि की गयी । इन पुस्तकोंने इसी बातपर आग्रह किया कि पाप कर्मके लिये प्रायश्चित्त तथा अनुताप करना अनिवार्य है और यह सिखाया कि पापियोंका परमेश्वरके प्रेम तथा करुणाशीलतापर भरोसा रखना चाहिये ।

समस्त ईसाइयोंको बाइबिलका पाठ करनेके लिये उत्तेजित किया जाता था । न्यूटेस्टामेण्टके अंशोंके छोटी छोटी पुस्तकोंके रूपमें प्रकाशित होनेके अतिरिक्त इस पुस्तकके जर्मन भाषामें कितनेही संस्करण प्रकाशित हो चुके थे । बहुतसी बातोंसे पता लगता है कि लूथरके समयसे पूर्व भी साधारणतः लोग बाइबिलका पाठ किया करते थे ।

इन कारणोंसे यह स्वाभाविक था कि जर्मनीके लोगोंको लूथरके किये अनुवादके लिये विशेष रुचि हो। प्रोटेस्टेण्ट मतके प्रादुर्भावके पूर्वहीसे उपदेश देनेकी प्रथा चल पड़ी थी। किन्हीं किन्हीं नगरोंमें तो उपदेश देनेके लिये सुवक्ता उपदेशक नियुक्त किये गये थे।

इन बातोंसे प्रकट होता है कि लूथरके पूर्व भी ऐसे अनेक लोग हो गये थे जो धर्मके उन्हीं विचारोंपर पहुंच रहे थे जिनपर प्रोटेस्टेण्ट लोगोंका ध्यान आकर्षित हुआ। लूथरके उपदेशके पूर्व भी जर्मनीमें बहुतसी बातोंका प्रचार हो रहा था। लोगोंका यह भाव था कि आत्माकी मुक्ति केवल ईश्वर-भक्ति द्वारा हो सकती है। उपासना तथा पूजा पाठ, दान, तीर्थ-यात्रादि कार्योंमें लोगोंका विश्वास घटता जा रहा था। बाइबिल प्रति श्रद्धा तथा उसके प्रचारके लिये अधिक आग्रह किया जाता था।

धर्माध्यक्षों, महन्तों तथा धर्मशास्त्रियोंके समालोचकोंमें सबसे प्रधान ह्यूमनिस्ट थे। हम इटलीके नवयुगका वर्णन कर चुके हैं जिसका आरम्भ पेट्रार्क तथा उसके पुस्तकालयके कारण हुआ था। रुडल्फ अग्रिकोला जर्मनीका पेट्रार्क था। यद्यपि वह उन जर्मनोंमें नहीं था जिनका ध्यान साहित्यकी ओर प्रथम आकर्षित हुआ था, तथापि वह प्रथम पुरुष था जिसने अपने मनोमोहक प्रभाव तथा चित्ततासे पेट्रार्ककी भांति बहुत लोगोंको उसी कार्यके लिये उत्साहित किया जिसमें वह स्वयं भी निमग्न था। इटलीके ह्यूमनिस्टोंकी भांति न होकर अग्रिकोला तथा उसके अनुयायी लोग लैटिन और ग्रीकके समान सर्व साधारणकी भाषाकी भी विशेष उन्नतिमें लगे रहते थे। इन लोगोंका निरन्तर यह था कि सब प्राचीन ग्रन्थोंका जर्मन भाषामें उल्था किया जावे। इसके अतिरिक्त जर्मनीके ह्यूमेनिष्ट इटलीके ह्यूमेनिस्टोंके सदृश नास्तिक उच्छृङ्खल, [illegible] और दिलके कम करने वाले थे।

ज्यों ज्यों इन लोगोंकी संख्या अधिक होती गई त्यों त्यों इनका प्रभाव बढ़ता गया। इन लोगोंने जर्मनीके विद्यापीठोंमें तर्क तथा धर्मशास्त्र

अधिक ध्यान दिये जानेका खण्डन करना शुरू किया। अब इनका प्राचीन महत्व लोप हो चुका था और केवल निष्प्रयोजन वाक्‌कलह ही रह गया था। यह देखकर ह्यूमनिस्टोंको घृणा आती थी कि अध्यापक लोग स्वयं अशुद्ध लाटिनका प्रयोग करते हैं और उसीकी शिक्षा अपने छात्रोंको भी देते हैं और अब भी अन्य प्राचीन लेखोंकी अपेक्षा अरस्तू-की ही अधिक मानप्रतिष्ठा करते हैं। इस कारण इन लोगोंने अच्छी अच्छी पाठ्य पुस्तकोंको निकालना आरंभ किया और कहा कि विद्यालयों तथा पाठशालाओंमें ग्रीस तथा रोमके कवियों तथा सुवक्ताओंके ग्रंथ पढ़ने चाहिये। कितने विद्वानोंका मत था कि धर्मकी शिक्षा विद्यालयोंसे ये उठा देनी चाहिये क्योंकि वह साधुओंके लिये ही उपयोगी होती थी और उससे धर्मके सत्सिद्धांत भी छिपे जा रहे थे। प्राचीन ढंगके शिक्षक नयी शिक्षाकी निन्दा करते थे और कहते थे कि जो उसमें लगता है वह नास्तिक हो जाता है। कभी कभी तो ह्यूमेनिस्ट लोग विद्यापीठोंमे अपनी रुचिके ग्रन्थ पढ़ाने पाते थे पर थोड़े ही समयमे यह स्पष्ट हो गया कि प्राचीन तथा नवीन पद्धतिके शिक्षक एक साथ मिलकर काम नहीं कर सकते।

लूथरके अभ्युदयके थोड़े ही दिन पूर्व ह्यूमानिस्टोंमें जो अपनेको कवि कहते थे, तथा प्राचीन धर्मवेत्ताओं तथा साधु-ग्रंथकारोंमें जिनको, वे बर्बर कहा करते थे, कलह उत्पन्न हुआ, हेब्रू भाषाके एक प्रसिद्ध विद्वान् रोखलिनका कलोन विद्यापीठके डोमिनकन सम्प्रदायके मठवासी अध्यापकोंसे घोर विवाद खड़ा हो गया। ह्यूमानिस्ट लोग इसके सहायक बने और उन्होंने उसके प्रतिवादियोंपर एक प्रहसन बनाया। इन लोगोंने बहुतसे पत्र कोलोनके किसी अध्यापकके नाम उसके कल्पित पुराने छात्रोंकी तरफसे प्रकाशित कराये। इन पत्रोंमें उन लोगोंने उग्र मूर्खता तथा बेवकूफीके नमूने दिखलाये। इन पत्रोंमें छात्रोंके बहुतसे घृणित कार्योंका वर्णन कराया गया। और अध्यापकोंसे उनके सम्बन्धमें परामर्श लिया

मेएटकी व्याख्यामें लगायी । यह उस समयतक केवल लौटिन-भाषामें लिखी गयी थी और इसमें बहुतसी भूलेंभी रह गयीं थीं । इरासमसने सोचा कि ईसाईधर्मके सत्सिद्धान्तोंके प्रचारके लिये प्रथम कार्य यह है कि न्यूटेस्टामेएटका शुद्ध संस्करण निकालकर धर्मके उत्पत्ति स्थनाको ठीक कर दिया जाय। तदनुसार संवत् १५७३ में उसने यूनानी लिपिमें लिखी मूल पुस्तकका लैटिन अनुवाद तथा व्याख्याके साथ प्रकाशित किया। इससे धर्म-शास्त्रियोंकी वड़ी वड़ी भूलें प्रत्यक्ष हो गयीं ।

"न्यूटेस्टामेएटकी प्रस्तावनामें वह लिखता है कि स्त्री तथा पुरुष सबको वाइविल तथा पालके पत्र पढ़ने चाहिये । कृषक खेतमें, कारीगर दूकानमें तथा यात्री अपने पथमें, अपना समय वाइविलके पाठमें वितावें ।"

इरेसमसका मत था कि सद्धर्मके दो कटर शत्रु हैं। प्रथम तो नास्तिकता—इटलीके कितनेही उत्साही ह्यूमेनिस्ट प्राचीन साहित्यका अध्यन करते करते नास्तिक हो गये । दूसरा पूजापाठके दिखावेके कारण लोगोंका अन्धविश्वास, जैसे महात्माओंकी समाधिपर जाना, रटी हुई प्रार्थना दोहराना, इत्यादि । उसका कथन था कि धर्मसंस्था लापरवाह हो गयी है और धर्मशास्त्रियोंके विविध प्रकारके जटिलवाद में पड़कर ईसामसीहके सरल उपदेश लुप्त हो गये हैं वह एक जगह लिखता है "हमारे धर्मका तत्व शांति तथा अविरोध है। यह वात वहीं हो सकती है जहां सिद्धान्त वहुत नहीं और प्रत्येक मनुष्य विविध विषयोंपर विचार करने में भी स्वतन्त्र हों।"

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मूर्खता स्तव" में उसने महन्तों तथा धर्मशास्त्रियोंकी मूर्खता तथा उन मूर्ख लोगोंकी जिन्हें विश्वास था कि धर्मका अर्थ केवल तीर्थयात्रा सन्तपूजा तथा इत्यादि देकर पोप द्वारा पापका मार्जन ही है—खूब आलोचना की है। उसने प्राय. उन सब पुस्तकोंका उल्लेख किया है जिनको लूथरने भी पीछेसे निन्दा की । इन पुस्तकोंके

गया। वे लोग भद्दी लैटिनमें ह्यूनिस्ट लोगोंका ठठ्ठा उडाते थे। इस प्रकार जिन लोगोंने लूथरका प्रतिरोध किया वही लोग इस प्रकार उपालम्भके पात्र बनाये गये और उन्नतिके रोकनेमें उनका प्रयत्न प्रमाणित कर दिया गया।

इराज़मस ह्यूमानिस्टोंमे प्रमुख था वाल्टेयरके अतिरिक्त किसी भी यूरोपके विद्वान्ने अपने जीवन-कालमे इससे अधिक यश उपार्जन न किया होगा। इटली तथा स्पेन ऐसे दूर दूर प्रदेशोमे भी इसकी प्रतिष्ठा थी। यद्यपि उसका जन्म रोटर्डममें हुआ था तथापि वह डच नहीं कहा जाता था। वह दुनिया भरका निवासी था क्योंकि आंग्ल देश, फ्रांस तथा इटली सभी इसको अपना मानते हैं। वह इनमेंसे प्रत्येक देशमें कुछ न कुछ समय पर्यन्त रहा और उस समयके विचारपर अपनी कुछ न कुछ चिन्ह अवश्य छोड़ गया है। उत्तरीय ह्यूमनिस्टोंकी भांति वह भी धर्म-सुधार चाहता था और वह संसारको धर्म्मका ऐसा गम्भीर और उत्कृष्ट उपदेश देना चाहता था जैसा उनदिनों प्रचलित न था। उसने अन्य विद्वानोंकी भांति पादरियों, विशपों, महन्तों तथा पुरोहितोंकी बुराइयोंको भलीभांति समझा था। महन्तोंसे तो वह विशेष रुपसे द्वेष करता था क्योंकि बालकपनमें उसे बलात् एक मठमें रक्खा गया था। उस समयको वह बड़ी घृणासे याद करता था। लूथरके अभ्युदयके पूर्वही उसका यश विख्यात हो गया था उसके लेखोंसे प्रकट होता है कि प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलनके पूर्व धर्म-संस्था तथा पादरियोंकी ओर उसका तथा उसके अनुयायियोंका कैसा भाव था।

संवत् १५५५ से १५६३ तक आंगलदेशमेंभी रहकर उसने वहांके विद्वानोंसे बड़ी घनिष्ठता प्राप्त करली थी। युटोपिया नामी प्रसिद्ध पुस्तकके लेखक सर टामसमूर तथा महात्मा पालके पत्रोंके व्याख्याता [illegible] कोलेटसे उसका विशेष सम्बन्ध था। पालके लिये जो उत्साह [illegible]लेटने दिखलाया था उसीसे उत्तेजित होकर इरासमसने अपनी विद्व[illegible] ...

हास्यरस और गम्भीर विचारोंका मेल है। इस किताबके पढ़नेसे लोगों
लूथरके इस कथन की सत्यता पर विश्वास होने लगता है कि "इरेसमस"
सर्वदा उपहास ही किया करता है यहां तक कि उसने धर्म तथा स्वयं
ईसामसीहतकको नहीं छोड़ा है" परन्तु इस उपहासके साथ ही साथ एरेसमसके
उद्देश्यकी गम्भीरता भी प्रत्यक्ष दिखायी देती है। इरेसमसका सब
प्रयत्न, विद्या तथा प्राचीन साहित्यके उद्धारके, लिये नहीं प्रत्युत ईसाई धर्म
को संस्कृत करनेके लिये था। परन्तु उसके विचारमें पादरियों तथा पोपके
प्रतिकूल आन्दोलन करनेसे लाभकी अपेक्षा हानिकी अधिक सम्भावना थी।
बहुत हलचलकी सम्भावना थी और लाभकी अपेक्षा हानि भी अधिक
थी। उसका कहना था कि सत्यज्ञान तथा जागृतिका विकास यदि
स्थायी रखने हो तो उनका शनैः शनैः होना ही अच्छा है, क्योंकि इस
तरह ज्ञानके विकासके साथही साथ लोगोंमेंसे अन्धविश्वास तथा उपासनाके
आडम्बरमें प्रीतिका भी लोप होता जायगा।

इरेजमस तथा उसके अनुयायियोंका मत था कि धार्मिक सुधारका
मुख्य साधन प्राचीन साहित्यके अनुशीलन द्वारा शिष्टाचारकी उन्नति ही है।
परन्तु जिस समय यूरोपमें तीन विद्यानुरागी नरेशों-मैक्समिलियन, अष्टम
हेनरी और प्रथम फ्रांसिस—तथा विद्याप्रेमी पोप दशम लियोके शासनसे
आशान्वित होकर इरेजमस अपनी शान्तिमय सुधारवाली कल्पनाको फली-
भूत होता समझ रहा था, उसी समय एक ऐसी अग्नि आरम्भ हुई
जिसका उसे स्वप्न भी न था और जिसने उसके जीवनके अन्तिम भागको
दुःखमय बना दिया।

जर्मनीके लोग पोपकी सभामें कितनी घृणा करते थे इसका ठीक
अनुमान वाल्टर वान डर वोगलवीडकी कविताओंसे होता है। इससे
तीनसौ वर्ष पूर्वही उसने लिखा था कि पोप दूसरे जर्मनीको लूटकर भरे
जा रहे हैं। वे समझते हैं कि "उनकी वस्तुएं मेरी हैं, उनके [illegible]

* Praise of Folly by Erasmus

दूरस्थित कोषमें चले आ रहे है। उसके पुरोहित मांस मद्यके आनन्द ले रहे हैं और साधारण जन भूखों मर रहे है।" उसके पश्चात्के प्रायः सभी जर्मन लेखकोंके लेखोंमें ऐसे भाव पाये जाते हैं। चर्चके आर्थिक शासनके कारण जर्मनीमें विशेष रूपसे असन्तोष उत्पन्न हुये थे और इनके सुधारनेका प्रयत्न सभाने किया था। मेयेन, ट्रीव्ज कलेन तथा साल्जबर्गके आर्कविषपकी भांति, जर्मनीके पादरियोंको भी अपने चुनावका अनुमोदन करा कर अपने पदकी पुष्टिके लिये पोपके कोषमें दस सहस्र सुवर्ण मुद्रा देनी पड़ती थी और अधिकारकी प्राप्तिके समय उनसे भी कई सहस्र अधिक मुद्राओंकी आशा की जाती थी। पोपको जर्मनीमें अनेक पदोंपर नियुक्ति करनेका अधिकार था और वह अधिकतर इटालीवालोंको नियुक्त कर देता था। यह इटलीवाले पद-सम्बन्धी किसीभी कार्यका ध्यान न रखते हुये केवल कर संचित करते थे। कभी कभी तो एकही मनुष्य अनेक धार्मिक पदोंपर नियुक्त किया जाता था। सोलहवीं शताब्दिके आरम्भमें मेयेन्सका आर्कविशप मेडवर्गका आर्कविशप तथा हाल्वस्टैडका विशप भी था। कभी कभी तो एक ही मनुष्य बीसों पदोंपर नियुक्त किया जाता था।

सोलहवीं शताब्दिके आरभके लेखोंसे धर्मसंस्थाकी दशामें जो असन्तोष प्रकट होता है उसको बढ़ाकर वर्णन करना असम्भव है। जर्मनीके समस्त निवासी, शासकोंसे लेकर साधारण किसान तक, यही समझते थे कि उनके साथ अन्याय हो रहा है। पादरीलोग दुराचारी तथा अज्ञ समझे जाते थे। एक श्रद्धालु लेखकका वचन है कि "जिनको कोई अपनी गायभी सम्भालनेके लिये न देगा ऐसे अयोग्य नव-युवक धर्मपदके योग्य समझकर नियुक्त किये जाते हों। भिक्षुक, फकीर तथा फ्रांसिसकन, डोमिनिकन और आगस्टिनियन सम्प्रदायोंके तपस्वी घृणाकी दृष्टिसे देखे जाते थे पर वस्तुत. पादरियोंकी अपेक्षा धर्मकार्यमें ये लोग कहीं अधिक तत्पर थे। आगे चलकर यह ज्ञात होगा कि भक्तिसे मुक्ति प्राप्त करनेका नया मार्ग एक आगेस्टीनियन साधु ने ही दिखलाया था।

कोई वर्ग न था जिसपर उसका प्रभाव न पड़ा हो। समस्त देशमें असन्तोष था और सुधारकेलिये उतावलापन प्रकट हो रहा था। प्रत्येक मनुष्यकी भिन्न भिन्न अभिलाषा थी, तब भी सब मिलकर एक महापुरुषकी शिक्षापर ध्यान देनेको उद्यत थे जो प्राचीन धर्मसंस्थाकी उपेक्षा करके उनको मुक्तिका नूतन मार्ग दिखलाये।

* एक पुस्तका नाम। इसका शब्दार्थ "तुच्छ मनुष्योंके पत्र" है।

(यह फुटनोट पृष्ठ १८ का है)

अध्याय २

मार्टिन लूथर तथा धर्मसंस्थाके प्रतिकूल उसका आन्दोलन।

मार्टिन लूथरका जन्म एक किसानके घर हुआ था। उसका पिता बहुत गरीब था। वह हर्ज पर्वतके निकट किसी खानमें काम करता था उसी समय संवत् १५४० (सन् १४८३ ई०) में उसका प्रथम पुत्र मार्टिन उत्पन्न हुआ। बड़ा होनेपर मार्टिन अपने बचपनके समयकी अपने घरकी दरिद्रता तथा अन्धविश्वासोंका स्वयं वर्णन किया करता था। उसने लिखा है कि "मेरी माता कन्धेपर तो घरके कामके लिये लकड़ीका बोझ ढोया करती थी और मुझे जादूगरनियोंकी कहानियाँ सुनाया करती थी जिन्होंने किसी प्रकार ग्रामके पादरीको गायब कर दिया था"। छोटेपनहीमें वह पाठशाला भेज दिया गया क्योंकि उसके पिताकी आन्तरिक अभिलाषा अपने ज्येष्ठ पुत्रको वकील बनानेकी थी। अठारह वर्षकी अवस्थामें मार्टिन उत्तरीय जर्मनीके सबसे बड़े विद्यापीठ एर्फर्टमें प्रविष्ट हुआ। वहां वह चार वर्ष पर्यन्त शिक्षा पाता रहा। वहांपर उससे अनेक युवक ह्यूमनि-स्टोंसे परिचय हुआ। उनमेंसे वह व्यक्ति भी एक था जिसने "लेटर्स आफ आब्स्क्योर मेन" का अधिक भाग लिखा था। उसकी प्राचीन साहित्य-रत्नोंपर विशेष प्रीति थी। अरस्तूके लेखों तथा तर्कशास्त्रमें भी उसको साधारणतः प्रेम था।

विद्यालयकी शिक्षा समाप्तकर कानूनके विद्यालयमें प्रवेश करनेके पूर्व ही अन्तिम बार संसारी आनन्द मनानेके लिये इसने [illegible] सम्पूर्ण मित्रमंडली को निमंत्रित किया। दूसरे दिन उन सबको लेकर वह

आगस्टिनियन मठके फाटकपर पहुँचा। उनको वहाँ वह अन्तिम प्रणाम कर संसारसे मुँह मोड़कर साधु हो गया। उस दिन अर्थात् संवत् १५६२ के श्रावणका प्रथम दिवस जब कि वह नवयुवक विद्वान् अपने पिताके क्रोध तथा निराशाका विचार छोड़ मठमें जा कर मुक्तिके उपाय सोचने लगा एक ऐसे धार्मिक अनुभवका आरम्भ हुआ जिसका संसारभरपर विचित्र प्रभाव पड़ा।

इसके बहुत दिनों बाद उसने एक बार कहा कि यदि कोई साधु कभी स्वर्ग गया है तो मैं भी स्वर्ग जानेका अधिकारी हूँ। उसकी भक्ति इतनी अधिक और मोक्षकी इच्छा इतनी प्रबल थी कि वह उपवास-जागरण, दीर्घकालीन भजन करते करते अपने स्वास्थ्यको ही खो बैठा और उसकी निद्रा एकदम बन्द हो गयी। पहिले तो उसे निराशा हुई पश्चात् उसका एकदम दिल टूट गया। मठके साधारण नियमोंके पालनसे ही लोग सन्तुष्ट रहते थे, पर उसे इतनेमें शान्ति नहीं मिली। उसे खयाल होता था कि कर्म्मणा सच्चारित्र रहनेपर भी चित्तकी वासनाओंको पूर्णतया शुद्ध करना कठिन है। संकल्प और वासनाएँ सब पवित्र नहीं हो सकेंगी। उसको इस बातका भी अनुभव हुआ कि धर्म संस्था तथा मठोंमें ऐसा कोई भी उपाय नहीं जो उसे धर्म तथा सत्यपर जमाये रखे। इस कारण उसे प्रतीत होता थी कि वे भी सफल नहीं हुये हैं और वे उसे भी घोर पापी बनाकर ईश्वरके क्रोधका पात्र बना रहे हैं।

धीरे धीरे ईसाई धर्मका नया स्वरूप उसके हृदयमें प्रकट हुआ। मठाधिपतिने उसे अपने पुण्यकार्योंपर भरोसा न रखकर ईश्वरकी दया तथा क्षमापर भरोसा रखनेके लिये कहा। वह महात्मा पाल तथा अगस्टाइनके लेखोंका स्वाध्याय करने लगा। उनको पढ़नेसे उसे ज्ञान हुआ कि मनुष्य किसी भी पुण्य करनेमें समर्थ नहीं है, उसकी मुक्ति केवल ईश्वरमें श्रद्धा और भक्ति करनेसे हो सकती है। इससे उसे फिर संतोष मिला। परन्तु अपने विचारों को परिवर्तित करनेमें उसे कई वर्ष

नरक यातना भोगना पड़ती, परन्तु उसकी मुक्ति उस दंडसे नहीं होती जो ईश्वर अथवा उसका प्रतिनिधि पुरोहित उसके लिये नियत करता है। प्राचीन कालमें पाप कर्मके लिये धर्म-संस्थाने कठिन प्रायश्चित्त नियत किये थे। लेकिन लूथरके समयमें जो पापी क्षमा कर दिया जाता था वह वैतरणीके दुःखोंकी यातनासे विशेष डरता था। वहांकी यातनासे उसकी आत्मा पवित्र होकर स्वर्गको प्रस्थान करती थी। क्षमाप्रदान एक प्रकारकी क्षमा था, इसको पोप प्रदान करता था। इसके द्वारा पश्चात्तापी पापीके पापमोचनके बाद भी बचे हुए पापके समस्त अथवा एक भागके दंडसे रिहाई हो जाती थी। क्षमासे पापीका पापोंसे छुटकारा नहीं होता था, क्योंकि क्षमाप्रदानके पूर्व ही पापको दूर कर देना आवश्यक है। इससे केवल उस दंडसे पूर्णतया अथवा अंशतः होती थी जिसे पापीको क्षमाप्रदान न देनेपर वैतरिणी स्थानमें भोगना पड़ता।

मृतकोंके लिये क्षमाप्रदान लूथरके जन्मके कुछ समय पूर्वसे प्रचलित हो पड़ा था। वैतरणी स्थानमें पड़े हुए लोगोंके सम्बन्धी अथवा मित्र क्षमा प्रदान करा कर स्वर्गमें जानेके पूर्वकी यातना जो उनको भोगनी पड़ती है उसमें कमी करा सकते थे। जो वैतरणी स्थानमें हैं उनकी मृत्युके पूर्वके पापोंसे मुक्ति हो जाती थी, नहीं तो उनको ... का न आ हो गया होता और क्षमासे उन्हें कुछ भी लाभ न पहुंच सकता।

प्रदानके लिये वे लोग अनेक प्रकारकी गहरी दक्षिणाएं मांगते थे जिन्हें सुनकर ही साधारण जनको भी घृणा और रोष उत्पन्न होता था।*

क्षमाके प्रचलित भावको खंडन करनेवालोंमें लूथरही सबसे प्रथम नहीं था; पर उसके निबन्धकी भाषाकी तीव्रता तथा धर्मसंस्थाके शासनके प्रति जर्मनोंके उद्वेगने इस विषयको बड़ी मुख्यता दे दी। उसका कहना था कि क्षमाप्रदानसे विशेष लाभ नहीं होता, इससे अच्छा है कि दरिद्र आदमी अपने धनको अपने गृह-कार्यमें व्यय करे। जो सचमुच पश्चात्ताप करता है वह यातनासे भागता नहीं वरना पश्चात्तापकी चिरस्मृति रखनेके लिये उसे सहर्ष सहन करता है। यदि क्षमा मिल सकती है तो केवल ईश्वरमें भक्ति करनेसे न कि पुरोहितोंकी कृपासे। जिस ईसाईको हृदयसे पश्चात्ताप होता है उसे अपने पापों तथा यातना दोनोंसे रिहाई हो जाती है। यदि पोप जानता है कि उसके प्रतिनिधि लोग किस भांति बहका कर बुरे तरीकोंसे धन-संग्रह करते हैं तो यह अच्छा होता यदि झूठे बहकाने और छल कपटोंसे द्रव्योपार्जन कर उसका जीर्णोद्धार करनेके बदले वह महात्मा पीटरकी धर्म-संस्थाको जलाकर भस्म कर देता। लूथर कहता है "हो सकता है सर्व साधारण बड़े बेढंगे प्रश्न पूछ बैठें। जैसे यदि पोप द्रव्य लेकर लोगोंको वैतरणीसे मुक्त कर सकता है तो वह इस कार्यको खैरातमें क्यों नहीं करता। अथवा पोप तो कुबेरकी भांति धनी है, वह गरीबोंसे धन लेनेके बदले अपने ही धनसे महात्मा पीटरके धर्ममंदिरका निर्माणको क्यों नहीं करता।

लूथरके लेखोंकी प्रतियां रोमको भेजी गयीं। इनके भेजनेके थोड़ेही दिनों पश्चात् लूथरपर नास्तिकताका दोष लगाया गया और उसका उत्तर देनेके लिये वह पोपके दर्बारमें निमंत्रित किया गया। लूथर अब भी

---

* वैतरणी स्थान अंग्रेजोंके 'पर्गेटरी' के लिये प्रयुक्त हुआ है। यह नरक और स्वर्गके बीचमें है स्वर्गमें प्रवेश करनेके पहले पुण्यात्मा पुरुष अपने बचे पापोंके लिये हल्का दण्ड यहीं भोगते हैं।

पोपकी प्रधान धर्माध्यक्षके रूपमें प्रतिष्ठा करता था लेकिन रोम जाकर वह अपनेको खतरेमें नहीं डालना चाहता था इधर लूथरके पक्षमें सैक्सनीका इलेक्टर खड़ा हुआ। दशम् लिओ इसको प्रकुपित नहीं करना चाहता था इस कारण इस मामलेपर विशेष विवाद न बढ़ाकर उसने अपने प्रतिनिधिको लूथरसे बात चीत करनेके लिये जर्मनीहीमें भेजा।

मार्टिनको कुछ समय पर्यन्त लोगों ने शान्त रहनेकी सलाह दी पर इसकी शान्ति संवत् १५७६ (सन् १५१९ ई०,), में लीपजिक सभाके शास्त्रार्थके अवसरपर पुनः टूट गया। यहांपर एक नामी जर्मनीके एक प्रसिद्ध शास्त्रीने जो कि पोपको देवताकी भांति पूजता था और विवादमें भी विख्यात था लूथरके कालैस्टेड नामी मित्रको कुछ ऐसे विषयोंपर सर्वसाधारणमें शास्त्रार्थ करनेके लिये आह्वान किया जिनमें लूथरकी स्वयं भी बड़ी अभिरुचि थी। लूथरने इस विवादमें भाग लेनेकी आज्ञा मांगी।

विवादका विषय पोपका अधिकार था। लूथरने धर्म-संस्थाका इतिहास पूर्णतया पढ़ा था, इससे उसने कहाकि पोपका अधिकार केवल चार सौ वर्षसे प्रचलित है। यह कथन ठीक नहीं था, परन्तु उसने रोमन कैथलिक मत वालोंकी प्रथाओंपर एक ऐसे तर्क द्वारा कुठाराघात किया जिसका आश्रय प्रोटेस्टेएट मत वाले अब तक लेते आये हैं। उनका कथन है कि पोपकी शक्तिकी वृद्धि धीरे धीरे मध्य-युगमें हुई। इसके पूर्वके महात्माओंको न तो स्तुतियोंका न वैतरणी स्थानका और न रोमन विषपके अधिपति होने ही का ज्ञान था।

गौरव मानता था, जो जर्मनीमें स्वयं जर्मन सम्राटकी निरीक्षकतामें हुई थी। उसने कहा कि बड़ीसे बड़ी सभा भी भूल कर सकती है। हम सब अगत्या हसके अनुयायी हैं। पाल तथा महात्मा अगस्टाइन भी हसके अनुयायी थे। यूरोपके एक प्रसिद्ध शास्त्रार्थीके साथ सर्वसाधारणमें शास्त्रार्थ करनेसे तथा इस आश्चर्यकारक मतको अंगीकार करनेसे उसे विश्वास हो गया कि धर्मसंस्थाके विरुद्ध आन्दोलन करनेमें उसे नेता बनना ही पड़ेगा। उसे प्रतीत होने लगा कि विकट परिवर्तन तथा उलटफेर होना अनिवार्य है।

अब जब कि लूथर प्रकट विरोधी हो गया अन्य विद्रोही तथ सुधारक उसके मित्र बनने लगे। लिपजिकके शास्त्रार्थके पूर्व ही उसके कितने अधिक प्रशंसक हो गये थे। इनमेंसे अधिकतर विटिनबर्ग तथा न्यूरम्बर्गके रहनेवाले थे। ह्यूमानिस्टोंका तो वह स्वभाविक मित्रसा था। वे उसके धार्मिक मन्तव्योंको भले ही न समझते हों पर इतना तो अवश्य समझते थे कि वह भी उन्हीं लोगोंपर (विशेष कर प्राचीन पद्धतिके उन धर्मशास्त्रियोंपर जो अरस्तूकी विशेष प्रतिष्ठा करते थे) आक्रमण कर रहा था जिन्हें वे स्वयं घृणासे देखते थे। उन लोगोंकी भांति उसे भी धर्मसस्थाकी बुराइयोंपर शोक होता था और यद्यपि वह स्वयं विटनबर्गमठका अधिपति था, वह भिक्षुक यतियोंपर भी सन्देह करने लगा था। इन कारण जिन लोगोंने रुचलिनकी सहायता की थी वे लूथरकी भी सहायता करनेके लिये उद्यत हुये और उसके पास उत्साहजनक पत्र भेजने लगे। इस समय इराजमसके ग्रंथोंके मुद्रकने बेलनमें लूथरके लेखोंको प्रकाशित किया और फ्रास, इटली, स्पेन तथा आंगल देशमें भेज दिया।

लेकिन इराज्मसने जो उस समय विद्वानोंमें अग्रगण्य था इस झगड़ेमें भाग लेनेसे इनकार किया। उसने कहा कि 'लूथर'के लेखोंके मैंने दस या बारह पन्नोंसे अधिक नहीं पढ़े। यद्यपि इसके विचार-

में भी पोपका राज्य उस समय ईसाई धर्मके लिये कंटक था पर उसपर सीधे आक्रमण करना भी विशेष लाभदायक न था। वह कहता था कि अच्छा होता यदि लूथरके हृदयमें यह विचार उत्पन्न हो जाता कि धीरे धीरे मनुष्य अधिक बुद्धिमान् तथा पंडित होकर अपने झूठे विचारोंको स्वयं छोड़ देगा"।

इराजमसका विश्वास था कि मनुष्यकी उन्नति हो सकती है। उसे शिक्षा देकर उसकी बुद्धिका विकास किया जाय तो दिनपर दिन वह अच्छा होता जायगा। सारांश यह कि वह एक स्वतन्त्र प्राणी है साधारणतः उसकी प्रवृत्ति ऊपरको जानेकी है। लूथरको विश्वास था कि मनुष्य एकदम भ्रष्ट है। उससे कुछ भी सत्कार्यकी आशा नहीं, उसका मन बुराइयोंमें लिप्त है। उसके मुक्तिकी आशा केवल इसीमें है कि वह अपने उद्धारमें अपनेको सर्वथा असमर्थ जानकर ईश्वरदयापर निर्भर रहना सीख ले। केवल भक्तिसे न कि कार्यसे उसकी मुक्ति हो सकती है। जबतक सर्वसाधारण धर्मसंस्थाके सुधारके लिये न खड़े हों तबतक इराजमस भी मुंह खोलना नहीं चाहता था। लूथर ऐसी धर्मसंस्थाको देखकर पलमात्र भी नहीं रह सकता था जो केवल दानपुण्यपर [illegible]

'लूथरको जर्मनीका सच्चा हितैषी तथा रोमके अत्याचारोंका कट्टर शत्रु समझा और लिखा कि "हम लोगोंका अपनी स्वतंत्र रक्षा और पितृभूमि-की दासतासे मुक्त करना चाहिये । हम लोगोंके सहायक स्वयं परमेश्वर है और ऐसी दशामें हम लोगोंका कोई भी प्रतिद्वन्द्वी नहीं हो सकता।' अनेक वीरभट इसके समर्थक हुये। उनलोगोंने कहा कि "यदि धर्मसंस्था वाले लूथरपर आक्रमण करेंगे तो हम लोग उसकी रक्षा करेंगे" और उन्होंने अपने प्रासादों में रहनेके लिये उसे निमंत्रित किया।

लूथर जो कभी कभी अपने उद्दण्ड स्वभावको नहीं दवा सकता था इस प्रकार उत्साह पाकर अव धमकी भी देने लगा, और पादरियों तथा मठवालोंके सुधारकी ओर सरकारका ध्यान खींचने लगा। "हम लोग चोरको फांसी देते हैं, ठगोंको तलवारसे मार डालते हैं, नास्तिकोंको आगमें जला देते हैं तो हम लोग अधःपतनके मुख्य कारण रोमन धर्म्मके अंगभूत इन पोप और पादरियोंको हर प्रकारके दंडसे क्यों न दंडित करें।" उसने अपने एक मित्र को लिखा था "हमने अपना कार्य आरंभ कर दिया है। जितनी घृणा मुझे रोमकी कृपासे है उतना हा उसके क्रोधसे भी है । मैं भविष्यमें भी उनसे किसी प्रकारसे सुलह न करूँगा । उसे मेरे निबन्धोंको जलाने तथा मुझसे घृणा करने दो। यदि अग्नि वर्तमान रही तो किसी न किसी समय में पोपके समस्त नियमोंको जला दूँगा।"

(सन् १५२०) सम्वत् १५७७ में हूटन तथा लूथर दोनोंने पोप तथा उसके प्रतिनिधियों पर एकसे एक वढ़कर तीव्र कटाक्ष किये । दोनोंके दोनों जर्मन भाषामें निपुण थे और रोमसे दोनोंको जलन थी । हूटनको लूथरकी भांति धार्मिक उत्तेजना नहीं थी पर पोपके दरवारके लोभको अपने देश निवासियोंके सामने सविस्तर वर्णन करनेके लिये उपयुक्त शब्द नहीं मिलते थे। उसका कहना था कि रोम गहरी गुफा है जिसमें जर्मनीसे जितना धन छीना जा सका सव गाड़कर रखा जाता है अनेक छोटेछोटे निवन्ध लिखे । उनमेंसे सबसे पहिले वह विख्यात हुआ जिसमें उसने

जर्मनीके उच्चश्रेणीके पुरुषोंको सम्बोधित किया था। उसने जर्मनीके शासकों को, विशेषतः नाइटोंको, लिखा था कि "बुराइयोंके दूर करनेका स्वयं प्रयत्न कीजिये, धर्मसंस्थाके भरोसे रहना व्यर्थ है।

उसने स्पष्ट दिखलाया है कि जब कोई पोपको धर्मसंस्थामें सुधार करना चाहता है तो वह तीन बड़ी दीवारोंका शरण लेता है। प्रथम तो उसका यह दावा है कि पादरियोंकी श्रेणी ही अलग है और सरकारसे भी उच्च है, धर्मसंस्था वाले लोग कितने ही बुरे क्यों न हों, सरकार उनको दंड नहीं दे सकती। दूसरे पोप सभासे भी उच्च है इसलिये धर्मसंस्था के प्रतिनिधि भी उसको नहीं सुधार सकते। तीसरे, धर्म-पुस्तककी व्याख्याका अधिकार केवल पोपको ही है इस कारण बाइबिलके सूत्रों द्वारा वह हटाया भी नहीं जा सकता। इस प्रकार तीनों नियन्त्रणों की कुञ्जी पोपने अपने हाथमें कर ली थी। लूथरने इन आयोजनोंकी अवहेलना इस प्रकार करनी आरंभ की। उसने कहा कि जिन कर्त्तव्योंके पालनके लिये पादरीकी नियुक्ति है उनके अतिरिक्त और कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसके लिये पादरी पवित्र माने जायं। यदि वे अपने काममें उचित ध्यान न दें तो वे किसी समय भी इस पदसे पृथक् किये जा सकते हैं, और तब उनकी गणना साधारण जनोंमें की जायगी। लूथरने कहा कि यदि कोई भी धर्मसंस्थाका अपराध करे तो सरकारका कर्त्तव्य है कि साधारण जनकी भांति उसे दंडित करे। जब प्रथम रक्षास्थानका नाश कर दिया जाय तो और स्थान आप ही नष्ट हो जायगे, क्योंकि मध्ययुगके धर्मसंस्थाका प्रधान ही पादरियोंकी रक्षाका प्रधान साधन था।

लाभोंसे सन्तुष्ट न हो उनको उससे सम्बन्ध तोड़नेके लिये स्वतंत्रता होनी चाहिये। वह चाहता था कि मठको बन्दीघरोंके तुल्य न बनाकर उनको व्यथित आत्माओंके लिये शांति-तथा विश्राम-स्थान बनाया जाय। तीर्थ-यात्राओं तथा धार्मिक अवकाशोंसे जो कुछ दैनिक कार्यकी हानि होती है उसको भी उसने भलीभांति दरशाया। उसका मत था कि अब नागरिकोंकी भांति पादरी लोग भी विवाहादि किया करें और कुटुम्बी बनकर रहें। विद्यापीठोंका भी सुधार होना चाहिये और "विधर्मी पाखण्डी अरस्तू" को भूल जाना चाहिये।

यह जान लेना आवश्यक है कि लूथर अधिकारी वर्गको धर्मके नामपर नहीं वल्कि समाजकी शांति तथा समृद्धिके नामपर सम्बोधित करता था। उसने दिखलाया है कि आल्प्स पर्वतको पार कर जर्मनीसे इटलीमें असंख्य धन जाता है पर कभी एक पैसा भी लौटकर नहीं आता। उसने प्रभावशाली भाषापर अपना पूर्ण अधिकार प्रकट किया। उसका शंखनाद उसके देशवासियोंके कानमें गूंज गया।

अपने प्रथम निबन्धमें लूथरने धर्मसंस्थाके सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें अधिक नहीं लिखा था। उसके दो या तीन ही मास पश्चात् उसने दूसरा निबन्ध प्रकाशित किया जिसमें उसने तेरहवीं शताब्दीके धर्म-शास्त्रियों तथा पीटर लोम्बार्डकी उपदेश की हुई संस्कार-पद्धतिको रद्दकर देनेका प्रयत्न किया। सात संस्कारोंमेंसे चार (अभिषेक, विवाह, अनुमोदन तथा अवलेपन) को तो उसने एक दम अस्वीकार कर दिया। उसने स्तुति तथा भगवत्-भोगके तात्पर्यको एक दम उलट दिया। उसके मतसे पुरोहितका काम केवल उपदेश देना है।

लूथर बहुत पहलेसे ही धर्मसंस्थासे बहिष्कृत किये जानेकी प्रतीक्षा कर रहा था पर संवत् १५७७ (सन् १५२० ई०) पर्यन्त कुछ भी न हुआ। इस वर्ष लूथरका विरोधी 'एक' पोपका आज्ञापत्र लेकर जर्मनीमें आया और लूथरकी उक्तियोंको नास्तिकतापूर्ण बतला कर उन्हें

वापस लेनेके लिये उसे साठ दिनकी अवधि दी। उसे यह धमकी दी गयी थी कि तुम यदि इस समयके भीतर अपनेको न सुधार लोगे तो तुम तथा तुम्हारे समस्त अनुयायी बहिष्कृत किये जायंगे और जो लोग तुम्हें शरण देंगे वे शापित समझे जायंगे। एकको यह आशा थी कि जब प्रधान धर्माध्यक्षने लूथरको नास्तिक बतलाया तो सब जर्मनीके अधिकारीवर्ग निःसंकोच उसे बन्दी कर पोपके हवाले करेंगे पर उसको बन्दी करने-का किसीने विचार भी न किया। उलटे उस आज्ञापत्रसे जर्मनीके राजा बिगड़ गये। चाहे वे लूथरको पसन्द करते या न करते हों परन्तु उनको यह कभी भी रुचिकर नहीं था कि पोप उनपर आज्ञापत्र निकाले। इसके अतिरिक्त उन्हें यह भी बुरा लगा कि इस आज्ञापत्रको प्रकाशित करने-का कार्य लूथरके शत्रुको दिया गया। यहांतक कि जो राजा तथा विद्यापीठ पोपके सहायक थे उन्होंने भी इस आज्ञापत्रको अन्यमनस्क होकर प्रकाशित किया। इर्फर्ट तथा लीपजिकके छात्रोंने तो "बुल" को शैतान तथा फरिसीका दूत कहकर उसको फाड़ा किया। कितने स्थानोंमें तो आज्ञापत्रकी किसीने परवाह ही न की। यद्यपि सैक्सनीका इलेक्टर, जो लूथरका राजा था, नूतन मतावलम्बी नहीं था तथापि वह चाहता था कि लूथरके मतपर पूर्णरूपसे विचार होना चाहिये और वह बराबर उसकी रक्षा करता रहा। सम्राट् पंचम चार्लसने इच्छापूर्वक आज्ञापत्रको प्रकाशित किया पर वह भी सम्राट्की हैसियतसे नहीं प्रत्युत आस्ट्रिया तथा नेदरलैण्डके शासककी हैसियतसे। हां, लूथरके निबन्ध [illegible]-शास्त्रके केन्द्रस्थान लोवन, मेयेन्स, तथा कोलोनमें जला दिये गये।

का सामना करना है उसी भांति विटिन वर्गके अध्यापक लूथरने पोप तथा सम्राट्की शक्तिका प्रतिरोध बराबरीमें किया था। उसने दशम लियो-के आज्ञापत्र, धर्मसंस्थाके नियम तथा सम्प्रदायियोंकी धर्मशास्त्रकी एक पुस्तकको जिससे वह बहुत घृणा करता था अग्निमें जला दिया। इस पवित्र तथा धार्मिक होलीको देखनेके लिये उसने अपने समस्त छात्रोंको निमंत्रित किया था।

धर्मसंस्थाके पुराने भवनको ढहा देनेकी जितनी अधिक वासना लूथरके हृदयमे आने लगी वैसी पहले कभी भी नहीं आयी थी। हूटन चाहता था कि जितना शीघ्र हो सके आन्दोलन आरंभ कर दिया जाय। वह और लूथर दोनों जन अपने शक्तिशाली लेखों द्वारा उसको वर्द्धित कर रहे थे। हूटनने जर्मनीके वीरभटोंके नेता फ्रेंज वान सिकिन्जनके महलमे शरण ली थी। उसको विश्वास था कि आगामी स्वतन्त्रता तथा सद्धर्मके युद्धमें उससे मुझे उपयुक्त सैनिक सहायता मिलेगी। हूटनने युवक सम्राट्से स्पष्टरूपमें कहा था कि "पोप पद तोड़ देना चाहिये। संस्थाकी सम्पूर्ण सम्पत्ति राजयमें मिला लेनी चाहिये और सौ पादरियोंमेंसे निन्यानवे पादरियोंको व्यर्थ समझ कर निकाल देना चाहिये। केवल एकमात्र यही उपाय है जिससे जर्मनीके पादरियों तथा उनकी बुराइयोंसे मुक्ति हो सकती है। उनकी सम्पत्ति जब्त कर लेनेसे साम्राज्यकी पुष्टि तथा आर्थिक दशाकी उन्नति होगी, और उसकी रक्षाके लिये वीरभटोंकी सेना नियुक्त की जायगी।"

लोकमत भी क्रान्तिके लिये तैय्यार दिखायी देता था। लियोके प्रतिनिधि अलेक्जेण्डरने कहा था "मैं जर्मन जातिके इतिहासको भली भांति जानता हूं। मैं उसकी पूर्व समयकी नास्तिकता, सभा तथा कलह-को भी जानता हूं लेकिन इतनी विकट अवस्था कभी भी नहीं हुई थी। आधुनिक दशासे मिलान करनेपर चतुर्थ हेनरी तथा सप्तम ग्रेगरीके कलह तुच्छ प्रतीत होते हैं। ये पागल कुत्ते अब विद्या तथा अस्त्रसे

मानता है, जिनको पोपने धर्म-विरुद्ध बतलाया है।" यह बात आलिएण्डरको बहुत बुरी लगी।

तदनुसार सम्राट्ने "पूज्य तथा प्रतिष्ठित" लूथरके पास विनीत भ एक पत्र लिखा। उसमें उसने लूथरको वर्ममें बुलाया और र रक्षाकी प्रतिज्ञा की। पत्र पाकर लूथरने कहा "यदि वर्मसे अपने सिद्धांतको छोड़नेके लिये जाना है तो अच्छा यह होगा कि विटिनवर्गहीमें रहूं और यदि हो सके तो अपनी बुराइयोंको दूर क पर यदि सम्राट् मेरी हत्या करनेके लिये वर्ममें बुलाता है तो मैं उ लिये सन्नद्ध हूं क्योंकि प्रभु ईसाकी कृपासे मैं अपनी धर्मपुस्तकको बुरी दशामें छोड़कर भाग नहीं सकता। पूर्वमें मैंने कहा था कि पे ईश्वरका प्रतिनिधि है, अब मैं उस वचनको काटकर कहता हूं कि प्रभु ईसाका शत्रु और शैतानका दूत है।

राजदूतके साथ लूथरने वर्मको प्रस्थान किया। मार्गमें उसको पू से अधिक सफलता मिली। वह नास्तिकताके दोषमें निकाल दिया ग था तो भी वह मार्गमें बराबर अपने मतका उपदेश देता ही गया। उस राजसभाको विप्लवकी दशामें पाया। पोपके प्रतिनिधिका प्रति तिरस्कार होता था। हटन और सिकिंजन यह धमकी दे रहे थे कि ए इबर्नवर्गकी गढ़ीसे निकलकर लूथरके शत्रुओंको मार भगावेंगे।

सभाके सामने अपने मतका समर्थन करनेका अवकाश उसे न दिया गया। जब वह सम्राट् तथा सभाके सामने उपस्थित हुआ त उससे केवल दो प्रश्न पूछे गये। "क्या जर्मन तथा लेटिन भाषामें लि किताबोंका यह संग्रह तुम्हारा ही लिखा है? और यदि लिखा है तो क्या तुम अपने मतको बदलनेके लिये प्रस्तुत हो?" लूथरने प्रथम प्रश्न उत्तर तो जोरसे दिया कि हां यह सब मेरा ही लिखा है। पर दूसरे प्र उत्तरके लिये उसने कुछ समय मांगा क्योंकि उसमें अपनी आत्म सत्यता तथा ईश्वरवाक्यकी सत्यता अन्तर्गत था।

दूसरे दिन उसने सभामें लैटिन भाषामे अपना भाषण उपस्थित किया और उसका अनुवाद जर्मन भाषामें भी पढ़ सुनाया । उसने कहा कि "मैने अपने शत्रुओंकी कार्यवाहीकी आलोचना कड़ी भाषामें की है। पर यहां कोई नहीं है जो इस बातसे इनकार करे कि पोपकी आज्ञाओंसे सच्चे ईसाइयोंकी आत्माएं बेतरह मोहग्रस्त हो गयी हैं और पीड़ित हो रही हैं और उनकी सम्पत्तिया, विशेषकर जर्मनीमे, हड़प ली गयी हैं। यदि मै पोपके प्रतिकूल कहे हुए अपने वचनोंको लौटाऊंगा तो पोपके दुराचारोंकी केवल बढ़ती ही होगी और नये नये माल हड़पनेका उसे अवसर मिलेगा। यदि मेरे विचारके विरुद्ध धर्मपुस्तकमें कोई भी उपपत्ति मिले तो मै अपने कामसे मुंह मोड़नेको तैयार हूं। मै पोप अथवा सभाकी मंत्रणा माननेको प्रस्तुत नहीं हूं क्योंकि दोनोंने भूल की है और स्वयं अपने मन्तव्योंके प्रतिकूल कार्य किया है। मेरे विचार केवल ईश्वरके सहारे है। अपने कार्यसे मुंह मोड़ना तो कठिन है और वह मुझसे हो भी नहीं सकता क्योंकि अपनी विवेक-बुद्धिके विरुद्ध कार्य करना भयावह तथा असंगत है"।

अब लूथरको अरक्ष्य घोषित करनेके अतिरिक्त सम्राट्को कुछ भी नहीं करना था क्योंकि उसने धर्मसंस्थाके प्रधानाध्यक्ष तथा ईसाई जनताकी सबसे बड़ी सभाकी आज्ञाकी अवहेलना की थी। लूथरके इस कथनपर कि उसका आन्दोलन धर्मपुस्तकके अनुकूल है राजसभाने कुछ ध्यान नहीं दिया।

वर्मके प्रसिद्ध आज्ञापत्रके लिखनेका कार्य अलेक्जेण्डरको दिया गया। इस आज्ञापत्रद्वारा निम्न लिखित कारणोंसे लूथर अरक्ष्य घोषित किया गया। उसने संस्कारोंकी प्रचलित संख्या और पद्धतिमें उथल पुथल की और बाधा डाली। उसने विवाहके नियमोंका अपवाद किया। उसने पोपकी अवहेलना तथा निन्दा की, पुरोहित-पदकी निन्दा की और लोगोंको पुरोहितोंकी हत्याके लिये उत्तेजित किया। उसने मनुष्यके संकल्प स्वातन्त्र्य

सिद्धान्तकी अवहेलना की तथा दुश्चरित्रताकी शिक्षा दी, वह अधिकारी वर्गसे घृणा करता है, पशुजीवनका उपदेश देता है और राज्य तथा धर्म दोनोंके लिये भयका कारण है। प्रत्येक व्यक्तिके लिये इस नास्तिकको भोजन, पान और आश्रय देना मना है। यह प्रत्येक व्यक्तिका कर्तव्य है कि वह इसको पकड़कर राज्यके हवाले कर दे।"

इसके अतिरिक्त आज्ञापत्रमें यह भी लिखा था कि आजसे मार्टिन लूथरकी पुस्तकोंको कोई भी मनुष्य खरीद, बेच, पढ़, रख, नकल करवा अथवा छपवा नहीं सकता क्योंकि वह पोपसे दंडित है और ये पुस्तकें कलुषित, अनिष्टकारी तथा शंकास्पद हैं और प्रसिद्ध नास्तिक द्वारा रचित हैं। उनके विचारोंका समर्थन, या ... किसी भी प्रकारसे नहीं किया जा सकता चाहे जनसाधारणको ... देनेके लिये उनमें कुछ अच्छी भी बातें क्यों न लिखी हों।

यह अंतिम समय था जब कि सम्राट् रोमके विशपकी आज्ञा ... करनेके लिये उद्यत हुआ था। हटनने कहा कि "मुझे अपने देशपर ... आती है।" उस आज्ञापत्रकी इतनी अधिक निन्दा हुई कि उसको मानने के लिये बहुत कम लोग प्रस्तुत हुए। चार्लस तुरन्त ही जर्मनीसे ... और दश वर्ष पर्यन्त वह स्पेनके शासन तथा कई लड़ाइयोंमें लगा रहा।

अध्याय २५

जर्मनीमें प्रोटेस्टेण्ट क्रान्तिकी प्रगति

(संवत् १५७८–१६१२)

वर्मसे लौटकर लूथर घर जा रहा था। मार्गमें ज्योंही वह आरसेनके समीप पहुँचा कुछ लोगोंने उसे पकड़कर सेक्सनीके इलेक्टरके वार्टवर्ग नामी दुर्गमें पहुँचाया। उसमें वह तब तक छिपा कर रखा गया जब तक सम्राट् तथा सभाकी ओरसे किसी काररवाईका कुछ भी भय रहा। दस कई मासके गुप्त वासमें उसने बाइबिलका जर्मन भाषामें नया अनुवाद आरंभ किया। संवत् १५७६ के चैत्र (सन् १५२२ ई० की मार्च) में वार्टवर्ग छोड़नेके पूर्व उसने न्यूटेस्टामेण्ट समाप्त कर दिया था।

इस समय पर्यन्त धर्मपुस्तकका जर्मन भाषामें अनुवाद यद्यपि दुर्लभ नहीं था तथापि स्पष्ट नहीं था। लूथरका कार्य कठिन था। उसने सचही कहा था कि "अनुवादका काम सबके लिये नहीं है। इसके लिये ऐसे ईसाईकी आवश्यकता है जो शुद्ध, पवित्र, सच्चा, मिहनती, पूज्य, पंडित, अनुभवी तथा मतिमान हो।' उसने ग्रीक भाषाको केवल तीनही वर्ष पढ़ा था और हेब्रूभाषा तो और भी कम जानता था। इसके अतिरिक्त जर्मनीमें कोई भी ऐसी प्रान्तीय भाषा नहीं थी जिसे वह राष्ट्र भाषा मानकर प्रयोग करता। प्रत्येक प्रदेशकी अलग अलग भाषा थी जो समीपके प्रदेशको विदेशी प्रतीत होती थी।

उसे इस बातकी भी चिन्ता थी कि बाइबिलकी भाषा इतनी सरल होनी चाहिये जो सर्वसाधारणकी समझमें जल्दी आ सके। इस हेतु वह

सुधार कुछ भी नहीं हुआ था। भिन्न भिन्न सुधारकोमे कोई बड़ा भेद नहीं था। सभीकी इच्छा थी कि धर्मसंस्थाकी दशाका सुधार होना चाहिये। पर इस बातको विरले लोग सोचते थे कि आपसके दृष्टिकोणों-में कितना भेद है। राजा लोग लूथरको इस आशासे मानते थे कि धर्मसंस्थावालों तथा उनकी सम्पत्तिपर अपना अधिकार हो जायगा, और रुपयेका रोम जाना बन्द हो जायगा। सिकिञ्जनके वीरभट राजाओंसे घृणा करते थे क्योंकि वे लोग उनकी वृद्धिसे जलते थे। "न्याय" का यह अभिप्राय था कि "वर्तमान शासकोंका नाश कर अपने वर्गको उच्च पद दे दिया जाय"। कृषक लोग लूथरको इस कारण मानते थे कि वह इस बातका नया नया सबूत दिखलाता था कि ग्रामपति इनसे अनुचित कर लेते हैं। ऊंचे पादरी पोपके अधिकारसे स्वतन्त्र होना चाहते थे और सामान्य पादरी विवाह करना चाहते थे। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि प्रायः सबके ही चित्तमें धर्मके विचारका स्थान गौण था।

जब लूथरने इन भिन्न २ दलोंको अपना पृथक् पृथक् मत प्रकाश करते देखा तो उसे अत्यन्त खेद तथा सन्ताप हुआ। उसके मतको समझनेमे लोगोंने भूल की थी। उसपर आक्षेप किये गये तथा अनादर भी किया गया। कभी कभी तो उसे यह भी सन्देह होने लगता था कि कहीं "भक्तिसे मुक्ति" के सिद्धान्तमे उसने स्वयं तो भूल नहीं की है। प्रथम आघात उसे विटिनवर्गहीसे पहुंचा।

जिस समय लूथर वार्टबर्गमे था विटिनवर्गके विद्यापीठमें रहनेवाले उसके सहकारी कार्लस्टाटके हृदयमें यह बात जम गयी कि महन्त तथा महन्तिनोंको चाहिये कि वे मठको छोड़कर सर्वसाधारणकी भांति विवाह करें। दो कारणोंसे यह सिद्धांत अति गम्भीर हो गया था। प्रथम, जो लोग मठ छोड़ रहे थे वे लोग अपनी की हुई शपथें तोड़ रहे थे, दूसरे, यदि मठ तोड़ दिये गये तो उनकी सम्पत्तिका प्रश्न उठ खड़ा होता। यह सम्पत्ति शुद्ध हृदयसे सद्गृहस्थोंने अपनी आत्माकी शान्तिके लिये

प्रदान की थी और वे लोग यह आशा रखते थे कि महन्तोंकी प्रार्थनाका लाभ उन्हें भी मिलेगा । इस बातपर ध्यान न देकर महन्त लोग दुरा- होके मठको छोड़कर जाने लगे और छात्रगण तथा अन्य लोग गिरिजोंमें रखी हुई महात्माओंकी मूर्तियोंको उखाड़ उखाड़ कर फेंकने लगे । अब स्तुतिके रूपमें भगवद्भोग लगना बन्द हो गया, क्योंकि लोगोंका मत यह हो गया कि यह "रोटी तथा मद्य" की ही उपासना है । कार्लस्टाटको यह भी धारणा हो गयी कि विद्या पढ़ना व्यर्थ है क्योंकि बाइबिलमें ईश्वरने कहा है कि "मैं अपनेको बुद्धिमानोंसे छिपाता हूं और बच्चोंको सन्मार्ग बतलाता हूं" । वह अशिक्षित व्यापारियोंसे बाइबिलके उन सूत्रोंके विषयमें प्रश्न करता था जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं था । इससे वे लोग आश्चर्यान्वित होते थे । विटेनबर्गकी पाठशाला रोटीकी दुकान बन गयी । जर्मनीके सभी प्रान्तोंसे आये छात्र सब अपने अपने घर लौटने लगे और अध्यापकोंने दूसरे स्थानोंमें जाना निश्चित किया ।

साधारणके ऊपर न छोड़ना चाहिये । यदि अधिकारीवर्ग इस बातपर ध्यान न दे तो चुप रहकर भलाईके लिये प्रयत्न करते रहना चाहिये । प्रत्येक मनुष्यका धर्म है कि वह लोगोंको यह शिक्षा दे कि मनुष्यके बनाये विधान सर्वथा तुच्छ है । लोगोंको उपदेश देना चाहिये कि अब कोई भी महन्त या महान्तिन न हो और जो लोग हो गये हों वे भी मठ छोड़ दें । पोपके स्वत्व अथवा विलासिताके लिये द्रव्य देना बन्द करें और उनसे कहें कि सच्चा ईसाईमत श्रद्धा तथा प्रेममे है । यदि हम लोग दो वर्ष पर्यन्त इस विषयपर अमल करें तो पोप, बिशप, महन्त महान्तिन तथा पोपके अधिकारके सम्पूर्ण मंत्रतंत्रोंका लोप हो जायगा । लूथरका मन्तव्य था कि ईश्वरने हम लोगोंको विवाह करने, महन्त बनने, उपवास करने, तथा मंदिरोंमें मूर्ति-स्थापन करने या न करनेकी स्वतन्त्रता दे दी है । ये सब बातें मुक्तिके लिये आवश्यक नहीं हैं । प्रत्येक मनुष्य अपने लिये जो विशेष लाभदायक प्रतीत हो उसे करनेके लिये स्वतन्त्र है ।

लूथरने जो नरमी और शान्तिका उपाय सोचा था वह असाध्य था । प्राचीन मार्गका त्याग करनेवालोंका उत्साह इतना अधिक बढ़ा हुआ था कि वे प्राचीन प्रथाओंके साथ सम्बन्ध रखनेवाली समस्त बातोंको एकदम निकाल देना चाहते थे । ऐसे बहुत कम थे जो उस धर्मके चिन्हों तथा रीतियोंको जिनसे वे घृणा करने लग गये थे शान्तिपूर्वक देख सकें । जिन लोगोंको धर्ममें विशेष अनुराग नहीं था वे लोग केवल विप्लव करनेके लिये चित्रों, लिखित काच-पटलों तथा मूर्तियोंके तोड़नेमें इन लोगोंका साथ देने लगे ।

लूथरको विदित हो गया कि शान्तिपूर्वक आंदोलन असम्भव है। उसके वीरभट साथी हूटन तथा फ्रैंज वान सिकिंजनने ही पहले पहिल बलप्रयोग करके धार्मिक आंदोलनकी अप्रतिष्ठा की । संवत् १५७६ (सन् १५२०) की शरदऋतुमें सिकिंजनने ट्रीवीजके आर्क-बिशपपर आक्रमण किया ।

यह उस आक्रमणका केवल प्रारम्भ था जिसको वीरभट लोग राजाओंके प्रतिकूल प्रयोगमें लानेका निश्चय कर चुके थे। उसने ट्रीवीज निवासियोंसे प्रतिज्ञा की थी कि "मैं तुम लोगोंको पादरियोंके भाषण तथा ईसाईधर्मके प्रतिकूल बन्धनसे छुड़ाकर अप्रमेय मुक्तिका मार्ग दिखला दूंगा"। उसने अपने प्रासादमें स्तुतिपाठ बन्द कर दिया था, और लूथरके अनेक अनुयायियोंको शरण दी थी। लेकिन उसका धार्मिक प्रचारके अतिरिक्त और भी उद्देश्य था। लूथरको वह जिस प्रतिष्ठाभावसे देखता था वह उस प्रबल इच्छासे सर्वथा भिन्न था जो सिकिजनको घृणित धर्मसंस्थाके एक उच्च अधिकारीको उतारकर उसकी सम्पत्ति हड़प लेनेके लिये प्रेरित कर रही थी।

परन्तु ट्रीवीजका आर्कविशप बुद्धिमान तथा वीर निकला। उसने अपनी प्रजाको अपने साथ मिला लिया। ऐसी दशामें फ्रैंजको अपने प्रासादमें शरण लेनेको बाधित होना पड़ा। पर वहां भी उसे पैलेटिनेटके इलेक्टर तथा लूथरके मित्र हासीके लैण्डग्रेवने घेर लिया। दुर्गकी दीवारों पर तोपके गोले बरसाये गये और सत्य-प्रचारक फ्रैंज धरन (कड़ी) के गिरनेसे घायल हो गया। हूटन स्विटजरलैण्डमें भाग गया और कुछ मास पश्चात् वह दरिद्र होकर मर गया। वीरभटोंके एक संघने जिसका सिकिजन मुखिया था राजाओंमें भय उत्पन्न कर दिया। इन लोगोंने

जिस समय लूथर वार्टवर्गमें था दशम लियोकी मृत्यु हुई और उसके स्थानपर छठा हेड्रियन पोप बना। वह किसी समय पंचम चार्लस्का शिक्षक था और धर्मशास्त्रका पूर्ण विद्वान् था। वह ईमानदार तथा सीधा सादा था, और विश्वासके परिवर्तन विना सुधारका पक्षपाती था। उसे विश्वास था कि जर्मनीकी क्रान्ति पादरियों तथा पुरोहितोंके अत्याचारके कारण परमेश्वरसे प्रेरित है। राजसभाकी न्यूरम्बर्गवाली बैठकमें उसने अपने दूत द्वारा स्पष्ट कह दिया था कि पोप ही सबसे बढ़कर पापी थे। उसने कहा कि "हम लोगोंको भलीभांति ज्ञात है कि कितने वर्ष पर्यन्त इसी रोमके धर्मक्षेत्रमें अनेक प्रकारके गर्हित कर्म हुए हैं। सारांश यह कि जो कुछ होना चाहिये सब ठीक उसीके प्रतिकूल हुआ करता था तो इसमें आश्चर्य हीकी क्या बात है. यदि बुराई प्रधानसे लेकर साधारण जन पर्यन्त अर्थात् पोपसे लेकर साधारण पादरी पर्यन्त फैल गयी। हम पादरी लोग सन्मार्गसे विचलित हो गये हैं, कितने दिनों तक तो हम लोगोंमेंसे कोई भी सन्मार्गपर नहीं रहा है"।

इन बातोंको स्वीकार करनेपर भी हेड्रियन जर्मनीकी बुराइयोंको दूर करनेके लिये तब तक प्रस्तुत नहीं था जबतक वे लोग लूथर तथा उसके नास्तिकताके उपदेशका नाश न कर दें। उस पोपने कहा कि "लूथर ईसाई मतका तुर्कोंसे भी बढ़कर शत्रु है। लूथरके उपदेशके बराबर हानिकारक तथा अप्रतिष्ठित दूसरी कोई वस्तु नहीं हो सकती। वह धर्म तथा सदाचारकी जड़ ही उड़ा देना चाहता है। वह मुहम्मदसे भी खराब है, क्योंकि वह अभिषिक्त महन्तों तथा महन्तिनियोंका विवाह करवाना चाहता है। यदि प्रत्येक धृष्ट नवागन्तुक इन बातका उपदेश दे कि शताब्दियोंसे महात्मा तथा साधुओंसे प्रचलित प्रथाको उलट देनेके लिये प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है तो किसी वस्तुकी स्थिति रह ही नहीं सकती।"

इस पोपके अपने पूर्वाधिकारियोंके पापको स्वीकार करनेसे सभा बड़ी प्रसन्न हुई। उसे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि पोप जल्दीसे सुधार करना

चाहता है लेकिन धर्मके आज्ञापत्रका प्रयोग करनेसे उसने स्पष्ट शब्दोंमें इनकार किया, क्योंकि उसे नये उपद्रवके खड़े हो जानेका भय था। जर्मनी वालोंको विश्वास हो गया था कि लूथरको हानि पहुंचानेमें रोमकी धर्मसभा उसके साथ कठोरताका व्यवहार कर रही थी। उसको बंद करना धर्मपुस्तककी स्वतंत्र शिक्षापर आक्षेप तथा प्राचीन प्रथाका समर्थन करना था। इससे पारस्परिक युद्धकी भी सम्भावना थी। इन कारणोंसे सभाने यह निर्णय किया कि जर्मनीमें एक सभा की जाय जिसमें साधारण जन तथा पादरी लोग दोनोंके प्रतिनिधि निमन्त्रित किये जांय। उनको स्वतंत्र राय देनेका अधिकार रहे, और वे लोग बिना प्रिय अप्रियका लिहाज किये शुद्ध 'सत्य' के विषयमें अपना मन्तव्य प्रकट करें। इस बीचमें ईसाई धर्मसंस्थाके मतानुसार केवल गास्पलका उपदेश होना चाहिये। पोपकी इस परिदेवनाके विषयमें, कि मठाधिपतियोंने मठ छोड़ दिया और पुरोहितोंने विवाह कर लिया, राजसभाने कहा कि अधिकारीवर्गको इससे कोई भी प्रयोजन नहीं है। सेक्सनीके इलेक्टरने कहा कि जब महन्त मठमें प्रवेश करते हैं तो हम लोगोंसे पूछा नहीं जाता अतः जब वे लोग भाग जाते हैं तो हमलोग क्यों हस्तक्षेप करें। अब लूथरकी पुस्तकें प्रकाशित नहीं की जावेंगी। किन्तु लोग भूले उपदेशकोंकी भर्त्सना करें। लूथरको चुप रहना पड़ेगा।' इससे जर्मनीके लोगोंके इशारा पूरा पता चलता है। यहांपर यह जान लेना आवश्यक है कि राजसभाके सामने लूथर बहुत बुद्धिमान आदमी नहीं था और उसने उनको कोई चिन्ता नहीं दी।

लूथरके कार्यका समर्थन नहीं किया पर उसके मार्गमें किसी प्रकारकी रुकावट भी नहीं डाली।

पोपका दूत कुछ काल तक इस बातका प्रयत्न करता रहा कि राज-सभामें समस्त सभासदोंको एकमत करके वह उनकी सहायतासे समस्त जर्मनीको पुनः पोपके आधिपत्यमें लावे पर उसे यह काम दुःसाध्य प्रतीत होने लगा। इस कारण उसने रेगेन्सवर्गमें केवल उन शासकोंकी एक सभा की जो पोपके विशेष पक्षपाती प्रतीत होते थे। उस सभामें पंचम चार्ल्सका भाई तथा आस्ट्रियाका ड्यूक फार्डिनण्ड, बवेरियाके दो ड्यूक, सलज़वर्ग तथा ट्रेण्टके आर्क-विशप, तथा बेम्बर्ग, स्पेयर स्ट्रासवर्ग आदि स्थानोंके विशप उपस्थित थे। पोपके कुछ सुधारोंकी प्रतिज्ञा करनेपर उसने इन लोगोंको लूथरकी नास्तिकताका प्रतिरोध करनेके लिये उत्तेजित किया। उनमेंसे सबसे भारी सुधार यह था कि आगेसे वही लोग धर्म्मो-पदेश देने पावेंगे जिनकी विधिवत् नियुक्ति होगी, और पाल अगस्टाइन ग्रेगरीके उपदेशोंके आधारपर ही धर्म्मशिक्षा देनी होगी। पाद-रियोंपर कड़ी दृष्टि रक्खी जायगी। द्रव्यके लिए जनतासे दुःख न दिया जायगा और पुरोहिती कृत्योंके लिए अनुचित शुल्क न लिया जायगा। क्षमा-प्रदानसे जो बुराइयां पैदा होती हैं उनको दूर करने-का प्रयत्न किया जायगा और छुट्टियों और उत्सवोंके दिन घटा दिये जायगे

रेगेन्सवर्गका यह समझौता बड़े महत्वका है क्योंकि यहांसे जर्मनी दो दलोंमें विभक्त हुआ। आस्ट्रिया, बवेरिया तथा दक्षिणके धर्मसंस्था-सम्बन्धी राज्योंने लूथरके प्रतिकूल पोपका पक्ष ग्रहण किया और वे आज तक रोमन कैथलिक धर्म्मावलम्बी हैं। उत्तरमें लोग दिनपर दिन कैथलिक धर्म-संस्थासे संबन्ध तोड़ने लगे। इसके अतिरिक्त जर्मनीकी प्राचीन धर्मसंस्थाके सुधारका आरम्भ पोपके दूतकी चतुर नीति ही थी। कितनी बुराइयां दूर हो गयी और नीति तथा संस्थामें वे लोग भी सन्तुष्ट हो गये जो यह चाहते थे कि आवश्यक सुधार हो जाय परन्तु धर्मके सिद्धांतों और

संस्थाओंमें कोई गम्भीर परिवर्तन न हो। कैथलिक धर्मावलम्बियोंके लिये जर्मन भाषामें शीघ्र ही नयी बाइबिल प्रकाशित की गयी और एक नये धार्मिक साहित्यकी उत्पत्ति हुई जिसका उद्देश्य रोमन कैथलिक विश्वासोंकी सत्यताको प्रमाणित करना तथा उस मतकी संस्थाओं तथा प्रथाओंमें नये प्राणका संचार करना था।

परिवर्तनके विरोधी लूथरके उपदेशोंसे सर्वदा भयभीत रहते थे। संवत् १५८२ (सन् १५२५ ई०) में उन्हें लूथरके उपदेशोंके अनिष्टकारी प्रभावका दूसरा तथा भयानक प्रमाण मिला। परमेश्वरके न्यायकी साक्षी देकर अपने दुःखोंका प्रतीकार तथा अपने स्वत्वोंकी रक्षा करनेके लिये कृषकोंने विद्रोह मचाया। आपसकी इस लड़ाईका भार लूथरके ऊपर तनिक भी नहीं था, पर वह अशांतिके लिये अवश्य अंशतः जिम्मेदार था। उसने दिखलाया था कि छोटे छोटे रेहननामे लिखवानेकी प्रथाके कारण कोई भी मनुष्य जिसके पास सौ रुपये भी हों प्रत्येक वर्ष एक कृषकका नाश कर सकता है। जर्मन मनसबदारोंको उसने हत्यारा बतलाया था क्योंकि वे लोग केवल कृषकों तथा दरिद्रोंको ठगना जानते थे। "पूर्वकालमें इन्हें लोग धूर्त कहते थे, अब हमलोग इन्हें धर्मात्मा या आदरणीय राजा कहते हैं। अच्छे तथा बुद्धिमान शासक तो बहुत कम देखनेमें आते हैं। साधारणतः या तो ये लोग बड़े बेवकूफ हैं या दुष्टोंके सिरताज हैं"। यद्यपि लूथर इन लोगोंको इस प्रकार बदनाम करता था तथापि अपने मतके प्रचारके लिये वह अधिक भरोसा इन्हीं

वे लोग दास नहीं समझे जा सकते थे। वे लोग समस्त उचित करोंको देनेके लिये प्रस्तुत थे पर उनका कहना यह था कि यदि हमसे अधिक श्रम लिया जाय तो उसके लिए हमें वेतन भी दिया जाना चाहिये। उन लोगोंके मतसे प्रत्येक समुदायको अपनी इच्छानुसार अपना पादरी चुननेकी स्वतंत्रता होनी चाहिये, और यदि वह लापर्वाह अथवा अयोग्य प्रतीत हो तो उसे निकाल देनेका भी अधिकार होना चाहिये।

किसी किसी नगरमें काम करनेवाले मज़दूरोंने भी कृषकोंके विद्रोहमें भाग लिया था। इनलोगोंकी मांगें कहीं अधिक कड़ी थीं। हाइलब्रान नगरमें निर्धारित मांगोंके पढ़नेसे असंतोषके कारणोंका पूरा पता चलता है। इसके अनुसार गिरजोंको सारी सम्पत्ति छीनकर सर्व साधारणके हितके लिये व्यय की जानी चाहिये थी। उसमेंसे केवल प्रजासे नियुक्त पादरियोंके पालन-पोषणके लिये आवश्यक अंश छोड़ देना चाहिये था। पादरियों तथा जागीरदारोंके सम्पूर्ण अधिकारोंको छीनना चाहिये था जिससे वे लोग दरिद्र जनताको न सता सकें।

इन लोगोंके अतिरिक्त और नेता थे जो उन लोगोंसे कहीं अधिक तीव्र थे। उनलोगोंका मत था कि ये अधर्मी पादरी तथा जागीरदार मार डाले जायं। क्रोधोन्मत्त कृषकोंने सैकड़ों प्रासाद तथा मठ ध्वंस कर डाले और कितने जागीरदार बड़ी कठोरतासे मारे गये। कृषकका पुत्र होनेके कारण लूथर कृषकोंसे विशेष सहानुभूति रखता था। इस कारण प्रथम तो उसने उन्हें शान्ति रखनेकी मन्त्रणा दी। पर जब उसने देखा कि यह सब समझाना निष्फल गया तो उसने उनकी तीव्र आलोचना की। उसने कहा कि "ये लोग घोर पापके अपराधी हैं और इनकी आत्मा तथा शरीरको अनेक बार घोर यातना मिलनी चाहिये। इन लोगोंने राज-भक्तिसे मुंहमोड़ा है, प्रमादसे प्रासादों तथा मठोंको लूटा है और अपने घोर पाप कर्मोंके लिये बाइबिलकी आड़ ढूंढ़ते हैं।" उसने सरकारको इस विद्रोहका दमन करनेके लिये उत्तेजित किया। "इन दरिद्रोंपर बिना

प्रकारकी दयाकी आवश्यकता नहीं है"

जर्मन शासकोंने लूथरकी मंत्रणाका अक्षरशः पालन किया। सर्दारों-ने कृषकोंकी लूटमारका विकट बदला लिया। संवत् १५८२ (सन् १५२५ ई०) की गरमीमें कृषकोंका प्रधान नेता मारा गया। लोगोंका अनुमान है कि करीब दश सहस्र कृषकोंकी हत्या की गयी। उनमेंसे कितनोंके साथ अतीव क्रूर व्यवहार किया गया। बहुत ही कम ऐसे शासक थे जिन्होंने किसी प्रकारका सुधार किया हो। सम्पत्तिके नाश और कृषकोंकी निराशामयी चित्तवृत्तिसे जो लूटमार, दुरवस्था उत्पन्न हुई वह वर्णनातीत है। नाशका तो कोई ठिकाना नहीं था। लोगोंको विश्वास हो गया कि नया धर्म उनके लिये नहीं बना था और व लूथरको "डाक्टर लुग्नर" अर्थात् 'झूठा आचार्य' कहने लगे। ग्रामपतियोंके पूर्व 'करों' में किसी प्रकार-की कमी नहीं हुई। इस विद्रोहके सैकड़ों वर्ष पीछेतक कृषकोंकी दशा अत्यन्त ही शोचनीय रही।

अनुयायियोंके प्रतिकूल काममें लानेका ध्यान भी छोड़ दिया। उस समय समस्त राजाओंके लिये धर्म निर्धारित करने वाला कोई नहीं रह गया।
स्पेयरकी सभाने संवत् १५८३ (सन् १५२६ ई०) मे निर्धारित किया कि जबतक सर्वसाधारणकी सभा न हो तबतक सम्राट्के अधीन प्रत्येक शासक तथा वीरभटको उचित है कि अपने राज्यमें प्रचार करनेके लिये धर्मको स्वयं निर्धारित कर ले। प्रत्येक राजा तथा वीरभटको सम्राट् तथा ईश्वरके समक्ष अपनी रहनसहन तथा धर्मकार्यके लिये जवाबदेह होना पड़ेगा। कुछ समयके लिये जर्मनीके भिन्न भिन्न राजा अपने अपने राज्यके लिये धर्म नियुक्त करनेमें स्वच्छन्द होगये।

इतनेपर भी सबको आशा थी कि अन्ततोगत्वा कोई एक ही धर्म सर्व-मान्य हो जायगा। लूथरको भी विश्वास था कि कभी न कभी सभी ईसाई नये मतका आदर करेंगे। वह इस बातपर राज़ी था कि बिशप-पद भी बना रहे और पोप भी धर्मसंस्थाका प्रधान माना जाय। इधर उसके शत्रुओंको भी विश्वास था कि पूर्वकी भांति इस बार भी नास्तिकताका लोप हो जायगा और शान्ति स्थापित हो जायगी। इनमेंसे किसी भी दलका अनुमान ठीक न निकला क्योंकि स्पेयरकी सभाकी निर्धारणा चिरस्थायी हो गयी और जर्मनी भिन्न भिन्न मतोंमें बँट गया।

प्राचीन धर्मके विरोधी कई नये सम्प्रदायोंकी उत्पत्ति हो रही थी। स्विट्ज़र्लैण्डका ज़्विंगली नामक सुधारक लोगोंका विश्वासपात्र हो रहा था और अनाबैप्टिस्ट लोगोंने कैथलिक धर्मको उठा ही देनेका प्रयत्न आरम्भ किया था, जिससे लूथरको भी भय उत्पन्न हो रहा था। बीचहीमें सम्राट्को क्षणिक शान्ति मिली। उसने संवत् १५८६ (सन् १५२६ ई०) में स्पेयरमें सभाको पुनः निमन्त्रित किया। उसमें उसने कहा कि धर्म-विद्रोहियोंके प्रतिकूल आज्ञापत्रका प्रयोग किया जाय।

इसका मतलब यह था कि नवीन दलके विश्वासी राजाओंको भी सभी रोमन कैथलिक प्रथाओंका अनुसरण करना होगा। सब ने उनकी संख्या

क्रम थी इस कारण उन्होंने अपना विरोध प्रकाशित किया जिसपर जान फेडरिक, फिलिप हिसी तथा साम्राज्यान्तर्गत चौदह स्वतन्त्र नगरोंके हस्ताक्षर थे। उस विरोधमें उन लोगोंने लिखा था कि अधिक संख्याको कोई भी अधिकार नहीं है कि स्पेयरके पूर्व निर्धारणको काट दे, क्योंकि उसको सबने एक स्वरसे स्वीकार किया था और सबने उसके पालन करनेकी प्रतिज्ञा की थी। इस कारण उन लोगोंकी यह प्रार्थना थी कि बहुसंख्यक दलके इस अत्याचारपर सम्राट् तथा कोई दूसरी भावी सभा विचार करे। जिन लोगोंने इसपर हस्ताक्षर किये थे वे लोग प्रोटेस्टेन्ट कहलाये क्योंकि उन्होंने प्रोटेस्ट (विरोध) किया था। इस प्रकार से इस नामकी उत्पत्ति हुई जिससे उन लोगोंका बोध होता है जो रोमन कैथलिक धर्मको नहीं मानते।

विभेदको अत्यन्त ही कम करके दिखलाया। उसने दिखलाया कि वास्तवमें दोनों दलवाले ईसाई मतको प्रायः एक ही दृष्टिसे देखते हैं। हां, प्रोटेस्टेण्ट मतवालोंने रोमन कैथलिक धर्म-संस्थाकी कितनी ही प्रथाओंको उठानेका समर्थन अवश्य किया। उनका कहना था कि पादरियोंके अविवाहित रहने तथा उपवासादि करनेकी प्रथा उठा दी जाय। धर्म-संस्थाके संगठनके विषयमें उस व्यवस्थापत्रमे कुछ भी नहीं लिखा था।

उस सभामें 'एक' के समान अनेक धर्म शास्त्री वर्त्तमान थे जो लूथरके घोर विरोधी थे। सम्राट्ने उन लोगोंको प्रोटेस्टेण्ट मतके खण्डन करनेकी आज्ञा दी। कैथलिक मतवालोंने भी स्वीकार किया कि मेलाखटनके कुछ मन्तव्य अवश्य युक्त हैं परन्तु उक्त व्यवस्थापत्रके जिस भागमें प्रोटेस्टेण्ट मतवालोंने व्यावहारिक सुधारकी आयोजना की थी उस भागको वे माननेको तयार न थे। चार्ल्सने कैथलिक मतवालोंके मन्तव्यको धार्मिक तथा ईसाई मतानुकूल बतलाकर प्रोटेस्टेण्ट मत वालोंको उसका अनुकरण करनेको कहा। उसने आज्ञा दी कि "आजसे तुम लोग कैथलिक मतावलम्बियोंको किसी प्रकार तंग न करो और जितने मठों तथा गिरजोंकी सम्पत्ति तुम लोगोंने छीन ली है, सब लौटा दो।" सम्राट्ने पोपसे एक वर्षके भीतर दूसरी सभा निमन्त्रित करनेके लिये अनुरोध करना स्वीकार किया। इससे सम्राट्को आशा थी कि सब मतभेद दूर हो जायगा और कैथलिकोंके इच्छानुसार धर्म संस्थामें सुधार भी हो जायगा।

औग्सबर्गकी सभाके बाद आधी शताब्दीके भीतर जर्मनीमें प्रोटेस्टेण्ट धर्मकी जो उन्नति हुई उसका वृत्तान्त लिखना अनावश्यक है। विद्रोहकी दशा तथा भिन्न भिन्न राजाओंके मतको प्रकट करनेके सम्बन्धमें आगे कहा जा चुका है। औग्सबर्गसे जानेके पश्चात् दस वर्ष तक सम्राट जर्मन युद्धमें संलग्न रहा। प्रोटेस्टेण्ट मत वालोंकी सहायता लेनेके लिए उन्होंने धर्मके विषयमें उन्हें स्वतन्त्र रहने दिया। परिणाम यह हुआ कि लूथरके आदेशको ग्रहण करने वाले राजाओंकी संख्या बढ़ती गयी। थोड़े ही दिन

पश्चात् चार्ल्स तथा प्रोटेस्टेण्ट राजाओंमें युद्ध हुआ, पर इस युद्धका कारण धार्मिक न हो कर प्रधानतया राजनीतिक ही था। सैक्सनीके ड्यूक नवयुवक मारिसके दिलमें यह बात आयी कि "यदि मैं प्रोटेस्टेण्ट लोगोंके प्रतिकूल सम्राट् की सहायता करूं तो शायद मुझे अपने प्रोटेस्टेण्ट सम्बन्धी जान फ्रेडरिकको उसके इलेक्टरेट(निर्वाचनाधिकार)* से अलग करनेका अवसर मिले।" विशेष युद्धकी आवश्यकता न पड़ी, क्योंकि चार्ल्सने अपनी स्पेनकी समस्त सेना जर्मनीमें लाकर जान फ्रेडरिक तथा उसके मित्र हिसेके फिलिप दोनोंको बन्दी कर लिया और कई वर्ष पर्यन्त कारागारमें रखा। ये दोनों प्रोटेस्टेण्ट मतके प्रधान समर्थक थे।

इससे प्रोटेस्टेण्ट मतकी वृद्धिमें रुकावट न पड़ी। मारिस जिसे फ्रेडरिकका इलेक्टरेट मिला था शीघ्र ही प्रोटेस्टेण्टोंसे जा मिला। फ्रान्सके राजाने अपने शत्रु चार्ल्सके प्रतिकूल उन लोगोंको सहायता देनेकी प्रतिज्ञा की। अब चार्ल्सको लाचार हो प्रोटेस्टेण्ट मत वालोंसे सन्धि करनी पड़ी। तीन वर्ष पश्चात् संवत् १६१२ (सन् १५५५) में आग्सबर्गकी धार्मिक सन्धिका समर्थन किया गया। इसकी शर्तें स्मरण रखने योग्य हैं। इस सन्धिके अनुसार प्रत्येक राजा, नगर तथा नाइट (सैनिक वीर) कैथलिक मत तथा आग्सबर्गके समझौतेमें से किसी भी धर्मको ग्रहण करनेके विषयमें स्वतंत्र था। यदि कोई धार्मिक अधिपति—प्रधान धर्माध्यक्ष, धर्माध्यक्ष, तथा महन्त—प्रोटेस्टेण्ट मत ग्रहण करना चाहे तो उसे अपनी सम्पत्ति धर्म-सम्प्रदायको दे देनी पड़ेगी। जर्मनीके प्रत्येक मनुष्यको इन दोनों धर्मोंमेंसे किसी एकको ग्रहण करना होगा, नहीं तो देश छोड़ कर जाना पड़ेगा।

---

* जर्मन रोमन साम्राज्यके दिनोंमें जिन सात या अधिक राजाओंको सम्राट्के चुननेका अधिकार प्राप्त था वे 'इलेक्टर' कहलाते थे। 'इलेक्टरेट' से यहाँ उनके पद या राज्यका अभिप्राय है। पृष्ठ २८१ देखिये।

इस धार्मिक सन्धिसे भी राजाओंके अतिरिक्त और किसीको भी अपने अन्त करणका आदेश माननेकी स्वतंत्रता न मिली। राजाओंकी शक्ति बढ़ गयी, क्योंकि उन्हे धार्मिक तथा राज्य सम्बन्धी, दोनो ही विषयों-का अधिकार दे दिया गया। उस समयमें ऐसा प्रबन्ध अर्थात् राजाको अपने राज्यके लिए धर्म-निर्धारणका अधिकार देना आवश्यक था। शताब्दियोसे धर्म तथा शासन-प्रबन्धमें घनिष्ट सम्बंध चला आ रहा था। उस समय तक यह कोई भी नही सोचता था कि प्रत्येक मनुष्य यदि वह राज्यके नियमोका उल्लंघन नही करता हो तो अपने इच्छानुसार धार्मिक व्यवस्थाका अनुकरण करनेके लिए स्वतंत्र है।

औगसवर्गकी संधिमे दो प्रधान त्रुटिया रह गयी थीं जो पुनः शांति-भंगकी कारण हुई। प्रथम, तो उसमे प्रोटेस्टेएट मत वालोका एक ही दल प्रवेश करने पाया था। फ्रेञ्च सुधारक कैल्विन तथा स्विस सुधारक ज्विंगली-के अनुयायी जिनसे कैथलिक तथा लूथरके भी अनुयायी बराबर घृणा करते थे, इस सभामें नहीं प्रविष्ट कराये गये। जर्मनीके प्रत्येक निवासीको एक न एक मत ग्रहण ही करना पड़ता था, तभी वह देशमें रह सकता था। दूसरी बात यह थी कि यद्यपि कैथलिक मत छोड़कर प्रोटेस्टेएट मत ग्रहण करने वाले धर्माधिपोके निमित्त यह शर्त रखी गयी थी कि उन्हें अपनी सम्पत्ति धर्म-संस्थाको दे देनी होगी, तो भी इसका अनुपालन कराने वाला कोई भी नही था, अतः यह कार्यमें परिणत न की जा सकी।

अध्याय २६

आंग्ल देश तथा स्विट्जलैंण्डमें प्रोटेस्टेण्ट विद्रोह।

लुथरकी मृत्युके एक शताब्दी पश्चात् तक यूरोपके प्रायः सारे देशोंके इतिहासमें प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथलिक मत वालोंके कलहकी प्रधानता है। केवल इटली तथा स्पेन इससे बचे थे क्योंकि इन देशोंमें प्रोटेस्टेण्ट मतने जड़ नहीं पकड़ी थी। स्विट्जर्लैण्ड, आंग्लदेश, फ्रान्स तथा हॉलैण्डमें इस धार्मिक विद्रोहसे इतना अधिक परिवर्तन हुआ कि इन देशोंकी भावी गति समझनेके लिए इनका कुछ वृत्तान्त जान लेना आवश्यक है।

किया। वह कहीं बढ़ कर वीर था। पर उन लोगोंने संवत् १५३३ मे ग्रैन्सन तथा मर्टनके युद्धस्थलमे उसकी सेनाको भी विध्वस्त कर दिया।

धीरे धीरे आसपासके बहुतसे प्रांत उस संघमें सम्मिलित हुए। इटलीके आल्पसवर्तीय प्रदेश भी उसके आधिपत्यमे आ गये। कुछ दिनमें संघके सदस्यों तथा साम्राज्यके बीचका सम्बन्ध भी टूट गया। अब वे लोग साम्राज्यके 'सम्बन्धी' कहे जाने लगे। अन्तको संवत् १५५६ (सन् १४९९ ई०) में स्विटजलैंण्ड साम्राज्यसे पृथक् होकर एक स्वतन्त्र देश बन गया। उस संघके आदिम भागोंमें जर्मनभाषा बोली जाती थी पर बादके सम्मिलित हुए अधिकतर प्रदेशोंके लोग इटालियन तथा फ्रेन्च भाषा ही बोलते थे। इस कारण वे लोग दृढ़ तथा सुसज्जित जातिकी नींव नहीं डाल सके। कई शताब्दियों पर्यन्त वह संघ निर्बल तथा कुसंगठित ही रहा।

स्विट्जलैंण्डमें धर्मके विद्रोहियोंका नेता ज्विंगली था। वह लूथरसे एक वर्ष कनिष्ठ था और उसीकी भांति एक किसानका लड़का था। उसके पिताकी आर्थिक अवस्था अच्छी थी और उसने अपने पुत्रको बेसल तथा विएनामें अच्छीसे अच्छी शिक्षा दी। धर्मसंस्थाके प्रति उसके असंतोषका कारण लूथरकी भांति कठिन तपश्चर्या नहीं था बल्कि प्राचीन यूनानी ग्रंथों तथा लेटिन भाषामें न्यूटेस्टामेण्टका अध्ययन था। ज्विंगली पुरोहितका पद पाकर ज्यूरिच झीलके निकटवर्ती इन्सीडनके विख्यात मठमें रहने लगा। यहांपर अधिकतर यात्री महात्मा मेइनरेडकी विभूतिमयी मूर्तिको देखने आते थे। उसने लिखा है कि "संवत् १५७३ (सन् १५१६ ई०) में मैंने यहांपर ईसा मसीहके 'गास्पल' (सुसमाचार) का उपदेश देना आरम्भ किया। उस समय तक यहांपर किसीने लूथरका नाम तक नहीं सुना था।"

तीन वर्ष पश्चात् उसे ज्यूरिचके बड़े गिरजेमें उपदेशकका उच्चपद मिला। यहांसे उसके कार्यका आरम्भ होता है। एक डोमिनिकन जो 'क्षमाप्रदान' का उपदेश दिया करता था ज्विंगलीके प्रयत्नसे निकाला गया। अब उसने धर्म-संस्थाकी बुराइयोंकी कड़ी आलोचना आरम्भ

की। सैनिकोंकी दुर्वृत्तिका भी घोर प्रतिवाद किया। उसके मतसे ये बातें उसके देशकी प्रतिष्ठाकी घातक थीं। स्विस सेनाकी सहायता पोपके लिए अत्यन्त आवश्यक थी। इस कारण उसने धर्म-संस्थामें उनलोगोंको प्रधान प्रधान स्थान दे रक्खा था जो उसके पक्षपाती थे। इन कारणोंसे ज्विंगलीको धार्मिक सुधारके साथ साथ राजनीतिक सुधार भी हाथमें लेना पड़ा क्योंकि वह चाहता था कि भिन्न भिन्न नगरोंके लोग परस्पर विद्वेषको छोड़ कर प्रेमसे रहें और ऐसे युद्धोंमें अपने नवयुवकोंकी हत्या न करावें जिनसे उनको किसी प्रकारके लाभकी संभावना न थी। संवत् १५७८ (सन् १५२१ ई०) में पोपने पुनः स्विटजर्लैण्डसे सेनाकी सहायता चाही। उस समय ज्विंगलीने पोप तथा उसके दूतोंकी घोर निन्दा की। उसने कहा कि "इनकी टोपियां तथा लबादोंका लाल रंग कैसा उचित है। यदि हम इन कपड़ोंको हिलायें तो इनमेंसे अशर्फियां बरसती हैं, यदि हम उन्हें निचोड़ें तो उनमेंसे तुम्हारे भाइयों, बेटों तथा अन्य सम्बन्धियोंके रक्तकी धार बह निकलती है।"

इस वार्ताके सम्बन्धमें लोगोंमें वाद-विवाद होने लगा। अन्य प्रदेशोंके निवासी तो नये उपदेशकको दबाना चाहते थे पर ज्यूरिचकी सभाने उसके मतका समर्थन किया। ज्विंगलीने उपवास तथा पादरियोंके अविवाहित रहनेकी प्रथापर आक्षेप करना प्रारम्भ किया। संवत् १५८० (सन् १५२३ ई०) में उसने करीब सरसठ प्रतिबन्धोंमें अपना पूरा मत प्रकाशित किया। उनमें उसने दिखलाया कि केवल ईसामसीह ही मुख्य पुरोहित है। उसने देवदूतों, स्वर्गके सन्तोंकी प्रसिद्ध धन्यवाद और धर्मसंस्थाकी उन प्रथाओंको उठाना चाहा जिनको लूथर जर्मनीमें उठा चुका था। ज्विंगलीका खण्डन करनेके लिए कोई भी खड़ा नहीं हुआ, इस कारण नगरकी सभाने उसके मन्तव्योंको स्वीकार कर रोमन कैथलिक धर्मसंस्थासे सम्बन्ध तोड़ दिया। इसी समयसे ज्यूरिच रोमन कैथलिक धर्मसंस्थासे पृथक् हो गयी।

और कई नगरोंने भी ज्यूरिचका अनुकरण किया। लेकिन लूसर्न झीलके तटस्थ निवासियोंने प्राचीन धर्मकी रक्षाके लिए युद्ध करना निश्चय किया। उन्हें भय था कि कहीं हमारा प्रभाव देशसे उठ न जाय क्योंकि इतने छोटे होनेपर भी उन्होंने अधिक रोब जमा रखा था। प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथलिक मतवालोंका अंशतः धार्मिक तथा अंशतः राजनीतिक युद्ध संवत् १५८८ (सन् १५३१ ई०) में कपेलमें हुआ। इस युद्धमें ज्विंगली मारा गया पर उन नगरोंमें धार्मिक ऐकमत्य कभी नहीं हुआ। वर्तमान समयमें भी स्विट्जलैंण्डका कुछ भाग कैथलिक और कुछ प्रोटेस्टेण्ट मतानुयायी है।

आंग्ल देश तथा अमेरिकाके लिए कैल्विनकी शिक्षा ज्विंगलीकी शिक्षासे कहीं विशेष महत्त्वकी थी। स्विससंघकी सीमापर स्थित जिनी नगरमें इसका कार्य आरम्भ हुआ था। प्रेसबीटीरियन सम्प्रदायका जन्मदाता तथा उसके मतका संस्थापक कैल्विन ही था। उसका जन्म संवत् १५६६ (सन् १५०६) में फ्रांस देशमें हुआ था। उस समय फ्रांस देशमें लूथरके मतका प्रचार हो रहा था, कैल्विनपर भी इसी मतका प्रभाव पड़ा। प्रथम फ्रैन्सिसने प्रोटेस्टेण्ट मतवालोंको सताना आरम्भ किया। इस कारण वह देश छोड़ कर भाग गया और कुछ समयपर्यन्त बार्सलमें रहा।

यहांपर उसने इंस्टिट्यूट आफ क्रिश्चियानिटी नामकी अपनी प्रथम पुस्तक प्रकाशित की। प्रोटेस्टेण्ट धर्म-पुस्तकोंमें इस किताबका बहुत महत्त्व है क्योंकि जितना शास्त्रार्थ इसके विषयमें हुआ है उतना और किसीके विषयमें नहीं हुआ है। प्रोटेस्टेण्ट मतानुसार यह ईसाईधर्मकी प्रथम शास्त्रीय पुस्तक थी। यह भी पीटर लोम्बर्डके 'सेण्टेन्सेज' की भांति अध्ययन तथा शास्त्रार्थके लिए अच्छा संग्रह थी। इस पुस्तकमें धर्मसंस्था तथा पोपकी अप्रामाणिकता एवं बाइबिलकी पूर्ण निर्दोषता और प्रामाणिकता दिखलायी गयी है। कैल्विनका मस्तिष्क प्रतिभाशाली था और उसकी लेखनशैली अतीव प्रौढ़ थी। आजतक किसी भी तार्किक पुस्तकमें

फ्रेञ्च भाषाका उतना अच्छा उपयोग नहीं हुआ था जितना कि कैल्विनकी पुस्तकके फ्रेञ्च अनुवादमें हुआ। संवत् १५९७ (सन् १५४० ई०) में कैल्विन जिनोवा नगरमें निमंत्रित किया गया और उस नगरके सुधारका भार उसे सौंपा गया। उस समयतक वह नगर सेवायके ड्यूकके अधिकारसे स्वतन्त्र हो गया था। उसने एक नूतन शासनपद्धति बनायी जिसमें [illegible] देशोंकी भांति धर्मसंस्था और मुल्की शासनमें घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित किया गया। फ्रांस तथा स्काटलैण्डमें लूथरके नहीं, प्रत्युत कैल्विनके ही प्रोटेस्टेण्ट मतका प्रचार हुआ।

उस समयका सबसे प्रसिद्ध लेखक "टामस मूर" था। उसकी "यूटोपिया" नामकी पुस्तक संवत् १५७२ (सन् १५१६ ई०) मे प्रकाशित हुई थी। यूटोपियाका अर्थ है 'कहीं नहीं'। आजकल यह शब्द लोकोन्नातके अव्यवहार्य्य उपायोंका पर्यायवाची हो गया है। इस पुस्तकमे उसने किसी अज्ञात देशकी सुसम्पन्न दशाका वर्णन किया है। उसने दिखलाया है कि तत्कालीन आंग्ल देशमे जितनी बुराइयां देख पड़ती थी उन सबको यूटोपियाकी उत्तम शासन-व्यवस्थाने दूर करदिया था। यूटोपियावासी केवल आक्रान्तियोंसे बचनेके लिए ही अथवा दुर्बलोंकी रक्षा करनेके लिये ही युद्ध करते थे। वे अष्टम हेनरीके समान किसीके राज्यपर बलात् कब्जा करनेके लिए युद्ध नहीं करते थे। यूटोपियामे सब प्रकारके धार्म्मिक विचार समदृष्टिसे देखे जाते थे।

जब इराजमस संवत् १५५७ (सन् १५०० ई०) में आंग्ल देशमे आया तो वहाँके समाजसे उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वहांपर अधिकतर लोग उसे ऐसे मिले जो उसके विचारोंसे सहमत थे। मूरके साथ रह कर उसने "प्रेज़ आफ फाली" नामक पुस्तक समाप्त की थी। आंग्ल देशमें उसको अध्ययनमें इतनी सहायता मिली तथा इतने समविचार साथी मिले कि उसने उच्च शिक्षाके लिये इटली जाना व्यर्थ समझा। आंग्ल देशमें अवश्यही ऐसे लोग रहे होंगे जो धर्माध्यक्षोंकी बुराइयोंसे परिचित थे और ऐसी किसी प्रथाको स्वीकार करनेके लिये उद्यत थे जिससे धर्म्म सम्बन्धी कुरीतियां दूर हो जायं।

अष्टम हेनरीके मन्त्री "बुलसी" नामक धर्म्माध्यक्षने राजाको महाद्वीपके युद्धोंमें भाग लेनेसे अनेक बार रोका था। बुल्सीका कथन था कि आंग्ल देशकी विशेष उन्नति युद्धसे नहीं बल्कि शान्तिसे होगी। शान्तिका मुख्य उपाय उसे यह देख पड़ता था कि सभी राष्ट्रोंके शक्ति बराबर बनी रहे क्योंकि इससे कोई भी शासक अपनी शक्तिको अधिक बढ़ाकर औरोंके लिये भयावह नहीं बन सकता। इसी लिये जब मैक्सिमिलन कार्म्मिर

विजय पायी तो उसने चार्ल्सका पक्ष ग्रहण किया और पीछेसे जब चार्ल्स-ने संवत् १५८२ (सन् १५२५ ई०) में पेवियाके युद्धस्थलमें फ्रान्सिसको परास्त किया तो उसने फ्रान्सिसका पक्ष ग्रहण किया। पश्चात् यूरोप वालोंने अपनी अपनी नीति स्थिर करनेमें इस शक्ति-तुलाको बड़ी प्रधान-ता दी, परन्तु वुल्सी इसका प्रयोग अधिक काल पर्यन्त नहीं कर सके। अष्टम हेनरीके पत्नी-त्यागकी प्रसिद्ध घटना तथा आंग्ल देशमें प्रोटेस्टेन्ट मतके प्रचार और वुल्सीके पतनमें घनिष्ट सम्बन्ध है।

हेनरीका विवाह पञ्चम चार्ल्सकी बुआ अरागानकी कैथराइनसे हुआ था। उससे मेरी नामकी एकही पुत्री जीवित बची थी। हेनरी चाहता था कि मुझे एक पुत्र हो जाय जो मेरे बाद सिंहासनपर बैठे। उसका जी भी कैथरा-इनसे भर गया था। उसने उसे पृथक् करनेका एक बहाना ढूंढ निकाला। पहिले कैथराइनका विवाह हेनरीके बड़े भाईसे हुआ था। इसके मरनेपर उसने हेनरीसे विवाह किया। उस समय धार्मिक विचारोंके अनुसार मृत भाईकी पत्नीसे विवाह करना नियम-विरुद्ध था। हेनरीने प्रकट किया कि कैथराइनको अपनी पत्नी बनानेमें मुझे पाप लगेगा। उसने कहना शुरू किया कि यह विवाह न्यायविरुद्ध था। इसलिये उसने उसे तिलाक देना चाहा। उसी समय उसे एनबोलीन नामकी एक सुन्दर युवतीसे प्रेम हो गया। इस कारण कैथराइनके त्यागकी उसे और भी अधिक चिन्ता पड़ गयी।

पर अभाग्यवश नियम-विरुद्ध होनेपर भी पहिलेके पोपने कैथराइनके विवाहको जायज ठहराया था। राजाने पोप सप्तम क्लेमेन्टसे इस सम्बन्धको तोड़ देनेके लिये अनुरोध किया परन्तु पोप राजी न हुए क्योंकि एक तो कैथराइनके भानजे चार्ल्सको नाराज करना पड़ता, दूसरे अपने पूर्वाधिकारी पोपकी आज्ञाको रद्द करना पड़ता। हेनरी चाहता था कि वुल्सी पोपको समझा बुझाकर राजी करले पर वुल्सी ऐसा न कर सका। इससे अप्रसन्न हो कर हेनरीने उसको निकाल दिया और उसकी सम्पूर्ण सम्पत्ति हरण

कर ली। राजकीय भोगविलाससे वह घोर दरिद्रताके गर्तमें जा गिरा। उसके किसी अविवेकशून्य कार्यने उसके शत्रुओंको मौका दिया। उसपर राजद्रोहका दोष लगाया गया और वह बन्दी कर लिया गया। पर दैवात् वह शिरच्छेदनार्थ लन्दन पहुंचनेके पूर्व ही मर गया।

इसके पश्चात् हेनरीने आंग्ल देशके समस्त पादरियोंपर यह मिथ्या दोषारोपण किया कि बतौर पोपके दूतके वुल्सीका आधिपत्य मानकर उन लोगोंने उस प्राचीन प्रथाको उल्लंघन किया जिसके अनुसार पोपका कोई भी प्रतिनिधि राजाकी आज्ञा बिना आंग्ल देशमें नहीं आसकता था। पर वुल्सीके प्रतिनिधित्वका अनुमोदन स्वयं हेनरीने ही किया था। पादरी लोग कैंटरबरीमें एकत्र हुए और बहुतसा धन देकर क्षमाके प्रार्थी हुए। परन्तु हेनरीने कहा कि "यदि तुम लोग हमें आंग्ल देशकी धर्मसंस्थाका प्रधान मान लो तो क्षमा मिल सकती है।" उन लोगोंने इसे स्वीकार किया * और साथ ही साथ यह भी स्वीकार किया कि "राजाकी आज्ञा बिना न तो हम लोग कोई सभा करेंगे, न कोई नया नियम बनावेंगे।" पादरियोंके इस प्रकार दब जानेसे हेनरीको निश्चय हो गया कि पत्नी-परित्यागके मामलेमें अब ये लोग किसी प्रकारकी गड़बड़ नहीं मचा सकेंगे।

अब उसने पार्लमेण्टको उभाड़ा कि वह पोपको नये बिशपोंकी नियुक्तिपर जो द्रव्य मिलता था उसको बन्द कर देनेकी धमकी दे। राजाको आशा थी कि इस प्रकार सप्तम क्लेमेण्ट वशीभूत होगा। पर उसे सफलता न हुई। अधीरताके कारण परित्यागकी अनुमतिका इन्तजार न कर उसने गुप्तरूपसे एनबोलीनसे विवाह कर लिया। तत्पश्चात् पार्लमेण्टने यह नियम बनाया कि प्रत्येक अभियोगका अन्तिम विचार राष्ट्रमें ही

*वस्तुतः पादरियोंने पोपकी धर्माध्यक्षताका खण्डन नहीं किया। उन्होंने केवल यह स्वीकार किया कि जहां तक ईसाकी आज्ञाओंके अनुकूल होगा राजा धर्मका अध्यक्ष होगा।

किया जाय ; यदि राज्यके बाहर विचार हो तो वह असंगत समझा जाय । इस भांति पोपके यहां पुनर्विचारकी कैथराइनकी प्रार्थना सर्वथा असंगत समझी गयी । इसके पीछे ही दिन बाद हेनरीने पादरियोंकी एक सभा की । उस सभाने कैथराइनके विवाहको नियम-विरुद्ध ठहराया । नये नियमके अनुसार अब कैथराइनके लिये अपने उद्धारका कोई भी उपाय नहीं था । पार्लमेण्टने भी कैथराइनके साथ हेनरीका विवाह असंगत तथा एनके साथ संगत ठहराया । इसका परिणाम यह हुआ कि हेनरीकी मृत्युके पश्चात् आंग्ल देशका राज्य कैथराइनकी पुत्री मेरीको न मिलकर एनकी पुत्री एलिजबेथको मिला ।

पार्लमेण्टको अपना प्रधानत्व स्वीकार करनेके लिये बाध्य किया। पूर्व समयमें जब कभी रोमसे कलह हुआ था उस समय भी आंग्लदेशका कोई राजा इतना कार्य नहीं कर सका था। आगे विदित होगा कि वह इन सब मठोंको दुश्चरित्र तथा अयोग्य कहकर उनकी संपत्ति भी हरनेको प्रस्तुत था। इतना होते हुए भी हेनरीने लूथर, ज्विगली आदि किसी भी प्रोटेस्टेंट नेताके मतको स्वीकार नहीं किया। सामान्य जनताकी तरह उसे भी इन मतोंमें विश्वास नहीं था। वह प्राचीन मतको ही लोगोंको समझा कर उसके दोषोंको दूर करना चाहता था। राजाकी ओरसे घोषणा की गयी और उसमें बपतिस्मा, तप तथा मास या पवित्र भोजकी धार्मिक प्रथाओंका वर्णन किया गया था। हेनरीने बाइबिलका आंग्लभाषामें नया अनुवाद करवाया। यह संवत् १५९६ (सन् १५३९ ई०) में प्रकाशित किया गया और इसकी एक एक प्रति मुहल्लेके प्रत्येक गिरजाघरमें रक्खा गयी जिससे ग्रामके सभी लोग उसे पढ़ सकें।

मठोंकी सम्पत्ति तथा समाधियोंके रत्नोंको जब्त करनेके बाद हेनरी संसारको यह दिखलाना चाहता था कि मैं कट्टर धर्मावलंबी हूं। किनीने ज्विंगलीके इस मतका अनुमोदन किया कि उक्त धार्मिक संस्कारके समय प्रभु ईसामसीहकी आत्मा अथवा रक्त उपस्थित नहीं रहता। उसपर अभियोग चलाया गया और स्वयं हेनरी उसका मुखिया बना। हेनरीने उसके प्रतिरोधमें बाइबिलका उदाहरण दिया और उसपर नास्तिकताका दोष लगाकर उसे जलवा दिया।

संवत् १५९६ (सन् १५३९ ई०) में पार्लमेण्टने "छ धाराओंका कानून" बनाया। कहा गया था कि पवित्र भोजकी रोटी तथा मद्यमें प्रभु ईसामसीहकी आत्मा तथा रक्त रहता है। जो मनुष्य इसका प्रतिरोध करेगा वह जिन्दा जला दिया जायगा। धर्मकी पांच रस्मोंके सम्बन्धमें यह कहा गया था कि जो लोग पहले पहल इनका उल्लंघन करेंगे उन्हें कारावासका दण्ड दिया जायगा तथा उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जायगी

और जो उसे दोहरावेंगे वे प्राण-दण्डसे दण्डित किये जायंगे। अनुसरण न
दो विशप (धर्माध्यक्ष) हेनरीसे भी आगे बढ़ गये थे। उसका परिणाम यह
हुआ कि वे पदच्युत कर दिये गये। कुछ और अपराधियोंको भी इस नये
नियमके अनुसार प्राण-दण्ड दिया गया था।

हेनरी निर्दयी तथा दुराचारी था। उसने निर्दयताके साथ अपने पुराने
सच्चे मित्र तथा मंत्री टामस मूरका शिरश्छेदन करवा डाला क्योंकि
उसने कैथराइनके विवाहको असंगत बतलानेसे इंकार किया। उसने
अनेकों महन्तोंकी हत्या करवा डाली, क्योंकि उन लोगोंने भी मूरकी
भांति उसके प्रथम विवाहको नियमविरुद्ध तथा उसके आधिपत्यको उचित
बतलानेसे इंकार किया। कितनोंको उसने गन्दे बंदीगृहोंमें डालकर भूखों
मार डाला। अनेक अंग्रेजोंके विचार उस यतीके विचारोंसे मिलते थे
जिसने कहा था कि "मैं किसी विद्रोह तथा बुराईके कारण नहीं,
पर परमेश्वरके भयसे राजाकी अवज्ञा करता हूं। मुझे भय है कि ईश्वर
कहीं इससे क्रोधित न हो जाय, धर्मसंस्थाकी नियोजना राजा तथा पार्ल-
मेण्टकी नियोजनासे भिन्न है।"

हेनरीको धनकी भी आवश्यकता थी। कितने ही मठ प्रचुर धन सम्पन्न
थे और मठवाले अपने विरुद्ध लाये गये अभियोगोंसे अपनी रक्षा कर-
नेमें असमर्थ थे। राजाने मठोंकी धार्मिक अवस्थाकी जांच करनेके लिये
निरीक्षक भेजे। अनेक प्रकारकी अपवादजनित बातें अनायास ही उप-
स्थित की गयीं, उनमेंसे बहुतसी सच भी थीं। इसमें सन्देह नहीं कि बहुतसे
लोग आलसी तथा दुष्ट होते थे। इतना होनेपर भी वे [illegible]
विदेशियोंके लिये सत्कारशील तथा दरिद्रोंके उपकारी होते थे। [illegible]
मठोंकी सम्पत्ति जब्त करनेके बाद ही पता हो गया, [illegible]
[illegible] भी यह सन्देह हुआ कि [illegible]
[illegible]। जिन मठवालोंने इसमें भाग लिया था [illegible]
[illegible]

किया कि हमलोग दुराचारी है और उन्होंने अपने अपने मठ राजाको अर्पित कर दिये। राजाके प्रतिनिधियोंने उनपर अधिकार जमा कर उनकी समस्त सामग्री बेच डाली। उक्त धर्म-संस्थाओंकी अद्भुत और चित्ताकर्षक अवशिष्ट वस्तुएँ आग्ल देशके दर्शकोंके लिये अब भी विशेष दर्शनीय है। मठकी भूमिको राजाने ले लिया। या तो वह सरकारके लाभके लिये बेच दी गयी अथवा उन कुलीन वंशजोंको दे दी गयी जिनकी सहायताकी राजाको आवश्यकता थी।

इन मठोके नाशके साथ ही साथ धर्ममन्दिरोंकी उन मूर्तियोंपर भी हाथ लगाया गया जो रत्नजटित थी। कैंटरबरीके महात्मा टामसकी मूर्ति तोड़ डाली गयी और उस महात्माकी हड्डियां जला दी गयी। वेल्समें एक काठकी मूर्तिकी पूजा होती थी। उसका उपयोग एक साधुके जलानेमें किया गया, क्योंकि उसने कहा था कि धार्मिक विषयमें राजाकी आज्ञा न मानकर पोपकी आज्ञा ही मानी जानी चाहिये। जर्मनी, स्विट्जर्लैण्ड तथा नेदरलैण्डके प्रोटेस्टेटोंने मूर्तियोंपर जो आक्रमण किये थे उनसे ये आक्रमण बहुत कुछ मिलते जुलते थे। राजा तथा उसके दलकी इच्छा केवल धन इकट्ठा करनेकी थी, पर लोगोंको दिखलानेके लिये कहा जाता था कि इनमें भग्नावशिष्ट वस्तुओं तथा मूर्तिपूजाका अन्धविश्वास प्रविष्ट हो गया है।

एनबोलीनके साथ विवाह करनेसे ही हेनरीको शान्ति नहीं मिली। तीन वर्ष पश्चात् उसे उससे भी घृणा उत्पन्न हो गयी। उसने घृणित दोष लगाकर उसे मरवा डाला। दूसरे ही दिन उसने सेमूरसे विवाह किया। उसीका पुत्र षष्ट एडवर्ड उसका उत्तराधिकारी हुआ। पुत्रोत्पत्तिके तीन दिन पश्चात उनका देहान्त हुआ। हेनरीने और तीन विवाह किये पर इतिहासमें इनसे कोई प्रयोजन नहीं है, क्योंकि उन तीनोंमेंसे किसीके भी संतान नहीं थी जो राज्यकी अधिकारिणी होती। हेनरी चाहता था कि मैं अपनी तीनों संतानोंका हक प्रतिनिधि सभा (पार्लमेंट) द्वारा निश्चित करा दूं। उसकी

सन्देह नहीं कि कमसे कम नामके लिये तो पार्लमेण्ट ही राष्ट्रकी प्रतिनिधि थी । मेरीके राज्यके अन्तिम चार वर्षोंमें बहुत भयानक धार्मिक अनाचार हुए । रोमन धर्मसंस्थाके उपदेशकी अवज्ञा करनेके अपराधमें दो सौ सतहत्तर मनुष्य मारे गये । उनमेंसे अधिकतर साधारण कारीगर तथा किसान थे । इनमें दो बड़े विख्यात थे जिनका नाम लेटिमर तथा रिड्ले था । ये दोनों आक्सफोर्डमें जलाये गये थे । जलते जलते लेटिमरने चिल्लाकर अपने धार्मिक साथीसे पुकार कर कहा "प्रसन्नचित्त होकर अपना कार्य कीजिये, आज हमलोग आंग्लदेशमें उस अग्निको प्रज्वलित करते हैं जो कभी भी न बुझेगी" ।

मेरीको आशा थी कि इतने लोगोंकी हत्या करनेसे प्रोटेस्टेण्ट लोग भयभीत हो जायगे और नूतन मतका प्रचार रुक जायगा । पर उसकी आशा निष्फल हुई और लेटिमरकी भविष्यवाणी सार्थक हुई । कैथलिक धर्मकी उन्नति नहीं हुई बल्कि जिन लोगोंको प्रोटेस्टेण्ट मतके सम्बन्धमें अभीतक कुछ सन्देह बना हुआ था उनके हृदयमें भी इन लोगोंकी दशा देखकर नूतन धर्मके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गयी ।

अध्याय २७

कैथलिक मतका सुधार—द्वितीय फिलिप ।

पूर्वमें लिखा जा चुका है कि लूथरके पहले भी धर्मसंस्थाकी स्थिति तथा उपदेशमें किसी भांतिका परिवर्त्तन किये विना ही उद्धारका प्रयत्न किया गया था। पोपसे प्रोटेस्टेएट मतवालोंके सम्बन्ध विच्छेदके पहले ही इस प्रकारके अन्यमनस्क सुधारसे आशापूर्ण उन्नति की जा चुकी थी। प्रोटेस्टेएट मतवालोंके विद्रोहसे उस प्राचीन धर्मसंस्थाका सुधार और भी द्रुत गतिसे हुआ जिसके अनुयायी पाश्चिमीय यूरोपके अधिकतर लोग अब तक बने हुए थे। रोमन कैथलिक धर्मसंस्थावाले भी सचेत हो गये क्योंकि उन्हें प्रतीत हो गया कि अब हमपर सर्वसाधारणका विश्वास नहीं रह गया। उन लोगोंने प्रोटेस्टेएट मतवालोंके आक्रमणसे अपने सिद्धान्तों तथा रीतियोंकी रक्षाका प्रयत्न किया, क्योंकि सम्पूर्ण देश उन्हींका सहगामी हो रहा था। उन्होंने देख लिया कि हमलोग धर्म-विरोधियोंसे अपने पद और अपनी शक्तिकी रक्षा करना चाहते हैं तो हमें उचित है कि सर्वसाधारणको अपनी तथा धर्मसंस्थाकी ओर खींचें, और यह तभी सम्भव है जब हम लोग प्राचीन बुराइयोंको छोड़ पवित्र जीवन वितानेका प्रयत्न कर उन लोगों-के विश्वासभाजन बनें जिनके धार्मिक उद्धारका कार्य हमारे सिपुर्द किया गया है।

तदनुसार ट्रेएटमें एक सार्वजनिक सभा की गयी। इस सभाका उद्देश्य चिरागत बुराइयोंको दूर करना तथा जिन प्रश्नोंके सम्बन्धमें धार्मिक लोगोंमें मतभेद था उनका निर्णय करना था। नये नये धार्मिक दलोंकी उन्नति

हुई जिनका काम पुरोहितोंको सुधारना तथा लोगोंको धर्मका तत्व समझाना था। जिन नगरोंमें उस समय पर्यन्त रोमन कैथलिक धर्मका प्रचार था उन नगरोंमें प्रोटेस्टेण्ट मतका प्रचार तथा उसके सिद्धान्तोंको प्रकट करने वाली किताबों और निबन्धोंका प्रकाशित होना रोकनेका कड़ा प्रयत्न किया गया। इसके अतिरिक्त पोपके पदसे लेकर साधारण पद पर्यन्त अधिक योग्य मनुष्य नियत किये गये। जैसे कार्डिनल (धर्माध्यक्ष) पदपर न कि ह्यूमनिष्ट तथा दरबारी लोग ही न नियत किये जाकर इटलीके बड़े बड़े धार्मिक नेता भी नियत किये जाते थे। कितनी ही प्रथाएं जो लोगोंको हानिकर न थीं उठा दी गयीं। इन काररवाइयोंसे प्राचीन धर्मसंस्थामें वे सुधार हो गये जिनके लिये कान्स्टेन्सकी सभाने व्यर्थ प्रयत्न किया था। इन दोनों मतावलम्बी दलोंके नेदरलैण्ड तथा फ्रांसके युद्धोंका वर्णन करनेके पूर्व यहांपर ट्रेण्टकी सभाका तथा जेसुइट नामक नये सम्प्रदायके धार्मिक कुछ वृत्तान्त देना चाहते हैं।

जर्मनीके प्रोटेस्टेण्ट उस समय सम्राट्के साथ होनेवाले आगामी युद्धकी तैयारीमें संलग्न थे और इस सभासे उन्हें विशेष लाभकी आशा भी नहीं थी, इस कारण वे लोग उस सभामें उपस्थित ही नहीं हुए। अतः सभामें पोपके प्रतिनिधि तथा कैथलिक पादरियोंकी प्रधानता रही। सभाने एकदमसे उसी प्रश्नका विचार आरंभ किया जिनमें प्रोटेस्टेण्ट लोगोंका प्राचीन धर्मके साथ सबसे अधिक मत-भेद था। बैठकके आरंभ कालमें उन लोगोंने घोषणा करा दी कि जो लोग यह उपदेश देते हैं कि केवल धार्मिक श्रद्धासे पापीकी मुक्ति हो सकती है और जो इस प्रथामें विश्वास नहीं करते कि परमेश्वरकी सहायतासे मनुष्य सत्कार्यों द्वारा लोगोंकी मुक्ति करा सकता है, वे लोग गर्हणीय समझे जायगे। और यदि कोई कहेगा कि धार्मिक संस्कारोंकी उत्पत्ति ईसामसीहसे नहीं है, अथवा वे संख्यामें सातसे अधिक या कम हैं, जैसे बातिस्मा, अनुमोदन, भोग, तपस्या, अवलेपन, नियोग तथा विवाह—अथवा इनमें कोई भी संस्कार नहीं है, तो वह भी गर्हणीय है। बाइबिलका प्राचीन लैटिन अनुवाद ही सर्व-मान्य समझा गया। यह भी निश्चय हुआ कि कमसे कम सिद्धान्तके विषयमें इस अनुवादकी उपयुक्तताके सम्बन्धमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं करना चाहिये और धर्मसंस्थामें प्रचलित बाइबिलके अनुवादके अति-रिक्त और किसी अनुवादके प्रचारकी भी अनुमति नहीं देनी चाहिये।

इस प्रकार प्रोटेस्टेण्ट मतवालोंसे सुलह करनेका जो अवसर आया उसको इस सभाने गँवा दिया। पर इसने प्रोटेस्टेण्ट मतवालों द्वारा की गयी शिकायतोंको दूर करनेका प्रयत्न अवश्य किया। बिशपोंको अपने अपने धार्मिक क्षेत्रमें उपस्थित रहनेकी कड़ी आज्ञा दी गयी। उनको इस बातका भी आदेश दिया गया कि वे लोग ठीक ठीक उपदेश दें और इस बातका भी ध्यान रक्खें कि जो लोग धर्मशिक्षकके पदपर नियुक्त किये जाते हैं वे अपने कामको योग्यतासे करें, केवल इसकी आमदनीका ही उपभोग न

करें । शिक्षाकी उन्नतिका तथा गिरजों, मठों और पाठशालाओंमें बाइबिलके पढ़ानेका प्रयत्न भी किया गया ।

सभाके अधिवेशनका एक वर्ष समाप्त हो जानेके बाद अनेक प्रकारके विघ्न उपस्थित हुए । कई वर्षों तक तो कोई भी कार्य नहीं हुआ पर संवत् १६१६ (सन् १५६२ ई०) में सभासद लोग नये उत्साहसे कार्य करनेकी इच्छासे पुन. एकत्र हुए । रोमन कैथलिक सम्प्रदायके सिद्धान्तके विषयमें अब भी जो सन्देह रह गया था वह भी दूर कर दिया गया और धर्मविरोधियोंकी शिक्षाका तिरस्कार किया गया । वर्तमान बुराइयोंके सम्बन्धमें जो आज्ञापत्र निकले थे उनका भी समर्थन किया गया । ट्रेण्टकी सभाने जो नियम बनाये तथा मन्तव्य प्रकाशित किये उनकी एक पूरी पुस्तक बन गयी । उसने रोमन कैथलिक धर्म संस्थाके नियम तथा पद्धतिके लिये नवीन तथा दृढ़ आधार बना दिया । इतिहासकी दृष्टिसे ये मन्तव्य विशेष उपयोगी थे । इन्हें हम रोमन कैथलिक-धर्म-संस्थाके मतका सच्चा और पूरा वर्णन कह सकते हैं । पर वास्तवमें देखा जाय तो उनके द्वारा केवल वे ही प्राचीन सिद्धान्त दुहराये गये थे जो निरन्तर प्रचलित थे तथा जिनका वर्णन पन्द्रहवें परिच्छेदमें हो चुका है ।

होनेपर उसने परमेश्वरकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की, भिखारीका वस्त्र पहिनकर उसने जरुजेलमकी यात्रा की। वहां पहुंचनेपर उसे विदित हुआ कि विद्याके विना हम कोई काम नहीं कर सकते। इस विचारसे वह स्पेन लौट आया और यद्यपि उसकी तैंतीस वर्षकी अवस्था थी तथापि छोटे छोटे बच्चोंके साथ बैठकर वह भी लैटिनका व्याकरण पढ़ने लगा। दो वर्षके पश्चात् उसने स्पेनके विद्यापीठमें प्रवेश किया और तदनन्तर वह धार्मिक शिक्षा ग्रहण करनेके लिये पेरिस नगर गया।

पेरिसमें रहकर वह विद्यापीठके सहपाठियोंको उत्तेजित करने लगा और संवत् १५९१ (सन् १५३४) में उसके साथ सात सहपाठियोंने फिलीस्तीन जानेकी और यदि वहां जानेसे रोके गये तो पोपकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की। वेनिस पहुंचनेपर उन्हें विदित हुआ कि तुर्कों तथा वेनिसके प्रजातन्त्रमे युद्ध छिड़ गया है। इस कारण पूर्वके मूर्तिपूजकोंके मतपरिवर्तनका ध्यान छोड़कर वे पोपकी आज्ञा ले आस पासके नगरोंमें उपदेश देने, बाइबिलके मतको समझाने तथा अस्पतालोंमें पड़े हुए आहत व्यक्तियोंके आरामका प्रयत्न करने लगे। पूछनेपर वे लोग कहते थे कि "हम लोग जीससकी संस्थाके हैं"।

संवत् १५९५ (सन् १५३८) मे लायलाने अपने अनुयायियोंको रोमसे बुलाकर अपने सम्प्रदायका कार्य वहीं आरंभ किया। पोपने इन मन्तव्योंको अपने आज्ञापत्रमें सम्मिलित कर लिया और उसीमें नयी संस्थाकी स्वीकृति भी दे दी। निश्चय हुआ कि यह संस्था एक प्रधानके आधिपत्यमें रखी जाय जिसकी नियुक्ति जन्मभरके लिये संस्थाकी साधारण समिति द्वारा की जाय। लायला सैनिक था, इस कारण प्रत्येक स्थानमें वह सैनिक प्रथाको प्रधानता देता था। वह कहता था कि धर्मके विषयमें सबको बिना उज्रके प्रधानकी आज्ञा माननी चाहिये। उसका मत था कि इसीसे सद्गुणों तथा सुखकी वृद्धि होती है। यात्रियोंको केवल ईसामसीहके प्रतिनिधि पोपको ही अपना प्रधान नहीं मानना पड़ता था और प्रत्येक यात्रा-

देशमें फैल गये। लायलाके प्राचीन साथियोंमें फ्रांसिस जेवियर था, उसने भारत, मलाका तथा जापानकी यात्रा की। जिस समय प्राटेस्टेएट मतवालोंके मनमें मूर्तिपूजकोंके देशमें ईसाई मतके विस्तारका ध्यान भी नहीं आया था उस समय ब्रेजिल, फ्लोरिडा, मेक्सिको तथा पेरूमें जेसुइट लोग धर्म-प्रसारका कार्य कर रहे थे। जिस समय श्वेतांग लोग कनाडा तथा मिसिसीपी प्रान्तका प्रथमान्वेषण कर रहे थे उस सययके अमेरिकाकी दशाका पता हम लोगोंको जेसुइट लोगोंके वर्णनसे ही मिलता है। लायलाके अनुयायी यूरोपियनोंसे अपरिचित प्रदेशोंमें स्वच्छन्द प्रवेश कर वहांके निवासियोंको धर्मकी शिक्षा देनेके तात्पर्यसे उन्हींके साथ बस गये।

जेसुइट लोग पोपके भक्त थे इस कारण उन लोगोंने प्रोटेस्टेएट मतके प्रतिकूल प्रयत्न आरम्भ किया। उन लागोंने दूतोंको जर्मनी तथा नेदरलैण्डमें भेजा और आंग्ल देशको परिवर्त्तित करनेके लिये कठिन प्रयास किया। दक्षिणी जर्मनी तथा आस्ट्रियामें उनका प्रभाव अधिक स्पष्ट था क्योंकि उन स्थानोंमें वे लोग शासकोंके गुप्त मन्त्री तथा संस्थापक बन गये थे। इन प्रान्तोंमे उन लोगोंने प्रोटेस्टेएट मतकी उन्नति तो रोक ही दी, साथ ही जिन प्रान्तोंने प्राचीन मतको त्याग दिया था उनमें भी रोमन कैथलिक मतका प्रचार कर पोपकी सत्ता स्थापित कर दी।

प्रोटेस्टेएट लोगोंको प्रतीत होने लगा कि यह नयी संस्था हमारी सबसे बड़ी शत्रु है। इस धारणाके कारण वे लोग उनसे घृणा करने लगे और उसके संस्थापकोंके उच्च विचारको भूल कर जेसुइट लोगोंके प्रत्येक कार्यकी निन्दा करने लगे। प्रोटेस्टेएट मत वालोंने कहा कि इन लोगोंका विनीत भाव दिखाऊ है। इसकी आड़में ये लोग अपने दुष्कर्मोंका साधन करते हैं। जेसुइट लोग प्रत्येक परिस्थितिमें अपना निर्वाह कर लेते थे और तरह तरहके कार्योंको सम्पादित भी करते थे, इससे उनके शत्रु यह समझते थे कि ये लोग अपना मतलब साधनेके लिये ये सब चाले चल रहे हैं

उन लोगोंका विश्वास था कि जेसुइट लोग सबसे पतित तथा नीतिविरुद्ध
कारवाईको भी "ईश्वरकी कीर्तिको बढ़ानेवाली" कहकर उचित बतलाते
हैं। उनकी आज्ञाकारिताको प्रोटेस्टेण्ट लोग गुण न मानकर बड़ा भारी
दोष ही बतलाते थे। उन लोगोंका कहना था कि इस संस्थाके सदस्य
अपने प्रधानके अन्ध भक्त हैं, और आदेश पाने पर वे लोग गुनाह करनेमें
भी न हिचकेंगे।

इसमें सन्देह नहीं कि जेसुइट लोगोंमें भी कई अविचारी और
दुरात्मा व्यक्ति थे। समयके परिवर्तनके साथ साथ इस संस्थामें भी
अन्य प्राचीन संस्थाओंकी तरह बिगड़ती गयी। अठारहवीं सदीमें
इसपर व्यापार करनेका अभियोग लगाया गया और उसी समयसे कैथो-
लिक लोगोंका भी विश्वास इसपरसे हट गया। पहले पहल पुर्तगाल
राजाने इन्हें निर्वासित किया। उसके पश्चात् संवत १८२१ (सन् १७६४ ई०)
में फ्रांसके उस कैथलिक दलने इन्हें निकाल भगाया जिसके साथ इनका
बहुत समयसे विद्रोह चल रहा था। पोपको निश्चय हो गया कि अब
इस संस्थासे विशेष लाभ नहीं हो सकता, इस कारण उसने संवत १८३०
में इसे उठा दिया। संवत् १८७१ में इसकी पुनर्स्थापित हुई और अब
फिर इसके हजारों सभासद हैं।

राज्यमें कैथलिक धर्मका प्रचार करनेके लिये उसने अतिशय निर्दयताका प्रयोग किया।

गाठकी बीमारीसे पीड़ित तथा अकाल वृद्ध होनेके कारण संवत् १६११-१२ (सन् १६५४-५५) में पञ्चम चार्ल्सने राज्य-कार्यसे मुंह मोड़ा। चार्ल्सने हैप्सवर्गका अधिकार अपने भाई फर्डिनण्डको, जिसने विवाह सम्बन्धसे बोहेमिया तथा हंगरीको पाया था, बहुत पूर्वही दे दिया था। उसने अपने पुत्र द्वितीय फिलिपको स्पेनका राज्य जिसमें अमेरिकाके प्रदेश सम्मिलित थे तथा मिलन, सिसीलीके राज्य और नेदरलैण्ड दिया।

चार्ल्सने अपने राज्यमें प्राचीन धर्म वर्तमान रखनेका निरन्तर प्रयत्न किया था। स्पेन तथा नेदरलैण्डमे उसने धार्मिक न्यायालयका प्रयोग करनेमे कभी आगा पीछा न किया। उसको अपने जीवनमें इस बातका दुःख ही रह गया कि मेरे राज्यका एक प्रदेश प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बी हो गया। इतना होनेपर भी वह धर्मोन्मत्त नहीं था। प्रौढ़ धार्मिक प्रवृत्ति न होते हुए भी उस तत्कालीन राजाओंकी भांति धर्म सम्बन्धी कार्योंमे भाग लेनेको वाध्य होना पड़ा। अपने विच्छिन्न राज्यपर अधिकार रखनेके लिये कैथलिक धर्मका पक्षपात करना उसने आवश्यक समझा। पर उसके पुत्र फिलिपका समस्त जीवन तथा नीति प्राचीन धर्मके प्रति प्रगाढ़ भक्तिसे प्रणोदित थी। वह राज्यमें तथा उसके बाहर भी प्रोटेस्टेण्टोंके साथ युद्ध करनेमें अपनेको तथा अपने राज्यको खोदेनेके लिये सदा सन्नद्ध था। उसके पास साधन भी खूब थे क्योंकि अमेरिकन प्रदेशके कारण स्पेन विशेष सम्पत्तिशाली था और उस समय वहांकी सेना भी यूरोपके समस्त देशोंकी सेनासे अधिक बलिष्ट तथा सुसंचालित थी।

जर्मनी तथा स्पेनके राजाओंमें विभक्त हैप्सबर्गका राज्य

प्रथम मक्सिमिलियन (मृत संवत् १५७६), पत्नी बर्गण्डीकी मेरी (मृत संवत् १५४८)

|

फिलिप (मृत संवत् १५६३), पत्नी उन्मत्त जोना (मृत संवत् १६१२)

|

पंचम चार्ल्स (मृत संवत् १६१५)
[सम्राट्, संवत् १५७६-१६१३]

|

द्वितीय फिलिप (मृत संवत् १६५५)
हैप्सबर्गके अधीन इटालीके राज्य,
स्पेन तथा नेदरलैण्डका राजा

फर्डिनण्ड (मृत संवत् १६२१), पत्नी अन्ना जो बोहेमिया तथा हंगरीके राज्यकी अधिकारिणी थी।
[सम्राट्, संवत् १६१३-१६२१]

|

द्वितीय मक्सिमिलियन (मृत संवत् १६३३)
सम्राट् तथा हैप्सबर्गके आस्ट्रियन राज्य,
बोहेमिया एवं हंगरीका राजा

[illegible]

नेदरलैण्डमें सत्रह प्रान्त सम्मिलित थे। इनको पञ्चम चार्ल्सने अपनी दादी बर्गण्डीकी मेरीसे पाया था। यही फिलिपकी सबसे पहिली और सबसे बड़ी कठिनाईका आरम्भ हुआ था। वर्तमान हालैण्ड तथा बेल्जियमका राज्य जिस स्थानपर स्थापित है वहीं पहिले नेदरलैडका राज्य था। प्रत्येक प्रान्तके पृथक् पृथक् शासक थे, पर चार्ल्सने इन सबको एकमें संगठित कर जर्मन साम्राज्यकी रक्षामें रक्खा था। उत्तरमें जर्मनीके बलिष्ट अधिवासियोंने समुद्रजलका निवारण करनेवाले परकोटेकी सहायतासे निम्न देशका अधिकांश अपने अधिकारमें कर लिया था। यहांपर कालान्तरमें अनेक नगर बस गये, जैसे हार्लेम, लीडन, आमस्टर्डम तथा राटर्डम। दक्षिणमें गेन्ट, ब्रुजेज, ब्रुसेल्स तथा एण्टवर्पके समृद्ध स्थान थे जो शताब्दियोंसे कारीगरी तथा व्यवसायके केन्द्र थे।

यद्यपि चार्ल्सने नेदरलैंड वालोंके साथ कुछ अनाचार किया था तथापि वह उन्हे राजभक्त बनाये रखनेमें समर्थ हो सका। इसका कारण यह था कि चार्ल्स भी नेदरलैंडका निवासी था, अत. उसकी सफलतामें वे अपना गौरव समझते थे। पर फिलिपके प्रति उनका व्यवहार बिल्कुल भिन्न था। जिस समय पचम चार्ल्सने ब्रुसेल्समें फिलिपको भावी शासक बताकर लोगोंको उसका परिचय दिया उस समय वे उसका सुस्त चेहरा तथा उद्दण्ड स्वभाव देख कर बड़े असन्तुष्ट हुए। स्पेननिवासी होनेके कारण वह उन लोगोंके लिये विदेशी था और स्पेन लौट जानेपर उसने उनका शासन भी विदेशियोंकी भांति ही आरंभ किया। उनकी उचित मांगोंको पूरा कर उन्हे अपने पक्षमे मिलानेके बजाय उसने बर्गण्डीके राज्यमें प्रत्येक कार्यज्ञ लोगोंको अपनेसे अलग ही किया और हृदयमें स्पेनवालोंकी ओरसे सन्देह तथा घृणा उत्पन्न करा दी। उन लोगोंको बाध्य होकर स्पेनिश सैनिकोंको अपने घरोंमें स्थान देना पड़ता था। उनके कठोर व्यवहारोंसे वहांके लोग उद्विग्न हो जाते थे। राजाकी सौतेली बहिन पार्माकी डचेज जो उनकी भाषा भी नहीं जानती थी उनकी राज्य-प्रबन्धक बनायी

गयी । फिलिप प्रान्तके कुलीन जनोंमें विश्वास न कर कुछ नवीन युवकोंका विश्वास करता था ।

इससे भी बुरी बात यह हुई कि फिलिपने प्रस्ताव किया कि 'इन्क्वीजिशन' नामक विचारक सभा अधिक तत्परतासे अपने कार्यका सम्पादन करे और नास्तिकताका शीघ्र दमन करे क्योंकि इससे उसका पवित्र राज्य कलंकित हो रहा था । विचारक सभा उन प्रान्तोंके लिये नयी बात नहीं थी । पंचम चार्ल्सने लूथर ज्विंगली तथा कालविनके अनुयायियोंके प्रतिकूल कठोर कठोर नियम बनाये थे । संवत् १६०७ के नियमानुसार जो धर्मविद्रोही अपने कार्यसे मुंह मोड़नेसे लगातार इनकार करते थे, वे जीते जी जला दिये जाते थे । जो लोग अपनी भूल स्वीकार करते थे और धर्म-विद्रोहका परित्याग करनेके लिये शपथ खाते थे वे भी यदि पुरुष होते थे तो शिरश्छेदनका दण्ड पाते थे, यदि स्त्रियां होती थीं तो जीवित जला दी जाती थीं । दोनों ही हालतोंमें उनका माल जब्त कर लिया जाता था । चार्ल्सके राज्य-कालमें कमसे कम पचास सहस्र मनुष्योंकी हत्या की गयी थी । यद्यपि इन सब कठोर प्रयत्नोंसे प्रोटेस्टेंट मतका प्रचार रुक नहीं सका तो भी अपने राज्यके प्रथम ही मासमें फिलिपने चार्ल्सके बनाये हुए समस्त नियमोंको पुन जारी किया ।

लोगोंका कथन है कि डचेजके किसी मन्त्रीने उससे कहा था कि इन 'भिक्षुकों' से भयकी कोई आवश्यकता नहीं है। प्रार्थियोंने उसी समयसे अपनेको भिक्षुक कहना शुरू किया। बादमें विद्रोह करने वाला एक दल 'भिक्षुकों' के नामसे विख्यात हुआ।

अब प्रोटेस्टेंट मतके उपदेशकोंने विशेष साहस दिखलाया। उनका उपदेश सुननेके लिए बहुतसे लोग एकत्र होने लगे। उनकी शिक्षासे उत्तेजित होकर बहुतसे लोगोंने नये मतको ग्रहण किया और कैथलिक मन्दिरोंमें प्रवेश कर मूर्तियोंको तोड़ डाला, रंगीन शीशोंको चूर चूर कर डाला तथा वेदियोंको नष्ट कर दिया। पार्माकी डचेज अपनी बुद्धिमत्तासे शान्ति स्थापन कर ही रही थी कि इतनेमें फिलिपके अदूरदर्शी कार्यसे नेदरलैंडमें विद्रोह आरम्भ हो गया। उसने निम्न प्रदेश (नेदरलैंड्ज़)में अलवाके ड्यूकको भेजना स्थिर किया। वह बड़ा निर्दयी था, और उसका नाम लेनेसे ही लोगोंको अविवेकपूर्ण तथा अपरिमित निर्दयताका ध्यान आ जाता था।

अलवाके आनेका संवाद पाते ही जो उसके आगमनसे डरते थे वे लोग तो देश छोड़ कर भाग गये। आरेंजका विलियम, जो इस युद्धमें स्पेनवालोंके प्रतिकूल सेनापति होनेवाला था, जर्मनी गया। फ्लेम्सके सहस्रों जुलाहे उत्तरीय समुद्र लांघकर आंग्ल देशको भाग गये। थोड़े ही दिनोंमें उनके हाथका बुना कपड़ा आंग्ल देशकी बनी वस्तुओंके निर्यातमें सबसे प्रसिद्ध हो गया।

अलवाके साथ स्पेनके दश सहस्र सैनिक आये जो बड़े वीर तथा सुसज्जित थे। उसने सोचा कि असन्तुष्ट प्रदेशको शान्त करनेका केवल यही उपाय है कि जो लोग राजाकी निन्दा करते हैं उनकी हत्या कर दी जाय, इस कारण उसने फिलिपके विद्रोहियोंका विचार करनेके लिए [illegible] साथ एक विचारालय स्थापित किया। यह 'हत्याकारिणी' सभाके नामसे विख्यात था क्योंकि इसका काम न्याय करना नहीं परन्तु हत्या करना था

अलवाने संवत् १६२४ से १६३० (सन् १५६७ से १५७३ ई०) पर्यन्त शासन किया। उसका शासन यथार्थमें अत्याचारपूर्ण तथा क्रूर शासन था। वह बड़ी अकड़के साथ कहा करता था कि मैंने अठारह सहस्र मनुष्योंकी हत्या करायी है पर यथार्थमें छः सहस्रसे अधिक मनुष्य नहीं मारे गये।

आरेंजका राजा तथा नेसाका काउण्ट, विलियम, नेदरलैंडका सरदार सेनापति बन गया। वह राष्ट्रीय वीर था, उसका चारित्र वाशिंगटनके चरित्र से बहुत कुछ मिलता जुलता है। अमेरिकाके विख्यात देशभक्त वाशिंगटनकी भांति उसने भी विदेशी राजाके अत्याचारसे अपने देश-भाइयोंको मुक्त करनेका असम्भव कार्य अपने हाथमें लिया था। स्पेनवालोंकी दृष्टिमें वह केवल एक निर्धन कुलीन वंशज था जो थोड़ेसे कृषक तथा साधारण सैनिक लेकर संसारके सबसे श्रीसम्पन्न राज्यके अधिपतिका सामना करनेका साहस करता था।

विलियम पंचम चार्ल्सका विश्वासपात्र तथा भक्त नौकर था। यदि स्पेन वालोंका अत्याचार असह्य न हो गया होता तो वह चार्ल्सके पुत्र फिलिपकी भी उसी प्रकारसे सेवा करता। अलवाके व्यवहारसे उसे विश्वास हो गया कि फिलिपके पास शिकायत भेजना व्यर्थ है। तदनुसार संवत् १६२५ (सन् १५६८ ई०) में छोटी सी सेना एकत्र कर उसने स्पेनसे विरोध प्रारंभ किया।

लुटेरे थे, उन्होंने स्पेनकी नावोंको पकड़ कर आंग्ल देशके प्रोटेस्टेण्टोंके हाथ बेच दिया। अन्तको उन लोगोंने स्पेनके ब्राइल नगरपर अधिकार जमाकर उसे अपना मुख्य वासस्थान बनाया। हालैण्ड तथा जीलैण्डके अनेक उत्तरीय नगरोंने इससे उत्साहित होकर विलियमको अपना शासक बनाया, यद्यपि उन लोगोंने इस समय भी फिलिपका साथ नहीं छोड़ा था। इस प्रकार ये दो प्रदेश संयुक्त नेदरलैण्डके केन्द्र हुए।

अलवाने कई विद्रोही नगरोंपर पुनः अधिकार किया और वहांके निवासियोंके साथ अपनी स्वभावगत क्रूरतासे व्यवहार किया, यहां तक कि बच्चों तथा स्त्रियोंकी भी निरर्थक हत्या की गयी। विद्रोह-शान्तिके बदले उसने दक्षिणी कैथलिक मत वालोंको भी भड़का दिया जिससे वे भी विद्रोही बन गये। उसने एक अनुचित कर लगाया जिससे बिक्रीकी आमदनीका दसवां भाग सरकारको देना पड़ता था। परिणाम यह हुआ कि दक्षिणी नगरोंके कैथलिक सौदागरोंने निराश होकर अपना व्यवसाय बन्द कर दिया।

छः वर्षके दुराचारपूर्ण शासनके पश्चात् अलवा बुला लिया गया। उसके स्थानपर जो शासक हुआ वह शीघ्र ही मर गया और देशको पूर्वसे भी शोचनीय दशामें छोड़ गया। अलवाके सिद्धान्तोंकी शिक्षा पाये हुए सैनिक विना सेनापतिके होने पर रात्रिमें लूट-मार तथा हत्या करनेकी ओर प्रवृत्त हो गये। उन लोगोंने लूट लूटकर एण्टवर्पके समृद्ध नगरका नाश कर डाला। स्पेनके इस 'प्रकोप' तथा घृणित कार्यने सर्वसाधारणमें इतनी उत्तेजना उत्पन्न कर दी कि फिलिपके समस्त वर्गण्डी प्रदेशके प्रतिनिधि सवत् १६३३ (सन् १५७६) में स्पेनके अत्याचारको दूर करनेके विचारसे घेण्टमें एकत्र हुए।

इन लोगोंने जो संघ स्थापित किया वह थोड़े ही दिनों तक रहा। फिलिपने नेदरलैण्डमें दूरदर्शी तथा शांत शासकोंको नियुक्त किया और उन लोगोंने पुन. दक्षिणी प्रदेशोंको अपने वशमें कर लिया, पर उत्तरीय प्रदेश फिर भी स्वतन्त्र रहे। विलियमके नेतृत्वमें रहकर उन लोगोंने

फिलिपको राजा बनानेका ध्यान ही छोड़ दिया। संवत् १६३६ (सन् १५७९) में हालैण्ड, जीलैण्ड, यूट्रेक्ट, गेल्डर लैण्ड, ओव्हर-आइसेल, ग्रोनिंगन और फ्रीजलैण्ड, इन सात प्रदेशोंने जो कि राइन तथा स्केल्ट नदीके उत्तर बसे थे यूट्रेक्टमें दूसरी प्रबल संस्था स्थापित की। दो वर्ष पश्चात् जब इन प्रदेशोंने स्वतन्त्रताका अवलम्बन किया तो संघकी शर्तें ही संयुक्त राज्यके लिये नियम बन गयीं।

फिलिपको विदित हो गया कि इस विद्रोहकी जड़ विलियम ही है और उसके न रहने पर सहजमें ही इसका दमन किया जा सकता है। यह सोचकर उसने उस मनुष्यको कुलीन पद तथा प्रचुर धन देनेकी प्रतिज्ञा की जो इस उच्च देशाभिमानीको परास्त करे। उस समय विलियम संयुक्त राज्यका शासक था। अनेक निष्फल प्रयत्नोंके पश्चात् संवत् १६४१ (सन् १५८४) में वह अपने घरमें गोलीसे मारा गया। इसने मरते समय ईश्वरसे अपनी आत्मा तथा अपने निःसहाय नागरिकोंपर दया रखनेके लिये प्रार्थना की।

तथापि उसने संवत् १७०५ के पूर्वतक उसकी स्वतंत्रता नहीं स्वीकार की।

सत्रहवीं शताब्दीके प्रारम्भका फ्रांस राज्यका इतिहास केवल प्रोटेस्टेंएट तथा कैथलिक धर्मावलम्बियोंके पारस्परिक रक्तस्रावी युद्धवृत्तान्तसे भरा है। दोनों दलोंमे राजनीतिक तथा धार्मिक उद्देश्य वर्तमान था और कभी कभी तो सांसारिक अभिलाषाके सामने धार्मिक उद्देश्य बिलकुल लुप्त हो जाता था।

प्रोटेस्टेएट मतका आरम्भ जिस प्रकार आंग्ल देशमें हुआ था उसी प्रकार फ्रांसमे भी हुआ। इटली वालोंके संसर्गसे जिन लोगोंके हृदयमें ग्रीक भाषाके प्रति प्रेम उत्पन्न हो गया था उन लोगोंने मौलिक भाषामें सूक्ष्म रीतिसे न्यूटेस्टामेण्टका अध्ययन किया। सुधारके सम्बन्धमें उनके विचार इरेज़मसके सदृश थे। उनमें सबसे प्रसिद्ध लफेव्हर था, उसने बाइबिलका अनुवाद फ्रांसीसी भाषामें किया। वह लूथरका नाम सुननेके पहलेसे ही 'श्रद्धा द्वारा मुक्ति' का उपदेश दे रहा था। उसको तथा उसके अनुयायियोंको फ्रैंसिस प्रथमकी बहिन, नवार राज्यकी रानी मारगेरटसे सहायता मिली। उसकी संरक्षतामे वे लोग कई वर्ष पर्य्यन्त निर्भय रहे। अन्तको पेरिसके सॉर्बोन नामी धर्म-विद्यापीठने नये मतके विरुद्ध राजाको भड़काना शुरू किया। अपने कालके राजाओंकी भांति फ्रैंसिसको भी धर्मकार्यमें विशेष श्रद्धा न थी, परन्तु प्रोटेस्टेएट मतवालोंपर जो दोष लगाया गया था उससे क्षुब्ध होकर उसने प्रोटेस्टेएट मतका प्रचार करनेवाली पुस्तकों-का प्रकाशन एकदम बन्द कर दिया। संवत् १५९२ (सन् १५३५) में प्रोटेस्टेएट मतावलम्बी अनेक मनुष्य जीवित जला दिये गये और केल्विनको भागकर बेसिलमें शरण लेनी पड़ी। वहांपर उसने 'इन्स्टिट्यूट्स आफ क्रिश्चियानिटी' (खीष्ट धर्मके सिद्धांत) नामकी पुस्तक लिखी, जिसमें उसने अपने मतका भलीभांति समर्थन किया है। उसने अनुक्रमणिकामें फ्रैंसिसके नाम एक पत्र लिखकर प्रोटेस्टेएट मतकी रक्षाके लिये प्रार्थना की है। इसके पूर्व

फ्रांसिस इतना दुर्दम हो गया कि उसने आल्पनिवासी तीन सहस्र कृषकों की हत्या इस कारण करवा डाली कि वे लोग केवल वाल्डेन्सियन लोगोंके उपदेशका समादर करते थे।

उसका पुत्र द्वितीय हेनरी संवत् १६०४ से लेकर १६१६ पर्यन्त राज्य करता रहा। उसने प्रोटेस्टेण्ट मतको निर्मूल करनेकी प्रतिज्ञा की और सैकड़ों प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बियोंको जलवा दिया। पर हेनरीके धार्मिक विश्वासने उसे अपने शत्रु पञ्चम चार्ल्सके प्रतिकूल जर्मनीके प्रोटेस्टेण्ट मतवालोंकी सहायता करनेसे नहीं रोका, क्योंकि उन लोगोंने फ्रांसके सीमास्थित, मेज़, व्हर्डुन तथा टूलके धर्माध्यक्ष नियुक्त करनेका अधिकार उसे देनेका प्रतिज्ञा की थी।

एक सैनिक मुठभेड़में द्वितीय हेनरी अचानक मारा गया और उसका राज्य उसके तीन निर्बल पुत्रोंके हाथ पड़ा। ये लोग वालवा वंशके अन्तिम कठपुतले थे जिन्होंने अदृष्टपूर्व गृहकलह तथा अशान्तिके समयमें बारी बारीसे राज्य किया। हेनरीका सबसे बड़ा पुत्र द्वितीय फ्रांसिस गद्दीपर बैठा। उसके राजगद्दीपर बैठनेके प्रसङ्गके लिए महत्त्वका विषय केवल इतना ही था कि उसने स्काटलैण्ड-के राजा पञ्चम जेम्सकी पुत्री मेरी स्टुअर्टसे विवाह किया था जो आगे स्काटकी महारानी मेरीके नामसे विख्यात हुई। उसकी माता गाइज़के ड्यूक तथा लोरेनके कार्डिनल, इन दो फ्रांसीसी महत्त्वाकांक्षी सरदारोंकी बहिन थी। फ्रांसिस इतना अबोध था कि मेरीके पितृव्य गाइज़ोंने उसके राज्यका प्रबन्ध अपने हाथमें ले लिया। गाइज़के ड्यूकने सेनाका तथा कार्डिनलने शासनका भार अपने हाथमें ले लिया। केवल एक वर्ष राज्य करनेके पश्चात् फ्रांसिसकी मृत्यु हुई। अब वे दोनों भाई [illegible] [illegible] [illegible]

गाइज़ो, मेरी स्टुअर्ट, वालवा तथा बूर्बनोंका सम्बन्ध।

- क्लॉड, गाइज़का ड्यूक (मृत, संवत् १५८४)
  - फ्रैंसिस, गाइज़का ड्यूक (सं० १६२० में मारा गया)
    - हेनरी, गाइज़का ड्यूक (संवत् १६४५ में हत)
  - चार्ल्स लोरेनका कार्डिनल
  - मेरी, अष्टमहेनरीकी बहिनके पुत्र, स्काटलैण्डके पंचम जेम्सकी स्त्री
    - मेरी स्टुअर्ट, स्काटलैंडकी रानी, पहिला विवाह द्वितीय फ्रैंसिसके साथ
      - स्काटलैण्डका षष्ठ जेम्स, इंग्लैण्डका प्रथम जेम्स, (लार्ड डार्नलीके साथ मेरीके दूसरे विवाहसे उत्पन्न,)

- प्रथम फ्रैंसिस (मृत, संवत् १६०४)
  - द्वितीय हेनरी (मृत, संवत् १६१६) कैथरिन डे मेडीचीका पति
    - द्वितीय फ्रैंसिस, मेरी स्टुअर्टका पति, निःसन्तान मरा, संवत् १६१७
    - नवम चार्ल्स निःसन्तान मरा संवत् १६३१
    - तृतीय हेनरी, निःसन्तान मरा संवत् १६४६
    - मारगरेट, हेनरी चतुर्थकी स्त्री (यह नवारका राजा था व सेण्ट लूईसे छोटे बूर्बनकी शाखाका वंशज था, मृत्यु संवत् १६६७)
      - तेरहवां लूई, मेरी डे मेडीचीके साथ हेनरीके दूसरे विवाहसे उत्पन्न (मृत, संवत् १७००)
        - चौदहवां लुई (मृत संवत् १७७२)
          - पन्द्रहवां लुई (मृत संवत् १८३१), चौदहवें लुईका प्रपौत्र

उसके पश्चात् नवम चार्ल्सने संवत् १६१७ से लेकर १६३१ पर्यन्त (सन् १५६०-१५७४) राज्य किया। वह केवल दश वर्षका था, इस कारण उसकी माताने जो लोरेंएटाइन वंशकी थी अपने पुत्रकी ओरसे स्वयं राज्य-प्रबन्ध करनेका अपना हक पेश किया। फ्रांसके बूर्बन राजघरानेकी एक और छोटी शाखा थी जिसका एक व्यक्ति नवारका राजा था, इस परिवारने भी राज्यपर अपना स्वत्व प्रकट किया। फ्रांसका इस समयका इतिहास इन्हीं दोनोंकी प्रतिद्वन्द्विताकी जटिलतासे परिपूर्ण है। बूर्बन वंशवालोंने फ्रांसके कैल्विन मतावलम्बियोंसे जो ह्यूगेनटके नामसे पुकारे जाते थे, मित्रता कर ली।

ह्यूगेनाट लोगोंके अनेक नेता तथा उनके मुखिया 'कालिन्यी साहब' कुलीन वंशके थे, और ये लोग तत्कालीन राजनीतिमें भाग लेनेके लिए उत्सुक थे। इसका परिणाम यह हुआ कि धार्मिक तथा राजनीतिक झगड़ोंके सम्बन्धमें बड़ी गड़बड़ी उत्पन्न हो गयी, जिससे फ्रांसके प्रोटेस्टेंट मतको बड़ी चोट लगी। पर कुछ कालके लिए ह्यूगेनाट लोग इतना बलशाली हो गया था कि राज्यशासनपर उनके आधिपत्य हो जानेकी आशंका हो रही थी।

देखा। ड्यूकके अनुयायियोंने उनकी उपासनामें विघ्न डाला, जिससे गुलगपाड़ा उत्पन्न हो गया। ड्यूकके सैनिकोंने सैकड़ों अरक्षित मनुष्योंको मार डाला। इस हत्याकाण्डके समाचारसे ह्यूगेनाट लोग बहुत ही उत्तेजित हो गये और यहींसे उस युद्धका श्रीगणेश हुआ जो, बीच बीचमें क्षणिक सन्धियोंके होते हुए भी, वास्तवमें वालवा वंशके अन्तिम निर्बल राजाके शासनकी समाप्ति तक चलता ही रहा। अन्य धार्मिक युद्धोंकी भांति, इस युद्धमें भी दोनों दलोंने अत्यन्त अमानुषिक निर्दयताका परिचय दिया। एक पीढ़ी पर्यन्त फ्रांसमें अग्निदाह, लूटमार तथा बर्बरताका पूर्ण साम्राज्य बना रहा। इस गृहयुद्धके कारण प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथलिक, दोनों दलोंके नेता और फ्रांसके दो राजा भी घातकोंके शिकार हुए। चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दीके आंग्ल आक्रमणके समय जो अत्याचार हुए थे, इस समय उनकी पुनरावृत्ति हुई।

संवत् १६२७ (सन् १५७०) में कुछ कालके लिये सन्धि हो गयी। ह्यूगेनाटोंकी धार्मिक स्वतंत्रता मानी गयी और उन्हें कुछ नगर दे दिये गये। इन नगरोंमें ला रोशेल नगर भी था, जहां रहकर वे लोग कैथलिकोंके पुनराक्रमणसे अपनी रक्षा कर सकते थे। कुछ समय पर्यन्त राजा तथा राजमाता दोनोंका ह्यूगेनाटोंके नेता कालिन्नीके साथ बड़ा मित्र भाव रहा, और वह एक प्रकारसे प्रधान मन्त्री भी बन गया। वह चाहता था कि कैथलिक तथा प्रोटेस्टेण्ट दोनों दल मिलकर स्पेनके विरुद्ध राष्ट्रीय महायुद्धमें लड़ें। उसे आशा थी कि इस तरह फ्रान्सके लोग देश-भक्तिके अभिप्रायसे अपने धार्मिक मत-भेदका ध्यान छोड़कर परस्पर एकसूत्रमें आबद्ध हो जायेंगे और बर्गण्डीके राज्यको तथा उत्तर पूर्वके उन दुर्गोंको स्पेनसे जीतनेका उद्योग करेंगे जिनपर स्पेनकी अपेक्षा फ्रान्सका ही अधिकार होना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता था। साथ ही उसे यह भी आशा थी कि मैं इस तरह नेदरलैण्डके प्रोटेस्टेण्ट मतवालोंको भी सहायता पहुंचा सकूंगा।

गाइज़के कट्टर कैथलिक दलने भयंकर उपायके प्रयोग द्वारा इस कार्यक्रमपर पानी फेर दिया। इन लोगोंने कैथरिन द मेडीचीको सहज ही यह विश्वास करा दिया कि कॉलिन्यी तुम्हें धोखा दे रहा है। उसकी हत्या करनेके लिए एक घातक भी नियुक्त किया गया पर भाग्यवश घातकका निशाना चूक गया और कॉलिन्यीको केवल चोट ही आयी। युवक राजा और कॉलिन्यीमें प्रगाढ़ मित्रता थी अतः इस राजाको हत्याके प्रयत्नका कहीं पता न लग जाय, इस विचारसे भयभीत होकर राजमाताने ह्यूगेनाटोंके एक बड़े षड्यन्त्रकी झूठी वार्ता गढ़ ली। इस प्रकार सरलप्रकृति राजाके साथ विश्वासघात किया गया। पेरिसके कैथलिक नेताओंने निश्चित किया कि केवल कॉलिन्यी ही नहीं बल्कि जितने ह्यूगेनाट लोग नवारके प्रोटेस्टेण्ट नरेश हेनरीके साथ राजाकी बहिनका विवाहोत्सव देखनेके लिये नगरमें एकत्र हैं सबके सब महात्मा बार्थलोम्यूके उपासना दिनके ठीक पहले एक नियत संकेतपर मार डाले जायं।

संकेत ठीक समयपर दिया गया और दूसरा दिवस समाप्त होने होते पेरिस नगरमें दो सहस्र मनुष्य निर्दयताके साथ मार डाले गये। इस घटनाकी खबर चारों ओर फैल गयी। नगरके बाहर भी कमसे कम दस हजार प्रोटेस्टेण्ट मारे गये। पोप तथा (स्पेनके) राजा द्वितीय फिलिपने धर्मसंस्थाके प्रति फ्रांसीसियोंकी इस आकस्मिक भक्तिपर बड़ा हर्ष तथा कृतज्ञता प्रगट की। गृह-कलह पुनः आरम्भ हुआ और उसने नरेशके अभ्युदयार्थ तथा धर्म-विरोधको निर्मूल करनेके उद्देश्यसे कैथलिक मतावलम्बियोंने गाइज़के ड्यूक हेनरीके नेतृत्वमें प्रसिद्ध धर्मसंघ (होली लीग) स्थापित किया।

नहीं चाहते थे कि फ्रांसकी गद्दी किसी धर्मविरोधीके चरणसे अपवित्र हो। इसके अतिरिक्त उनका नेता गाइज़का हेनरी भी स्वयं राजा बनना चाहता था।

तृतीय हेनरीको अब इधरसे उधर भाग कर कभी एक दलकी और कभी दूसरेकी शरण लेनी पड़ी। अन्तमें तीनों हेनरियों—तृतीय हेनरी, नवारके हेनरी तथा गाइज़के हेनरी—में परस्पर युद्ध छिड़ गया। इस युद्धका अवसान भी बड़े विचित्र रूपसे हुआ। राजा हेनरीने गाइज़के हेनरीकी हत्या करा दी। गाइज़के सहायकोंने राजा हेनरीको मार डाला। परिणाम यह हुआ कि नवारके हेनरीका मार्ग निष्कंटक हो गया। वह संवत् १६४७ में चतुर्थ हेनरीके नामसे सिंहासनासीन हुआ। फ्रांसके राजाओंमें वह अपनी वीरताके लिए प्रसिद्ध है।

नये राजाके अनेक शत्रु थे। कई वर्षोंकी लगातार लड़ाईसे उसका राज्य नष्टप्राय तथा आचारभ्रष्ट हो गया। उसे यह बात शीघ्र ही विदित हो गयी कि यदि मैं राज्य करना चाहता हूं तो मुझे अपनी बहुसंख्यक प्रजाका मत ग्रहण करना ही पड़ेगा। इस उद्देश्यसे उसने यह कहकर रोमन कैथलिक धर्मको पुनः स्वीकार करना चाहा कि फ्रांसका राज्य इतनी अभिलषणीय वस्तु है कि उसके लिये धर्म बदल डालना कोई बड़ी बात नहीं। फिर भी वह अपने पूर्व मित्रोंको भूल नहीं गया। उसने संवत् १६५५ (सन् १५९८) में नाण्टका आज्ञापत्र निकाला। इस आज्ञापत्र द्वारा उसने कोल्विनके अनुयायियोंको उन स्थानोंमें उपासना करनेकी आज्ञा दे दी, जहां वे पहले उपासना करते थे, किन्तु पेरिस तथा अन्य दो चार नगरोंमें प्रोटेस्टेण्ट लोगोंको उपासना करनेकी मनाही थी। प्रोटेस्टेण्टोंको कैथलिकों-के समान ही राजनीतिक अधिकार दिये गये और राजकीय पदप्राप्तिमें कोई रुकावट न रहा। कई किलेबन्दी वाले नगर, विशेषकर ला रोशल तथा मांटोबान ह्यूगेनाट लोगोंको दे दिये गये। इन सुरक्षित नगरोंको अपने कब्जेमें रखनेका तथा उनके शासनका विशेष अधिकार

१६वीं सदीके कैथलिक तथा प्रोटेस्टेएट मतावलम्बियोंके पारस्परिक युद्धसे फ्रांस तो तहस नहस हो गया, पर सौभाग्यवश आंग्ल देशमें ऐसी कोई घटना नहीं हुई। महारानी ईलिज़वेथने अपनी चतुराईसे केवल घरमे ही शान्ति नहीं रक्खी प्रत्युत फिलिपके षड्यन्त्रों एवं आक्रमणके सारे प्रयत्नोंको भी निष्फल कर दिया। नेदरलैएडके विषयमे हस्तक्षेप कर उसने डचलोगोंको स्पेनसे स्वतन्त्र होनेमें बहुत कुछ सहायता भी दी।

मेरीकी मृत्यु तथा संवत् १६१५ (सन् १५५८) मे ईलिज़वेथके राज्यारोहणके पश्चात् आंग्ल राज्यका प्रबन्ध पुनः प्राटेस्टेएट मतवालोंके हाथ आगया। यदि ईलिज़वेथने अपने पिता अष्टम हेनरीकी नीतिका अनुकरण किया होता तो उसकी प्रजाके अधिकाश लोग अति प्रसन्न हुए होते। यद्यपि अपने देशपर वे लोग पोपका आधिपत्य नहीं चाहते थे तथापि स्तुति (मास) तथा प्राचीन-कालागत रीतिरस्मोंको वे अब भी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। ईलिज़वेथको विश्वास था कि अन्तमें प्रोटेस्टेएट मतकी ही जय होगी। इस कारण उसने षष्ठ एडवर्डकी प्रार्थना-पुस्तकमें थोड़ा बहुत परिवर्तन करा कर पुनः उसीका प्रयोग कराया और यह आज्ञा दी कि सारी प्रजा राज्यकी ओरसे निर्दिष्ट उपासनाको ही अंगीकार करे। प्रेस्बीटेरियन धर्म-संस्थाके भी अनेक अनुयायी थे, पर ईलिज़वेथने उनकी प्रार्थनाको अगीकार न कर धर्मसंस्थाके प्रबन्धमें आर्कविशपों (प्रधान धर्माध्यक्षों), विशपो (धर्माध्यक्षों) तथा डीनोंको ही रक्खा। परिवर्तन केवल इतना ही हुआ कि मेरीके समयके कैथलिक पादरियोंके स्थानपर प्रोटेस्टेएट पादरी नियुक्त किये गये। ईलिज़वेथके शासनकालकी प्रथम व्यवस्थापक सभाने उसे आंग्ल देशकी धर्मसंस्थाकी सर्वोच्च अधिष्ठात्री की उपाधि तो नहीं, पर वैसा ही अधिकार अवश्य दे दिया।

धार्मिक विषयमें ईलिज़वेथके अधिकारपर पहिला वार स्काटलैएडकी ओरसे हुआ। उसके राज्यारूढ़ होनेके थोड़े ही दिन पश्चात् स्काटलैएडमें

प्राचीन धर्म-प्रणाली उठा दी गयी । इसके प्रधान कारण वे सरदार थे जो बिशपोंकी सम्पत्ति हड़प कर उसकी आयका स्वयं उपभोग करना चाहते थे । जान नाक्सने जो उत्साहमें दूसरा केल्विन ही प्रतीत होता था, प्रेस्बीटेरियन सम्प्रदायको स्थान दिलाया जो स्काटलैण्डमें अबतक वर्तमान है ।

संवत् १६१८(सन् १५६१)में स्काटकी रानी मेरी स्टुअर्ट अपने पति द्वितीय फ्रैंसिसके मरते ही लौट पहुँची । उसकी अवस्था केवल उन्नीस वर्षकी थी, और वह बहुत ही सुन्दर थी, पर वह कैथलिक धर्मको मानती थी तथा उसने फ्रांस देशमें शिक्षा पायी थी, इस कारण प्रजाके लिए वह विदेशी स्त्रीके तुल्य ही थी । उसकी दादी अष्टम हेनरीकी बहिन थी, इस कारण ईलिजबेथके सन्तानरहित मरजानेपर न्यायतः आंग्ल देशके राज्यकी वही उत्तराधिकारिणी थी । इस कारण द्वितीय फिलिप, गाइजवाले मेरीके सम्बन्धियों तथा अन्यान्य लोगोंकी जो आंग्लदेश तथा स्काटलैण्डपर कैथलिक धर्मका अधिकार देखना चाहते थे, सारी आशा स्काटलैण्डकी इसी सुन्दर रानीके साथ बंधी हुई थी ।

मेरीने जान नाक्सके प्रयत्नोंको निष्फल करनेका कोई भी उपाय नहीं किया, पर उसने प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथलिक दोनों ही सम्प्रदायवालोंको अपने व्यवहारसे असन्तुष्ट कर दिया । उसने अपने दूसरे चचेरे भाई लार्ड डार्नलीसे विवाह कर लिया । विवाहके पश्चात् उसे विदित हुआ कि वह (लार्ड डार्नली) अविवेकी तथा दुराचारी है, इस कारण वह उससे

ठीक नहीं बता सकता। इतना जरूर है कि पतिकी मृत्युके बाद जब उसने बॉथवेलसे विवाह किया तब प्रजाने हत्याका दोष लगा कर उसे गद्दीसे उतार दिया। राज्यप्राप्तिके प्रयत्नोंको असफल होते देख उसने अपने नाबालिग पुत्र छठें जेम्सके लिये राज्य छोड़ दिया और स्वयं मामलेकी फरियाद करनेके लिये ईलिज़बेथके पास इंग्लैण्ड चली। इधर तो ईलिज़बेथने स्काटलैण्डवालोंके इस प्रकार अपनी रानीको गद्दीसे उतार देनेके अधिकारका खण्डन किया, उधर चालाकीसे अपनी प्रतिद्वन्दिनी रानीको बन्दी भी कर रक्खा।

कुछ समयके पश्चात् ईलिज़बेथको यह प्रतीत होने लगा कि कैथलिक मतवालोंके साथ अब रियायत करनेसे काम नहीं चल सकता। संवत् १६२६ में आंग्ल देशके उत्तरीय प्रदेशमें विद्रोह खड़ा हुआ जिससे यह स्पष्ट होगया कि यहांके अधिकतर लोग कैथलिक धर्मको स्थापित करनेके लिये मेरीको स्वतन्त्र कर आंग्ल देशकी गद्दीपर बैठाना चाहते हैं। इधर पोपने ईलिज़बेथका धार्मिक बहिष्कार कर दिया और साथही साथ उसकी प्रजाको धर्मविरोधी शासकके अधिकार न माननेके दोषसे बरी कर दिया। ईलिज़बेथके भाग्यसे विद्रोही लोगोंको न तो अलवासेही और न फ्रांसके राजासे ही सहायताकी आशा थी। स्पेनवालोंको अपने देश नेदरलैण्डके ही झगड़ोंसे अवकाश नहीं था और नवम चार्ल्स जिसने कालिन्यीको अपना मन्त्री बना लिया था, ह्यूगेनाट लोगोंसे सहमत था। उत्तरीय प्रदेशका विद्रोह तो दबा दिया गया, पर आंग्ल देशके कैथलिकोंमे विश्वासघातके चिन्ह अब भी दिखा दिया देते थे और उन्हें फिलिपसे सहायताकी भी आशा थी। उन लोगोंने अलवाको छ सहस्र स्पेनी सैनिक लेकर आंग्ल देशपर चढ़ाई करने और ईलीज़बेथको उतार कर स्काटलैण्डकी रानी मेरीको सिंहासनारूढ़ करनेके लिये लिखा। अलवा चिन्तामें पड़ गया क्योंकि इसकी सम्मतिमें ईलीजबेथको मार डालना अथवा कमसे कम बन्दी कर लेना बहुत अच्छा था, पर इस मामलेका पता लग गया और सब बातें ज्योंकी त्यों रह गईं।

यद्यपि फिलिपने इग्लैंडको नुक्सान करनेमें अपनेको असमर्थ पाया तो भी इग्लैंडके नाविकोंने हालैंड-निवासी 'समुद्री भिक्षुओं'की तरह स्पेनको बहुत नुक्सान पहुंचाया। इंग्लैंड और स्पेनके बीच खुल्लमखुल्ला युद्धकी घोषणा न होते हुए भी अंग्रेज नाविकोंने 'वेस्ट इण्डीज' (पारचर्मो) [illegible] तक उत्पात मचाना शुरू किया। उन्होंने इस दृढ विश्वासपर सोनेके [illegible] के जहाज पकड़ लिये कि फिलिपकी सम्पत्ति लूटकर हम परमात्माकी सेवा कर रहे हैं। सर फ्रांसिस ड्रेकने तो साहसपूर्वक प्रशान्त सागरमें प्रवेश किया, जहां अभी तक केवल स्पेनवाले ही पहुंच पाये थे। वे अपने 'पेलिकन' जहाजमें बहुत सा लूटका माल लादकर लौटे। अन्तमें उन्होंने "एक ऐसा जहाज़ पकड़ा जिसमें बहुतसे जवाहरात, चांदीसे भरे तेरह सन्दूक, एक मन सोना तथा २६ टन (टन = २७½ मन) चांदी थी।" फिर उन्होंने पृथिवीके चारों ओर यात्रा की और वापस आकर वे जवाहरात एलिज़बेथको भेंट किये। स्पेनके राजाने बहुत कुछ कहा सुना, पर एलिज़बेथने कुछ ध्यान न दिया।

उपाधि ग्रहण की। मेरीने किंग्स काउटी तथा क्वीन्स काउएटीमें अंग्रेजोंको बसाकर इस सम्बन्धको और भी मजबूत करना चाहा। इससे बड़ा भारी कलह आरम्भ हुआ, जिसका अन्त अधिवासियों द्वारा सारे मूल निवासियोंके मारे जाने पर ही हुआ।

ईलिजवेथको इस वातकी आशंका हुई कि कहीं आयर्लैण्ड कैथलिक धर्म वालोंका कार्यक्षेत्र न बन जाय, क्योंकि उस देशमें प्रोटेस्टेएट मतका बहुत कम प्रचार हुआ था और वहांके लोग सीधे सादे तथा असभ्य थे। इस आशंकाके कारण ही उसका ध्यान आयर्लैण्डकी ओर आकर्षित हुआ। यह आशंका सच निकली। कैथलिक नेताओंने आंग्लदेशपर आक्रमण करनेके लिए आयर्लैण्डमें जाकर सेना रखनेका कई वार प्रयत्न किया। ईलिज़बेथके अफसरोंने इन प्रयासोंको निष्फल किया पर इसके परिणाम स्वरूप अशान्तिके कारण आयर्लैण्डका कष्ट बढ़ता ही गया। कहा जाता है कि फसल न होनेके कारण संवत् १६३६ (सन् १५८२) में तीस सहस्र मनुष्य भूखसे तड़प तड़प कर मर गये।

दक्षिणी नेदरलैण्डमें सैनिकोंकी सफलतासे आंग्लदेशपर आक्रमण करनेके लिए फिलिपका उत्साह बढ़ने लगा। संवत् १६३७ (सन् १५८०) में आंग्लदेशमें दो 'जजूइट' इस लिये भेजे गये कि वहां जाकर वे लोग अपने मतवालोंके दलकी पुष्टि करें और उनसे अनुरोध करें कि यदि कोई बिदेशी सेना रानीपर आक्रमण करे तो वे रानीका साथ छोड़कर उस विदेशीकी सहायता करें। पार्लमेएट अब धार्मिक मामलोंमें कड़ाईसे काम लेने लगी। उसने आंग्ल देशीय उपासनामें भाग न लेने वालों या 'स्तुति' पाठ करने वालोंको अर्थदएड तथा कारावासका दण्ड देना आरम्भ कर दिया। एक जेजूइट तो पकड़ लिया गया और कठिन यन्त्र-णाके बाद विश्वासघातके अपराधमें मारा गया, पर दूसरा निकल भागा।

संवत् १६३६ (सन् १५८२) में फिलिपकी मन्त्रणासे धर्मके द्रोही रानी ईलिजबेथकी हत्याका प्रथम प्रयास हुआ। यह प्रस्ताव [illegible]

इलिज़बेथसे पिंड छूटनेपर गाइज़का ड्यूक कैथलिक मत-विस्तारके लिये आंग्ल देशपर आक्रमण करे। पर तीनों हेनरियोंके युद्धमें गाइज़के फँसे रहनेके कारण आंग्ल देशके आक्रमणका भार केवल फिलिपके ऊपर था।

पर मेरीके भाग्यमें यह प्रयत्न देखना नहीं बदा था। उसने इलिज़बेथ-की हत्याके लिये एक और षड्यन्त्रमें भाग लिया। पार्लमेण्टने देखा कि मेरी जबतक जीवित रहेगी इलिज़बेथकी जान संकटमें रहेगी और मेरीके न रहनेपर फिलिप भी इलिज़बेथको मारनेका प्रयास न करेगा क्योंकि मेरीका पुत्र षष्ठ जेम्स प्रोटेस्टेण्ट था। इन कारणोंसे इलिज़बेथके मन्त्रियों-ने संवत् १६४४ (सन् १५८७) में मेरीको शूलीपर चढ़ानेके लिये फरमान निकालनेको उसे बाधित किया।

नष्ट कर दिये गये या तूफ़ानसे स्वयं नष्ट हो गये। ईलिज़बेथने इस विजयका श्रेय तूफ़ानको ही दिया। आर्मडा (बेड़े) की हारके साथ साथ स्पेनकी ओरसे आक्रमणका भय भी जाता रहा।

यदि द्वितीय फिलिपके राजत्वकालका सिंहावलोकन किया जाय तो विदित होगा कि वह कैथलिक सम्प्रदायके इतिहासकी दृष्टिसे विशेष महत्त्वपूर्ण है। जिस समय वह गद्दीपर बैठा उस समय जर्मनी, नेदरलैंड तथा स्विटजरलैंड करीब करीब प्रोटेस्टेंट मतावलम्बी हो गये थे। हां, आंग्ल देश अवश्य उसकी कैथलिक पत्नी मेरीके शासनके कारण प्राचीन धर्मकी ओर झुकता सा प्रतीत होता था। फ्रांसके शासक विधर्मी काल्विनके अनुयायियोंको देखना भी नहीं चाहते थे। इसके अतिरिक्त जेजूइटकी नयी संस्था स्थापित हुई, जिसने बड़े प्रयत्नसे असन्तुष्ट जनोंको पुनः विश्वास दिलाकर पोपकी प्रधानताको तथा ट्रेंटकी सभाद्वारा अनुमोदित प्राचीन मतके मन्तव्योंको ग्रहण करनेके लिये उद्यत किया। फिलिप अपने देशमें प्रचलित धर्मका विरोध नष्ट करने तथा सारे पश्चिमी यूरोपसे प्रोटेस्टेंट धर्मका लोप करनेके लिये स्पेनकी सम्पूर्ण शक्ति तथा असीम सम्पत्ति प्रदान करनेको सन्नद्ध था।

फिलिपके मरनेपर सब बातें बदल गयीं। आंग्ल देश कट्टर प्रोटेस्टेंट मतावलम्बी हो गया। स्पेनके आर्मडाकी बुरी गति हुई और आंग्ल देशको पुनः रोमन कैथलिक सम्प्रदायका अनुयायी बनानेका फिलिपका सम्पूर्ण प्रयास सर्वदाके लिये विफल हो गया। फ्रांसके भयानक धर्मयुद्धोंका अन्त हो गया, और वहांकी गद्दीपर जो राजा बैठा वह कुछ ही काल पूर्वतक प्रोटेस्टेंट था। वह प्रोटेस्टेंट मत वालोंके साथ केवल रियायत ही नहीं करता था प्रत्युत उसने एक प्रोटेस्टेंटको अपना प्रधान मन्त्री भी बनाया, वह फ्रांसके [illegible] [illegible] हस्तक्षेप भी नहीं सहन कर सकता था। 'संयुक्त नेदरलैंड' नामक एक नया प्रोटे-स्टेंट राज्य फिलिपके पितृदत्त राज्यके [illegible] अन्तर्गत [illegible] [illegible]

अध्याय २८

तीस वर्षीय युद्ध ।

प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथलिक मत वालोंका अन्तिम महायुद्ध जर्मनीमें विक्रमकी सत्रहवीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें हुआ था। यह तीस वर्षीय युद्धके नामसे विख्यात है। वास्तवमें इसे युद्ध न कहकर युद्धोंकी परम्परा कहना चाहिये। यद्यपि युद्ध जर्मनीमें हुआ पर स्पेन, फ्रांस तथा स्वीडनने भी उसमें काफी भाग लिया था।

लूथर मतावलम्बी राजाओंने सम्राट् पञ्चम चार्ल्ससे, उसके पद-त्यागके पूर्व ही, बलपूर्वक अपने धर्म तथा गृहीत सम्पत्तिपर अपना अधिकार स्वीकृत करा लिया था। पहले कहा जा चुका है कि औग्सबर्गकी धर्म सन्धिमें दो बड़ी त्रुटियाँ थीं। पहली तो यह कि केवल लूथरके अनुयायी प्रोटेस्टेण्टोंको ही धार्मिक स्वतंत्रताका अधिकार स्वीकृत किया गया था। कैल्विनके अनुयायी जिनकी संख्या दिन पर दिन बढ़ती जाती थी सन्धिमें सम्मिलित नहीं किये गये। दूसरी यह कि उस सन्धिने प्रोटेस्टेण्ट राजाओंको धर्म-संस्थाकी सम्पत्ति अपहरण करनेसे नहीं रोका।

प्रथम फर्डिनण्डके राज्यावसानके दिनोंमें तथा उसके उत्तराधिकारीके राज्यारम्भके समय प्रायः कोई झगड़ा नहीं हुआ। प्रोटेस्टेण्ट मत वालोंने बड़ी शीघ्रतासे उन्नति कर बवेरिया, आष्ट्रियाके प्रदेश [illegible] पर आक्रमण किया जहाँसे इसके उपदेशोंका प्रभाव कभी [illegible] नहीं हुआ। इस समय ऐसा प्रतीत होता था कि जर्मनीके [illegible] अधिक भाग प्राचीन संस्थासे सम्बन्ध-विच्छेद कर देगा। पर [illegible]

सहायताके लिये योग्य जेजूइट लोग तैयार थे। उन लोगोंने केवल उपदेश देनेका तथा विद्यालय स्थापित करनेका ही काम नहीं किया प्रत्युत जर्मनीके कुछ राजाओंके विश्वासपात्र बनकर वे उनके मंत्री भी होगये। सत्रहवीं शताब्दीका उत्तरार्द्ध धार्मिक युद्ध छेड़नेके लिये बड़ा ही अनुकूल समय था।

डोनावर्थ नगरमें लूथरमतवालोंके कैथलिक सम्प्रदायका एक मठ था। संवत् १६६४ (सन् १६०७) में जब उसके महन्त जुलूसके साथ नगरमें घूम रहे थे तब प्रोटेस्टेण्ट लोगोंके एक दलने उनपर आक्रमण कर दिया। यह नगर बवेरियाके ड्यूक मक्सीमीलियनके राज्यकी सीमापर था। वह कट्टर कैथलिक था, इस कारण उसने इस अत्याचारके लिये दण्ड देना चाहा। उसने सेनाके साथ डोनावर्थमें प्रवेशकर कैथलिक मठकी पुनः स्थापना की और लूथरके सम्प्रदायके आचार्यको भगा दिया। परिणाम यह हुआ कि प्रोटेस्टेण्ट मतवालोंने पैलेटिनेटके इलेक्टर फ्रेडरिकके नेतृत्वमें एक प्रोटे-स्टेण्ट संघ स्थापित किया। इस संघमें सम्पूर्ण प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बी राज्य सम्मिलित नहीं थे, उदाहरणार्थ लूथरके अनुयायी सैक्सनीके इलेक्टरने कॉल्विनके अनुयायी फ्रेडरिकके साथ किसी प्रकारका सम्बन्ध रखनेसे इनकार कर दिया। दूसरे वर्ष कैथलिक मतवालोंने भी फ्रेडरिककी अपेक्षा अधिक योग्य नेता बवेरियाके ड्यूक मक्सीमीलियनके नेतृत्वमें कैथलिक लीग नामक एक संघ स्थापित किया।

बाहर फेंक दिया। सरकारके अन्यायपूर्ण कार्योंका इस भांति जोरदार विरोध कर बोहीमियाने पुनः स्वतन्त्र होनेका प्रयत्न किया। हैप्सवर्गका शासन न मानकर बोहीमियावालोंने पैलेटिनेटके इलेक्टर फ्रेडरिकको अपना राजा बनाया। इसे राजा बनानेमें उन्हें दो बातोंका लाभ देख पड़ा, एक तो वह प्रोटेस्टेण्ट संघ (युनिअन) का प्रधान था, दूसरे वह आंग्ल देशके राजा प्रथम जेम्सका जामाता था जिससे उन्हें सहायता मिलनेकी आशा थी।

बोहीमियाके इस साहसका परिणाम जर्मनी तथा प्रोटेस्टेण्ट मतके लिये बहुत ही हानिकारक हुआ। नया सम्राट् द्वितीय फर्डिनण्ड कट्टर कैथलिक तथा बहुत ही योग्य मनुष्य था। उसने लीगसे सहायताके लिये प्रार्थना की। बोहीमियाके नये राजा फ्रेडरिकमें ऐसे अवसरके लिये काफी योग्यता न थी। उसका तथा उसकी पत्नी कुमारी ईलिजबेथका प्रजापर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा और उन लोगोंको लूथर मतावलम्बी सैक्सनीके इलेक्टरसे भी सहायता नहीं मिली। संवत् १६७७ (सन् १६२०) में 'हेमंत-नरेश'* पहले ही युद्धमें मैक्सीमीलियन द्वारा संचालित संघकी सेनासे पराजित हो भाग खड़ा हुआ। सम्राट् तथा बवेरियाके ड्यूक दोनों मिलकर प्रोटेस्टेंट मतको अपने राज्यसे निर्मूल करनेका कठिन प्रयत्न करने लगे। सम्राट्ने सभाकी अनुमति लिये विनाही मैक्सीमीलियनको पेलेटिनेटका पूर्वी भाग देकर उसे इलेक्टरकी पदवीसे विभूषित कर दिया।

अब प्रोटेस्टेण्ट मत वालोंके लिये कठिन समय आ रहा था। आंग्ल देश भी इसमें हस्तक्षेप किये विना न रहता, पर प्रथम जेम्सको विश्वास था कि मैं केवल अपने व्यक्तिगत प्रभावसे ही यूरोपमें शान्ति स्थापित कर दूंगा और राजा फ्रेडरिकको पैलेटिनेट वापस देनेके लिये सम्राट् तथा बवेरियाके ड्यूक मैक्सीमीलियनको बाधित करूंगा। फ्रांस भी चुपचाप न बैठा क्योंकि यद्यपि उस समयके प्रधान रीशल्ये † भी प्रोटेस्टेण्ट लोगोंके विरो-

---

*फ्रेडरिककी व्यंग सूचक उपाधि; केवल हेमन्तऋतु भर ही बोहीमिया-का राज्य कर पाया था। † Richelieu.

प्रकारकी सहानुभूति नहीं थी, तो भी वह ईव्सवर्ग वालोंसे और भी द्वेष रखता था। किन्तु उस समय वह लाचार था क्योंकि वह ह्यूगनाटोंसे उनके प्रधान नगरोंको छीन लेनेके प्रयत्नमें लगा हुआ था।

पर भाग्यवश एक बाहरी घटनाने परिस्थिति बिलकुल पलट दी। संवत् १६८२ (सन् १६२५) में डनमार्कके राजा चतुर्थ क्रिश्चियनने अपने सहधर्मी प्रोटेस्टेण्ट वालोंकी रक्षा करनेके लिये उत्तरी जर्मनीपर आक्रमण किया। कैथलिकसंघकी सेना तो उसका सामना करनेके लिये तैयार हो गयी, साथ ही वालेन्स्टाइनने अपनी अध्यक्षतामें एक और सेना तैयार की। सम्राट् दरिद्र हो गया था, इस कारण उसने इस उत्साही बोहेमियन सरदारकी प्रार्थनाको स्वीकार कर लूटमार तथा अपहरणसे अपना निर्वाह कर सकने वाली एक सेना तैयार करनेकी मंजूरी दे दी। उत्तरी जर्मनीमें क्रिश्चियन दो बार बुरी तरह पराजित हुआ और सम्राट्की सेनाने उसके प्रायद्वीपपर भी चढ़ाई कर दी। संवत् १६८६ (सन् १६२९) में उसने युद्धसे अलग होनेकी प्रतिज्ञा की।

था। संघने भी इसका समर्थन करना आरम्भ किया। सम्राट्ने उस सेनापतिको अलग कर दिया। ऐसा करनेसे उसे अपनी सेनाका एक बड़ा भाग भी खो देना पड़ा। जिस समय कैथलिक सम्प्रदाय वालों-की शक्ति इस प्रकार क्षीण हो रही थी, उसी समय उन्हें एक और बड़े भारी शत्रुका सामना करना पड़ा। वह स्वीडनका राजा गस्टवस अडाल्फस था।

इसके पहले हमें स्कैंडिनेवियाके नार्वे, स्वीडन तथा डेनमार्कके राज्यों-के संबंधमें कुछ भी कहनेका अवसर नहीं प्राप्त हुआ था। इन राज्योंकी स्थापना शार्लमेनके समयमें उत्तरीय जर्मनीके रहने वालोंने की थी। अब उन लोगोंने भी मध्य यूरोपके कार्योंमें भाग लेना आरम्भ किया। पूर्वमें ये राज्य अलग अलग थे पर संवत् १४५४ (सन् १३९७) में कामरकी संधि-से ये सब एक राज्यमें संगठित हो गये। जिस समय जर्मनीमें प्रोटेस्टेण्ट मतका विद्रोह आरम्भ हुआ उस समय स्वीडनके अलग हो जानेके कारण यह गुट्ट टूट गया। स्वीडनके एक कुलीन गस्टवस वासाने इस विच्छेद-आन्दोलनका आरम्भ किया था और बादमें वहाँ वहांका प्रथम राजा बनाया गया। उसी साल वहाँपर प्रोटेस्टेण्ट मतका प्रचार भी हुआ। गस्ट-वसने धर्म-संस्थाकी भूमि छीन ली और कुलीनजनोंको अपने वशमें कर स्वीडनको राष्ट्रीय अभ्युदयके मार्गपर प्रवृत्त किया। उसके उत्तराधि-कारीके समयमें बाल्टिक समुद्रका पूर्वी तट जीत लिया गया और रूसके निवासी समुद्रके लाभसे वञ्चित कर दिये गये।

गस्टवसके आक्रमणके दो कारण थे। पहले तो वह स्वयं तथा उसकी [illegible] प्रोटेस्टेण्ट था और अपने समयका सबसे उदार तथा प्रसिद्ध राजा था। सहधर्मी प्रोटेस्टेण्ट मत वालोंकी विपत्तिसे उसे विशेष दुःख हुआ और वह उनके कल्याणके लिये चिन्तित हुआ। दूसरे वह अपने राज्यको इतना विस्तृत करना चाहता था जिससे किसी दिन बाल्टिक समुद्र स्वीडन राज्यके अन्तर्गत एक झीलकी तरह हो जाय। उसे इसमें [illegible]

अपने सहधर्मियोंको सम्राट्की तथा कैथलिक संघकी यातनासे छुड़ा सकूँ और स्वीडनके लिये कुछ भूमि भी हस्तगत कर सकूँगा ।

पहले तो जर्मनीके उत्तर प्रदेशीय प्रोटेस्टेण्ट राजाओंने गस्टवसका हार्दिक स्वागत नहीं किया, परन्तु जब सेनापति टिलीके सेनापतित्वमें कैथलिक संघकी सेनाने मागडेबर्ग नगरको नष्ट कर दिया तब उनकी आँखें खुलीं । यह उत्तरीय जर्मनीका सबसे प्रधान नगर था । बड़े कठिन तथा दीर्घ घेरावके उपरान्त इसका पतन हुआ । इसके बीस सहस्र निवासी मार डाले गये और नगर जला दिया गया । यद्यपि निर्दयतामें टिली वालेन्स्टाइनसे किसी प्रकार कम नहीं था तो भी सम्भवतः आग लगवानेका दायित्व उसके ऊपर न था। गस्टवस तथा टिलीसे लीपज़िकके समीप मुठभेड़ हुई जिसमें टिलीकी सेनाने गहरी हार खायी । अब प्रोटेस्टेण्ट राजाओंने विदेशी राजा गस्टवसका विशेष सम्मान किया । इसके पश्चात् गस्टवस पश्चिमकी ओर बढ़ा । उसने शीतकाल राइन नदीके किनारे व्यतीत किया ।

लोग इधर उधर लोगोंपर छापा मारा करते थे। उनके सैनिकोंने अकथनीय क्रूरतासे उस देशको मटियामेट कर डाला। वालेंस्टाइनने रीशल्ये तथा जर्मनीके प्रोटेस्टेण्ट राजाओंके साथ गुप्त सन्धि कर ली, इससे कैथलिक मतवालोंको उसपर सन्देह होने लगा। इस विश्वासघातकी वार्ता सम्राट्के कानों तक पहुची। वालेंस्टाइनको कैथलिक लोग पहिले भी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, अब उसके सैनिकोंने भी उसका साथ छोड़ दिया और वह संवत् १६६१ (सन् १६३४) में मार डाला गया। उसकी मृत्युसे सब दलके लोगोंको शांति मिली। उसी वर्ष सम्राट्की सेनाने नर्डलिंगनके युद्धस्थलमें विजय प्राप्त की। रक्तपातकी दृष्टिसे यह युद्ध अत्यन्त भयानक और जय-पराजयका स्पष्ट निर्णय कर देनेवाला था। इसके थोड़े ही दिनोंके पश्चात् सैक्सनीके इलेक्टरने स्वीडनकी सेनाका साथ छोड़ कर सम्राट्से सन्धि कर ली। ऐसा प्रतीत होता था कि युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जायगा क्योंकि जर्मनीके कितने ही अन्य राजा शस्त्र रख देने पर सन्नद्ध थे।

इसी समय रीशल्येने सोचा कि यदि सम्राट्के प्रतिकूल सेना भेजकर हैप्सबर्गके साथ प्राचीन युद्ध पुनः आरम्भ किया जाय तो इससे फ्रांसको विशेष लाभ होनेकी सम्भावना है। पंचम चार्ल्सके समयसे ही फ्रांस हैप्सबर्ग राज्यकी भूमिसे घिरा हुआ था। समुद्रकी ओरके हिस्सेको छोड़कर उसकी सीमा बनावटी ही थी, जो किसी नदी या पहाड़से नहीं बनी थी। इस कारण फ्रांस दक्षिणके रुसीयन प्रान्तकी विजयसे अपने शत्रुको निर्बल कर अपनी शक्ति बढ़ाना चाहता था और पिरीनीज पर्वतको फ्रांस तथा स्पेनका विभाजक बनाना चाहता था। बर्गण्डी प्रान्त लेकर वह राइनकी ओर भी अपना अधिकार बढ़ाना चाहता था। उधर ओर बहुत से सुदृढ़ दुर्ग भी थे, उन्हें भी वह अपनेको स्पेनके अधीन नेदरलैंडसे रक्षित रखनेके लिये ले लेना चाहता था।

तीस वर्षीय युद्धकी तरफसे रीशल्ये किसी प्रकार उदासीन न था। उसने ही स्वीडनके राजाको युद्धमें प्रवृत्त होनेके लिये उत्साहित किया था

(तृतीय फर्डिनण्ड) ने एक डोमिनिकन महन्तको कार्डिनल रीशल्येके पास इसलिये भेजा कि वह रीशल्येसे जिसने प्राचीन धर्मके अनुयायी आष्ट्रियाके प्रतिकूल जर्मनी तथा स्वीडनके धर्मविरोधियोंकी सहायता करनेका पाप किया था, इस सम्बन्धमे तर्क-वितर्क करे।

पर कार्डिनल रीशल्ये ठीक इसी समय अपनी कूटनीतिकी सफलतासे सन्तुष्ट होकर परलोक सिधार चुका था। रुसीयन, अर्ट्वा, लोरेन तथा आलजास फ्रांसवालोंके अधिकारमें थे। चतुर्दश लुईके राज्यके आरम्भ-कालमें फ्रांसके सेनापति टूरेन तथा काण्डेके सैनिक कार्योंसे यही प्रकट होता था कि नये युगका आरम्भ हो रहा है और अब स्पेनकी राजनीतिक तथा सांग्रामिक शक्ति उससे पृथक् होकर फ्रांसका आश्रय ग्रहण करेगी।

इस युद्धमें इतने अधिक लोगोंने भाग लिया था और उनके मन्तव्य इतने विभिन्न थे कि सन्धिके लिए सबके सम्मत होने पर भी शर्तोंको ठीक करनेमें कई वर्ष लग गये। यह प्रबन्ध किया गया कि सम्राट् तथा फ्रांससे तो मुन्स्टरमे और सम्राट् तथा स्वीडनसे आसनाब्रुकमें सन्धिकी बातचीत हो, ये दोनों नगर वेस्टफेलियामे थे। चार वर्ष तक सभी राज्योंके प्रतिनिधि एक दूसरेको प्रसन्न करनेका प्रयत्न करते रहे। अन्तमें संवत् १७०५ (सन् १६४८) में वेस्टफेलियाकी दोनों सन्धियोंपर हस्ताक्षर कर दिये गये। उक्त सन्धिकी शर्तें फ्रांसकी राज्यक्रान्तिके समय तक यूरोपके अन्तर्राष्ट्रीय विधानोंकी आधारभूत थीं।

औग्सबर्गकी सन्धिकी शर्तोंमें लूथरके अतिरिक्त कैल्विनके अनुयायियोंको भी धार्मिक स्वतंत्रता दे कर जर्मनीका धार्मिक आन्दोलन समाप्त किया गया। 'पुनः-प्राप्ति' की आज्ञापर ध्यान न देकर जर्मनीके प्रोटेस्टेंट राजाओंको वह भूमि अपने अधिकारमे रखनेका अधिकार दिया गया जो संवत् १६८० (सन् १६२३) मे उनके अधिकारमें थी और प्रत्येक राजाको अपने राज्यमें अपनी इच्छानुसार अपने राज्यका धर्म निश्चित करनेकी स्वतंत्रता भी दी गयी। इसके अतिरिक्त जर्मनीके सब राज्योंको आपसमें

न की जानी चाहिये । चार्ल्सने बड़ी अनिच्छासे राजाकी शक्तिका नियं-त्रण करने वाले उन प्रतिबन्धकोंकी पुनर्घोषणा स्वीकार की जिन्हें अंग्रेज लोग हमेशासे ही, कमसे कम सिद्धान्ततः, मानते चले आ रहे थे ।

चार्ल्स और पार्लमेण्टका झगड़ा धार्मिक मतभेदके कारण और भी गुरुतर हो गया । राजाका विवाह कैथलिक धर्मकी राजकुमारीके साथ हुआ था और यूरोप महाद्वीपके देशोंमें भी कैथलिक मतकी ही वृद्धि होती नजर आती थी । डेनमार्कका प्रोटेस्टेण्ट राजा हालमें ही वालेन्स्टाइन तथा टिली द्वारा पराजित हुआ था और रीशल्येने ह्यूगेनाटोंको उनके आश्रयस्थानोंसे भगा देनेमें सफलता प्राप्त की थी । जेम्स तथा चार्ल्स दोनोंने ही इंग्लैण्डके कैथलिकोंकी रक्षाके लिये फ्रांस व स्पेनसे युद्ध छेड़ देनेकी तत्परता दिखलायी थी । इसके अतिरिक्त इंग्लैण्डमें धर्मसंस्थाकी प्राचीन रीति-रस्मोंकी ओर लोगोंकी प्रवृत्ति फिर बढ़ने लगी थी, जिसे देखकर कामन्स सभाके अधिक कट्टर प्रोटेस्टण्ट सदस्य विशेष चिन्तित हुए । कई पादरियोंने 'काम्यूनियन टेबिल' (जिसपर पवित्र धार्मिक भोजकी रस्म की जाती है) गिरजाघरके पूर्वी हिस्सेमें फिरसे रख दी, जहाँ वह [illegible] तरह अटल हो गयी, और ईश-प्रार्थनाके कुछ अंश फिर गाये जाने लगे ।

लोग समझते थे कि कैथलिक सम्प्रदायके अनुयायियोंकी इन रस्मोंके साथ राजाकी भी सहानुभूति है, इस कारण राजा तथा [illegible] के बीच, जिसका आवाहन उसने स्वयं ही अपनी आवश्यकताके [illegible] कर-वृद्धिकी स्वीकृतिके लिये किया था, पारस्परिक मनोमालिन्य बढ़ता गया । घोर वादविवादके पश्चात् संवत् १६८६ (सन् १६[illegible]) में पार्लमेण्ट राजाने भंग कर दी और भविष्यत्‌में [illegible] देशका शासन करनेका निश्चय किया । ग्यारह वर्षोंतक [illegible] पार्लमेण्ट-का उद्‌घाटन नहीं किया गया ।

स्वभावसे ही प्रथम चार्ल्स स्वेच्छापूर्वक शासन करनेके [illegible] था । इसके सिवा उसके मन्त्री पार्लमेण्टकी सहमति [illegible]

प्राप्त करनेका यत्न करते थे उनके कारण राजा और भी अप्रिय होता गया और साथ ही पार्लमेण्टकी सत्ताके पुनरुद्धारका समय भी निकट आता गया।

इंग्लैण्डमें एक पुराना कानून यह था कि जो लोग एक निश्चित क्षेत्रकी भूमिके अधिकारी हों वे 'नाइट' अवश्य बनाये जायँ, किन्तु जागीरदारीकी प्रथा उठ जानेपर जमीन्दारोंने 'नाइट' की पदवी प्राप्त करना छोड़ दिया था, क्योंकि अब उसका महत्त्व नहीं रह गया था। यह देखकर राजाके समर्थकोंने सोचा कि इन 'कर्तव्य-विमुख' लोगोंपर जुर्माना करनेसे बहुतसा द्रव्य मिल सकता है। इनके अतिरिक्त जो बहुत-से राजाके लिये रक्षित जंगलोंकी सीमाके भीतर बस गये थे उनपर भी भारी जुर्माना किया गया या उनका [illegible] किया गया।

विश्वास था कि रोमकी धर्मसंस्था (पोप-परिचालित कैथलिक सम्प्रदाय) तथा जेनीव्हाकी कैल्विनिस्टिक (प्रोटेस्टेण्ट) धर्मसंस्थाके मध्यवर्ती मार्गका अवलम्बन करनेसे इंग्लैण्डकी धर्मसंस्थाकी और साथ ही सरकारकी भी शक्ति बढ़ेगी। उसने घोषित किया कि प्रत्येक अच्छे नागरिकको राज्यकी ईश-स्तुति-विधिको कमसे कम ऊपरसे ही मंजूर कर लेना चाहिये, हां बाइबिलका तथा धर्मके प्राचीन लेखकोंका अपनी इच्छाके अनुसार अर्थ करनेमें वह स्वतंत्र है। उसमें राज्य हस्तक्षेप न करेगा। जब लॉड अपने प्रान्तका दौरा करने निकला तब जो पादरी राज्यकी प्रार्थना-पुस्तकको अंगीकार न करता, या 'काम्यूनियन टेबिल' उठा कर गिरजा घरके पूर्वी भागमें रखी जानेका विरोध करता, अथवा ईसाका नाम लेनेपर मस्तक न नवाता, वह, हठ करनेपर, राजाके विशेष धार्मिक न्यायालय (कोर्ट आफ हाई कमीशन) के सामने पेश किया जाता। दोषी साबित होनेपर गिरजेमें उसका जो पद होता वह उससे छीन लिया जाता।

प्रोटेस्टेण्टोंके दो दलोंमेंसे एक अर्थात् 'सौम्य प्रोटेस्टेण्ट दल' (हाई चर्च पार्टी) वाले विलियम लॉडकी नीतिसे प्रसन्न हुए। ये लोग रोमन कैथलिक सम्प्रदायके धार्मिक भोज (मास) की प्रथा तथा पोपके आधिपत्यको न मानते हुए भी अब भी उक्त सम्प्रदायकी कई प्राचीन रस्मोंके पक्षमें थे। किन्तु 'कट्टर प्रोटेस्टेण्ट दल" (लो चर्च पार्टी) वाले जिन्हें प्यूरिटन भी कहते हैं लॉडकी नीतिके विरोधी थे। ये लोग धर्माध्यक्षोंका पद जारी रखनेके खिलाफ न थे, पर पादरियोंका कोई खास पोशाक पहिनना, बपतिस्माके समय 'क्रास'(+)का चिन्ह धारण करना, इत्यादि [illegible] रीतियोंसे उन्हें चिढ थी। प्रेस्बीटेरियन दलवाले प्यूरिटनोंसे ही मिलते-जुलते थे। हां एक दो बातोंमें वे इनसे भी बढ़े हुए थे और धर्मसंस्थाकी व्यवस्थामें कैल्विनकी प्रणालीका अनुगमन करना चाहते थे।

इनके अतिरिक्त एक 'स्वतंत्र प्रोटेस्टेण्ट दल' ([illegible] या सेपरेटिस्ट्स) भी था। इस दलवाले न तो इंग्लैण्डकी धर्मसंस्थाके [illegible]

हस्ताक्षर करने वालोंने यह प्रतिज्ञा की कि हम 'गास्पेल' ('सुसमाचार', ईसाका उपदेश) की पवित्रता और स्वतंत्रता पुनः स्थापित करेंगे। हस्ताक्षर करने वाले अधिकसंख्यक सदस्योंके मतसे इसका अर्थ प्रेस्बीटेरियन मतका प्रसार करना ही था। यह देखकर चार्ल्सने स्काट लोगोंको बलपूर्वक दबाना चाहा। पैसा पासमें न होनेके कारण उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनीके जहाजोंमें आयी हुई काली मिर्च उधार खरीद ली और उसे सस्ते भावसे बेचकर नकद धन वसूल कर लिया। किन्तु जिन सैनिकोंको उसने स्काट लोगोंसे लड़नेके लिये एकत्र किया उन्होंने इसमें विशेष उत्साह न दिखलाया, अतः अन्तमें विवश हो कर चार्ल्सने पार्लमेण्टको आमंत्रित किया। यह कई वर्षोंतक कायम रहनेके कारण 'लम्बी पार्लमेंट' कहलाती है।

लम्बी पार्लमेण्टने सबसे पहिले राजाके कृपाभाजन मन्त्री स्ट्रैफर्डको त[illegible] प्रधान धर्माध्यक्ष विलियम लॉडको 'टावर आफ लण्डन' (लन्दन दुर्ग) में कैद कर दिया। पार्लमेण्टके बिना शासन करनेमें राजाको विशेष सहायता करनेके कारण ही स्ट्रैफोर्डसे कामन्स सभा बहुत चिढ़ गयी थी। उसपर राज्यको दगा देनेका दोष लगाया गया। [illegible] १६[illegible] में उसे फांसी दे दी गयी। चार वर्ष बाद लॉडकी भी यही दशा हुई। पार्लमेण्टने अपनी स्थिति दृढ़ करनेके उद्देश्यसे एक 'त्रिवर्षीय विधान' [illegible] जिसके अनुसार तीन वर्षमें कमसे कम एक बार पार्लमेण्टका [illegible] आवश्यक था, चाहे राजा उसे आमन्त्रित करे या न करे। '[illegible]' नामका विशेष न्यायालय तथा 'हाई कमीशन कोर्ट' नामक [illegible] न्यायालय—ये दोनों, जिनके द्वारा राजाके कई विरोधियोंको [illegible] दी गयी थी, तोड़ दिये गये और 'नौका-निर्माण-[illegible]' ([illegible]) का लेना कानून-विरुद्ध घोषित किया गया। [illegible] से द्रव्य तथा सैनिक मँगानेका प्रयत्न कर रहा [illegible]। [illegible] स्काटलैण्ड गया तो यह शंका की गयी कि वह [illegible] गया है। परिणाम यह हुआ कि पार्लमेण्टने एक '[illegible]'

(विस्तृत विरोधपत्र) तैयार किया। इसमें चार्ल्सकी सब गलतियोंकी फेहरिस्त दी गयी थी और इस बातपर जोर दिया गया था कि भविष्यत्‌में राजाके मंत्री पार्लमेण्टके सामने उत्तरदायी हों। पार्लमेण्टने इस विरोधपत्रको छपवाकर सारे देशमें वितरित करनेकी आज्ञा दी।

कामन्स सभासे तंग आकर चार्ल्सने पांच मुख्य नेताओंको गिरफ्तार करनेकी धमकी देकर विरोधियोंको डराना चाहा। किन्तु जब वह कामन्स सभामें पहुंचा तो उसे विदित हुआ कि उक्त नेताओंने नगरमें आश्रय लिया है। बादमें लन्दन-निवासी उन्हें फिर, खुशी मनाते हुए वेस्टमिन्स्टर वापस ले आये।

(संवत् १७०१) और फिर अगले वर्ष नेजबीका युद्ध हुआ जिसमें राजाको गहरी शिकस्त खानी पड़ी। राजाकी चिट्ठी-पत्रियोंका संग्रह उसके शत्रुओंके हाथ लगा, जिससे उन्हें विदित हो गया कि किस तरह वह फ्रांस तथा आयर्लैण्डकी सेना इंग्लैण्डमें लानेका प्रयत्न कर रहा था। यह देख कर पार्लमेण्टने युद्धमें अपनी और भी अधिक शक्ति लगा दी। कई स्थानों-पर परास्त होकर राजाने संवत् १७०३ में पार्लमेण्टकी मददके लिये आयी हुई स्काटलैण्डकी सेनाकी शरण ली। स्काटलैण्डवालोंने उसे शीघ्र ही पार्लमेण्टके हवाले किया। इसके बाद दो वर्ष तक चार्ल्सने, बन्दीकी ही हालतमें, बारी बारीसे भिन्न भिन्न दलोंके साथ सन्धिकी बातचीत की, किन्तु उसने सबोंको धोखा दिया।

कामन्स सभामें ऐसे बहुतसे मनुष्य थे जो अब भी राजाके पक्षमें थे। पौष १७०५ (दिसम्बर १६४८) में, राजाको वाइट द्वीपमें कैद करनेके बाद, इन लोगोंने उसके साथ समझौता करनेका प्रस्ताव किया। किन्तु सैनिकोंका दल इसके विरुद्ध था। दूसरे ही दिन उनका एक प्रति-निधि 'कर्नल प्राइड' थोड़ेसे सैनिकोंको साथमें लेकर सभा-भवनके द्वारपर खड़ा हो गया और राजाका पक्ष लेने वाले सदस्योंको प्रवेश करनेसे रोकने लगा। यह जबरदस्ती इतिहासमें प्राइड्ज पर्ज (प्राइड-द्वारा कामन्स सभाकी सफाई) के नामसे प्रसिद्ध है।

इस प्रकार कामन्स सभामें अब उन्हीं लोगोंका बहुमत रह गया जो राजाके कट्टर विरोधी थे। उन्होंने राजापर मुकदमा चलानेका प्रस्ताव किया। उन्होंने कहा कि जनता द्वारा निर्वाचित होनेके कारण कामन्स सभा ही इंग्लैण्डमें आधिपति सत्ता है और सारी [illegible] केन्द्र वही है, इसलिये किसी मामलेपर विचार करनेके लिये न तो राजाकी आवश्यकता है और न लार्ड-सभाकी। इस अवशिष्ट पार्लमेण्ट-ने एक विशेष उच्च न्यायालय स्थापित किया जिसके सदस्य [illegible] ही न्यायाधीश बने। उनके फैसलेके अनुसार १७ [illegible], संवत् १७०[illegible]

हत्या कर डाली। एक नगरके बाद दूसरे नगरने क्रॉमवेलके हाथ आत्म-समर्पण किया और संवत् १७०६ मे आयर्लैण्डको दुबारा जीतनेका काम समाप्त हुआ। उसका एक बड़ा हिस्सा छीनकर अंग्रेजोंको दे दिया गया और वहाके जमीदार पहाड़ोंपर भगा दिये गये। इधर संवत् १७०७ में द्वितीय चार्ल्स स्काटलैण्ड पहुंचा। प्रेस्बीटेरियन मतालम्बी राजा बनना स्वीकार करनेपर सारा स्काटलैण्ड उसकी मददके लिये तैयार हो गया। किन्तु स्काटलैण्डका दमन करनेमें आयर्लैण्डसे भी कम समय लगा।

यह सच है कि क्रॉमवेलको घरके ही मामलोंसे फुरसत न थी, फिर भी वह देशके बाहर डच लोगोंको भी परास्त करनेमें समर्थ हुआ। ये लोग इस समय इंग्लैण्डके व्यापारिक प्रतिद्वन्द्वी हो गये थे। हॉलैण्डके आम्स्टरडम तथा राटरडम नगरोंसे चलनेवाले जहाज संसारके व्यापारी जहाजोंमें सबसे अच्छे थे। यूरोप तथा उपनिवेशोंके बीच माल लाने-लेजानेका काम इन्हींके हाथमें था। यह देखकर इंग्लैण्डकी पार्लमेण्टने एक 'नेव्हीगेशन एक्ट' (समुद्रयात्रा विधान) बनाया। इसके अनुसार इंग्लैण्ड आनेवाला माल केवल अंग्रेजी जहाजोंद्वारा ही पहुंचाया जा सकता था, या फिर जिस देशका माल हो उसी देशके जहाज उसे इंग्लैण्ड ले जा सकते थे, अन्य देशके नहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि हॉलैण्ड और इंग्लैण्डमें व्यापारिक युद्ध छिड़ गया। यह पहला ही युद्ध था, जिसका कारण पूर्वके युद्धोंकी तरह धार्मिक या राजनैतिक न होकर व्यापारिक प्रतियोगिता था।

प्रथम चार्ल्सकी तरह क्रॉमवेलसे भी अधिक दिनों तक पार्लमेण्टकी नहीं बनी। अवशिष्ट पार्लमेंटके सदस्य घूस लेने तथा सार्वजनिक पदों-पर अपने ही सम्बन्धियोंको नियुक्त करनेका प्रबन्ध करनेके कारण बदनाम हो गये। निदान क्रॉमवेलने तंग आकर इस अन्याय और [illegible]-[illegible]ताके निमित्त उन्हें खूब फटकारा। एक सदस्यके बीचमें [illegible] उठनेपर उसने कहा "ठहरिये, ठहरिये, अब बहुत हुआ। मैं इस [illegible]

अन्त किये देता हूं। यह उचित नहीं है कि आप लोग यहां अधिक समय तक बैठें"। यह कहकर उसने अपने सैनिकोंको बुलाकर सदस्योंको सभाभवनके बाहर निकलवा दिया। इस प्रकार वैशाख १७१० में लंबी पार्लमेंटका अन्त कर उसने स्वयं एक नूतन पार्लमेंट आमंत्रित की। इसमें ऐसे ईश्वरभक्त मनुष्य सम्मिलित हुए जिन्हें उसने या उसकी सेनाके अफसरोंने चुना। इतिहासमें यह पार्लमेन्ट 'बेयरबोन पार्लमेंट' के नामसे प्रसिद्ध है। 'प्रेजगाड बेयरबोन' नामका लन्दनका व्यापारी इसका एक प्रसिद्ध सदस्य था, इसीके कारण पार्लमेंटका यह नाम पड़ा। इन अयोग्य मनुष्योंमें से अधिकांश व्यवहार-कुशल न थे और उन्हें कोई बात समझाना बड़ा कठिन था। एक दिन जाड़ेकी ऋतुमें (पौष १७१०) इनमें से कुछ अधिक समझदार सदस्य बड़े तड़के ही सभाभवनमें पहुंच गये। विरोधियोंको कुछ कहने सुननेका मौका देनेके पहले ही उन्होंने पार्लमेंटके अंत होनेकी घोषणा कर दी और सर्वोच्च अधिकार क्रॉमवेलके हाथ सौंप दिया।

यद्यपि क्रॉमवेलने राजाकी उपाधि ग्रहण नहीं की तो भी 'लार्ड प्रोटेक्टर' (सर्वोच्च संरक्षक) होनेके कारण लगभग पांच वर्षों तक वह राजाके ही समान इंग्लैण्डका अधिपति रहा। आन्तरिक शासनकी सुव्यवस्था करनेमें वह समर्थ नहीं हुआ, किन्तु परराष्ट्रनीतिके सम्बन्धमें उसने असाधारण योग्यता प्रकट की। उसने फ्रांससे मित्रता स्थापित की। अंग्रेजी सेनाने स्पेनपर विजय प्राप्त करनेमें फ्रांसको मदद दी। इसके बदलेमें इंग्लैण्डको डंकर्क तथा पश्चिमी द्वीपपुंजका जमेका द्वीप मिला।

ज्येष्ठ १७१५ (मई १६५८) में क्रॉमवेल बीमार पड़ा और इसी समय इंग्लैण्डमें एक बड़ा तूफान भी उठा। यह देखकर राजाके पक्षपाती 'कैवेलियर' लोग कहने लगे कि राज्यापहारीकी आत्माको ले जानेके लिये स्वयं शैतान आया है। यह सच है कि क्रॉमवेलका अन्तिम समय आ गया था, पर शैतानने उसकी आत्माका कोई नुकसान न किया। उसने अपने सन्तानोंके निमित्त सबके दिलमें स्थान करने [illegible]

था। मृत्युके पहले उसने मर्मस्पर्शी शब्दोंमें यह प्रार्थना की थी—'परमात्मन्, यद्यपि मैं बिल्कुल अयोग्य हूं तो भी तूने अपने मनुष्योंकी भलाई करनेके लिये मुझे अपना तुच्छ साधन बनाया और इस प्रकार अपनी सेवा करनेका अवसर मुझे दिया। उन लोगोंने मुझे बड़ा मान दे रक्खा है, यद्यपि कुछ मनुष्य ऐसे भी हैं जो मेरी मृत्यु चाहते हैं और जो मेरे मरने पर प्रसन्न होंगे। प्रभो, जो लोग इस तुच्छ कीड़ेकी भस्मको पाँवोंके नीचे कुचलना चाहते हैं, उन्हें तू क्षमा कर, क्योंकि वे भी तेरे ही प्राणी हैं। साथ ही इस मूर्खतापूर्ण छोटीसी प्रार्थनाके लिये, प्रभु ईसा मसीहके नातेसे ही मुझे क्षमा कर और यदि तेरी कृपा हो तो मुझे शांति दे। ओम् शान्ति.'

क्रॉमवेलकी मृत्युके बाद उसके लड़के रिचर्डने राजकाज चलानेमें अपनेको असमर्थ पाकर शीघ्रही पदत्याग कर दिया। लम्बी पार्लमेंटके बचे खुचे सदस्य फिर एकत्र हुए, किन्तु वास्तवमें सब अधिकार सैनिकोंके ही हाथमें थे। संवत् १७१७ (सन् १६६०) में जार्ज मौंक जो स्काटलैण्डकी सेनाका अध्यक्ष था अराजकताका दमन करनेके लिये इंग्लैण्ड आया। उसे शीघ्रही यह मालूम हो गया कि अब अवशिष्ट पार्लमेण्टका समर्थक कोई नहीं रहा। उसके सदस्योंने स्वयंही पार्लमेण्टके भंग होनेकी घोषणा कर दी। राष्ट्रने द्वितीय चार्ल्सका स्वागत किया, क्योंकि सैनिकोंके शासनकी अपेक्षा लोग उसका शासन ही बेहतर समझते थे। नई पार्लमेण्टने, जिसमें कामन-सभा तथा लार्ड-सभा दोनों ही सम्मिलित थी राजाके पाससे आये हुए दूतका स्वागत किया और यह निश्चय किया कि "इस देशके प्राचीन तथा मूल कानूनोंके अनुसार शासनका कार्य राजा, लार्ड-सभा तथा कामन-सभाके द्वारा होता है और होना चाहिये।" इस प्रकार प्यूरिटनोंकी राज्यक्रान्ति तथा क्षणिक प्रजातंत्रके बाद स्टुअर्ट वंशकी पुनः स्थापना हुई।

अपने पिताकी ही तरह द्वितीय चार्ल्स भी अपनी इच्छाके मुताबिक चलना ज्यादा पसन्द करता था, पर वह प्रथम चार्ल्सकी अपेक्षा अधिक होशियार था। उसे पार्लमेण्टकी इच्छाके अनुसार चलना अच्छा न लगता

था, किन्तु साथही वह देशको अपने विरुद्ध उभाड़ना भी नहीं चाहता था, वह तथा उसके दर्बारी हलके एवं सदाचारके विरुद्ध आमोद-प्रमोद पसन्द करते थे। पुनः स्थापना-कालके नीतिभ्रष्ट नाटकोंको देखनेसे प्रतीत होता है कि जिन लोगोंको प्यूरिटनोंकी सत्ताके कारण उचित आमोद प्रमोद-से वंचित रहना पड़ा था, उन्होंने मानो देशकी प्रथा एवं शालीनताके बन्ध-नोंकी अवहेलना करते हुए मनमाना आनन्दोपभोग करनेकी इच्छासे ही इस अवसरका स्वागत किया।

चार्ल्सकी प्रथम पार्लमेण्टमें दोनों दलोंके सदस्योंकी संख्या प्राय-बराबर ही थी, किन्तु दूसरी पार्लमेण्टमें राजाके पक्षवाले कैवेलियर लोग ही अधिक थे। इसका मत राजाके इतना अनुकूल था कि अठारह वर्षतक राजाने इसका विसर्जन नहीं किया। यद्यपि इसका निपटारा अब भी नहीं हुआ था कि सर्वोच्च अधिकार राजाको प्राप्त है या पार्लमेण्टको, तो भी इस पार्लमेण्टने यह प्रश्न ही नहीं उठाया। किन्तु इसने कई प्रतिकूल कानून बनाकर जो इंग्लैण्डके इतिहासमें विशेष प्रसिद्ध हैं, प्यूरिटनोंके प्रति अवश्य ही अपना विरोध प्रकट किया। इसने यह आज्ञा निकाली कि जो लोग इंग्लैंडकी धर्म-संस्थाके नियमानुसार पवित्र भोज (यूकेरिस्ट) में सम्मिलित नहीं हुए हैं वे म्युनिसिपलिटीके किसी पदपर नियुक्त नहीं हो सकते। प्रेस्बीटेरियन तथा स्वतंत्र दलवालों, दोनोंकी ओर इसका लक्ष्य था। सवत् १७१६ (सन् १६६२ में) यूनीफार्मिटी एक्ट (धार्मिक साम्य-विधान) बनाया गया। इसके अनुसार यदि कोई पादरी सार्वजनिक प्रार्थना पुस्तकको [illegible] न माने तो वह धर्मसंस्थाके किसी पदपर आरूढ़ नहीं रह सकता। इस-पर दो हजार पादरियोंने अपने अन्तःकरणकी स्वतंत्रताके नामपर त्याग-पत्र दे दिया। इन कानूनोंके कारण वे सब लोग, जो इंग्लैंडकी धर्म-संस्थाकी प्रत्येक बातसे सहमत न थे, इस एक ही वर्गमें सम्मिलित होने लगे जो इस समय भी 'डिसेण्टर्स' अर्थात् पृथक्-धर्मावलम्बियोंका दल

कहलाता है। इसमें इगडपेगडेगटस' (स्वतंत्र प्रोटेस्टेंट दलवाले), प्रेस्बाटारयन दलवाले तथा 'बैपृिस्ट' और 'मित्र-सामात' या 'क्वेकर्स' कहे जानेवाले नये दलोंके लोग शामिल थे। इन भिन्न भिन्न सम्प्रदायवालोंने देशके धर्म या राजशासनमें हस्तक्षेप करनेका विचार छोड़ दिया। अब वे केवल इङ्गलैगडकी धर्मसंस्थासे पृथक् अपने निजी तरीकेसे ईश्वरकी उपासना करनेकी स्वतंत्रता चाहते थे।

इस समय सहसा राजाकी ओरसे धार्मिक सहिष्णुताको आश्रय मिला। यद्यपि राजा [illegible] सदाचारी न था तो भी वह धर्ममें काफी दिलचस्पी रखता था और वह भीतर ही भीतर धार्मिक मामलोंमें बड़ा उदार था। उसने पार्लमेगटसे धार्मिक-साम्य-विधानमें कुछ अपवाद जोड़कर उसकी कठोरताको किञ्चित् कम कर देनेके लिए अनुमति मांगा। कैथलिकों तथा इंग्लैगडकी धर्मसंस्थासे सहमत न होनेवालोंकी स्थितिका सुधार करनेके अभिप्रायसे उसने धार्मिक सहिष्णुताके पक्षमें एक घोषणा भी निकाली। इससे यह शंका उत्पन्न हुई कि इस सहिष्णुताके कारण कहीं इंग्लैगडके धार्मिक मामलोंपर पुनः पोपका आधिपत्य न स्थापित हो जाय। अतः पार्लमेगटने संवत् १७२१ (सन् [illegible]) में 'कनवागटाकल एक्ट' (प्रतिकूल धर्म सभा-विधान) नामका कठोर कानून बना दिया। जो मनुष्य किसी ऐसी सभामें सम्मिलित होता जो इंग्लैगडकी धर्मसंस्थाके अनुकूल न हो उसे इस कानूनके अनुसार किसी दूरस्थ उपनिवेशमें निर्वासित [illegible] तकका दगड दिया जा सकता था। कुछ वर्षोंके बाद चार्ल्सने पुनः एक घोषणा द्वारा रोमन कैथलिक मतवालों तथा 'पृथक्-धर्म-[illegible]' (डिसेगटर्स) की पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता स्वीकार की। पार्लमेगटने राजाको केवल अपना उदार मन्तव्य वापस करनेके लिये ही विवश नहीं किया प्रत्युत उसने एक 'टस्ट एक्ट' (परीक्षात्मक नियम) भी बना दिया जिसके अनुसार आंग्लदेशीय धर्मसंस्थाको न माननेवाले [illegible] के अधिकारी नहीं हो सकते थे।

क्रॉमवेलने हालैराडसे जो लड़ाई शुरू की थी उसे चार्ल्सने भी जारी रक्खा, क्योंकि चार्ल्स भी इंग्लैराडका व्यापार बढ़ाना तथा नये उपनिवेश बसाना चाहता था । समुद्री शक्तिमे दोनों देश बराबर ही थे, किन्तु संवत् १७२१ मे अंग्रेजोंने हालैराडवालोंके पश्चिमी द्वीपपुंज—'वेस्ट इरडीज़'—के कुछ द्वीप छीन लिये और उनका मनहटन द्वीपका उपनिवेश भी अंग्रेजोंके अधिकारमे आ गया जिसका नाम चार्ल्सके भाईके सम्मानमें 'न्यूयार्क' रक्खा गया । संवत् १७२४ मे इंग्लैराड और हालैराडमे सन्धि हो गयी और जीते हुए प्रदेश इंग्लैराडको ही मिले । तीन वर्षके बाद चौदहवें लूईने चार्ल्सको फुसलाकर उसके साथ एक गुप्त संधि की जिसके अनुसार चार्ल्सने हालैराडसे फिर लड़ाई शुरू करनेमें लूईकी मदद करना मंजूर किया । लूई हालैराडसे चिढ़ा हुआ था क्योंकि जब उसने अपनी स्त्री मेरिआथरेसाके नामसे, जो स्पेनके राजा चतुर्थ फिलिपकी पुत्री थी, नेदरलैराडका वह भाग जो स्पेनके अधीन था छीन लेना चाहा तब हालैराडने उसका विरोध किया था । चार्ल्सने लूईकी सहायताका जो वचन दिया था उसके बदलेमें लूईने उस समय धन तथा सेनासे चार्ल्सकी सहायता करनेकी प्रतिज्ञा की जब वह खुले आम अपनेको कैथलिक मतका अनुयायी प्रकट करना उचित समझे—कुछ चुने हुए लोगोंके सामने तो उसने अपना कैथलिक मत ग्रहण करना मंजूर ही कर लिया था । किन्तु चार्ल्सके भगिनी-पुत्र ऑरेञ्जके विलियमने, जो बादमें इंग्लराडका राजा हुआ, हालैराडवालोंको सामना करते रहनेके लिये उत्साहित किया । फल यह हुआ कि लूईको इस दृढ संकल्पवाली जातिको जीतनेका विचार त्याग देना पड़ा । संवत् १७३१ (सन १६७८) में सन्धि हुई और फिर शीघ्र ही लूईके विरुद्ध हालैराड तथा इंग्लैराडमें मित्रता हो गयी, क्योंकि अब यूरोप भरके लिये लूई सबसे अधिक खतरनाक समझा जाने लगा ।

द्वितीय चार्ल्सकी मृत्युपर उसका भाई द्वितीय जेम्स राजा हुआ । यह स्पष्टरूपसे कैथलिक मतका उपासक था और उसकी द्वितीय स्त्री 'मोडेनाकी मेरी' भी कैथलिक मतको ही माननेवाली थी । जेम्स

चाहता था कि चाहे जो हो इंगलैण्डमें कैथलिक मतकी स्थापना पुन: की जाय। जेम्सकी लड़की मेरीका विवाह, जो उसकी पहिली स्त्रीसे उत्पन्न हुई थी, ऑरेञ्जके राजकुमार विलियमके साथ हुआ था। इंगलैण्ड-निवासी सभवत: इस आशासे जेम्सको राज्य करनेमें बाधा न देते कि उसके बाद उसकी लड़की मेरी जो प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बिनी थी राज्यके सिंहासनपर बैठेगी। किन्तु जब कैथलिक मतकी उसकी दूसरी रानीके पुत्र उत्पन्न हुआ, और जब जेम्सने कैथलिक लोगोंका पक्ष ग्रहण करनेका अपना उद्देश्य स्पष्ट प्रकट कर दिया, तब प्रोटेस्टेण्टोंके एक दलने ऑरेञ्जके विलियमके पास दूत भेजकर यह अनुरोध किया कि आप आइये और इंगलैण्डका शासन कीजिये।

प्रथम चार्ल्स, हेनरायटा मेरिआका पति
(संवत् १६८२–१७०६)

द्वितीय चार्ल्स (सं० १७१७-१७४२)

मेरी, आरेंजके द्वितीय विलियमकी स्त्री
- **तृतीय विलियम, जेम्सकी पुत्री मेरीका पति (सं. १७४५-१७५९)**

द्वितीय जेम्स, एन हाइडका तथा मोडिनाकी मेरीका पति
- **मेरी, तृतीय विलियमकी स्त्री**
- **एन (सं. १७५७- १७७१)**
- **जेम्स एडवर्ड**
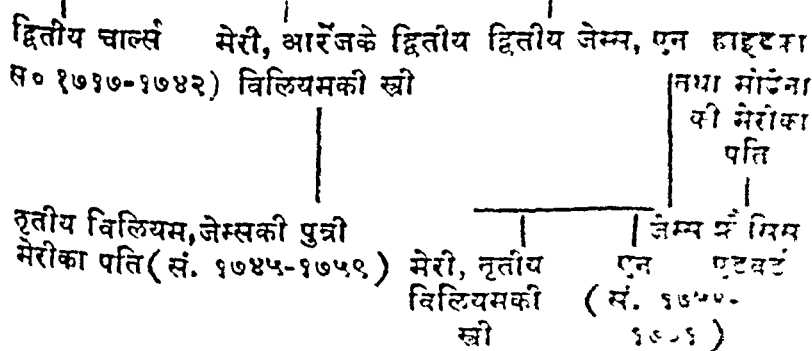
विलियम संवत् १७४५ के मार्गशीर्ष (नवम्बर १६८८ ई०) में इंगलैण्ड पहुंचा। लन्दनमें सभी प्रोटेस्टेण्टोंने उसका स्वागत किया। जेम्सने विलियमका सामना करना चाहा, किन्तु उसकी सेनाने लड़नेसे इनकार कर दिया और सहायकोंने भी साथ छोड़ दिया। निदान विवश होकर जेम्स फ्रांस चला गया। नयी पार्लमेण्टने राज्यसिंहासनके लिए [illegible]

घोषणा कर दी, क्योंकि द्वितीय जेम्सने 'जेजूइट लोगोंकी तथा अन्य दुरा-चारियोंकी सलाह मानकर मूल कानूनोंका उल्लंघन किया है और देशके बाहर चले जाकर राज्यका परित्याग कर दिया है।'

अब एक स्वत्व-घोषणापत्र प्रकाशित किया गया। इसमें जेम्स द्वारा देशके सांगठनिक कानूनके उल्लंघनकी निन्दा की गयी और विलियम तथा मेरी इंग्लैण्डके संयुक्त शासक मान लिये गये। इंग्लैण्डकी शासन पद्धतिक इतिहासमें स्वत्व-आवेदनपत्र (पिटीशन आफ राइट्स) तथा बृहत् अधिकारपत्र (मेग्ना कार्टा) की तरह, इस स्वत्व-घोषणापत्रको भी विशेष महत्त्वका स्थान प्राप्त है। इसमें भी उन्हींकी तरह अंग्रेज जातिके मूल अधिकारोंकी घोषणा की गयी थी और राजाकी स्वेच्छाचारिताके मार्गमें रुकावटें डाली गयी थीं। संवत् १७४५ की इस शान्तिपूर्ण राज्य-क्रान्तिद्वारा अंग्रेजोंने स्टुअर्ट वंशीय राजाओं और ईश्वरदत्त अधिकार शासन करनेके उनके आग्रहसे अपना पीछा छुड़ाया तथा एक बार फिर अपनेको रोमके धार्मिक आधिपत्यका विरोधी प्रकट किया।

अध्याय ३०

चौदहवें लूईके शासनकालमें फ्रांसका अभ्युदय।

चौदहवें लूईके अनियंत्रित शासनकालमें (संवत् १७००-१७७२) यूरोपीय मामलोंके लिहाजमें फ्रांसको बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त था। धार्मिक युद्धोंके बन्द हो जानेपर चतुर्थ हेनरीकी बुद्धिमत्तासे राजाका प्रभुत्व पुनः स्थापित हो गया। चतुर्थ हेनरीने ह्यूगेनाट लोगोंको, उनकी रक्षाके विचारसे, जो विशेषाधिकार दे रखे थे उन्हें छीनकर रिशल्येने राजाकी शक्ति दृढ बना दी थी। ह्यूगेनाटोंके युद्धोंकी गड़बड़ीके समय जिन फ्रांसीसी सरदारोंकी शक्ति बहुत बढ़गयी थी उनके परकोटेदार दुर्गोंको भी उसने नष्ट कर दिया था। उसके बाद उसके पदपर कार्डिनल मेजारिन नियुक्त हुआ। चौदहवें लूईकी अवस्था छोटी होनेके कारण वही राज्यका प्रबन्ध करता था। इसके समयमें असन्तुष्ट सरदारोंने विद्रोह करनेका प्रयत्न किया, किन्तु वे शीघ्र ही दबा दिये गये।

संवत् १७१८ (सन् १६६१) में मेज़ारिनकी मृत्यु [illegible] युवक राजाके लिये वह जैसा राज्य छोड़ [illegible] राजाको अभी तक प्राप्त नहीं हुआ था। [illegible] नरेश ह्यूगेपेट तथा उसके उत्तराधिकारियोंके [illegible] थे वे अब प्रबल जागीरदार न [illegible] ह्यूगेनाटोंकी संख्या भी—जिन्हें उन्हें [illegible] होनेके कारण जो राज्यमें कैथलिकोंके [illegible] थे—अब बिलकुल कम रह गयी थी [illegible]

राजामें मनमुटाव हो और हमें उस मनमुटावसे उत्पन्न कमजोरी या हिच-किचाहटसे लाभ उठानेका मौका मिले इसी लिये फ्रांसीसियोंने कल वातोंका ख्याल कर सब कुछ राजाके ही ऊपर छोड़ देना उचित समझा यद्यपि ऐसा करनेके कारण कभी २ उन्हें उसके अत्याचारसे पीड़ित भी होना पड़ता था।

जेम्सकी तुलनामें लूईको एक वातका लाभ और भी प्राप्त था। लूई बहुत रूपवान् था उसका व्यवहार परिष्कृत और राजोचित था और उसकी चाल ढाल भी ऊँचे दर्जेकी थी। बिलियर्ड खेलते समय भी उसके चेहरेसे ऐसी शान टपकती थी मानो वह संसारका शाहंशाह हो किन्तु स्टुअर्ट वंशका पहिला राजा, प्रथम जेम्स, बहुत बदसूरत था और उसकी ढीली-ढाली चाल अप्रिय व्यवहार एवं वातचीतके समय अपनी विद्वत्ता प्रकट करनेका प्रयत्न उस उच्च प्रतिष्ठाके उपयुक्त न था जिसका अधिकारी वह बनना चाहता था। लूईमें वाह्य रूपके अतिरिक्त उचित निर्णय करनेकी तथा वास्तविक परिस्थितिको तुरन्त ही ताड़ लेनेकी शक्ति भी थी। अन्य राजाओंकी तुलनामें वह विशेष परिश्रमी था और शासन सम्बन्धी मामलोंमें प्रति दिन कई घण्टे खर्च करता था। सच तो यह है कि वास्तविक अनियंत्रित शासक बननेमें बड़े परिश्रम और बड़े अध्यवसायकी आवश्यकता है। किसी बड़े राज्यके शासकके सामने जो समस्याएं रोज बरोज पेश होती रहती हैं उन्हें ठीक तरहसे समझने और सुलझानेके लिये यह आवश्यक है कि वह फ्रान्सके फ्रेडरिक तथा नेपोलियनकी तरह, प्रातःकालसे देर रात्रिमें देरतक परिश्रम करता रहे। लूईको अपने योग्य मन्त्रियोंकी अच्छी सहायता मिलती थी, किन्तु प्रधान मंत्री वह अपने आपको ही समझता था। किसी मंत्रीकी रायको इतना अधिक महत्त्व देना उसे मंजूर न था जितना उसकी अपनी सम्मतिको देता था।

लूई इस बातका ध्यान रखता था कि उसकी प्रतिष्ठाके अनुरूप ही वैसी ही शान शौकत भी रहे। उसका दरबार इतना सम्मानित और प्रभावोत्पादक था कि पश्चिमी देशोंने स्वप्नमें भी ऐसा दरबार न देखा

था। उसने पेरिस नगरके ठीक बाहर वर्सैल्जमें एक विशाल राजप्रासाद बनवाया। जिसमें खूब लम्बे चौड़े कमरे तथा पार्क और खूब दूरतक फैला हुआ एक विस्तृत बाग भी था। इसके चारों ओर एक नगर बसाया गया जहाँ वे लोग रहते थे जिन्हें फ्रांस-नरेशके समीपका सौभाग्य प्राप्त था या जिनका वहाँ रहना शाही ज़रूरतोंके लिए जाने आवश्यक था। इस महलके तथा इसके समीपकी अन्य इमारतों व दो तीन और कुछ कम प्रभावशाली महलोंके बनानेमें फ्रांसीसी राष्ट्रका कोई १० करोड़ डालर (लगभग २१ करोड़ रुपया) व्यय हुआ था यह भी उस हालतमें जब कि हजारों किसानों तथा सैनिकोंको विवश होकर पारिश्रमिक लिये बिना ही उनमें काम करना पड़ा था। इस भव्य राजप्रासादकी सजावट भी बेशकीमती और आला दर्जेकी थी। एक शताब्दीसे भी अधिक समय तक वर्सैल्ज़ फ्रांसीसी राजाओंकी राजधानी रहा।

इस ठाटबाटके कारण सरदारोंका चित्त भी आकर्षित हुआ। सुर-क्षित दुर्ग तो उनके अधिकारमें रह ही नहीं गये थे, अतः अब वे राजाकी आंखोंकी झलकके सामने ही रहने लगे। राजाके शयनागारमें प्रवेश

के यहा वर्ती जाती है, जारी की गयी। अब उसने नये उद्योगोंकी स्थापना कर तथा पुराने उद्योगोंको ऊचे दर्जेका माल तैयार करनेको प्रोत्साहित कर फ्रांसमे बननेवाली वस्तुओंकी उन्नतिकी ओर ध्यान दिया। उसका यह तर्क सत्य ही था कि यदि हम विदेशियोंको फ्रांसकी बनी वस्तुएँ खरीदनेके लिये राजी कर सकें तो वस्तुओंकी विक्रीसे जो सोना और चाँदी प्राप्त होगी उससे देशकी आर्थिक दशा सुधरेगी। कारखानोंमें कितने अर्ज़का व किस कोटिका कपड़ा तैयार किया जाय, इस सम्बन्धमें उसने कड़े नियम बना दिये। उसने मध्यकालके व्यापारिक गुटोंका पुन संघटन भी किया। इनके रहनेसे सरकार देशमे तैयार किये गये प्रत्येक मालपर अपनी नजर रख सकती थी। यदि सभी मनुष्योंको अपनी अपनी इच्छाके अनुसार, पृथक् पृथक् रूपमे व्यापार करनेकी स्वतंत्रता रहती तो उन सबोंपर दृष्टि रखना बहुत कठिन था। यह सच है कि इस प्रणालीमें कई बड़े बड़े दोष थे किन्तु फिर भी फ्रांस बहुत वर्षों तक इसका अनुसरण करता रहा।

ऊपर जो कुछ कहा गया है वह तो चौदहवें लूईकी ख्यातिका कारण था ही, किन्तु इससे भी अधिक यश उसे साहित्य तथा कलाओंके प्रोत्साहन से मिला। मोल्यअर, जो नाटककार तथा नट दोनो ही था, अपने सुखान्त नाटकोंमें तत्कालीन चरित्र-दोषोंके व्यंगपूर्ण प्रदर्शन द्वारा राजा तथा उसके अनुयायियोंका मनोरञ्जन करता था। प्रसिद्ध दुःखान्त नाटक 'दि सिड' का लेखक कॉर्नेय[1] तो रिशल्यूके समयमें ही प्रसिद्ध हो चुका था। अब उसका स्थान उससे भी अधिक ख्यातनामा नाटककार 'रेसीन' ने ग्रहण किया। मैडम डी सेवीन्ये[2] के पत्र तत्कालीन [illegible] के आदर्श है। उनमें राजके पार्श्ववर्तियोंके [illegible] पारस्परिक जीवनकी झलक देखनेको मिलती है। सेन सीमॉन[3] के स्मृति-ग्रन्थोंमें [illegible]

---

1 Corneille 2 Madame de Sevigne

3 Saint-Simon

कमजोरियाँ व उसके पार्श्ववर्त्तियोंके षड्यंत्र अद्वितीय कौशल एवं बुद्धि-प्रखरताके साथ दिखलाये गये हैं।

साहित्यसेवियोंको राजाकी ओरसे उदारतापूर्वक वृत्तियाँ दी जाती थीं। रीशल्येने जिस 'फ्रांसीसी साहित्य-परिषद्' (फ्रेन्च एकेडेमी) की स्थापना की थी उसे कोलबर्टने प्रोत्साहित किया। किस विशेष अर्थको प्रकट करनेके लिये किस विशेष शब्द या शब्दावलीका प्रयोग करना चाहिये, इसका निश्चय कर उक्त परिषद्ने फ्रांसीसी भाषाको अधिक ओजमय तथा अर्थपूर्ण बनानेका प्रयत्न किया। इस समय इस परिषद्के चालीस सभ्योंमें स्थान पाना प्रत्येक फ्रांसीसीकी दृष्टिमें विशेष गौरवका विषय समझा जाता है। विज्ञानकी उन्नतिके लिये 'जर्नल डेस सैवेण्ट्स' नामका एक मासिक पत्र भी जारी किया गया जो अबतक चल रहा है। कोलबर्टने पेरिसमें एक वेधशाला भी स्थापित की। इस राजकीय पुस्तकालयमें पहिले १६ हजार पुस्तकें ही थीं, क्रमशः उसकी वृद्धिका प्रयत्न होता रहा, यहाँ तक कि वर्त्तमान समयमें २५ लाखसे भी अधिक ग्रन्थोंका संग्रह वहाँ है। तात्पर्य यह कि लूई तथा उसके मंत्रियोंकी दृष्टिमें साहित्य,

फ्रांसके भूखे राजाके लिए यह बड़ा भारी प्रलोभन था। इन विजयोंसे यूरोपमें, विशेषकर हालैण्डमें, आतंक छा गया। हालैण्डको यह सह्य न था कि फ्रांसकी सीमा उसके इतने समीप हो जाय, क्योंकि लूईका पड़ोसी बनना खतरेसे खाली न था। इस कारण फ्रांसको स्पेनके साथ मैत्री करनेके लिये फुसलानेके अभिप्रायसे हालैण्ड, इंग्लैण्ड तथा स्वीडनका एक त्रिगुट बनाया गया। लूईने इस समय केवल उन बारह नगरोंको लेकर ही सन्तोष कर लिया जिनपर उसका अधिकार हो गया था और जिन्हें स्पेनने भी इस शर्तपर उसके हवाले किया कि वह फ्रान्श-कॉण्टे' स्पेनको लौटा दे (एक्सला-शपलकी सन्धि संवत् १७२५)।

इंग्लैण्डके जहाजी बेड़ेके मुकाबलेमें हालैण्डने जिस सफलतासे अपनी रक्षा की थी तथा फ्रांसके अभिमानी राजाकी गति रोक दी थी, उसके कारण वह खुशीके मारे फूला न समाता था। यह देखकर लूईके हृदयमें बड़ी जलन होती थी। निदान उसने इंग्लैण्डके राजा द्वितीय चार्ल्सको फुसलाया और उससे एक संधि कर त्रिगुटको भंग कर दिया। चार्ल्सको

ये थीं कि हालेण्डका राज्य ज्योंका त्यों रहने दिया जाय और फ्रॉन्श-कॉटे प्रान्त जिसे लूईने स्वयं जीता था फ्रांसके ही अधीन रहे। इस प्रकार प्राचीन बर्गण्डी राज्यका यह टुकड़ा, जिसके निमित्त कोई डेढ़ शताब्दीसे फ्रांस और स्पेन आपसमें लड़ते आ रहे थे, अब फ्रांसीसी राज्यमें संयुक्त हो गया। इसके बाद दस वर्ष तक खुल्लमखुल्ला कोई युद्ध नहीं हुआ किन्तु इस बीचमें लूई इस बातका निर्णय करनेके लिये फ्रांस तथा जर्मनीके बीचके विवादग्रस्त प्रदेशमें न्यायालय स्थापित करनेमें लगा रहा। पड़ोसकी कौन कौनसी भूमि उन भिन्न भिन्न प्रान्तों तथा नगरोंमें शामिल है जो फ्रांसको वेस्टफालिया तथा उसके बादकी सन्धियों द्वारा प्राप्त हुए थे। एक तो पुरानी जागीरदारियोंकी जटिलताओंके कारण किसी भूमिके लिये हक़ पेश करनेका काफी मौका था ही, दूसरे लूईके सैनिकोंके पहुँच जानेसे और भी दबाव पड़ता था। लूईने 'स्ट्रासबर्ग' नामक स्वतंत्र नगर तथा और भी कई ऐसे स्थानोंपर कब्जा कर लिया जिन्हें लेनेका उसे कोई अधिकार न था।

चौदहवें लूईमें राजनीतिज्ञोचित चतुरताकी कमी थी, यह उसके भयानक युद्धोंके सिवा प्रोटेस्टेण्टोंके साथ उसके व्यवहारसे भी प्रकट है। सैनिक तथा राजनीतिक अधिकारोंसे वंचित हो जानेके कारण ह्यूगनाटोंने व्यापार और शराफेका काम शुरू कर दिया था। डेढ़ करोड़ फ्रांसीसियोंके बीचमें उनकी संख्या दस लाखके लगभग थी और इसमें सन्देह नहीं कि वे लोग बड़े अल्पव्ययी तथा उत्साही मनुष्य थे। किन्तु कैथलिक पादरियोंने प्रचलित धर्मके विरोधियोंको दबानेकी पुकार अब भी बन्द नहीं की थी।

लूईके सिंहासनारूढ़ होते ही प्रोटेस्टेण्टोंके साथ सदासे होते आये अन्यायोंकी और भी वृद्धि हुई। एक न एक मिथ्या कारण बतलाकर उनके गिरजाघर तोड़ डाले गये। सात वर्षकी अवस्थाके बाद ही प्रोटेस्टेण्ट मतका त्याग करनेका अधिकार दे दिया गया। उदाहरणार्थ

यदि किसी खिलौनेके या मिठाईके लोभमें आकर कोई बालक 'आव्ह मेरिया' (भगवती मेरीका स्वागत) कह देता तो वह अपने मा-बापसे छीना जाकर कैथलिक स्कूलमें भर्ती कर दिया जाता था । इस प्रकार बड़ी निर्दयताके साथ प्रोटेस्टेण्ट परिवारोंका अंग-भंग किया गया । ह्युगनाट लोगोंके सिर-पर इस अभिप्रायसे क्रूर सैनिक सदा सवार रहते थे कि उनके अपमान-जनक व्यवहारसे तंग आकर धर्मविरोधी लोग भी राजधर्म (कैथलिक मत) ग्रहण कर लेंगे ।

कर्मचारियोंके कहनेसे जब लूईको यह विश्वास हो गया कि इन निष्ठुर प्रयत्नोंके कारण प्राय: सभी ह्युगेनाटोंका धर्म-परिवर्त्तन किया जा चुका है, तब उसने संवत् १७४२ में नाण्टका आदेशपत्र उठा लिया । इस काररवाईसे प्रोटेस्टेण्टोंका कानूनी बहिष्कार हो गया और उनके धर्माचार्य प्राणदण्डके भागी समझे जाने लगे । उदारहृदय कैथलिक मतावल-म्बियोंने भी बड़ी खुशीके साथ इस 'धार्मिक एकता' का स्वागत किया । उन्होंने समझा कि अब बहुत थोड़े, विशेषकर राजद्रोही, मनुष्य ही केल्विनके अनुयायी रह गये हैं, पर यह उनकी भूल थी । हजारों ह्युगेनाट राजकर्मचारियोंकी दृष्टि बचाकर इंग्लैण्ड, प्रशा, तथा अमेरिका भाग गये । उनकी कुशलता तथा उद्योगशीलता फ्रांसके व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धियोंकी शक्ति बढ़ानेमें सहायक हुई । यह उस धार्मिक असहिष्णुताका बड़ा भारी अन्तिम उदाहरण है जिसके परिणाम अलबिजन्सियोंके विरुद्ध लड़ाई गयी

धार्मिक लड़ाई, स्पेनका धार्मिक न्यायालय * तथा सन्त वार्थोलोम्यूका हत्या † ।

अब लूईने राइन पैलेटिनेट नामक राज्यपर अधिकार कर लेनेका इरादा किया। इसे पानेका हक ढूँढ निकालनेमें उसे कोई कठिनाई न हुई। उसके इस इरादेकी खबर फैलने तथा नान्टका आदेशपत्र रद्द लेनेके कारण प्रोटेस्टेण्ट दलोंमें जो क्रोध-भावना उत्पन्न हो गयी थी, उसका परिणाम यह हुआ कि आरेन्जके विलियमके नेतृत्वमें फ्रांसके राजाके विरुद्ध एक गुट बन गया। लूईने शीघ्र ही पैलेटिनेटको उजाड़ कर दिया। उसने समूचे नगरके नगर जला दिये, और कई किलोंको भी नष्ट कर डाला जिनमें हाइडेलबर्गके इलेक्टरका अद्वितीय किला भी था। किन्तु दस वर्षोंके बाद सन्धि होनेपर लूईने सब वस्तुएं फिर ज्योंकी त्यों करा देना स्वीकार किया। इस समय वह अपने जीवनकी उस अन्तिम महत्त्वाकांक्षाको प्राप्त करनेकी तैयारी कर रहा था जिसके कारण उसे शीघ्र ही अपने राज्यकालकी सबसे लम्बी और सबसे भीषण (स्पेनके उत्तराधिकारकी) लड़ाई लड़नेमें प्रवृत्त होना पड़ा।

स्पेनका राजा द्वितीय चार्ल्स निःसन्तान था। उसके कोई भाई भी न था। हाँ दो बहिनें अवश्य थीं, जिनमेंसे एकका विवाह लूईके साथ

---

* स्पेनका धार्मिक न्यायालय—प्रारम्भमें धार्मिक न्यायालय (दि इन्क्वीज़िशन) धर्मविरोधियोंको दण्ड देनेके लिये पोप द्वारा ईसवीकी तेरहवीं शताब्दीके अन्तमें स्थापित किया गया था। सन् १४८० में स्पेनकी रानी इज़ाबेलाने विशेष करके धर्मविरोधी मूर तथा यहूदी लोगोंसे अपने राज्यको मुक्त करनेके लिये पुनः उसकी स्थापना की। इसका मनुष्योंपर मिथ्या विचारोंके अनुयायी होनेका, ईश्वरकी निन्दा करनेका तथा जादू इत्यादि वर्जित कलाओंका अभ्यास करनेका दोष लगाया गया और वे कैद कर दिये गये, कोड़ोंसे पीटे गये, जला दिये गये या फाँसीपर लटका दिये गये (पृष्ठ २६७, व २६४ देखिये)।

† पृष्ठ ३६ देखिये।

और दूसरीका पवित्र रोमसाम्राज्यके अधीश्वर प्रथम लीओपोल्डके साथ हुआ था। ये दोनों महत्त्वाकांक्षी शासक कुछ समयतक इसका विचार करते रहे कि स्पेन-नरेशकी मृत्युके बाद उसका राज्य किस तरह बूर्बन तथा हेप्सबर्ग वंशोंमें बांटा जाय। किन्तु संवत् १७५७ (सन् १७००) मे द्वितीय चार्ल्सकी मृत्यु होने पर विदित हुआ कि वह एक दान-पत्र छोड़ गया है जिसमें उसने लूईके छोटे नाती फिलिपको अपना उत्तराधिकारी चुना था, पर शर्त यह थी कि फ्रांस और स्पेनका राज्य मिलाकर एक न कर दिया जाय।

अब लूईके सामने यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न था कि वह अपने पौत्रको यह आपत्पूर्ण सम्मान स्वीकृत करने दे या न करने दे। यदि फिलिप स्पेनका राजा बन जाय तो हालैण्डसे लेकर सिसलीतक, यूरोपके दक्षिण-पश्चिम भागपर तथा उत्तर और दक्षिण अमेरिकाके एक बड़े अंशपर लूई तथा उसके कुटुम्बियोंका ही नियंत्रण स्थापित हो जायगा। तात्पर्य यह कि पंचम चार्ल्सके साम्राज्यसे भी बढ़कर साम्राज्य स्थापित हो जायगा। यह स्पष्ट था कि राज्य न पानेके अधिकारसे वञ्चित सम्राट् (प्रथम लीओ-पोल्ड) तथा आरेंजका विलियम, जो इस समय इंग्लैण्डका राजा था, फ्रांसके प्रभावकी यह अपूर्व वृद्धि न होने देंगे। इन्होंने तो फ्रांसकी इससे भी कम महत्त्वकी वृद्धि रोकनेके लिये बहुत कुछ आत्मत्याग करनेकी तत्परता दिखलायी थी। इतना जानते हुए भी लूईने अपनी महत्त्वाकांक्षाके कारण देशको खतरेमें डाल दिया। उसने दानपत्रको अंगीकार कर स्पेनके राजदूतको खबर दी कि वह पंचम फिलिपको अपना नया राजा समझकर अभिवादन कर सकता है। [illegible] संवादपत्रने तो यहाँ तक लिख मारा कि अब पिरेनीज [illegible] नहीं रह गया।

इंग्लैण्डके राजा विलियमने शीघ्र ही [illegible] संगठित किया। इसमें प्रधानतया लूईके पूर्व शत्रु, इंग्लैण्ड, हालैण्ड तथा सम्राट् लीओपोल्ड इत्यादि ही सम्मिलित थे। दुर्भाग्यसे [illegible]

विलियमकी मृत्यु हो गयी, किन्तु स्पेनके उत्तराधिकारका युद्ध उसके बाद भी मार्लबरोके ड्यूक तथा आस्ट्रियाके सेनाध्यक्ष सेवायके यूजीनके सेनापतित्वमें जारी रहा। यह युद्ध तीस वर्षीय युद्धसे भी अधिक व्यापक था, यहाँ तक कि अमेरिकामें भी फ्रांसीसी तथा अंग्रेजी अधिवासियोंमें लड़ाई ठन गयी थी। प्रायः सभी बड़ी लड़ाइयोंमें फ्रांसकी हार हुई। दस वर्षोंके बाद विपुल जन-धन-संहार हो चुकनेपर लूई समझौता करनेको राजी हुआ। बहुत वाद-विवादके बाद संवत् १७७० में यूट्रेक्टकी संधि हुई।

इस सन्धिके कारण यूरोपका मानचित्र इतना बदल गया जितना पहिले वेस्टफेलिया या अन्य किसी सन्धिके कारण न बदला था। लड़ाईमें भाग लेनेवाले सभी देशोंको स्पेनकी लूटका कुछ न कुछ हिस्सा मिला। बूर्बन वंशका पंचम फिलिप स्पेन तथा उसके उपनिवेशोंका शासक मान लिया गया, पर शर्त यह थी कि स्पेन तथा फ्रांसका शासन एक ही व्यक्ति न करे। आस्ट्रियाको स्पेनी नेदरलैण्ड्ज मिले जो आगे भी फ्रांस तथा हालैण्डकी सीमाके बीच प्रतिबन्धक स्वरूप बने रहे। हालैण्डको कुछ ऐसे किले प्राप्त हुए जिनके कारण उसकी स्थिति और भी निरापद हो गयी। इटलीका जो भाग स्पेनके अधीन था, वह भी अर्थात् नेपिल्स तथा मिलानके प्रान्तोंका हिस्सा भी आस्ट्रियाको सौंप दिया गया। इस प्रकार इटलीपर आस्ट्रियाका प्रभाव जम गया जो संवत् १९२३ (सन १८६६) तक कायम रहा। इंग्लैण्डको फ्रांससे नोवास्कोशिआ, न्यूफाउण्डलैण्ड तथा हडसन बेका प्रान्त मिला। इस प्रकार उत्तरी अमेरिकामें फ्रांसीसियोंकी सत्ताका लोप होना शुरू हुआ। इनके अतिरिक्त इंग्लैण्डको मिनारका द्वीप और वहांका दुर्ग, तथा जिब्राल्टरका दुर्ग भी मिला।

चौदहवें लूईका शासनकाल अन्तर्राष्ट्रीय विधानके विकासके लिये विशेष प्रसिद्ध है। लगातार युद्धोंके कारण, अनेक राष्ट्रोंके गुटोंके कारण, तथा वेस्टफालिया और यूट्रेक्टकी संधियोंके पहिले शान्तिस्थापनके प्रयत्नमें जो विलम्ब लगा था, उसके कारण यह अधिकाधिक रूपमें स्पष्ट होता गया कि

चाहे शान्तिका समय हो, चाहे युद्धका, स्वतंत्र राष्ट्रोंको परस्परके व्यवहारमें किन्हीं सुनिश्चित नियमोंका अनुसरण करनेकी आवश्यकता है। उदाहरणार्थ इस बातके निर्णयकी बड़ी आवश्यकता थी कि राजदूतोंके तथा उदासीन राष्ट्रोंके जलयानोंके अधिकार क्या हैं और युद्धमें किन तरीकोंका अवलम्बन करना तथा लड़ाईके कैदियोंसे कैसा व्यवहार करना न्यायसंगत है।

अन्तर्राष्ट्रीय विधानका उचित ढंगसे वर्णन करनवाली सबसे प्रथम पुस्तक ग्रोशिअसने संवत् १६८२ (सन् १६२५) म प्रकाशित की जब कि तीस वर्षीय युद्धकी भीषणता देखकर लोग इस बातका अनुभव कर रहे थे कि राष्ट्रोंके पारस्परिक झगड़ोंका निपटारा करनेके लिये युद्धके अतिरिक्त और कोई तरीका ढूँढ़ा जाय। ग्रोशिअसकी पुस्तक 'वार एण्ड पीस' (युद्ध तथा शान्ति) के बाद लूईके शासनकालमें पूफेण्डॉर्फने 'ऑन दि लॉ ऑफ नेचर एण्ड नेशन्स' ('प्राकृतिक विधान तथा राष्ट्रोंके विधानके सम्बन्धमें') नामकी पुस्तक प्रकाशित की (सवत् १७२६)। यह सत्य है कि इन लेखकोंने तथा इनके बादके लेखकोंने जो नियम लिपिबद्ध किये उनके कारण युद्धका होना बन्द नहीं हो गया, फिर भी अनेक समस्याओंको सुलझाकर तथा उन उपायोंकी वृद्धि कर जिनके द्वारा भिन्न भिन्न राष्ट्र राजदूतोंकी सहायतासे, शस्त्रोंका अवलम्बन किये विना ही, पारस्परिक झगड़े निपटा सकें, उन्होंने अनेक बार युद्धकी संभावना रोक दी।

लूई अपने लड़के तथा पोतेकी मृत्युके बाद तक जीता रहा। अन्तमें वह अपने पाँच वर्षके पोते पन्द्रहवें लूईके हाथ फ्रांसका राज्य बुरी हालतमें छोड़कर सवत् १७७२ में परलोक सिधारा। उस समय फ्रांसका राजकोष रिक्त हो चुका था, वहांकी जनसंख्या कम हो गयी थी और वहांके निवासी दुर्दशाग्रस्त हो रहे थे। फ्रांसकी सेना, जो कुछ समय पहिले यूरोपमें अद्वितीय थी, इस समय इतनी शक्तिहीन हो गयी थी कि अब अन्य कोई विजय प्राप्त करनेकी सामर्थ्य उसमें न थी।

अध्याय ३१

रूस तथा प्रशाकी वृद्धि।

पश्चिमी यूरोपके इतिहासका वर्णन करते समय हमें अभीतक स्लाव लोगोंके विषयमें प्रायः कुछ भी कहनेका मौका नहीं मिला। इन लोगोंमें रूसवाले, पोलैण्डवाले, बोहेमियावाले तथा पूर्वी यूरोपके अन्य देशोंके लोग शामिल हैं। यद्यपि इतिहासमें इन्हें विशेष महत्त्वका स्थान प्राप्त नहीं है तो भी यूरोपके मानचित्रका काफी विस्तृत भाग इनके अधीन है। विक्रमकी सत्रहवीं शताब्दीके अन्तसे यूरोपीय मामलोंमें रूसका प्रभाव क्रमशः बढ़ने लगा, यहां तक कि गत यूरोपीय युद्धके पहिले संसारके राजनीतिक क्षेत्रमें इसको महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया था। वहांके शासक 'ज़ार' का साम्राज्य यूरोपके चतुर्थ भागमें तथा उत्तरी और मध्य एशियामें फैला हुआ था। उसका विस्तार संयुक्त राज्य अमेरिकाकी अपेक्षा तिगुना था।

ईसाके बहुत पहिले ही स्लाव लोग नीपर, डान तथा विस्चूला नदियोंके किनारे आबाद हो गये थे। जब पूर्वी गाथ लोगोंने रोमन साम्राज्यमें प्रवेश किया, तब उन लोगोंकी देखादेखी इन्होंने भी बालकन प्रायद्वीपपर हमला किया और उसे जीत लिया। संवत् ६२६ (सन् ५६९) में जब जर्मनीके लॉम्बार्ड लोग दक्षिणकी ओर इटलीमें गये तब उनके पास ही के स्लाव लोग भी स्टिरिया, कारिन्थिया, तथा कार्निओलामें घुसते गये। वहां ये लोग इस समय भी आबाद हैं। इनमें कुछ [illegible] और तथा उत्तरी [illegible] हटाकर उनकी जगहपर [illegible] के [illegible] तथा जर्मनीके अन्य सरदारोंने इन्हें वहांसे [illegible]

किया, फिर भी बवेरिया तथा सैक्सनीकी सीमापर इस समय तक बोहीमियन तथा मोरेव्हियन स्लाव लोगोंकी काफी संख्या मौजूद है।

विक्रमकी नवीं शताब्दीके प्रारम्भमें कुछ 'उत्तरीय' लोगोंने बालटिक समुद्रके पूर्वके स्थानोंपर आक्रमण किया, उसी समय जब कि इनके अन्य सम्बन्धी तथा सहवर्गी फ्रांस और इंग्लैण्डमें उत्पात मचा रहे थे। कहते हैं कि इनके नेता रूरिकने संवत् ९१९ (सन् ८६२) में पहिले पहल स्लाव लोगोंका संघटन किया और नाव्हगोरॉडके आसपास एक छोटासा राज्य स्थापित कर लिया। रूरिकके उत्तराधिकारीने राज्यकी सीमा बढ़ाकर नीपर नदीके किनारेवाला प्रसिद्ध नगर कीव्ह भी राज्यमें मिला लिया। अंग्रेजीका शब्द 'रशा' (रूस) सम्भवतः रोस या रौस* शब्दसे बना है। यह नाम निकटवर्त्ती फिन लोगोंने आक्रमण करनेवाले उत्तरीय लोगोंको दे रक्खा था। विक्रमकी दशवीं शताब्दीके पूर्वार्द्धमें ग्रीक लोगोंमें प्रचलित ख्रीष्ट धर्मका प्रचार रूसमें भी किया गया और रूसके राजाको बपतिस्मा दिया गया। कुस्तुनतुनियाके साथ बारम्बार सम्पर्क होते रहनेके कारण रूस शीघ्रतासे सभ्यताके मार्गमें अग्रसर हो गया होता, किन्तु एक बड़ी भारी बाधा आजानेके कारण वह सदियों पीछे रह गया।

भूगोलकी दृष्टिसे रूस केवल उत्तरी एशियाके मैदानका विस्तृत क्षेत्र ही है जिसे अन्तमें रूसियोंने अपने अधिकारमें कर लिया। यही कारण है कि वह तेरहवीं शताब्दीमें पूर्वके तातार या मंगोल लोगोंके आक्रमणसे बच न सका। प्रबल तातारी शासक चंगीजखाँ (चगेज़खाँ, संवत् १२१९-१२८४) ने उत्तरी चीन तथा मध्य एशियाको जीत लिया और इसके उत्तराधिकारियोंके अनुयायियोंके, जो घोड़ोंपर चढ़कर इधर उधर घूमा करते थे, दलोंने यूरोपकी सीमाके भीतर घुसकर रूसमें प्रवेश किया। उस [illegible] छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त हो गया था। इन राज्योंके शासकोंको [illegible] अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। उन्हें बहुधा [illegible]

* Ros or Rous

चंगेजखाँके दरबारमें उपस्थित होना पड़ता था। वहा उन्हें कभी कभी अपने राजमुकुटसे और साथ ही अपने प्राणोंसे भी हाथ धोना पड़ता था। तातार लोग रूसवालोंसे कर वसूल किया करते थे किन्तु उनके कानूनोंमें तथा धर्ममें हाथ न डालते थे।

उक्त मंगोल शासकके दरबारमें जितने राजा गये, उनमेंसे वह मॉस्काऊके राजापर सबसे अधिक प्रसन्न हुआ। जब कभी इस राजाके तथा उसके प्रतिद्वन्द्वी राजाओंके बीच कोई झगड़ा पेश होता तो मंगोल नृपति अपने इस कृपापात्र राजाके पक्षमें ही निर्णय करता था। जब मंगोल नृपतियोंकी शक्ति घटने लगी और जब मॉस्काऊके राजा प्रबल होने लगे तब उन्होंने उन मंगोल राजदूतोंको मार डाला जो संवत् १५३७ (सन् १४८०) में राजस्व वसूल करनेके लिये आये थे और इस प्रकार उन्होंने मंगोलोंकी अधीनतासे अपना पीछा छुड़ाया। किन्तु तातारोंका आधिपत्य न रहनेपर भी उसके कुछ न कुछ चिह्न शेष रह गये, क्योंकि मॉस्काऊके राजा पश्चिमी शासकोंकी अपेक्षा मंगोल नृपतियोंका ही अनुकरण करते थे। संवत् १६०४ [सन् १५४७] में आईव्हन दि टेरिबिल [भयानक आईव्हन] राजाने 'ज़ार' की एशियाई पदवी ग्रहण की, क्योंकि राजा या सम्राट्की अपेक्षा यही नाम उसे अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ। उसके दरबारियोंकी पोशाक व उनकी शिष्टता इत्यादिके नियम भी एशियाई ढंगके ही थे। रूसी कवच [जिरहबख्तर] चीनी तर्जका था और सिरकी पोशाक पगड़ी थी। इनको यूरोपियन सांचेमें ढालनेका काम महान

बहुत पिछड़ा हुआ है और उसके अर्द्धसज्जित, अर्द्धशिक्षित सैनिक पश्चिमी देशोंकी सुसज्जित एवं सुशिक्षित सेनाका सामना नहीं कर सकते। रूसके न तो कोई बन्दरगाह था और न उसके पास अपने जहाज ही थे। ऐसी अवस्थामें संसारके मामलेमें भाग लेना रूसके लिये आशातीत बात थी। अतः पीटरके सामने इस समय दो काम थे—पश्चिमी तरीकोंको जारी करना और एक 'ऐसी खिड़की तैयार करना' [बन्दरगाह बनाना] जिसके भीतरसे सिर निकालकर रूस बाहरका दृश्य भी देख सके।

संवत् १७५४ में पश्चिमकी प्रत्येक कला तथा विज्ञान और भिन्न भिन्न वस्तुएं तैयार करनेके अच्छे अच्छे तरीकोंकी खोज करनेके अभिप्रायसे पीटर स्वयं जर्मनी, हालैण्ड, तथा इंग्लैण्ड गया। उत्तरके इस अर्द्ध-सभ्य विलक्षण जीवकी तीव्र दृष्टिसे कोई भी बात छूटने न पायी। एक सप्ताह तक उसने हालैण्डके कुलीकी पोशाक पहिनकर आम्सटरडमके पास सारडमके जहाजके कारखानेमें काम भी किया। इंग्लैण्ड, हालैण्ड तथा जर्मनीमें उसने कई कारीगरों, वैज्ञानिकों, शिल्पकारों,जहाजके कप्तानों, तथा सैनिकोंको शिक्षा देनेवाले कुशल व्यक्तियोंको नौकर रखा और स्वदेशको लौटते समय रूसके संस्कार और विकासमें सहायता देनेके लिये उन्हें अपने साथ लिवाता गया।

राज-संरक्षक सैनिकोंके बागी हो जानेके कारण उसे घर लौटना पड़ा था। ये लोग उन धनिको तथा पादरियोंसे मिले हुए थे जो पीटरके अपने पूर्वजोंकी रीतिरस्मोंको त्याग देनेके कारण भयभीत हो गये थे। इन लोगोंको छोटे कोट पहिनने, तमाखू पीने तथा दाढ़ी बनवा डालनेसे घृणा थी। इनकी दृष्टिमें ये 'जर्मनवालोंके विचार' थे। पादरियोंने यहां तक इंगित किया कि पीटर सम्भवतः ईसा-मसीहके विरुद्ध है। पीटरने विद्रोह करनेवालोंसे भीषण बदला लिया। कहते हैं कि बहुतोंके सिर उसने अपने हाथसे काटे थे। बर्बर मनुष्यकी तरह तो वह था ही, उसने विद्रोहियोंके मस्तकों और मृतशरीरोंको तमाम जाड़ेके महीने भर यों ही

इधर उधर पड़े रहने दिया, उन्हें गड़वाया नहीं, ताकि उसकी शक्तिके विरुद्ध उठनेवालोंकी कैसी दुर्दशा होती है, यह सबकी समझमें साफ साफ आ जाय।

पीटरके सुधार उसके शासनकालके अन्ततक बराबर होते रहे। उसने अपनी प्रजाको पूर्वीय ढँगकी दाढ़ी रखने तथा ढीले व लम्बे [illegible] पहिननेसे रोक दिया। उच्च वर्गके लोगोंकी स्त्रियोंको, जो अभी तक एक तरहके पूर्वी अन्तःपुरमें रहती थीं, उसने बाहर आनेके लिये तथा पश्चिमी ढँगसे सभा-समाजोंमें पुरुषोंसे मिलनेके लिये विवश किया। उसने विदेशियोंको बुलाकर रूसमें बसाया और उन्हें उनकी रक्षाका, विशेष अधिकारोंका, तथा धार्मिक स्वतंत्रताका विश्वास दिलाया। उसने रूसी नवयुवकोंको विद्या सीखनेके लिए विदेशोंको भेजा और पश्चिमी राज्योंके ढँगपर अपने राजकर्मचारियों तथा सेनाका पुनः संघटन किया।

यह देखकर कि प्राचीन राजधानी मास्काउके लोग पुरानी प्रथाओंको तोड़ना नहीं चाहते, वह नये रूसके लिये नयी राजधानी स्थापित करनेको तत्पर हुआ। इसके लिये उसने बाल्टिक समुद्रके किनारेकी भूमिका एक छोटासा टुकड़ा चुना जिसे उसने स्वीडनसे जीता था। यहांकी जमीन [illegible] तर तो जरूर थी पर यहां उसे आशा थी कि कुछ समयके बाद रूसका पहिला वास्तविक पोताश्रय बन सकेगा। यहां ही उसने राशि राशि धन लगाकर सेण्ट पीटर्सबर्ग नामक राजधानी बसायी, जिसका नाम गत यूरोपीय युद्धके समयसे 'पेट्रोग्रेड' हो गया है। अब रूस धीरे धीरे यूरोपीय राष्ट्र बनने लगा।

समुद्रतक राज्यका विस्तार बढ़ा देनेकी महत्त्वाकांक्षाके कारण स्वीडनके साथ पीटरका झगड़ा हो जाना स्वाभाविक ही था, क्योंकि उस समय बाल्टिकके तीनतरफ भूमि स्वीडनके ही अधीन थी। [illegible] किसी देशमें पहिले कभी [illegible] राजा नहीं [illegible] वीरता-[illegible] [illegible] पड़ा। [illegible] १७४० [illegible]

वर्षका था इसलिये बालक राजाको दुर्बल समझकर स्वीडनके स्वाभाविक शत्रु इस मौकेसे लाभ उठाना चाहते थे। स्वीडनकी भूमि दबाकर अपने अपने राज्यकी वृद्धि करनेकी इच्छासे डेनमार्क, पोलैण्ड, तथा रूसका एक गुट बनाया गया। किन्तु सैनिक वीरतामें चार्ल्स दूसरा महान् अलैक्जण्डर प्रमाणित हुआ। उसने तुरन्त ही कोपेनहैगनको घेरकर डेनमार्कके राजाको सन्धिके लिए विवश कर यूरोपको आश्चर्यमें डाल दिया। फिर बिजलीकी तरह वह पीटरकी ओर चलपड़ा जो इस समय नारव्हाको घेरे हुए था। उसने केवल आठ हजार स्वीडनी सैनिकोंकी सहायतासे पचीस हजार रूसियोंका विध्वंस कर दिया [संवत् १७५७]। इसके बाद उसने पोलैण्डके राजाको भी परास्त किया।

यद्यपि चार्ल्स बहुत योग्य सैनिक नेता था तो भी वह बुद्धिमान् शासक न था। उसने पोलैण्डके राजासे पोलैण्ड छीन लेना चाहा, क्योंकि उसका ख्याल था कि इस राजाके प्रयत्नसे ही उसके विरुद्ध गुट बना था। उसने वारसामें एक अन्य व्यक्तिको राज्याभिषिक्त किया, जो बादमें उसके प्रयत्नसे राजा स्वीकृत कर लिया गया। अब उसने पीटरकी ओर दृष्टि फेरी जो इस बीचमें बाल्टिक प्रान्तोंको जीतनेमें लगा हुआ था। इस बार दैव स्वीडनके प्रतिकूल हो गया। मॉस्कोकी लम्बी यात्रा बादमें चार्ल्सके लिये वैसी ही क्षतिपूर्ण प्रमाणित हुई जैसी एक शताब्दी बाद नेपोलियनको हुई थी। संवत् १७६६ (सन् १७०९) में वह पुलटेवाकी लड़ाईमें पूरी तरहसे हरा दिया गया। अब वह तुर्कीमें जाकर कई वर्षों तक वहांके सुलतानसे पीटरपर आक्रमण करनेके लिये बराबर ही अनुरोध करता रहा। अन्तमें वह स्वदेश लौट आया। सम्वत् १७७५ (१७१८) में एक नगरका अवरोध करते समय उसकी मृत्यु हो गयी।

चार्ल्सकी मृत्युके बाद शीघ्र ही स्वीडन तथा रूसमें एक सन्धि हुई जिसके कारण बाल्टिकके पूर्वीय छोरके लिवोनिया, एस्थोनिया तथा अन्य प्रान्त, जो स्वीडन राज्यके अधीन थे, रूसको दे दिये गये। [illegible]

ओर पीटरको उतनी सफलता न हुई। उसने पहिले अजफपर कब्जा किया, किन्तु स्वीडनके साथ युद्धमें लगे रहनेपर वह उसके हाथसे निकल गया। फिर कास्पियन समुद्रके किनारेके कुछ नगरोंपर उसका अधिकार हो गया। अब यह स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि यदि तुर्क लोग यूरोपसे हटा दिये जायँ तो उनके देशकी लूटमें रूस पश्चिमी शक्तियोंका बड़ा भारी प्रतिद्वन्द्वी होगा।

पीटरकी मृत्युके बाद कोई एक पीढ़ी तक रूस अयोग्य शासकोंके हाथमें रहा। जब संवत् १८१६ (सन् १७६२) में प्रसिद्ध रानी द्वितीय कैथरिन गद्दीपर बैठी तब फिर रूसकी गणना यूरोपीय राज्योंमें होने लगी। इसके बादसे प्रायः सभी बड़े बड़े मामलोंमें पश्चिमी देशोंको रूस साम्राज्यका* ख्याल हमेशा करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उन्हें जर्मनीके उत्तरके एक और राज्यका ध्यान भी रखना पड़ता था जो पीटरके शासनकालके प्रारंभसे ही विशेष उन्नति करने लगा था। यह राज्य प्रशा था। अब हम इसीका वर्णन करेंगे।

ब्राण्डनबर्गका इलेक्टरेट जर्मनीके मानचित्रमें शताब्दियोंसे विद्यमान था, किन्तु वह एक दिन जर्मनीका प्रभावशाली राज्य बन जायगा, ऐसी कल्पना करनेके लिये कोई विशेष कारण न था। कान्स्टेन्सकी सभाके समयतक प्राचीन इलेक्टरोंका वंश समाप्त हो चुका था और धनकी आवश्यकता होनेके कारण सम्राट् (जीजिसमॉण्ट) सिजिसमुण्ड† ने ब्राण्डनबर्गका इलेक्टरेट ऐसे वंशके हाथ बेच दिया जिसका नाम अभीतक सुननेमें न आया था। यह होहेनज़ोलर्न‡ वंश था। जर्मनीके पहिले सम्राट् महान् फ्रेडरिक या प्रथम विलियम और वर्तमान सम्राट् कैसरकी गणना इसी वंशमें है। प्रारंभमें यह राज्य बर्लिन नगरसे पूर्व तथा पश्चिममें कोई ५० या १०० मील तक ही फैला हुआ था, किन्तु इस पर

* पृष्ठ २५० देखिये

† Sigismund ‡ Hohenzollern

क भिन्न भिन्न उत्तराधिकारियोंके समयमे क्रमश· इसकी वृद्धि होते होते वर्त्तमान प्रशा जर्मनीके लगभग दो तिहाईके बराबर हो गया है। यों तो होएनत्सोल्लर्न वंशका यह अभिमान है कि उसके प्रत्येक वंशजने अपने पूर्वजोंसे प्राप्त राज्यकी कुछ न कुछ वृद्धि की, पर वास्तवमे तीस वर्षीय युद्धके पहिले यह वृद्धि बिलकुल नाममात्रकी ही थी। उक्त युद्धके कुछ ही समय पूर्व ब्राण्डनवर्गके इलेक्टरको वंशानुक्रमके अधिकारसे क्लीव्ह प्रान्त प्राप्त हुआ, इस प्रकार राइन नदीकी भूमिपर पहिले पहल उसका कब्जा हुआ।

इसी प्रकार प्रशाकी डची (ड्यूकके अधीन राज्य) की विजय भी महत्त्व-पूर्ण है। इस प्रान्तको पोलैण्ड राज्यकी सीमा ब्राण्डनवर्गसे पृथक् करती थी। प्रशा पहिले बाल्टिकके किनारेकी उस भूमिका नाम था जिसमें विधर्मी स्लाव लोग निवास करते थे। इन लोगोंको धर्मयुद्धकी यात्रा करनेवाले वीरभटो [नाइट्स] के एक दलने तेरहवीं शताब्दीमे जीत लिया, जब कि ख्रीष्ट धर्मकी पवित्र भूमि जेरूसलेमके उद्धारका विचार त्याग देनेके कारण उन्हे और कोई खास काम नहीं रह गया था। इसमे जर्मनीके अधि· वासी जा बसे, किन्तु बादमें उसपर पड़ोसके पोलैण्ड राज्यका आधिपत्य हो गया। यह प्रान्त जिन वीरभटोके अधिकारमे था उनका दल ट्यूटा-निक दल कहलाता था। पोलैण्डके राजाने इस दलके अधीन भूमिका पश्चिमार्द्ध प्रत्यक्ष रूपसे अपने राज्यमे मिला लिया। लूथरके सनदमें (संवत् १५८२ में) ट्यूटानिक दलके ग्राण्ड मास्टर' ([illegible]) ने, जो ब्राण्डनवर्गके इलेक्टरोका सम्बन्धी था, अपने दलको भंग कर पोलैण्डके राजाके अधीन प्रशाका ड्यूक बननेका निश्चय किया। इस समयके बाद उसका वंश समाप्त हो गया और डची ब्राण्डनवर्गके इलेक्टरके हाथ लगी। संवत् १७५८ में जब सम्राट्ने ब्राण्डनवर्गके इलेक्टरको राजाकी उपाधि ग्रहण करनेकी अनुमति दी तब उसने अपनेको प्रशाका राजा प्रसिद्ध करना ठीक समझा।

लूथरकी मृत्युके पहिले ही ब्राण्डनबर्गने प्रोटेस्टेण्ट मत ग्रहण कर लिया था, किन्तु तीस वर्षीय युद्धमें उसने कोई विशेष प्रशंसनीय भाग नहीं लिया। उसकी वास्तविक महत्ताका प्रारंभ महान् इलेक्टर (सन् १६६७-१७४५) के समयसे होता है। वेस्टफेलियाकी सन्धिसे बाल्टिक समुद्रके किनारेकी भूमिका बड़ा भाग उसके कब्जेमें आ गया। वह अपने समाकालीन चौदहवें लूईके ढँगपर एक अनियंत्रित शासनकी स्थापना करनेमें सफल हुआ। लूईका विरोध करनेमें उसने इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्डका साथ दिया। इसके बादसे ब्राण्डनबर्गकी सेनाका नाम तथा आतंक फैलने लगा।

यद्यपि यूरोपमें खलबली उत्पन्न करनेका तथा यूरोपकी शक्तियोंमें प्रशाके नूतन राज्यकी गणना करानेका श्रेय महान् फ्रेडरिकको ही प्राप्त है, तथापि जिन साधनोंकी सहायतासे उसे विजय प्राप्त करनेमें सफलता हुई वे उसे अपने पिता फ्रेडरिक प्रथम विलियमसे मिले थे। फ्रेडरिक विलियमने अपने राज्यको मजबूत किया और प्रायः फ्रान्स या आस्ट्रियाकी सेनाके बराबर ही सेना इकट्ठी कर ली। इसके अतिरिक्त उसने [illegible] मितव्ययिताके कारण तथा सांसारिक सुखोपभोगकी ओर उदासीन रह कर महती सम्पत्तिका संचय भी कर लिया था। अतः शासनभार ग्रहण करनेपर महान् फ्रेडरिकके पास सुसज्जित सेना तो तैयार थी ही, साथ ही उसके पास काफी द्रव्य भी मौजूद था।

उस समय हंगरीके प्रायः सारे राज्यपर तुर्कोंका कब्जा हो गया था, और विक्रमकी अठारहवीं शताब्दीके मध्य तक आस्ट्रियाके शासक प्राय. मुसलमानोंका मुकाबिला करनेमें ही लगे रहे ।

विक्रमकी चौदहवीं शताब्दीके मध्यमें एक तुर्की जाति पश्चिमी एशियासे आकर एशियामाइनर [लघु एशिया] में बस गयी थी । उसके नेताका नाम था उस्मान [ओथमान*] । इसी व्यक्तिके नामपर उन लोगोंका नाम 'ओटोमन तुर्क' पड़ा है । ये लोग उन तुर्कोंसे विभिन्न है जो 'सेल्जुक' कहलाते थे, और जिनका सामना धर्मयुद्धके यात्रियोंको करना पड़ा था । उसमानी तुर्कोंके नेताओंने अपने पुरुषार्थका अच्छा परिचय दिया । इन लोगोंने अपना एशियायी राज्य सुदूर पूर्वतक और बादमें अफ्रीका तक बढ़ा लिया। संवत् १४१० [सन् १३५३] में इन लोगोंने यूरोपमे भी अपना पैर जमानेमें सफलता प्राप्त की । इन लोगोने धीरे धीरे मक्दूनियाके स्लाव लोगोंको अपने वशमें कर लिया और कुस्तुन्तुनियाके निकटवर्ती प्रदेशोंपर अधिकार जमा लिया, यद्यपि पूर्वीय साम्राज्यका यह प्राचीन राजनगर पूरी एक शताब्दीके बाद ही इनके हाथ आया ।

तुर्कलोगोंकी इस प्रगतिको देखकर पश्चिमी यूरोपके राज्योंको स्वभावतः इस बातका भय होने लगा कि कहीं हमारी स्वाधीनता भी न छिन जाय । इस सामान्य शत्रु [तुर्कों] से बचावका भार वेनिस और जर्मनीके हैप्सबर्ग वंशपर पड़ा । इन दोनोंने तुर्कोंके साथ लगभग दो सदियों तक बराबर युद्ध जारी रखा । संवत् १७४० [सन् १६८३] में मुसलमानोंने एक बड़ी भारी सेना सुसज्जित कर वियेनापर घेरा डाला । यदि पोलैण्डके राजाने उस समय सहायता न पहुंचायी होती तो यह नगर मुसलमानोंके हाथ चला गया होता । इसी समयसे यूरोपमें तुर्कोंकी शक्ति क्रमशः क्षीण होती गयी और हैप्सबर्ग वंशके शासकोंने हंगरी और ट्रेन्सिलवेनियाके समग्र प्रदेशपर पुन. अपना अधिकार जमा लिया । संवत्

* Othman.

लूथरकी मृत्युके पहिले ही ब्राण्डनबर्गने प्रोटेस्टेण्ट मत ग्रहण कर लिया था, किन्तु तीस वर्षीय युद्धमें उसने कोई विशेष प्रशंसनीय भाग नहीं लिया। उसकी वास्तविक महत्ताका प्रारंभ महान् इलेक्टर (सन् १६६७-१७४५) के समयसे होता है। वेस्टफेलियाकी सन्धिसे दक्षिण समुद्रके किनारेकी भूमिका बड़ा भाग उसके कब्जेमें आ गया। वह अपने समाकालीन चौदहवें लूईके ढँगपर एक अनियंत्रित शासनकी स्थापना करनमें सफल हुआ। लूईका विरोध करनेमें उसने इंग्लैण्ड और हालैण्डका साथ दिया। इसके बादसे ब्राण्डनबर्गकी सेनाका नाम तथा आतंक फैलने लगा।

यद्यपि यूरोपमें खलबली उत्पन्न करनेका तथा यूरोपकी शक्तियोंसे प्रशाके नूतन राज्यकी गणाना करानेका श्रेय महान् फ्रेडरिकको ही प्राप्त है तथापि जिन साधनोंकी सहायतासे उसे विजय प्राप्त करनेमें सफलता हुई वे उसे अपने पिता फ्रेडरिक प्रथम विलियमसे मिले थे। फ्रेडरिक विलियमने अपने राज्यको मजबूत किया और प्रायः फ्रान्स या आस्ट्रियाकी सेनाके बराबर ही सेना इकट्ठी कर ली। इसके अतिरिक्त उसने अपनी मितव्ययिताके कारण तथा सांसारिक सुखोपभोगसे मोड़ [illegible] कर महती सम्पत्तिका संचय भी कर लिया था। अतः शासनभार ग्रहण करनेपर महान् फ्रेडरिकके पास सुसज्जित सेना तो तैयार थी ही, [illegible] उसके पास काफी द्रव्य भी मौजूद था।

उस समय हंगरीके प्रायः सारे राज्यपर तुर्कोंका कब्जा हो गया था, और विक्रमकी अठारहवीं शताब्दीके मध्य तक आस्ट्रियाके शासक प्राय: मुसलमानोंका मुकाबिला करनेमें ही लगे रहे।

विक्रमकी चौदहवीं शताब्दीके मध्यमें एक तुर्की जाति पश्चिमी एशियासे आकर एशियामाइनर [लघु एशिया] में बस गयी थी। उसके नेताका नाम था उस्मान [ओथमान*]। इसी व्यक्तिके नामपर उन लोगोंका नाम 'ओटोमन तुर्क' पड़ा है। ये लोग उन तुर्कोंसे विभिन्न हैं जो 'सेल्जुक' कहलाते थे, और जिनका सामना धर्मयुद्धके यात्रियोंको करना पड़ा था। उसमानी तुर्कोंके नेताओंने अपने पुरुषार्थका अच्छा परिचय दिया। इन लोगोंने अपना एशियायी राज्य सुदूर पूर्वतक और बादमें अफ्रीका तक बढ़ा लिया। संवत् १४१० [सन् १३५३] में इन लोगोंने यूरोपमे भी अपना पैर जमानेमें सफलता प्राप्त की। इन लोगोंने धीरे धीरे मक्दूनियाके स्लाव लोगोंको अपने वशमें कर लिया और कुस्तुन्तुनियाके निकटवर्ती प्रदेशोंपर अधिकार जमा लिया, यद्यपि पूर्वीय साम्राज्यका यह प्राचीन राजनगर पूरी एक शताब्दीके बाद ही इनके हाथ आया।

तुर्कलोगोंकी इस प्रगतिको देखकर पश्चिमी यूरोपके राज्योंको स्वभावतः इस बातका भय होने लगा कि कहीं हमारी स्वाधीनता भी न छिन जाय। इस सामान्य शत्रु [तुर्कों] से बचावका भार वेनिस और जर्मनीके हैप्सबर्ग वंशपर पड़ा। इन दोनोंने तुर्कोंके साथ लगभग दो सदियों तक बराबर युद्ध जारी रखा। संवत् १७४० [सन् १६८३] में मुसलमानोंने एक बड़ी भारी सेना सुसज्जित कर वियेनापर घेरा डाला। यदि पोलेण्डके राजाने उस समय सहायता न पहुंचायी होती तो यह नगर मुसलमानोंके हाथ चला गया होता। इसी समयसे यूरोपमें तुर्कोंकी शक्ति क्रमशः क्षीण होती गयी और हैप्सबर्ग वंशके शासकोंने हंगरी और ट्रैन्सिलवेनियाके समग्र प्रदेशपर पुनः अपना अधिकार जमा लिया। संवत्

* Othman.

१७५६ [सन् १६९९] में सुलतानने हैप्सबर्गवालोंके इस प्रस्तावको नियमानुसार स्वीकार कर लिया।

संवत् १७९७ [सन् १७४०] में, प्रशाके द्वितीय फ्रेडरिकके राज्यारोहणके कुछ मास पूर्व, हैप्सबर्गवंशके अन्तिम शासक चार्ल्स षष्ठकी मृत्यु हुई। इसने पहले ही समझ लिया था कि मेरी मृत्युके पश्चात् राज्याधिकारके सम्बन्धमें कुछ गड़बड़ी मचेगी, इसी विचारसे इसने कई दिनों तक अपनी पुत्री मेरिआ थेरेसाको यूरोपीय शक्तियों द्वारा उत्तराधिकारिणी कबूल करानेका प्रयत्न किया था। इंग्लैण्ड, हॉलैण्ड और प्रशाकी भी यही इच्छा थी कि मेरिआ थेरेसा शीघ्र ही राज्यासन पर बैठे; पर फ्रांस, स्पेन तथा पड़ोसी बवेरियाने, आस्ट्रियाके कुछ विस्तृत प्रदेशोंपर अधिकार जमा लेनेके उद्देश्यसे, इसका समर्थन नहीं किया। बवेरियाके ड्यूकने राज्यका न्याय्य उत्तराधिकारी अपनेको माननेका हठ किया और सप्तम चार्ल्सके नामसे अपनेको सम्राट् निर्वाचित करा लिया।

फ्रेडरिकके उदाहरणसे उत्साहित होकर फ्रांसने भी मेरिश्रा थेरेसापर आक्रमण करनेमें बवेरियाका साथ दिया। कुछ दिन तक तो यह प्रतीत होता था कि वह अपने राज्यकी रक्षा न कर सकेगी, पर उसका पराक्रम और साहस देखकर सारी प्रजा राजभक्तिके आवेशमें आगयी। फ्रांसीसी लोग शीघ्रही मार भगाये गये पर उसे फ्रेडरिकको, युद्धसे पृथक् होनेके लिए, साइलीशिआ देना पड़ा। अन्तमें इंग्लैण्ड तथा हालैण्डने बलसाम्य बनाये रखनेके विचारसे परस्पर मैत्री कर ली, क्योंकि ये लोग नहीं चाहते थे कि फ्रांस आस्ट्रियाके अधीन नेदरलैण्डपर अपना अधिकार जमाले। सप्तम चार्ल्सके मरनेपर [संवत् १८०२] मेरिश्रा थेरेसाका पति, लारेनका ड्यूक, फ्रैंसिस सम्राट् बनाया गया। कुछ वर्ष बाद संवत् १८०५ [सन् १७४८] मे सभी शक्तियोंने युद्धसे ऊबकर शस्त्र रख दिये और सबने यह कबूल किया कि सब बातोंकी व्यवस्था फिर वैसी ही कर दी जाय जैसी युद्धके पूर्व थी।

साइलीशिआ फ्रेडरिकके ही अधिकारमें छोड़ दिया गया, इससे उसके राज्यमें तृतीयांशकी वृद्धि हो गयी। अब इसने अपनी प्रजाको अधिक सुखी और अधिक उन्नत बनानेकी इच्छासे दलदलोंको सुखाने, व्यवसायकी उन्नति करने तथा नवीन दण्डसंग्रह बनानेकी ओर दृष्टि फेरी। उसने विद्वानोंके सहवासमें अपनी विद्याभिरुचिको पूर्ण करनेमें भी अपना समय लगाया और अठारहवीं सदीके सर्वप्रसिद्ध लेखक वाल्टेयरको बर्लिनमें निवास करनेके लिए आमंत्रित किया। जो लोग इन दोनो व्यक्तियोंके स्वभावसे परिचित हैं उन्हें यह जानकर आश्चर्य न होगा कि दो ही तीन वर्ष बाद इन दोनोंकी आपसमें नहीं- बनी और वाल्टेयर अत्यन्त अप्रसन्न होकर प्रशाके राजासे विदा हुआ।

साइलीशिआके निकल जानेके कारण उत्पन्न मेरिश्रा थेरेसाके चित्तकी ग्लानि किसी प्रकार कम नहीं हुई। वह विश्वासघाती फ्रेडरिकको निकाल कर उस प्रदेशको पुनः अपने अधिकारमें लाना चाहती थी। इसका

परिणामस्वरूप जो युद्ध हुआ वह आधुनिक इतिहासमें सर्वप्रसिद्ध है इसमें यूरोपकी लगभग सभी शक्तियां ही नहीं बल्कि भारतीय राजओंसे लेकर वर्जिनिया और न्यूइङ्गलैण्डके अधिवासियों तक, सारा संसार शामिल था। यह युद्ध सप्तवर्षीय युद्धके नामसे प्रसिद्ध है।

फ्रांसीसी राजाके दरबारमें मेरिआ थेरेसाका जो दूत था उसने अपना काम बड़ी कुशलतासे सम्पादित किया। यद्यपि हैप्सबर्गवंशके साथ २०० वर्षोंसे फ्रांसकी शत्रुता थी तो भी दूतने उसे प्रशाके विरुद्ध आस्ट्रियासे सन्धी करनेके लिए राजी कर लिया। रूस, स्वीडन तथा सैक्सनीने भी आक्रमणमें साथ देना कबूल किया। ऐसा प्रतीत होता था कि भिन्न भिन्न स्थानोंसे बढ़ती हुई इनकी सेनाएं आस्ट्रियाके प्रतिद्वन्दी प्रशाको पूर्णतः हड़प कर जायेंगी।

फिर भी वास्तवमें इस युद्धके कारण ही फ्रेडरिकको 'महान्' की उपाधि प्राप्त हुई। सिकन्दरके समयसे नेपोलियनके समयतक जितने प्रधान वीर पुरुष थे, फ्रेडरिकने अपनेको उनमेंसे किसीसे भी कम प्रमाणित नहीं किया। अपने मित्रोंके गुटका उद्देश्य विदित हो जानेपर उसने उनकी ओरसे युद्धारम्भकी प्रतीक्षा नहीं की बल्कि तुरन्तही सेक्सनीपर अधिकार कर लिया और बोहेमियाकी ओर भी बढ़ता चला गया, जहाँ वह राजधानी प्रेग भी हस्तगत करनेमें प्रायः सफल हुआ। यहाँ उसे हटना पड़ा पर संवत् १८१४ (सन् १७५७) में उसने फ्रांसीसियों और जर्मन शत्रुओंको आगे रासबाकके प्रसिद्ध युद्धमें परास्त किया। इसके एक मास बाद ब्रेसलाके निकट लिउथनमें उसने आस्ट्रियन सेनाको तितर बितर कर दिया। इसपर स्वीडन और रूसने भी युद्धसे हाथ खींच लिया होगये और उस समय फ्रेडरिकका सामना करनेवाला कोई न रहा।

ज़ारके सिंहासनारूढ़ होनेके कारण रूसने प्रशाके साथ सन्धि कर ली। इसपर मारिआ थेरेसाको एक बार फिर, इच्छा न होते हुए भी, अपने चिर शत्रुके साथ युद्ध बन्द कर देना पड़ा।

फ्रेडरिकने अपने शासनकालमें पोलैंडके उस भागको जीतकर अपने राज्यकी वृद्धि की जो विस्टूयूलाके उसपारके प्रदेशोंको उसके ब्रांडनबर्गके अन्तर्गत प्रदेशोंसे पृथक् करता था। पोलैंडका राज्य, जो बादमें अपनी अवनतिके दिनोंमें पश्चिमी यूरोपके लिए विशेष कष्टप्रद हुआ, रूस, आस्ट्रिया तथा प्रशासे चारों ओर घिर गया था। संवत् १०५७ (सन् १०००) में स्लाव जाति एक योग्य नेताकी अध्यक्षतामें यहां आकर बसी थी और यहाँके राजाओंने कुछ कालके लिए रूस, मोराविया तथा बाल्टिक प्रदेशोंके अधिक भागपर अपना आधिपत्य जमा लिया था, पर ये लोग उत्तम शासनप्रणाली स्थापित करनेमें कभी भी कृतकार्य नहीं हुए। इसका कारण यह था कि यहाँ अमीर-उमराओं द्वारा राजा लोग निर्वाचित किये जाते थे, पड़ोसके राज्योंकी तरह वंशागत प्रथा प्रचलित नहीं थी। निर्वाचनके समयमें खूब गड़बड़ी मचती थी और प्रायः विदेशी लोग भी चुन लिये जाते थे। व्यवस्थापक सभामें पेश किये गये प्रत्येक विधानको कोई भी अमीर अस्वीकृत (विटो) कर सकता था, जिसका परिणाम यह होता था कि अच्छीसे अच्छी योजना भी कार्यमें परिणत होनेसे रोक दी जा सकती थी। वहाँकी अराजकता तो प्रायः लोकप्रसिद्ध ही हो गयी थी।

रूस, आस्ट्रिया तथा प्रशा—इन पड़ोसी राज्योंने यह बहाना पेश किया कि इस अव्यवस्थित राज्यसे हम लोगोंके हितमें बाधा पहुंचती है, फलतः इन लोगोंने इस हतभाग्य राज्यका थोड़ा थोड़ा अंश आपसमें बांटकर खतरेको दूर करनेकी तरकीब सोची। इसके परिणाममें [illegible] बटवारा हुआ। इसके बाद दो बार इसका बटवारा और हुआ बटवारेने मानचित्रसे इस प्राचीन राज्यका अस्तित्व ही मिटा

[१] यूरोपीय महायुद्धके बाद अब यह राज्य [illegible] हो

फ्रेडरिकने अपने मरणकाल (सन् १७८६) तक अपने पितृदत्त राज्यको लगभग दूना कर दिया। उसने अपने सैनिक विक्रमसे प्रशा राज्यको एक विख्यात राज्य बना दिया और राज्यके प्राचीन भागोंकी जनताकी दशाका सुधार कर तथा पश्चिम भागमें जर्मन उपनिवेश बसा कर, राज्यकी आयके साधन बढ़ा दिये।

अध्याय ३२

आंग्लदेशका विस्तार।

गत अध्यायमें पूर्वी यूरोपकी उन्नति और दो नयी शक्तियो—प्रशा और रूस—के आविर्भावका उल्लेख किया गया है साथ ही यह भी दिखलाया गया है कि किस प्रकार ये नयी शक्तिया विक्रमकी १८ वी शताब्दीके अन्तमें आस्ट्रियाके साथ मिलकर अपने पड़ोसी निर्बल राज्यों—पोलैण्ड और तुर्की—का विनाश कर अपनी सीमावृद्धि करनेमें संलग्न थी।

इसी समय पश्चिममें आंग्लदेश भी शीघ्रतापूर्वक अपनी शक्ति बढ़ा रहा था। यद्यपि उस समयके यूरोपीय युद्धोंमें उसने विशेष भाग नहीं लिया, तो भी वह सामुद्रिक आधिपत्य प्राप्त करनेका प्रयत्न करता रहा। स्पेनके उत्तराधिकारकी लड़ाईके अनन्तर किसी भी यूरोपीय देशकी नो-शक्ति इंग्लैण्डका नौसेनाके मुकाबिलेकी न थी क्योंकि फ्रान्स और हालैंड दीर्घ कालव्यापी युद्धके कारण बहुत निर्बल हो गये थे। यूट्रेक्टकी सन्धिके ५० वर्ष बाद अंग्रेज लोग उत्तरी अमेरिका और भारतवर्ष, दोनों देशोंसे फ्रांसीसियोंको निकाल बाहर करनेमें कृतकार्य हुए। साथ ही वे विशाल औपनिवेशिक साम्राज्यकी नींव डालनेमें भी सफल हुए जिसके कारण आज भी यूरोपीय देशोंमें आंग्लदेशकी व्यापारिक प्रधानता बनी हुई है।

विलियम और मेरीके सिंहासनारोहणसे आंग्लदेशने उन दो प्रश्नोंको भी हल कर दिया जिनके कारण गत ५० वर्षों तक विषम कलह फैला हुआ था। पहले तो राष्ट्रने यह स्पष्टत: व्यक्त कर दिया कि वह प्रोटेस्टेण्ट रहना चाहता है। आंग्लदेशकी धार्मिक संस्था तथा सर्वसाधारणके पारस्परिक सम्बन्ध भी धीरे धीरे सन्तोषजनक रूपसे ठीक होने

जा रहा था। दूसरे, राजाके अधिकारोंकी सीमा सावधानीके साथ निश्चित कर दी गयी। विक्रमकी अठारहवीं सदीके उत्तरार्द्धसे आजतक किसी इंग्लिश राजाने पार्लमेंटके विधानको अस्वीकृत करनेका साहस नहीं किया है।

तृतीय विलियमके पश्चात् उसकी साली तथा द्वितीय जेम्सकी छोटी लड़की ऐन संवत् १७५९ (सन् १७०२) में सिंहासनासीन हुई। इसके देश और स्काटलैंडके अन्तिम सम्मिलनका महत्त्व उन युद्धोंसे कहीं बढ़कर था जो इंग्लैण्डके सेनाध्यक्षोंकी अधीनतामें स्पेनके विरुद्ध लड़े जा रहे थे। प्रथम एडवर्डने स्काटलैंड जीतनेका प्रयत्न किया था परंतु जैसा कि हम देख चुके हैं (पृष्ठ २२३-२४), वह सफल न हो सका। उसी समयसे इन दोनों देशोंकी पारस्परिक कठिनाइयोंके कारण लड़ाई और कष्टोंका सिलसिला बराबर जारी था। इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि दोनों देश प्रथम जेम्सके राज्यारोहण-कालसे एक ही शासकके अधीन थे पर प्रत्येककी अपनी अपनी स्वतंत्र पार्लमेंट और शासनपद्धति थी। अन्तमें संवत् १७६४ (सन् १७०७) में दोनोंने मिलकर एक राज्यके अन्तर्गत रहना कबूल किया। उसी समयसे स्काटलैंडकी ओरसे अंग्रेजी कामन सभाके लिये ४५ सदस्य और लार्ड सभाके लिये १६ लार्ड लिये जाने लगे। इस प्रकार ग्रेट ब्रिटेनका सम्पूर्ण द्वीप एक शासकके अन्तर्गत हो जानेसे पारस्परिक कलहके अवसर बहुत कुछ कम हो गये।

ऐनकी कोई सन्तान जीवित नहीं बची थी, इस कारण उसके राज्या-रोहणके पूर्व ही किये गये निश्चयके अनुसार एक प्रोटेस्टेण्ट जर्मन उसका निकटतम उत्तराधिकारी इंग्लैण्डकी गद्दीपर बैठाया गया। यह प्रथम जेम्सकी पौत्री सोफियाका पुत्र था। सोफियाने हनोवरके इलेक्टरसे अपना विवाह किया था, फलतः आंग्ल देशका नवीन राजा प्रथम जार्ज हनोवरका इलेक्टर और पवित्र रोमन साम्राज्यका सदस्य भी था।

नया राजा जर्मन होनेके कारण अंग्रेजी नहीं बोल सकता था, इस कारण उसे अपने मंत्रियोंसे टूटी फूटी लैटिनमें बातचीत करनी पड़ती

। राजाके प्रधान मंत्रियोंने अपनी इच्छासे 'केबिनेट' अर्थात् मंत्रिमण्डल रकी एक छोटीसी सभा स्थापित कर ली थी। सभाके वाद-विवाद झ न सकनेके कारण जार्ज उसकी बैठकामें सम्मिलित नहीं होता था, कार्यसे उसने जो उदाहरण खड़ा कर दिया उसका अनुकरण उसके राधिकारी भी करते रहे। इस प्रकार मंत्रि-सभा राजासे स्वतंत्र होकर पने अधिवेशन और कार्योंका सम्पादन करने लगी। शीघ्र ही आंग्लदेशमें निश्चित सिद्धान्त हो गया कि वास्तवमें उक्त सभा ही देशका शासन
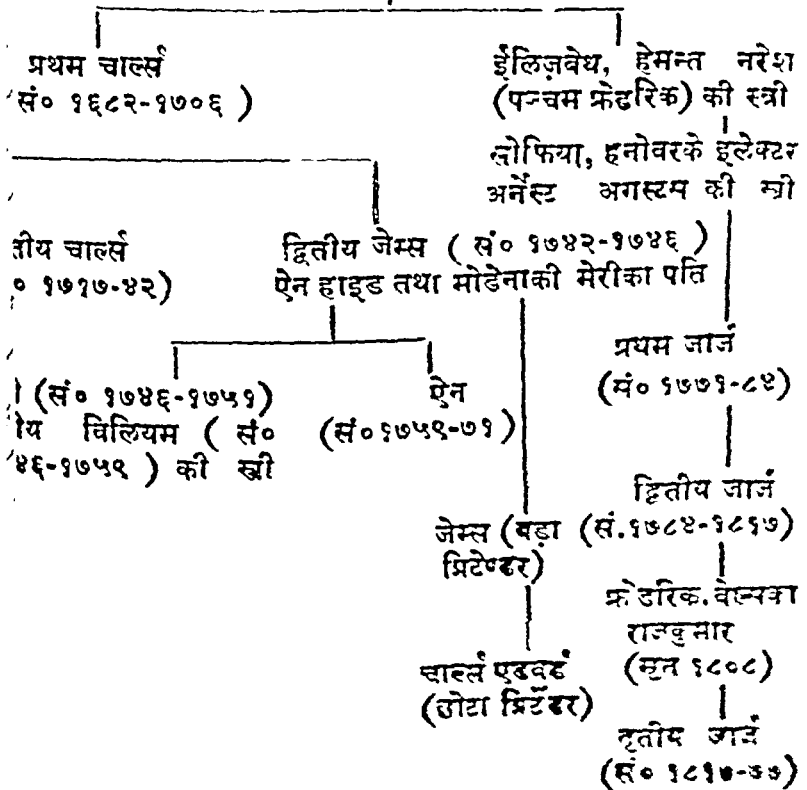
(पश्चिमी द्वीप-पुंज) और दक्षिणी अमेरिकापर हाथ बढ़ाया। सर्व-प्रथम हालैण्डके निवासी इन दोनों शक्तियोंके प्रतिद्वन्द्वी बने। जब द्वितीय फिलिप कुछ कालके लिए—संवत १६३७-१६६७ तक—पोर्तगालको स्पेन राज्यमें मिला लेनेमें समर्थ हुआ तो उसने शीघ्र ही लिस्बन बन्दरमें हालैण्डके जहाजोंका प्रवेश रोक दिया जिससे संयुक्त प्रान्त अर्थात् हालैण्ड और स्पेनी नेदरलैण्ड्के सौदागरोंको पोर्तगालियों-द्वारा पूर्वसे लाये गये मसालोंका मिलना बन्द होगया। इसपर उक्त दोनों देशोंने जिन स्थानोंसे मसाले आते थे उन्हींपर अधिकार कर लेनेका निश्चय किया। इन्होंने पोर्तगालवालोंको भारत तथा मसालेके द्वीपोंकी उनकी बस्तियोंसे निकाल बाहर किया। अब जावा, सुमात्रा, इत्यादि स्थान हालैण्डवासियोंके अधिकारमें आगये।

उत्तरी अमेरिकामें प्रधान प्रतिद्वन्द्वी आंग्लदेश और फ्रांस थे। विक्रम की सत्रहवीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें इस देशमें इन देशोंने अपने अपने उपनिवेश स्थापित किये थे। अंग्रेजलोग क्रमशः वर्जिनियाके जेम्सटाउन, न्यू इंग्लैंड, मेरीलैंड, पेन्सिलवेनिया तथा अन्यान्य स्थानोंमें बस गये। प्युरिटन, कैथलिक तथा क्वेकर लोगोंके, धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करनेके उद्देश्यसे, भागकर आबसनेके कारण इन उपनिवेशोंकी अभिवृद्धि हुई।

जिस प्रकार अंग्रेज लोग जेम्सटाउन बसा रहे थे उसी प्रकार फ्रांसीसी लोग नोवास्कोशिया तथा क्वेबेकमें सफलतापूर्वक अपनी बस्ती कायम कर रहे थे। यद्यपि अंग्रेजोंने फ्रांसीसियोंके कनाडापर अधिकार करनेमें कोई रुकावट नहीं डाली, फिर भी यह कार्य बहुत ही धीरे धीरे हुआ। संवत् १७३० (सन् १६७३) में मारकेट नामक एक जेसुइट पादरी और जालिवट नामक एक सौदागरने मिसिसीपी नदीका पता लगाया। लासालेने नदीके मुहानेकी और यात्रा की और जिस नये देशमें उसने प्रवेश किया उसका नाम, अपने राजाके नामपर लुईज़ियाना रखा।

संवत् १७७५ (सन् १७१८) में नदीके मुहानेके निकट न्यु्आर्लियन्स नामक नगर बसाया गया और फ्रांसीसियोंने इसके तथा माण्ट्रिआलके मध्य कई दुर्ग बनवाये।

यूट्रेक्टकी सन्धिसे अंग्रेज लोग उत्तरी प्रान्तमें बसनेमें समर्थ हुए क्योंकि इस सन्धिसे फ्रासीसियोंको न्यूफाउण्डलैंड, नोवास्कोशिया, और हडसन उपसागरके तटवर्ती स्थान अंग्रेजोंके सिपुर्द करने पड़े थे। सप्तवर्षीय युद्धके आरम्भके समय उत्तरी अमेरिकामें जहां अंग्रेजोंकी सख्या दस लाखसे अधिक समझी जाती थी वहां फ्रांसीसियोंकी संख्या इसके बीसवें भागसे अधिक नहीं थी। इतना होने पर भी उस समयके विज्ञ पुरुषोंका विश्वास था कि इस नवीन देशपर अपना विशेष प्रभुत्व जमानेमें आंग्ल देश की अपेक्षा सभवतः फ्रास ही अधिक समर्थ हो सकेगा।

आंग्लदेश और फ्रासकी प्रतिद्वन्द्विता उत्तर अमेरिकाके उन जंगलों तक ही व्याप्त नहीं थी, जहा लाल वर्ण वाले पाच लाख असभ्य मनुष्य निवास करते थे। अठारहवीं शताब्दीके उत्तरारम्भमें इन दोनों शक्तियोंने बीस करोड़ मनुष्योंकी निवास-भूमि तथा उच्च कोटिकी प्राचीन सभ्यताक केन्द्रस्थान विशाल भारत साम्राज्यके तटवर्ती स्थानापर अपने पैर जमा लिये थे।

वास्कोडिगामाके कालीकटमें पदार्पण करनेके ठीक एक पीढी बाद बाबरने भारतमें अपना साम्राज्य स्थापित किया। मुगलवंशके शासकोंने दो सदियोंसे अधिक ही सारे देशपर अपना अधिकार बनाये रखा। इसके पश्चात् उनका साम्राज्य शार्लमेनके साम्राज्यकी तरह विच्छिन्न हो गया। कारोलिंजियन कालके काउण्टों तथा ड्यूकोंकी तरह साम्राज्यके अफसर, नवाब, सूबेदार और राजालोग, जो कुछ कालके लिए मुगलोंके अधीन होगये थे, अपने अपने प्रदेशोंपर धीरे धीरे अधिकार जमाते गये। विक्रमकी १८ वीं सदीके उत्तरारंभमें, जब कि अंग्रेज और फ्रांसीसी भारतके तटवर्ती स्थानोंके लिए घात लगाना आरंभ कर रहे थे, यद्यपि मुगल

अंग्रेज औपनिवेशिकोंको, जिनका प्रधान काम प्रायः व्यापार करना ही था, इस बातका पता लग गया कि उनकी मद्रासकी कोठीमें एक ऐसा लेखक है जो साहस तथा युद्ध-कलामें ड्युप्लेसे किसी प्रकार कम नहीं है। यह राबर्ट क्लाइव था। उसकी अवस्था इस समय केवल २५ वर्षकी थी। उसने सिपाहियोंकी एक बृहत् सेना तैयार की। अपनी असाधारण वीरताके कारण वह उनका प्रधान बन गया। ड्युप्लेने एक्स-ला-शेपेल की सन्धिपर कुछ भी ध्यान न देकर अंग्रेजोंके विरुद्ध अपनी कार्रवाई जारी रखी पर क्लाइव अपने प्रतिद्वन्द्वीसे बढ़ चढ़ कर निकला और दो ही वर्षमें उसने दक्षिण-पूर्वी भारतमें अंग्रेजोंकी प्रधानता स्थापित कर दी।

जिस समय सप्तवर्षीय युद्ध आरम्भ हो रहा था उसी समय मद्राससे लगभग एक हज़ार मील उत्तर पूर्व कलकत्तेकी अंग्रेजी बस्तीके सम्बन्धमें क्लाइवके पास एक खेदजनक समाचार पहुँचा कि बंगालके सूबेदारने कुछ अंग्रेज सौदागरोंकी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली और १४६ अंग्रेजोंको एक छोटी कोठरीमें कैद कर दिया जिनमेंसे अधिकांश सूर्योदयके पूर्व ही दम घुट कर मर गये। क्लाइव शीघ्रतापूर्वक बंगाल पहुँचा। उसने ६०० यूरोपीय और १५०० देशी सैनिकोंकी एक छोटी सेनाकी सहायतासे सूबेदारके ५० हजार सैनिकोंको प्लासीके मैदानमें पराजित किया। क्लाइवने तब एक ऐसे व्यक्तिको बंगालका सूबेदार बनाया जिसे वह अंग्रेजोंका मित्र समझता था। सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त होनेके पहिले ही अंग्रेजोंने पांडिचेरीको जीत लिया और मद्रास प्रदेशमें फ्रांसीसियोंका जो प्रभाव था उसे सर्वथा नष्ट कर दिया।

संवत् १८२० (सन् १७६३) में पेरिसकी सन्धिसे जब सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हुआ तो यह बात स्पष्ट हो गयी कि इस युद्धसे और शक्तियोंकी अपेक्षा अंग्रेजोंने अधिकतर लाभ उठाया है। भूमध्य सागरके किनारेवाले दोनों दुर्ग, जिब्राल्टर और माहोन बन्दर जो मिनारका द्वीप पर था, उनके देशके ही अधिकारमें छोड़ दिये गये। फ्रांससे उसे अमेरिकामें कनाडा

विशाल प्रदेश और नोवास्कोशिया तथा वेस्ट इण्डीज़के कई द्वीप मिले। मिसिसिपीके उसपारकी भूमि फ्रांसने स्पेनको दे दी। इस प्रकार उत्तर अमेरिकासे फ्रांसका बिलकुल अधिकार जाता रहा। यद्यपि यह सत्य है कि भारतमें जो स्थान अंग्रेजोंने फ्रांसीसियोंसे जीते थे वे उन्हें लौटा दिये गये तो भी देशी शासकोंपर से फ्रांसीसियोंका प्रभाव बिलकुल जाता रहा, क्योंकि क्लाइवके कार्योंसे अब उनपर अंग्रेजोंके नामका विशेष दबदबा जम गया था।

इस प्रकार अपने औपनिवेशिकोंकी सहायतासे आंग्ल देश उत्तरी अमेरिकासे फ्रांसीसियोंको निकाल बाहर करने और मेक्सिकोको छोड़ शेष महाद्वीपको अंग्रेज जातिके लिए सुरक्षित रखनेमें समर्थ हुआ। किन्तु अधिक दिनों तक इस विजयका आनन्द मनाना उसके भाग्यमें नहीं बदा था क्योंकि पेरिसकी सन्धिके बाद शीघ्र ही उसमें तथा अमेरिकाके अधिवासियोंमें कर लगानेके सम्बन्धमें कलह प्रारम्भ होगया, जिसका परिणाम युद्ध और अंग्रेजी-भाषा-भाषी स्वतंत्र राष्ट्र अर्थात् अमेरिकाके संयुक्त राज्योंकी स्थापना हुआ।

आंग्ल देशको यह उचित प्रतीत हुआ कि उपनिवेशोंको भी गत युद्धके व्ययका, जो बहुत ही अधिक था, कुछ भाग अपने ऊपर लेना चाहिए और अंग्रेज सैनिकोंकी एक स्थायी सेना भी उन्हें रखनी चाहिए। इसलिए संवत् १८२२ (सन् १७६५) में पार्लमेंटने 'स्टाम्प एक्ट' नामका एक कानून बनाया जिसके अनुसार औपनिवेशिकोंका कानूनी कागजोंपर स्टाम्प (टिकट) लगाना आवश्यक हुआ। अमेरिकावालोंने यह कहकर इसकी अवमानना की कि हमपर कर लगानेका अधिकार पार्लमेंटको नहीं है क्योंकि उक्त सभामें हमारे प्रतिनिधि नहीं हैं। स्टाम्प एक्टका इतना अधिक विरोध हुआ कि पार्लमेंटने इसे रद्द तो कर दिया पर उसने यह साफ साफ जाहिर कर दिया कि पार्लमेंटको उपनिवेशोंपर कर लगाने और उनके लिए कानून बनानेका पूरा अधिकार है।

अंग्रेज औपनिवेशिकोंको, जिनका प्रधान काम प्रायः व्यापार करना ही था, इस बातका पता लग गया कि उनकी मद्रासकी कोठीमें एक ऐसा लेखक है जो साहस तथा युद्ध-कलामें ड्युप्लेसे किसी प्रकार कम नहीं है। यह राबर्ट क्लाइव था। उसकी अवस्था इस समय केवल २५ वर्षकी थी। उसने सिपाहियोंकी एक बृहत् सेना तैयार की। अपनी असाधारण वीरताके कारण वह उनका प्रधान बन गया। प्लेने एक्स-ला-शेपेल की सन्धिपर कुछ भी ध्यान न देकर अंग्रेजोंके विरुद्ध अपनी कार्रवाई जारी रखी पर क्लाइव अपने प्रतिद्वन्द्वीसे बढ़ चढ़ कर निकला और दो ही वर्षमें उसने दक्षिण-पूर्वी भारतमें अंग्रेजोंकी प्रधानता स्थापित कर दी।

जिस समय सप्तवर्षीय युद्ध आरम्भ हो रहा था उसी समय मद्राससे लगभग एक हज़ार मील उत्तर पूर्व कलकत्तेकी अंग्रेजी बस्तीके सम्बन्धमें क्लाइवके पास एक खेदजनक समाचार पहुँचा कि बंगालके सूबेदारने कुछ अंग्रेज सौदागरोंकी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली और १४५ अंग्रेजोंको एक छोटी कोठरीमें कैद कर दिया जिनमेंसे अधिकांश सूर्योदयके पूर्व ही दम घुट कर मर गये। क्लाइव शीघ्रतापूर्वक बंगाल पहुँचा। उसने ६०० यूरोपीय और १५०० देशी सैनिकोंकी एक छोटी सेनाकी सहायतासे सूबेदारके ५० हज़ार सैनिकोंको प्लासीके मैदानमें पराजित किया। क्लाइवने तब एक ऐसे व्यक्तिको बंगालका सूबेदार बनाया जिसे वह अंग्रेजोंका मित्र समझता था। सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त होनेके पहिले ही अंग्रेजोंने पांडिचेरीको जीत लिया और मद्रास प्रदेशमें फ्रांसीसियोंका जो प्रभाव था वह सर्वथा नष्ट कर दिया।

संवत् १८२० (सन् १७६३) में पेरिसकी सन्धिसे जब सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हुआ तो यह बात स्पष्ट हो गयी कि इस युद्धसे और शक्तियोंकी अपेक्षा अंग्रेजोंने अधिकतर लाभ उठाया है। भूमध्य सागरके किनारेवाले दोनों दुर्ग, जिब्राल्टर और माहोन बन्दर जो मिनारका द्वीप पर था, अंग्रेज देशके ही अधिकारमें छोड़ दिये गये। फ्रांससे उसे अमेरिकामें कनाडाका

विशाल प्रदेश और नोवास्कोशिया तथा वेस्ट इण्डीज़के कई द्वीप मिले। मिसिसिपीके उसपारकी भूमि फ्रांसने स्पेनको दे दी। इस प्रकार उत्तर अमेरिकासे फ्रांसका बिलकुल अधिकार जाता रहा। यद्यपि यह सत्य है कि भारतमें जो स्थान अंग्रेजोंने फ्रांसीसियोंसे जीते थे वे उन्हें लौटा दिये गये तो भी देशी शासकोंपर से फ्रांसीसियोंका प्रभाव बिलकुल जाता रहा, क्योंकि क्लाइवके कार्योंसे अब उनपर अंग्रेजोंके नामका विशेष दबदबा जम गया था।

इस प्रकार अपने औपनिवेशिकोंकी सहायतासे आंग्ल देश उत्तरी अमेरिकासे फ्रांसीसियोंको निकाल बाहर करने और मेक्सिकोको छोड़ शेष महाद्वीपको अंग्रेज जातिके लिए सुरक्षित रखनेमें समर्थ हुआ। किन्तु अधिक दिनों तक इस विजयका आनन्द मनाना उसके भाग्यमें नहीं बदा था क्योंकि पेरिसकी सन्धिके बाद शीघ्र ही उसमें तथा अमेरिकाके अधिवासियोंमें कर लगानेके सम्बन्धमें कलह प्रारम्भ होगया, जिसका परिणाम युद्ध और अंग्रेजी-भाषा-भाषी स्वतंत्र राष्ट्र अर्थात् अमेरिकाके संयुक्त राज्योंकी स्थापना हुआ।

आंग्ल देशको यह उचित प्रतीत हुआ कि उपनिवेशोंको भी गत युद्धके व्ययका, जो बहुत ही अधिक था, कुछ भाग अपने ऊपर लेना चाहिए और अंग्रेज सैनिकोंकी एक स्थायी सेना भी उन्हें रखनी चाहिए। इसलिए संवत् १८२२ (सन् १७६५) में पार्लमेंटने 'स्टाम्प एक्ट' नामका एक कानून बनाया जिसके अनुसार औपनिवेशिकोंका कानूनी कागजोंपर स्टाम्प (टिकट) लगाना आवश्यक हुआ। अमेरिकावालोंने यह कहकर इसकी अवमानना की कि हमपर कर लगानेका अधिकार पार्लमेंटको नहीं है क्योंकि उक्त सभामें हमारे प्रतिनिधि नहीं हैं। स्टाम्प एक्टका इतना अधिक विरोध हुआ कि पार्लमेंटने इसे रद्द तो कर दिया पर उसने यह बात साफ जाहिर कर दिया कि पार्लमेंटको उपनिवेशोंपर कर लगाने और उनके लिए कानून बनानेका पूरा अधिकार है।

संवत् १८३० (सन् १७७३) में अमेरिकामें आनेवाली चायपर कुछ हलका कर लगा दिये जानेके कारण बखेड़ा और भी बढ़ गया। बोस्टनके कुछ राज्यविद्रोही नवयुवकोंने बन्दरमें खड़े हुए चायसे लदे एक जहाजपर आक्रमण किया और सारी चाय पानीमें डुबो दी। बर्कने, जो कामन सभाका कदाचित् सबसे योग्य सदस्य था, मंत्रिमंडलसे यह अनुरोध किया कि अमेरिकनोंको स्वयं अपने ऊपर कर लगाने देना चाहिए पर तृतीय जार्ज तथा पार्लमेंटके सदस्य औपनिवेशिकोंके इस विरोधको योंही नहीं छोड़ देना चाहते थे। उनकी यह धारणा थी कि इस बखेड़ेकी प्रबलता विशेषकर न्यूइंग्लैंडमें हीसे है और यह आसानीसे दबा दिया जा सकता है। संवत् १८३१ (सन् १७७४) में कानून बनाकर बोस्टनमें माल उतारना या लादना रोक दिया गया और मासाचुसेटके उपनिवेशसे न्यायाधीश और बड़ी व्यवस्थापक सभाके लिए सदस्य चुननेका अधिकार जो उसे पहिले प्राप्त था छीन लिया गया और वह राजाके हाथमें दे दिया गया।

इन कार्योंसे मासाचुसेट तो शान्त हुआ नहीं, उलटे और उपनिवेशोंके मनमें भी शंका उत्पन्न हो गयी, इसलिए सबने एक कांग्रेसकी योजना कर फिलेडेल्फियामें उसका अधिवेशन किया। कांग्रेसने यही निर्णय किया कि जब तक उपनिवेशोंकी सभी बुराइयोंका प्रतीकार न होगा तब तक आंग्लदेशके साथ व्यापार रोक दिया जाय। दूसरे वर्ष अमेरिकनोंने लेक्सिंगटनमें तथा बंकरहिलकी लड़ाईमें बड़ी वीरतापूर्वक अंग्रेजी सेनाका सामना किया। नयी कांग्रेसने युद्धकी तैयारी करनेका निश्चय कर एक सेना तैयार की और जार्ज वाशिंगटनको जो वर्जिनियाका एक किसान था और जो फ्रांसीसी युद्धमें कुछ ख्याति भी प्राप्त कर चुका था, सेनाका प्रधान बनाया। अब तक उपनिवेशोंका विचार आंग्लदेशसे अलग होनेका नहीं था पर समझौतेका प्रयत्न सफल न होनेके कारण संवत् १८३३ के श्रावण (जुलाई १७७६ ई०) में कांग्रेसने घोषित कर दिया कि "संयुक्त राज्य स्वतंत्र और स्वाधीन है और अधिकारतः यही होना भी चाहिए

इस घटनासे फ्रांसमें बड़ी दिलचस्पी पैदा हुई। सप्तवर्षीय युद्धोंका परिणाम फ्रांसके लिए बहुत ही दुःखदायी हुआ था। उसके पुराने शत्रु आंग्लदेशपर किसी विपत्तिका आना उसके लिए बड़ी प्रसन्नताकी बात थी। संयुक्त राज्य अमेरिकाने फ्रांसको अपना स्वाभाविक मित्र समझकर नये फ्रांसीसी राजा १६ वें लुईसे सहायता पानेकी आशासे बेंजामिन फ्रेंकलिनको वर्सेल्स भेजा। फ्रांसके राजमन्त्रियोंको यह विश्वास न हुआ कि ये उपनिवेश आंग्ल देशकी बढ़ी हुई शक्तिके आगे बहुत दिनों तक टिक सकेंगे। किन्तु संवत् १८३४ (सन् १७७७) में जब अमेरिकनोंने साराटोगामें बरगोनेको पराजित कर दिया तब फ्रांसने संयुक्त राज्यके साथ सन्धि कर उसे स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य मान लिया। यह बात आंग्ल देशके साथ युद्ध-घोषणा करनेके समान ही हुई। इन अमेरिकनोंके लिये फ्रांसमें ऐसा जोश फैला कि कुछ नवयुवक सरदार, जिनमें लाफेयेट सर्वप्रसिद्ध था, अतलांतिक महासागर पार कर युद्ध करनेके लिए अमेरिकन सेनासे जा मिले।

वाशिंगटनके आत्मत्यागी और कुशल होनेपर भी अधिकतर युद्धोंमें अमेरिकनोंकी हार होती गयी। यदि फ्रांसीसी बेड़ेकी सहायता न मिली होती तो अमेरिकन लोग यार्कटाउनमें अंग्रेजी सेनापति कार्नवालिसको आत्मसमर्पणके लिए विवश कर सफलतापूर्वक युद्धका अन्त कर सकते या नहीं, इसमें सन्देह ही है। पेरिसकी सन्धिसे युद्ध समाप्त होनेके पूर्व ही स्पेन फ्रांससे मिल गया था। उसके तथा फ्रांसके बेड़ोंने जिब्राल्टरपर घेरा डाल दिया। अंग्रेजोंके गोलोंसे उनके युद्धपोत तहस नहस हो गये। अंग्रेजोंके शत्रुओंने उनको इस प्रसिद्ध स्थानसे हटानेके लिए फिर कोई प्रयत्न नहीं किया। इस युद्धका मुख्य परिणाम यह हुआ कि संयुक्त राज्योंकी स्वतंत्रता आंग्ल देशने मान ली और मिसिसिपी नदी इन राज्योंकी सीमा मानी गयी। मिसिसिपी के पश्चिमका विस्तृत लुईज़िआना प्रदेश स्पेनवालोंके ही अधिकारमें रहा।

यूट्रेक्टकी सन्धिसे लेकर पेरिसकी सन्धितकके ६० वर्षोंके दूरांत युद्धका परिणाम संक्षेपमें इस प्रकार दिया जा सकता है। उत्तर-पूर्वमें न्यू

और प्रशाकी दो नवीन शक्तियाँ यूरोपीय राष्ट्रोंकी श्रेणीमें सम्मालित हुईं। साइलीसिया और पश्चिमी पोलैंडपर अधिकार कर प्रशाने अपना राज्य बहुत बढ़ा लिया। उन्नीसवीं सदीमें, जर्मनीमें प्राधान्य प्राप्त करनेके विचारसे प्रशा और आस्ट्रिया दोनों आपसमें भिड़ गये, परिणाम यह हुआ कि पवित्र रोमन साम्राज्यके स्थानमें, जो नाममात्रके लिए हैप्सवर्ग वंशकी अधीनतामें अब तक चला आया था, होएनत्सोल्लर्नोंकी अध्यक्षतामें वर्तमान जर्मन साम्राज्यकी स्थापना हुई।

सुलतानकी शक्ति बड़ी शीघ्रतासे क्षीण हो रही थी, आस्ट्रिया और रूस उसके यूरोपीय प्रान्तोंपर हाथ साफ करनेका पहलेसे ही विचार कर रहे थे। इससे यूरोपीय शक्तियोंके सम्मुख एक नयी समस्या उपस्थित हो गयी (बादमें इसका नाम "पूर्वीय प्रश्न' पड़ा)। यदि आस्ट्रिया और रूसको तुर्की राज्योंको अधिकारमें लाकर शक्ति बढ़ानेका अवसर दिया जाता तो यूरोपकी शक्ति-तुला, जिसका आंग्लदेश विशेष पक्षपाती था, कायम नहीं रह सकती थी। इसलिये इस समयसे तुर्की पश्चिमी यूरोपके राष्ट्रोंकी पंक्तिमें ले लिया गया क्योंकि यह शीघ्रही स्पष्ट हो गया कि पश्चिमी यूरोपके कुछ राज्य सुलतानके साथ मैत्री करनेके लिए इच्छुक हैं और परोसियोंसे रक्षा करनेमें प्रत्यक्ष रूपसे उसकी मदद भी करना चाहते हैं।

आंग्ल देशने अमेरिकन उपनिवेशोंको खो दिया था और उसने अपनी कुटिल नीतिसे एक ऐसे राज्यको स्थापित होनेका अवसर दिया जो उसीकी भाषा बोलता था और जिसका विस्तार उत्तरी अमेरिकाके मध्य अतलान्तिक महासागरसे प्रशान्त महासागर तक हुआ। फिर भी कनाडापर उसका अधिकार बना रहा। उसने उन्नीसवीं सदीमें दक्षिण गोलार्द्धके आस्ट्रेलिया महादेशको अपने विशाल औपनिवेशिक साम्राज्यमें मिला लिया। भारतमें अब कोई यूरोपीय राष्ट्र उसका प्रतिद्वन्द्वी नहीं रहा और धीरे धीरे उसका अधिकार हिमालयके दक्षिण सारे भूमागपर विस्तृत होगया। अबद

१९३४ (सन् १८७७) में मुगल सम्राट्के स्थानपर महारानी विक्टोरिया भारतकी सम्राज्ञी घोषित की गयीं।

चौदहवें लूईके प्रपौत्र १५ वें लूईके सुदीर्घ राज्यकालमें फ्रांसकी अवस्था पहलेसे भी बुरी रही। फिर भी उसने लारेन और संवत् १८२५ (सन् १७६८) में कार्सिका द्वीप जीतकर अपनी राज्य-वृद्धि की। इसके एक वर्ष पश्चात् कार्सिकाके आयाचो * नगरमें एक बालक उत्पन्न हुआ जिसने अपनी प्रतिभासे कुछ दिनोंके लिए फ्रांसको एक ऐसे विस्तृत साम्राज्यका केन्द्र बना दिया जो विस्तारमें शार्लमेनके साम्राज्यसे किसी प्रकार कम न था। उन्नीसवीं सदीके उत्तरार्द्धमें फ्रांसमें एकराजतन्त्रके स्थानमें प्रजातंत्र स्थापित होगया और उसकी सेना मेड्रिडसे लेकर मास्को तककी प्रत्येक यूरोपीय राजधानीपर अधिकार जमानेमें लगी रही। फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति तथा नेपोलियनके युद्धोंसे जो असाधारण परिवर्तन उपस्थित हुए उन्हें समझने के लिए फ्रांसकी उस परिस्थितिपर गौरसे विचार करना होगा जिस से संवत् १८४६ (सन् १७८९) में वहाकी संस्थाओंका पूरा सुधार और चार वर्ष पश्चात् प्रजातन्त्रकी स्थापना हुई।

---

* Ajaccio

विद्वानों तथा अन्वेषकोंपर इन सिद्धान्तोंकी छाप यूनानियों तथा रोमन लोगोंने डाली थी। वर्तमान रसायन शास्त्रकी उन्नति कीमियागरी और गणित ज्योतिषसे ही हुई है।

कीमियागरोंने पारसमणिकी प्राप्तिके उद्देश्यसे अपना प्रयोगात्मक कार्य जारी रखा। उन लोगोंका यह विश्वास था कि यदि यह पत्थर, सीसा पारा, चांदी इत्यादिमें मिला दिया जावे तो वह उक्त धातुओंको सुवर्णमें परिणत कर दे। उन लोगोंकी यह भी धारणा थी कि उक्त माणिक कुछ अंश बूढ़ा मनुष्य पान कर ले तो वह युवा हो जायगा और उसकी आयु बेहद बढ़ जायगी। यूनानियों तथा अरबी लोगोंने पश्चिमी यूरोपके लोगोंको ऐसी कई विचित्र वस्तुओंके नाम बतलाये थे जिनका सम्मिश्रण अभीष्ट पदार्थ उत्पन्न कर सकता है। पारसमणिका तो पता नहीं लगा पर इस अन्वेषण-कार्यसे ऐसे कई लाभदायक मिश्रित द्रव्योंका पता लगा जो इस समय दवा या तरह तरहके उद्योगोंमें काम आते हैं। इन द्रव्योंके विलक्षण ही नाम रखे गये।*

अरस्तूका यह सिद्धान्त था कि क्षिति, समीर, पावक और जल यही चार तत्व हैं और ताप, ठंड, शुष्कता और आर्द्रता, यही पदार्थोंके मौलिक गुण हैं। इस प्राचीन धारणाके कारण रसायनशास्त्रकी उन्नतिमें विशेष बाधा पड़ी। अठारहवीं सदीके एक जर्मन कीमियागरने यह दलील पेश की कि ज्वाला भी एक तत्व ही है जो पदार्थोंमें तबतक अव्यक्त रूपमें वर्तमान रहती है जब तक उनका गर्मीसे सम्पर्क नहीं होता। उस समयके दिग्गज विद्वानोंने भी इस सिद्धान्तको मान लिया। पारस-मणि पानेकी चिरकालागत आशाको अंग्रेज रसायन-शास्त्रज्ञों, विशेषकर ब्यॉयलने निर्मूल किया। नये नये पदार्थोंका पता लगा, हाइड्रोजन, कार्बन और नाइट्रोजन इत्यादि गैस शुद्ध रूपमें निकाले गये।

---

* क्रीम आव टार्टर = एक प्रकारका पोटाश इत्यादिसे बना हुआ ... [illegible]

अठारहवीं शताब्दीके अन्ततक वर्तमान रसायन-शास्त्रकी वास्तविक स्थापना नहीं हुई थी। इसी समयमें लेवोसियर नामक एक फ्रांसीसी रसायन-शास्त्रज्ञ अपने पन्द्रह वर्षके प्रयोग द्वारा हवाका विश्लेषण करनेमें कृतकार्य हुआ। उसने यह भी सिद्ध कर दिखाया कि किसी पदार्थका जलना ओषजन ग्रहण करनेकी शक्ति रखनेवाले पदार्थके साथ ओजपनके मिश्रणका फल है। उसने सावधानीसे तौलकर दिखला दिया कि जले हुए पदार्थकी तौल जलनेके कारण उत्पन्न पदार्थ तथा मिले हुए ओषजन दोनोंकी संयुक्त तौलके बराबर है। उसीने पहले पहल जलका विश्लेषण कर ओषजन और उज्जन* मे बांटा और फिर इन दोनोंको मिलाकर जल भी बनाया। संवत् १८४४ (सन् १७८७) में उसने 'फ्रेंच एकडेमी आव साइन्सेज़' को रासायनिक पदार्थोंके नामकरणकी एक नयी पद्धति बतलायी, रसायन-शास्त्रकी पाठ्य पुस्तकोंमें उन्हीं नामोंका प्रयोग होता है। लवोसियरके तुला-प्रयोग, विश्लेषण तथा संश्लेषण, ज्वलन ज्ञान तथा प्रसिद्ध गैसोंकी ही सहायतासे रसायन-शास्त्रज्ञोंने कई नयी बातोंका पता लगा लिया और उन्होंने अपने ज्ञानका कई क्रियात्मक तरीकोंसे प्रयोग किया। फोटोग्राफी विस्फोटक पदार्थ और आनिलाइनके रंग इत्यादि इसी प्रयोगके परिणाम हैं।

जिस प्रकार कीमियाकी आशासे रसायन-शास्त्रकी उन्नति हुई उसी प्रकार ग्रहचारके द्वारा भविष्य-कथनके विश्वाससे गणित ज्योतिषका विकास हुआ। कुछ ही काल पूर्व तक बड़े बड़े समझदार लोगोंका भी यही विश्वास था कि इन आकाशस्थ पिण्डोंका मनुष्यके भाग्यपर बहुत कुछ प्रभाव पड़ता है। फलतः यदि बच्चेके जन्मकालका ठीक ठीक मालूम हो जाय तो उसका सारा जीवन-फल जान लेना संभव है। इसी धारणाके कारण जब ग्रह अनुकूल होते थे तभी महत्त्वके कार्य प्रारम्भ किये जाते थे। वैद्योंका भी यही विधान था कि दवाइके [illegible]

---

*Oxygen and hydrogen

गुणकारी होना ग्रहोंकी स्थितिपर ही निर्भर है। मानव-समाजके कार्यों पर ग्रहोंके प्रभावका ही विषय फलित ज्योतिष (एस्ट्रालाजी) कहलाता है। मध्य-युगके किसी किसी विश्वविद्यालयमें यह विषय पढ़ाया भी जाता था। खगोल विद्याका अध्ययन करने वाले पीछे इस परिणामपर पहुंचे कि ग्रहोंकी चालका मनुष्यके ऊपर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। किन्तु फलित ज्योतिष वालोंने जिन बातोंका अनुसन्धान किया था उन्हींके आधारपर वर्त्तमान ज्योतिषकी स्थापना हुई।

सारे मध्ययुग, यहां तक कि तमोयुगमें भी विद्वानोंको पृथ्वीके गोल होनेकी बात मालूम थी। उन्होंने जो आयतन निकाला था वह बहुत कम भी न था। उनको यह भी ज्ञान था कि ये ग्रह और तारे आकारमें बहुत बड़े और पृथ्वीसे लाखों मील दूर हैं। तो भी विश्वके विस्तारका उन्हें नितान्त अशुद्ध ज्ञान था। भूलसे वे लोग पृथ्वीको केन्द्र मानते थे और ख्याल करते थे कि सूर्य्य इत्यादि सम्पूर्ण आकाशीय पिण्ड प्रतिदिन पृथ्वीकी परिक्रमा किया करते हैं। कुछ यूनानी दर्शनिक इसकी सत्यतामें सन्देह भी प्रगट करते थे किन्तु पोलैंड-निवासी कोपरनिक (कोपरनिकस) नामक ज्योतिषीने साहसपूर्वक यह प्रतिपादित किया कि पृथ्वी तथा अन्यान्य ग्रह सूर्यकी परिक्रमा करते हैं। उसका प्रसिद्ध ग्रंथ 'आकाशीय

जिन सत्य बातोंके सम्बन्धमें पहलेके ज्योतिषियोंके हृदयमें शंकामात्र प्रगट हुई थी, उनको गेलिलियोने प्रत्यक्ष करके दिखला दिया। एक छोटेसे दूरदर्शक यंत्रकी सहायतासे, जो आजकलके यंत्रोंके सामने बहुत ही तुच्छ था, उसने सूर्य्यपर के धब्बोंका पता लगाया [संवत् १६६७]। इन धब्बोंसे यह स्पष्ट हो गया कि सूर्य्य भी अपनी धूरीपर ठीक उसी प्रकार घूमता है जिस प्रकार पृथ्वीके घूमनेके सम्बन्धमें ज्योतिषियोंका विश्वास है। उसके छोटे दूरदर्शक यंत्रसे यह भी देखा गया कि बृहस्पतिके उपग्रह उसकी परिक्रमा ठीक उसी तरह करते हैं जिस प्रकार विविध ग्रह सूर्यकी परिक्रमा किया करते हैं।

जिस वर्ष गेलिलियोकी मृत्यु हुई उसी वर्ष प्रसिद्ध गणितज्ञ आइज़क न्यूटनका जन्म हुआ (संवत् १६६६-१७८४)। गणितकी सहायतासे उसने अपने पूर्वके ज्योतिषियोंका कार्य जारी रखा। उसने यह प्रमाणित किया कि वह आकर्षण शक्ति जिसे हमलोग गुरुत्वाकर्षण कहते हैं विश्वव्यापक है और सूर्य्य, चन्द्र प्रभृति सभी आकाशीय पिण्ड दूरीके हिसाबसे परस्पर एक दूसरेका आकर्षण करते हैं।

इधर दूरदर्शक यंत्रसे तो ज्योतिषको सहायता मिली, उधर सूक्ष्म दर्शक यंत्रके सहारे व्यावहारिक ज्ञानकी वृद्धि हुई। सत्रहवीं सदीमें लोग मामूली भद्दे सूक्ष्मदर्शक यन्त्रको ही प्रयोगमें लाते थे और उसीसे बहुत कुछ लाभ उठाते थे। लेवेनहोक नामक एक डच व्यापारीने ऐसा अच्छा लेंस (शीशा) तैयार किया कि रक्त और जलके कीड़ोंतकका पता उससे लगा लिया गया। उन्नीसवीं सदीके उत्तरारम्भमें अच्छे अच्छे सूक्ष्मदर्शक यंत्र तैयार होगये थे। अब इस यन्त्रकी इतनी उन्नति हो गयी है कि उसकी सहायतासे छोटीसे छोटी वस्तुएं चार हजार गुने आकारमें दिखलायी देती हैं।

अब यह बात स्पष्ट हो गयी है कि प्रायः सभी प्राकृतिक विज्ञान एक दूसरेपर अवलम्बित हैं जीव विज्ञान, आयुर्वेद, भूविज्ञान तथा वनस्पति

विज्ञान-इन सभीके विद्वानोंको अन्वेषण विषयक कार्योंमें रसायन शास्त्रकी सहायता लेनी पड़ती है, इस कारण उनके लिए इसका ज्ञान परमावश्यक है। इसी प्रकार अन्य विषयोंके लिए भी और और विषयोंकी सहायता अपेक्षित है।

फ्रांसिस वेकन नामक एक अंग्रेज राजनीतिज्ञने सर्वप्रथम ज्ञात विज्ञानोंकी खोजके लिए एक योजना तैयार की। ऐसी आशा थी कि यदि समुचित रूपसे उसकी पद्धतिका अनुकरण किया गया तो कई अद्भुत बातोंका पता लगेगा। हमनाम रोजर वेकनकी तरह उसका भी कथन यही था कि यदि मनुष्य सभी पदार्थोंका सम्यक् अनुसन्धान करे और बेहूदा शब्दोंका विश्वास ताकपर धर दे तो जो आविष्कार होंगे उनके सामने पिछले आविष्कार नहींके बराबर ठहरेंगे। विश्वविद्यालयोंमें पढ़ाये जानेवाले अरस्तूके दर्शनका भी वह विरोधी था। उसका कथन है—ऐसा एक भी दृढ़-संकल्प व्यक्ति नहीं नजर आया जो सभी (भ्रान्तिमय) सिद्धान्तों और आम विश्वासोंको दूर कर सब बातोंकी जांच समझदारीके साथ नये सिरसे जारी करे। यही कारण है कि मानवजातिका ज्ञान कई प्रकारके ऐसे अपरिपक्व अनुभवोंका सम्मिश्रण है जो अन्धविश्वासों तथा आकस्मिक घटनाओंसे प्राप्त हुए हैं और हमारे बचपन कालकी भावनाओंसे ओतप्रोत हैं।

वेकनकी मृत्युके कुछ ही दिन बाद फ्रांस तथा इंग्लैण्डकी सरकारें वैज्ञानिक उन्नतिमें दिलचस्पी लेने लगीं। संवत् १७१९ [सन् १६६२] में राजाकी संरक्षतामें लन्दनमें 'रायल सोसायटी' कायम हुई जिसके विवरण अद्यपर्य्यंत नियमित समयपर निकलते रहते हैं। इसके चार वर्ष पश्चात् कोलबर्टने फ्रेंच एकेडेमी आफ साइंसेज * [फ्रांसीसी विज्ञान-परिषद्] नामक संस्थाका समुचित रूपसे संगठन किया। इन परिषदों तथा प्रशा-नरेश द्वारा संवत् १७५७ [सन् १७००] में बर्लिनमें स्थापित की गयी परिषद्

* The French Academy of Sciences

ने मिलकर तर्क-वितर्क एवं कार्यविवरण प्रकाशित कर तथा विशेष अन्वेषणोंका समर्थन कर और उन्हें प्रोत्साहन दे कर बड़ी शीघ्रताके साथ विज्ञानकी उन्नति की। कोलबर्टने संवत् १७२४ (सन् १६६७) में पेरिसकी प्रसिद्ध वेधशाला स्थापित की। इसके कुछ दिन बाद अर्थात् संवत् १७३२ (सन् १६७६) में लन्दनके निकट ग्रीनविचकी सुप्रसिद्ध वेधशाला तैयार हुई। विज्ञानविषयक पत्र-पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होने लगीं। इनमें सबसे प्रसिद्ध "जौर्नल डिस सैवट्स' नामका पत्र था। कोलबर्टने इसे विशेष प्रोत्साहन दिया और यह राज्यक्रान्तिके कुछ वर्षोंको छोड़कर लगभग ढाई सौ वर्षोंतक सुचारु रूपसे निकलता रहा है।

यूरोपीय सरकारों—विशेष कर फ्रांसकी सरकार—ने पृथ्वीके सुदूरस्थ भागोंमें वैज्ञानिक अन्वेषकोंको एक ही समयमें दूर दूर स्थानोंसे निरीक्षण कर भूमंडलके आकार और परिमाणका तथा पृथ्वीसे चन्द्रमाकी दूरीका निर्णय करनेके लिये भेजा। संवत् १८२६ (सन् १७६९) में जब शुक्र सूर्य्यके सम्मुखसे होकर गुजरा तो सूर्य्य और पृथ्वीके बीचका अन्तर ज्ञात करनेके लिये ज्योतिषियोंको यह अच्छा अवसर हाथ लगा। इस कार्यके लिये आंग्लदेश, फ्रांस, और रूस प्रभृतिकी ओरसे भिन्न भिन्न स्थानोंमें विद्वान् लोग भेजे गये। अब तो खगोल सम्बन्धी कोई भी असाधारण बात होने पर, इस प्रकारके विशेषज्ञोंको भेजनेकी प्रथा ही चल पड़ी है।

मनुष्यके पृथ्वी और विश्व विषयक विचारोंपर इन अन्वेषणों और प्रयोगोंका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। जिन वैज्ञानिक बातोंकी अबतक खोज हुई है उनमें सबसे मुख्य यह है कि सभी वस्तुएँ कुछ प्राकृतिक अपरिवर्तनशील नियमोंका ही अनुगमन करती हैं। आधुनिक वैज्ञानिक अन्वेषक लोग इन्हीं नियमोंके निश्चित करने तथा इनके प्रयोगोंका पता लगानेके प्रयत्नमें लगे हुएँ हैं। अब इन लोगोंके दिमागसे तारोंकी गतिसे मनुष्यके भाग्य-निर्णयका तथा जादूकी क्रियाओंसे कुछ नतीजा निकालनेका ख्याल बिलकुल निकल गया। अब इनको पूरा विश्वास हो गया है कि सब

कहीं प्राकृतिक नियम ही समुचित रूपसे संचालित हो रहे हैं। मध्ययुगके विद्वानोंकी तरह ये अद्भुत बातों अर्थात् प्राकृतिक नियमोंके विरुद्ध घटित घटनाओंका सहसा विश्वास नहीं कर लेते। प्रकृतिके निरन्तर अध्ययनसे अब ये लोग ऐसी ऐसी बातोंका पता लगा रहे हैं जो मध्य-युगकी जादूगरीसे भी अधिक आश्चर्य्यजनक है।

परन्तु इस वैज्ञानिक अन्वेषणके मार्गमें भी बहुत सी कठिनाइयां पड़ती रही हैं। मनुष्योंने अपनी भावनाओंको बदलनेमें बड़ी अनिच्छा प्रकट की है। मध्ययुगके पादरियों तथा अध्यापकोंने उन्हीं विश्वासोंको ग्रहण कर लिया था जिनको मध्ययुगके धर्मशास्त्रियों तथा दार्शनिकोंने विशेषकर बाइबिल और अरस्तूकी सहायतासे निर्धारित किया था। वे लोग उन्हीं प्राचीन पुस्तकोंकी दुहाई देते थे जिनका उपयोग उनके पूर्वाधिकारी तथा वे स्वयं करते आये थे। वे नये वैज्ञानिक अन्वेषकोंकी तरह सभी पदार्थोंकी जांचका कष्टसाध्य परिश्रम उठाना नहीं चाहते थे।

धर्मशास्त्री लोग वैज्ञानिक आविष्कारोंको स्वीकार नहीं करते थे क्योंकि वे बाइबिलके उपदेशोंसे विभिन्न थे। इन लोगोंको तथा सर्वसाधारणको यह जानकर बड़ा ही दुःख हुआ कि मनुष्यका निवास-स्थल—यह भूमंडल—जिसके चारों ओर तारिकामंडल घूमता है, विश्वकी तुलनामें एक [illegible] मात्र है और यह सूर्य्य उन अगणित बृहत्काय तेज पिण्डोंमें से [illegible]

इस वैज्ञानिक प्रवृत्तिके कारण लोगोंके मनमें अविश्वास उत्पन्न हो गया। उन्होंने कैथलिक तथा प्रोटेस्टैण्ट धर्मशिक्षकोंके उपदेशोंको ज्योंका त्यों ग्रहण करना त्याग दिया। अब कई स्वतंत्र विचार वाले जोर देकर यह बात कहने लगे कि मनुष्य स्वभावत सुशील है, उसे ईश्वरने जो तर्क-शक्ति दी है उसका प्रयोग करनेकी उसे पूरी स्वतंत्रता है और वह प्राकृतिक नियमोंके अध्ययनसे अधिक बुद्धिमान् बन सकता है। वे यह माननेको तैयार न थे कि ईश्वरने केवल यहूदियोंको ही सारा ज्ञान-भण्डार सौंप दिया है। इस व्यापक दृष्टिकी प्रतिच्छाया संवत् १७६४ (सन् १७३७) में अलैग्ज़ैण्डर पोप द्वारा लिखित 'यूनीवर्सल प्रेयर' (विश्वमान्य ईश्वर-स्तुति) नामक पद्यमें देख पड़ती है। उस समय बहुतोंके विचारसे पोप ख्रीष्ट धर्मका विरोधी और बाइबिलको ईश्वरदत्त न माननेवाला समझा जाने लगा। उसके समयमें ऐसे बहुतसे मनुष्य थे जो अपनेको 'डी-इस्ट' या ईश्वरवादी कहते थे। वे ईश्वरकी सत्ताको तो मानते थे पर धर्मको ईश्वरदत्त नहीं समझते थे। वे कहते थे कि ईश्वर विषयक हमारा विश्वास ख्रीष्टधर्मके उन अनुयायियोंकी अपेक्षा कहीं अच्छा है जो अनहोनी बातोंको ईश्वरकृत बतलाकर उसे अपने ही नियमोंका उल्लंघन करने वाला प्रमाणित करते हैं।

संवत् १७८३ में वाल्टेयर नामका एक फ्रांसीसी नवयुवक इंग्लैण्ड पहुँचा। वह शीघ्र ही न्यूटनके सिद्धान्तोंका अनुयायी हो गया। वह न्यूटनको सिकन्दर या सीजरसे भी बड़ा समझता था। क्वेकर्स लोगोंकी सादगी तथा युद्धके प्रति घृणासे वह विशेष प्रभावित हुआ। उसे अंग्रेज दार्शनिकों, विशेष कर जॉन लॉक, का अध्ययन करनेमें अधिक प्रसन्नता होती थी। पोपके 'एस्से आन मैन' नामक काव्य-प्रबन्धको वह उच्च कोटिका नैतिक काव्य समझता था। वह अंग्रेजोंकी [illegible] करने तथा लेख लिखनेकी स्वतंत्रताका प्रशंसक था।

इंग्लैण्डकी जिन जिन बातोंसे वाल्टेयर प्रभावित हुआ था उन्हें उसने चिट्ठियोंके रूपमें प्रकाशित करना आरंभ किया किन्तु [illegible]

लयने उन्हें निन्दनीय कहकर जलवा डालनेकी आज्ञा दी । इसके बा
वाल्टेयर बुद्धिसे काम लेने और ज्ञान-विकासमें विश्वास करनेका यूरो
भरमें सबसे बड़ा प्रतिपादक बन गया । बुद्धिपर जोर देनेका परिणा
यह हुआ कि उस समयकी अनेक रीतियों और अनेक विचारोंका परित्या
किया जाने लगा। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि निरन्तर अपनी परिस्थितिमें
कोई न कोई असंभव बात ढूँढनेमें तथा उत्सुक पाठकोंके सामने उसे चतु
रता पूर्वक रखनेमें ही व्यग्र रहती थी । उसे प्रायः प्रत्येक विषयमें दिल
चस्पी थी । उसने इतिहास, नाटक, दर्शन, उपन्यास, महाकाव्य इत्यादिके
अतिरिक्त अपने बहुसंख्यक प्रशंसकोंको अगणित पत्र भी लिखे ।

जिस समय वाल्टेयर सर्वसाधारणको स्वतंत्र आलोचनाकी
शिक्षा दे रहा था, उसी समय वह रोमन कैथलिक संस्थापर भी भीषण
आक्रमण कर रहा था । उसे राजाकी अनियंत्रित शक्तिकी विशेष चिन्ता
न थी, पर वह धर्म-संस्थाको बुद्धि-स्वातन्त्र्यका विरोध करनेके कारण
उन्नतिका प्रधान बाधक समझता था। अन्धविश्वासों, धार्मिक असहि-
ष्णुता, तथा छोटी छोटीसी बातोंपर जघन्य झगड़ोंके ख्यालसे तो वह
धर्मसंस्थाकी निन्दा करता ही था, साथ ही वह शासन-सम्बन्धी कार्योंमें
धर्मसंस्थाके नियंत्रणको अत्यन्त हानिकर समझता था। उसने अपने
लेखोंमें इस बातपर जोर दिया कि धर्म-संस्थाका कोई भी कानून तब तक
मान्य न होना चाहिये जबतक सरकार उसे स्पष्टरूपसे स्वीकार न कर ले।
सब पादरियोंपर सरकारका नियंत्रण रहना चाहिये, अन्य मनुष्योंकी तरह
उन्हें भी कर देना चाहिये और उन्हें किसी मनुष्यको पापी कहकर उसे
किसी भी अधिकारसे वञ्चित करनेका हक न होना चाहिये ।

यह सत्य है कि बहुधा उसके निर्णय ऊपरी बातोंके आधारपर किये
जाते थे और कभी कभी वह ऐसे परिणामोंपर पहुंचता था जो परिस्थिति
देखते हुए असंभाव्य प्रतीत होते थे । उसे धर्मसंस्थाके दोष ही दोष
पड़ते थे और उसने प्राचीन कालमें मनुष्यजातिके लिये क्या क्या कि

है यह समझनेमें वह असमर्थ सा प्रतीत होता था । किन्तु कई त्रुटियों-
के होते हुए भी वह एक असाधारण पुरुष था । उसने अन्याय और
अत्याचारका जोरोंसे विरोध किया ।

वाल्टेयरके प्रशंसकोंमें डेनिस डीड्रो तथा वे विद्वान् अधिक प्रसिद्ध
हैं जिन्होंने नूतन विश्वकोष तैयार करनेमें सहायता दी थी । डीड्रो अत्यन्त
उदार बुद्धिवाला फ्रांसीसी तत्ववेत्ता था । वाल्टेयरकी तरह उसने भी
बेकन, लॉक इत्यादि अंग्रेज दार्शनिकोंका अध्ययन किया था । उसने 'फिला-
सफिक थाट्स' (दार्शनिक विचार) नामक ग्रन्थ तैयार किया जिसमें
उसने लिखा कि जिस बातके सम्बन्धमें कभी कोई शंका नहीं की गयी उसकी
प्रामाणिकता भी साबित नहीं हो सकी । किसी बातमें विश्वास करनेके
पहिले यह आवश्यक है कि हम उसमें अविश्वास या उसके सम्बन्धमें
शंका करें । अतः संशयवादसे अर्थात् उचित शंका करनेसे ही हम
सत्यके समीप पहुँच सकते हैं । पेरिसकी 'पार्लमेण्ट' (उच्च न्यायालय)
ने इस पुस्तकको जला डालनेकी आज्ञा दी । इसके अनन्तर वह अपने
एक और लेखके कारण कुछ समयके लिए कारागृहमें डाल दिया गया ।

डीड्रोने विश्वकोष तैयार करनेमें डी-एलम्बर्टको अपना प्रधान सहायक
चुना । सम्पादकोंने कमसे कम विरोध उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया ।
जिन विचारों और सम्मतियोंके साथ उनकी सहानुभूति न थी उनका भी
समावेश उन्होंने अपने ग्रन्थमें किया । इतना होने पर भी प्रथम दो
जिल्दोंके प्रकाशित होते होते राजाके मंत्रियोंने, धर्म-संस्थावालोंको प्रसन्न
करनेके लिए, उन्हें जब्त करनेकी आज्ञा दे दी, यद्यपि इसके आगेका काम
उन्होंने नहीं रोका ।

ज्यों ज्यों विश्वकोषके खण्ड प्रकाशित होते गये त्यों त्यों उनके
ग्राहक-संख्या बढ़ती गयी, पर साथ ही विरोधियोंका दल भी प्रबलतर
होता गया । वे कहने लगे कि कोष बनानेवाले धर्म और समाजका
उन्मूलन करनेपर उतारू हैं । सरकारने फिर हस्तक्षेप किया । उसने

किन नियमोंके आधारपर होता है, मुद्रा और साखका क्या महत्व है, इत्यादि अनेक प्रश्नोंका विशेष अध्ययन किया जाने लगा। अर्थशास्त्रके नियमोंसे अभिज्ञ न होते हुए भी यूरोपीय राज्य धीरे धीरे व्यापार और उद्योगोंका नियंत्रण करने लगे। फ्रांसकी सरकारने तो कोलबर्टकी प्रधानतामें प्रायः प्रत्येक वस्तुका नियंत्रण आरंभ कर दिया। फ्रांसकी तैयार की हुई वस्तुएँ अन्य देशोंमें शीघ्र बिक सकें, इस उद्देश्यसे किस तरहका कपड़ा बनाया जाय और किस तरहके रंगोंका प्रयोग किया जाय, इत्यादि बातोंके सम्बन्धमें निश्चित नियम बना दिये गये।

अनाज तथा खाद्य वस्तुओंके सम्बन्धमें राजाके मंत्री कड़ी नजर रखते थे और वे इन्हें किसी एक व्यक्तिके पास अत्यधिक मात्रामें इकट्ठा न होने देते थे। कहा जाता था कि किसी देशकी समृद्धि तभी हो सकती है जब वह बाहरसे जितना माल मँगाता है उससे अपेक्षा अधिक माल बाहर भेजे। ऐसा होनेसे उसे प्रति वर्ष बाहरी देशोंसे कुछ न कुछ पावना रहेगा जो सोने या चांदीके रूपमें चुकाया जायगा। इस सोने-चांदीकी आमदनीसे देशकी साम्पत्तिक अवस्था सुधरेगी। जो कहते थे कि जहाजोंकी रक्षा करने और उनके गमनागमनको प्रोत्साहित करनेमें, उपनिवेश बसानेमें, तथा कारखानों द्वारा प्रस्तुत वस्तुओंका नियंत्रण करनेमें राज्यकी शक्तिका प्रयोग होना चाहिये वे 'मर्केंण्टलिस्ट' कहलाते थे।

संवत् १७५७ के लगभग फ्रांस तथा इङ्गलैण्डके कुछ लेखकोंने यह मत प्रकट किया कि अर्थशास्त्रके नियमोंमें सरकारके हस्तक्षेपसे कोई लाभ नहीं। उन्होंने 'मर्केंण्टलिस्ट' लोगोंकी आलोचना करते हुए कहा कि सोना-चाँदी तथा सम्पत्ति (वेल्थ) का अर्थ एक ही नहीं है। कोई भी देश नगद बचत या अनुकूल व्यापारतुलाके न होते हुए भी समृद्ध हो सकता है। ये लोग 'मुक्त-वाणिज्य-नीति' के पक्षपाती थे।

फ्रांसके प्रसिद्ध अर्थशास्त्री टर्गटने प्रचलित दोषोंके निवारणका प्रयत्न किया, पर वह सफल न हुआ। अर्थशास्त्रका सबसे प्रथम प्रामाणिक ग्रन्थ

संवत् १८३३ (सन् १७७६) में प्रकाशित हुआ। यह स्काटलैंडके दार्शनिक आदम स्मिथका बनाया था। इसमें 'मर्केंटिलिस्ट' लोगोंके सिद्धान्तोंकी तथा आयातकर, आर्थिक सहायता, निर्यात-प्रतिबन्धक इत्यादि कृत्रिम उपायोंकी तीव्र आलोचना की गयी थी। इसके बाद थोड़े ही दिनों में इस शास्त्रने विशेष उन्नति कर ली।

च

भ

———o———

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
[illegible]ारोंके … कर…गया	वे कई प्रकार-के करोंसे, जो साधारण मनु-ष्योंको देने पड़ते थे, बरी किये गये	७	५,६
साम्रटों	सम्राटों	१२	१०
साम्राज्यके	साम्राज्यकी	१४	२
आते रहे और हारते रहे	आती रहीं और हारती रहीं	,,	१५
इनके	इनका	,,	२६
राज्यमें	राज्यके	१५	२२
शार्लेमाइन	शार्लमेन	१६	१८
राति	रीति	१७	२०
थी…की गयी थी	था…किया गया था	२३	७
खर्क	खर्च	२५	५
रोमकी	रोमके	२५	१५
,,	,,	,,	१९
इसको	इनको	२९	२१
देशकी	देशका	३२	२१
की	किया	३६	१५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
बाताम	वार्तोमें	३७	२४
द्विवानों	विद्वानों	४३	१९
कर लेता था	करा लेता था	४५	८
पुरुसार्थ	पुरुषार्थ	४७	१
ज्ञान	ज्ञात	५१	१६
चतुर्दिश	चतुर्दिक्	५४	२
जानने	मानने	५६	२
साम्राट्	सम्राट्	५७	२६
राजा राज्य न थे	राजा न थे	५९	१७
सम्राज्यके प्रत्येक जिला	साम्राज्यके प्रत्येक जिले	६०	१२
प्रतिनिधि	प्रतिदिन	६१	२६
सम्राज्यका हृदथ	साम्राज्यका हृदय	६२	५
था तो	किन्तु था तो	,,	२१
तथापि	तथा	,,	२२
मान था	मान भी था	,,	२३
इसको	इनको	६८	[illegible]
इनका…वे	इनका…हैं	६८	[illegible]
जमीदारों फीफ था	जमीदारों-ही फीफ थे	७०	[illegible]

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
इतिहास-वेत्ताको	इतिहास-वेत्ताओंको	७४	३
ह्यूकाये	ह्यूकापेट	७५	२,५
ह्यूकापेक	,,	७७	८
और अपने राजाकी	और राजा-की	,,	१९
फिलिप… बसने	फिलिपने	८०	७
कोई	कोई कोई	८१	९
उसे	उन्हें	,,	२२
जिनके	। उनके	,,	,,
(सन् १०६६)	(सन् १०६६) में	८५	१२
तृतीय	द्वितीय	८९	१९
राज्यास-हासन	राजसिंहासन	,,	,,
राज्यगद्दी	राजगद्दी	,,	२५
अपने	अपनी	९०	१
न्यायालमें	न्यायालयमें	९३	१३
मांटकोर्ट	मांटफोर्ट	९४	८
रहे	हो गया	९९	१
कितने	कितनी	,,	९
राज्य	राजा	,,	१५
इनके	इनकी	१०१	११
देता था	देने में	,,	१३
चाहिए वह यह है कि	चाहिए कि	,,	२०
बारहवीं	ग्यारहवीं	१०६	७
मनसासे	मंशासे	१०८	११
। जिस	इस	१०९	२
संसारिक	सांसारिक	११२	२
जर्मन	जर्मनी	,,	६
शदाब्दी	शताब्दी	११९	६
पता लगता	ज्ञात होता	,,	१८
इटली नगर	इटलीके नगर	१२१	८
का…बन गया	के…बन गये	,,	,,
अधिपत्य	आधिपत्य	१२२	२१
प्रामाणित	प्रमाणित	१२३	१४
उनकी	उसकी	१२४	१३
उसके	उसकी	१२६	४
गेल्फवलों	गेल्फवालों	१२७	१
भूमी	भूमि	,,	५
केन्टरबरी	कैण्टरबरी	१३०	२
अधिपत्य	आधिपत्य	,,	१०
एबट,	एबट, तथा	,,	२१
फ्रेडरिकके…लगे	फ्रेडरिकका…लगा	१३१	१८
उसकी	उसके	१३२	८
उत्तरीय कुछ	कुछ उत्तरीय	,,	१६
यहाँकी	यहाँके	१३४	१५
सैन्य	सेना	१३८	४
उनका… लिया	उनकी… की	१४१	१५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
(रोगिसेव-कों) को	(रोगिसेव-कों) के	१४१	२०
अविवाहि	अविवाहित	१४२	१
इसा-मसीहके	ईसा-मसीहकी	,,	४
इनके	इसके	,,	८
इनको	हमको	१४४	२२
उन्हें···वे लोग	हमको... हमलोग	,,	२६
जिसमें	जिनमें	१४८	१२
पैत्रिक	पैतृक	१४९	६
इनके	इसके	१५१	६
सब . होता है	सबको विदित ही है	,,	१२
यात्रा तीर्थ करना	यात्रा अर्थात तीर्थ करना	१५६	५
था	या	१५९	६
आचार	आचारकी	,,	१९
नीतज्ञ	नीतिज्ञ	१६२	३
समान्तों	सामन्तों	१६२	९
अति	अतिरिक्त	१६४	१
पापत्मा	पापात्मा	,,	१५
सामानरूपसे	समानरूपसे	१६५	१०
अलिबगण	अहिदजेन्स प्रायः		
गिरजेको	धर्मसंस्थाके	१६७	६
सम्मति	सम्पत्ति	,,	१४

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
क्षमा कर दी जाती	माफी दे दी जाती	१६८	२२
पैत्रिक सम्मति	पैतृक सम्पत्ति	१६९	२५,२६
(सन् १२५७)	(सन् १२१०)	१७१	२२
इसमें	इनमें	१७३	२४
इनमें	इसमें	१८०	२१
सत्व	स्वत्व	१८४	१७
भूमध्यमें समुद्रसे	भूमध्य-समुद्रसे	१८७	१४
नेताओं	नौकाश्रयों	१८९	२
जिन्हें	जिसे	१९०	१२
राज्यमें	राज्यसे हो कर	१९१	४
उनकी	उनके	,,	८
कोलोन विकन्सबु	कोलोन, ब्रन्सविक	१९२	९
दो शताब्दी पूर्व	पूर्व दो सौ वर्ष तक	,,	[illegible]
ग्रेजेज	ब्रुजेज	१९२	[illegible]
नगर के... सभामें वे जर्मन...या वे जो था जो	सभामें नगरके जर्मन...जो जो जर्मन	१९३	
बारहवीं	ईसाकी बारहवीं	[illegible]	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अनोके मेडिची वंशी ड्यूकच	मेडिची, अरबिनोके ड्यूक	२७८	५
टाइपके	टाइपकी	,,	२५
सस्ती	सभी	,,	२६
छापाकी	छापेकी	२७९	१२
ताड़	तोड़	,,	१७
काठके पटलीर	काठकी पटलीपर	२८०	११
ल्यूकाडेसा	ल्यूकाडेला	२८२	१३
किया	दिया	२८३	२२
सम्वत १२७९	संवत १२७५	२८५	१९
१०५०	१०५७	२९२	३
११३२	११४२	,,	६
१३००	१३०७	,,	८
१५६९	१५४९	,,	२३
इत्यादि जिनको ... वस्तुएँ	इत्यादि वस्तुएँ जिनको सावोनारोला विलास-सामग्री	२९९	५
रोजवंशका	राजवंशकी	,,	१६
दानाका	दोनोंका	,,	१७
ये इनके	इनके	,,	२०

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
चार न नाइटों	चार नाइटों	३०८	२
अविष्कोरस	आविष्कार-से	३१०	१

पृष्ठ ३१४ के बाद पृष्ठ ३१६ और उसके बाद पृष्ठ ३१५ देखिए।

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अनुवाद तथा व्याख्या	अनुवाद व्याख्या	३१५	६
"मूर्खता-स्तव"	"मूर्खता-स्तव*"	३१५	२२
(फुटनोट पृष्ठ ३१७ में है)			
ह्यूनिस्ट	ह्यूमनिस्ट	३१६	१
रोटर्डमें	रोटर्डममें	,,	८
विवशस	विश्वास	३१७	२
बहुत ... अधिक थी	(कुछ नहीं चाहिये)	३१७	९
दुर्गाप्रसाद	दुर्गप्रासाद	३१९	०
साधु कर्मा	साधु महंतोंके कारण कर्मी	३२१	३
अथवा एक	अथवा कुछ	३२४	८
होती थी	मुक्ति होती थी	,,	११
पीटरकी बड़ी गिरजाके	पीटरके बड़े गिरजेके	,,	१९
स्वभाविक	स्वाभाविक	३२७	१३
देखनेमें	देखनेमें	,,	२२

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
उसके	उसकी	३२८	११
लोगोंका स्वतंत्र रक्षा...पितृ भूमिका	लोगोंकी··· स्वतंत्रताकी रक्षा···पितृ- भूमिको	३२९	२
भिन्न	मित्र	,,	१३
अनेक	। लूथरने अनेक	,,	२५
दीवारोंका शरण लेती है	दीवारोंकी शरण लेता है	३३०	५
धर्मसंस्थाका अपराध	धर्मसंस्था का कर्मचारी अपराध	,,	१८
मध्ययुगक	मध्ययुगकी	,,	२१
निम्बध	निबन्ध	३३०	२२
उससे	उनसे	३३१	३
अनुमोदव	अनुमोदन	,,	११
शपित	शापित	३३२	४
लियो	लियो	३३३	११
अलेक्ज़ेण्डर	अलिएण्डर	,,	२२
जमंनीका	जर्मनीके	३३४	४
अलेक्जेण्डर	अलिएण्डर	३३५	११
अविवेकशून्य	अविवेकपूर्ण	३६३	२
उसाका	उसका	३६६	२
ताव	तत्व	३७२	१,१२
देश	संसार	३७७	१
आतशा	आतशी	४२१	२२
जितनी	जितना	४१४	१२